

संस्कृत साहित्य : एक परिचय

संस्कृत शब्द सम् उपसर्गपूर्वक कृ धातु से निष्पन्न है जिसका अर्थ है — 'संस्कार की गयी भाषा'। संस्कृत भाषा के विकास के दो रूप साहित्य में उपलब्ध हैं — **वैदिक संस्कृत भाषा** तथा **लौकिक संस्कृत भाषा**। वैदिक भाषा में वेदों, ब्राह्मणग्रन्थों, पुराणों आदि की रचना हुई है। वाल्मीकीय रामायण से लौकिक भाषा अस्तित्व में आयी, महाभारत की भाषा से विकसित होते हुए यह लौकिक धारा कवि कालिदास, भारवि, हर्ष आदि कवियों से पुष्ट होकर आज भी अपना अस्तित्व संरक्षित किए हुए है। इन दोनों भाषाओं के स्वरूप में पर्याप्त अन्तर है, इसका परिचय आवश्यक है—

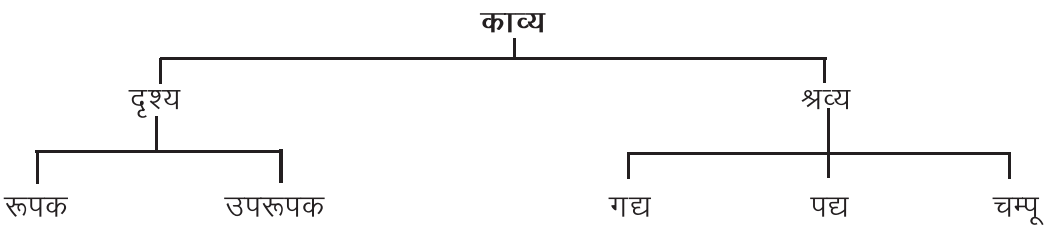
वैदिक संस्कृत — सरल शब्दों, लघु वाक्यों से युक्त वैदिककालीन साहित्य अत्यन्त मनोरम है। समासों की अल्पता एवं उदाहरणों की अधिकता से वैदिक साहित्य रसपेशल है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि कतिपय अलंकार तथा ह, वै आदि अव्यय, वाक्यों को रोचकता प्रदान करते हैं।

लौकिक संस्कृत — साधारण जनता के व्यवहार में प्रयोग की जाने वाली भाषा लोकभाषा कहलाई। यह भाषा वैदिक संस्कृत से भिन्न थी। भारत की साधारण जनता इसी भाषा में भाव तथा विचारों को प्रकट करती थी। धीरे-धीरे प्राकृत तथा पालि भाषाओं के प्रचलन से इसका व्यवहार कम हुआ परन्तु शिष्ट समाज में यह व्यवहार भाषा ही रही। महर्षि पाणिनि (ईसा पूर्व आठवीं शती) ने अष्टाध्यायी के नियमों से इसे संयमित तथा सुव्यवस्थित किया तथा इसी भाषा में काव्य-नाटकों की रचना कवियों ने की।

संस्कृत वाङ्मय के उपलब्ध साहित्य को दो भागों में बाँट सकते हैं — दृश्य तथा श्रव्य।

दृश्यश्रव्यत्वभेदेन पुनः काव्यं द्विधामतम्।

दृश्यकाव्य में रूपकों तथा उपरूपकों का ग्रहण होता है, क्योंकि इनका अभिनय किया जाता है। ये दर्शकों द्वारा देखे जाते हैं इसीलिए इनको दृश्यकाव्य कहा जाता है। श्रव्यकाव्य उसे कहा जाता है जिसका सहृदय पाठकों के द्वारा पढ़कर तथा सुनकर रसानन्द प्राप्त होता है। श्रव्यकाव्य को तीन भागों में विभक्त किया जाता है — गद्य, पद्य और चम्पू।



गद्यकाव्य — गद्यकाव्य भाषा का वह स्वरूप है, जिसमें पद्य-बन्ध का परित्याग करते हुए भाव, भाषा एवं रस का समुचित परिपाक होता है, इसलिए दण्डी ने गद्य का लक्षण दिया है — ‘अपादः पदसन्तानो गद्यम्’ अर्थात् पदबन्ध रहित वाक्य विन्यास को गद्य कहते हैं। गद्य का उद्भव और विकास वैदिक साहित्य-काल से ही माना जाता है। यजुर्वेद की भाषा मुख्यतः गद्यात्मक है, समग्र ब्राह्मणसाहित्य गद्य में ही रचा गया, उपनिषद् अधिकांशतः गद्यात्मक है। अतः स्पष्ट है कि वैदिक साहित्य में गद्य का प्रयोग व्यापक रूप से हुआ है।

पुराण साहित्य की भाषा वैदिक एवं लौकिक युग की मध्य कालीन भाषा है, उसमें कुछ प्रयोग वेद के समान हैं तो कुछ लौकिक संस्कृत के इसी काल में स्मृति ग्रन्थों, रामायण, महाभारत की रचना हुई।

संस्कृत कवियों ने इसी शैली में अपनी प्रतिभा का व्यापक उपयोग किया। आलोचकों ने गद्य को ही कवियों की प्रतिभा परख की माप माना — ‘गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति’। गद्य के इस रूप में समासों की बहुलता तथा ओज गुण का माधुर्य अनिवार्य माना गया। समासों के आधिक्य से वाक्यलघुता इस गद्य की विशेषता थी, इससे अधिक से अधिक अर्थ को कम शब्दों में प्रकट किया जाता था, ओज गुण के समावेश से भाव प्रवणता का संचार होता था, जिससे गद्य का सम्पूर्ण सौन्दर्य अभिव्यक्त होता था, इसीलिए दण्डी कवि ने गद्य का यही लक्षण निर्धारित किया — ‘ओजः समास-भूयस्त्वमेतद् गद्यस्य जीवितम्’।

संस्कृत गद्यकाव्य के दो मुख्य भेद माने गये हैं — (1) कथा (2) आख्यायिका। ‘कथा’ कविकल्पित होती है तथा कथा का वक्ता स्वयं नायक होता है, जबकि ‘आख्यायिका’ ऐतिहासिक घटना पर आधारित होती है, इसका विभाजन उच्छ्वासों में होता है। जैसे— बाणभट्ट की ‘कादम्बरी’ कथा है तथा ‘हर्षचरितम्’ आख्यायिका है।

पद्यकाव्य — पद्यकाव्य का आविर्भाव मानव मन के सुख-दुःख, करुणा-दया, क्रोध-क्षमा, भय-घृणा आदि विभिन्न मनोविकारों की दशा में होता है। जीवन के मार्मिक क्षणों में चित्तवृत्ति की इन अनुभूतियों पर आघात होने से संवेगों का जो ज्वार उठता है, वह कवि की प्रतिभा का आश्रय लेकर पद्य रूप में अभिव्यक्त हो जाता है। राम द्वारा परित्यक्त सीता के विलाप और क्रौञ्च पक्षी के वध से आहत क्रौञ्ची के विलाप ने महर्षि वाल्मीकि के मर्मस्थल पर ऐसी चोट की कि उनके मुख से ‘मा निषाद०’ पद्य काव्य की धारा फूट पड़ी, जो आज भी संस्कृत साहित्य को समृद्ध कर रही है। महर्षि वाल्मीकि संस्कृत काव्यधारा के आदि कवि हुए और रामायण आदिकाव्य।

संस्कृत पद्य साहित्य की रचना में रामायण को ही आधार मानकर अन्तःस्थल के भावों के वर्णन में सिद्ध कवि का काव्य प्रशंसित हुआ, बाह्य सौन्दर्य की अपेक्षा अन्तः सौन्दर्य का वर्णन करने वाला कवि ही सच्चा कवि कहलाया। रस का आधिक्य कवि के काव्य चातुर्य की कसौटी बना।

काव्य में अलंकार का स्थान गौण रहा। प्रतिभासम्पन्न कवि की लेखनी से निःसृत कोमल तथा मधुर पदावली छन्दों में बँधकर भावों की सूक्ष्मता को व्यक्त करने में नितान्त सक्षम है। यह कवि कालिदास के काव्य ग्रन्थों से नितान्त स्पष्ट है। पद्यकाव्य को रचना की दृष्टि से दो भागों में बाँटा जाता है—(1) प्रबन्ध काव्य और (2) मुक्तक काव्य। प्रबन्ध काव्य में एक धारावाहिक कथा होती है और उसके श्लोक एक दूसरे से सम्बद्ध होकर रस की प्रतीति कराते हैं, जबकि मुक्तक काव्य के श्लोक एक दूसरे से सम्बद्ध न होते हुए स्वतंत्र रूप से रस की प्रतीति कराते हैं। प्रबन्ध काव्य के दो भेद होते हैं—महाकाव्य और खण्डकाव्य। महाकाव्य में जीवन की विस्तृत कथा होती है, इस प्रकार इसका विषय व्यापक होता है। काव्याचार्यों ने काव्यशास्त्र में महाकाव्य के लक्षणों की विस्तृत चर्चा की है। कविकुलगुरु कालिदास के 'रघुवंशम्' को महाकाव्य का श्रेष्ठ उदाहरण समझा जाता है। खण्डकाव्य में जीवन के किसी एक अंश या घटना का धारावाहिक वर्णन होता है। खण्डकाव्य के उदाहरण के रूप में महाकवि कालिदासकृत 'मेघदूतम्' का उल्लेख किया जा सकता है। विषय भेद की दृष्टि से मुक्तक काव्य तीन प्रकार के होते हैं—(1) शृङ्गार (2) नीति और (3) भक्ति। इनके उदाहरण के रूप में क्रमशः भर्तृहरिकृत 'शृङ्गारशतकम्', 'नीतिशतकम्' और 'वैराग्यशतकम्' का उल्लेख किया जा सकता है।

चम्पूकाव्य — गद्य और पद्य के मिश्रित रचना को चम्पू कहते हैं। चम्पूकाव्य का यही लक्षण कवि दण्डी ने निर्दिष्ट किया है— “गद्यपद्यमयी काचित् चम्पूरित्यभिधियते।”

चम्पूकाव्य के अन्तर्गत कवि गद्य के माध्यम से अर्थ के गौरव तथा बाह्य वर्णन को निबद्ध करता है, तो पद्य के माध्यम से सूक्ष्म मनोविकारों की अभिव्यक्ति करता है। इन दोनों विधाओं का मिश्र रूप—व्यवहार भाषा और गेयता से एक नूतन चमत्कार की रचना करता है, जिससे चम्पूसाहित्य में कहीं मनोरम भावाभिव्यक्ति है तो कहीं चमत्कारपूर्ण शब्दावली, कहीं मधुर पदों की सुन्दर कल्पना है तो कहीं समस्त पदों और विशेषज्ञों का प्राचुर्य।

गद्य-पद्य की मिश्रित शैली का आरम्भ यजुर्वेद की कृष्ण शाखा में उपलब्ध है। अथर्ववेद में भी यदा-कदा इस शैली के दर्शन होते हैं तथापि इस मिश्रशैली के प्रति कविगणों का विशेष उत्साह नहीं है। सप्तमशती में दण्डी कवि से पूर्व विद्यमान इस मिश्र साहित्य को लोकप्रियता नहीं मिली। दशम शताब्दी में त्रिविक्रम भट्ट के नलचम्पू में इसका शुद्ध रूप देखने को मिलता है और तब से यह चम्पूधारा आज भी प्रवहमान है।

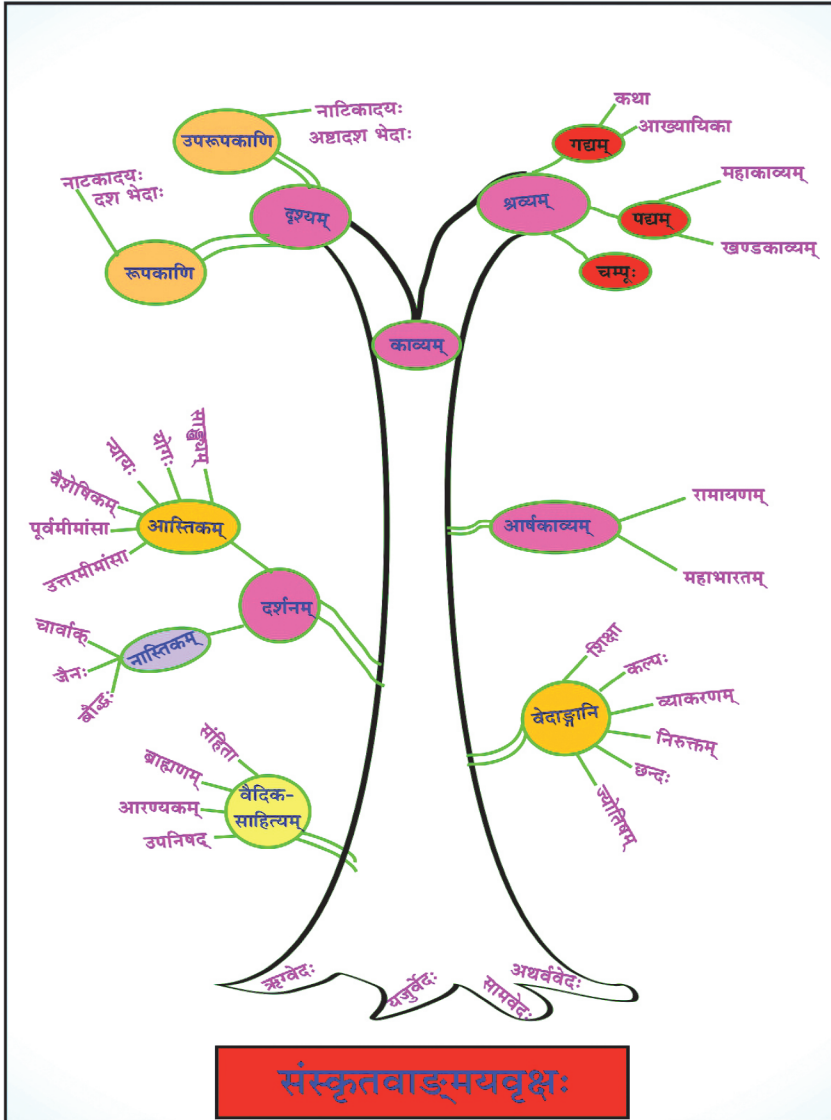
दृश्यकाव्य — नाट्य के लिए संस्कृत में पारिभाषिक शब्द 'रूपक' है, क्योंकि अभिनय की अवस्था में अभिनेता अपने ऊपर नाटकीय पात्र के स्वरूप का आरोप कर लेता है। रूपक के ही दस भेदों में से एक भेद नाटक है। पाठकों के सहजबोध के लिए नाटक शब्द का प्रयोग किया गया है। रूपक के दस

भेद हैं और उपरूपक के अष्टादश (18) भेद हैं। दस रूपकों के नाम हैं – (1) नाटक, (2) प्रकरण, (3) भाण, (4) व्यायोग, (5) समवकार, (6) डिम, (7) ईहामृग, (8) अंक, (9) वीथी, (10) प्रहसन।

नाटकमथ प्रकरणं भाणव्यायोगसमवकारडिमाः।

ईहामृगाङ्कवीथ्यः प्रहसनमिति रूपकाणि दश॥

दृश्यकाव्यों में श्रव्यकाव्यों की अपेक्षा हृदयग्राहिता, मनोरंजकता, आकर्षकता, भावाभिव्यंजकता और विषय की विविधता अधिक होती है, अतः श्रव्यकाव्य की अपेक्षा दृश्यकाव्य अधिक जनप्रिय होता है। इसीलिए कहा गया है—‘काव्येषु नाटकं रम्यम्’।



संस्कृतगद्यभारती

माङ्गलिकम्

पाठपरिचयः

किसी भी कार्य को निर्विघ्न सम्पन्न करने के लिए आरम्भ में मङ्गलाचरण करने की परम्परा है। मङ्गल का अर्थ होता है कल्याण। प्रस्तुत पाठ में कल्याण की कामना होने के कारण इसका नाम 'माङ्गलिकम्' है। शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा के 22वें अध्याय की 22वीं कण्डिका में वैदिक ऋषि ने परब्रह्म परमेश्वर से राष्ट्र की समृद्धि की मङ्गलकामना की है।

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।

(शुक्ल यजुर्वेद, माध्यन्दिन शाखा, अध्याय 22, कण्डिका 22)

अन्वयः

ब्रह्मन्! नः राष्ट्रे ब्रह्मवर्चसी ब्राह्मणः आजायताम्। इषव्यः अतिव्याधी महारथः शूरः राजन्यः आजायताम्। दोग्ध्री धेनुः वोढा अनड्वान्, आशुः सप्तिः, पुरन्धिः योषा, रथेष्ठाः जिष्णुः अस्य यजमानस्य सभेयः युवा वीरः जायताम्। नः निकामे निकामे पर्जन्यः वर्षतु। नः फलवत्यः ओषधयः पच्यन्ताम्। नः योगक्षेमः कल्पताम्।

अर्थः

हे ब्रह्मन्! हमारे राष्ट्र में ब्रह्म तेज से युक्त ब्राह्मण उत्पन्न हो। बाण चलाने में कुशल, शत्रुओं का अत्यन्त विनाश करने वाला, महारथी, वीर क्षत्रिय उत्पन्न हो। दुधारू गाय, भार ढोने में समर्थ बैल, वेगवान् घोड़ा, रूप-गुण से युक्त स्त्री और रथ पर चलनेवाला विजयशील योद्धा उत्पन्न हो। इस यजमान का सभ्य, युवा और वीर पुत्र जन्म ले। हमारे लिए फलवती औषधियाँ पके। हे परमेश्वर! हमारा योगक्षेम करें अर्थात् जो अप्राप्त है वह प्राप्त हो और जो प्राप्त है, उसकी रक्षा कीजिए।

शब्दार्थः

ब्रह्मन् = हे परमेश्वर!। नः = हमारे। ब्रह्मवर्चसी = ब्रह्म (ज्ञान के) तेज से युक्त। ब्राह्मणः = ब्रह्म या वेद को जाननेवाला। आजायताम् = उत्पन्न हों। राजन्यः = क्षत्रिय। इषव्यः = बाण चलाने में कुशल। अतिव्याधी = शत्रुओं का अत्यन्त विनाश करनेवाला। दोग्ध्री = दुधारू। वोढा = भार ढोनेवाला।

अनङ्वान् = बैल। **सप्तिः** = घोड़ा। **पुरन्धिः** = रूपगुणयुक्त स्त्री। **योषा** = नारी। **जिष्णुः** = शत्रुओं पर विजय प्राप्त करनेवाला। **रथेष्ठाः** = रथ पर स्थित। **सभेयः** = सभ्य। **यजमानस्य** = यजमान (यज्ञ या अनुष्ठान करनेवाले) के। **निकामे निकामे** = समय-समय पर, कामना के अनुकूल, पर्याप्त। **पर्जन्यः** = मेघ। **फलवत्यः** = फलवाली। **योग** = अप्राप्त की प्राप्ति। **क्षेम** = प्राप्त की रक्षा। **कल्पताम्** = करें।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत-

- (1) नः राष्ट्रे कीदृशः ब्राह्मणः आजायताम्?
- (2) 'माङ्गलिकम्' इति पाठः कस्मात् वेदात् समुद्धृतो वर्तते?
- (3) कीदृश्यः ओषधयः नः पच्यन्ताम्?
- (4) 'राजन्यः' इति शब्दस्य कः अर्थः?
- (5) नः राष्ट्रे धेनुः कीदृशी आजायताम्?

2. रिक्तस्थानानि पूरयत-

- (क) यजमानस्य जायताम्।
- (ख) निकामे निकामे नः वर्षतु।
- (ग) नः कल्पताम्।

3. माङ्गलिकमिति पाठे सङ्कलितस्य मन्त्रस्य हिन्दीभाषया अनुवादं कुरुत।

4. बहुविकल्पीयप्रश्ना :

समीचीनं विकल्पं चिनुत-

- (i) 'माङ्गलिकम्' शीर्षक पाठ उद्धृत है—
 (क) ऋग्वेद (ख) शुक्लयजुर्वेद (ग) कृष्णयजुर्वेद (घ) सामवेद
- (ii) वेद कितने हैं?
 (क) दो (ख) चार (ग) पाँच (घ) छह
- (iii) 'इषव्यः' का अर्थ है?
 (क) अश्व चलाने में कुशल (ख) रथ चलाने में कुशल
 (ग) बाण चलाने में कुशल (घ) इनमें से कोई नहीं
- (iv) नः राष्ट्रे योषा कीदृशी आजायताम्?
 (क) भाग्यवती (ख) पुरन्धिः (ग) सती (घ) इनमें से कोई नहीं

आन्तरिकं मूल्याङ्कनम्

1. 'माङ्गलिकम्' इति पाठस्य मन्त्रं कण्ठस्थं कुरुत।
2. चतुर्णां वेदानां नामानि विलिख्य सङ्क्षिप्तं परिचयं लिखत।

योग्यता-विस्तार :

‘ज्ञानराशिर्वेदः’ अर्थात् समस्त ज्ञानराशि वेदों में समाहित है। वेद का अर्थ है ज्ञान। वेद चार हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। यजुर्वेद के दो भाग हैं—कृष्णयजुर्वेद और शुक्लयजुर्वेद।

व्याकरणम्

ब्रह्मन् = बृंहति वर्द्धते निरतिशयमहत्त्वलक्षणवृद्धिमान् भवति। बृंह् + मनिन् = ब्रह्मन्, सम्बोधन एकवचन में—ब्रह्मन्। **नः** = अस्मद् + षष्ठी बहुवचन। **ब्रह्मवर्चसी** = ब्रह्मणोः वेदस्य तपसो वा वर्चस्तेजः यस्य सः ब्रह्मवर्चाः, ब्रह्मवर्चसी—आर्ष प्रयोग है। **ब्राह्मणः** = ब्रह्मणः अपत्यम्, ब्रह्म वेदः तम् अधीते वा, ब्रह्मन् + अण्। **इषव्यः** = इषौ कुशलः। **अतिव्याधी** = अत्यन्तं विध्यति इति, अति + व्यध् + णिनि अथवा अतिक्रम्य अन्यान् लक्ष्यं विध्यति इति। **महारथः** = महान् रथः यस्य सः। एको दश सहस्रेण योधयेद् यस्तु धन्विनाम्। शस्त्रशास्त्रप्रवीणश्च स महारथ उच्यते॥ **वोढा** = वहति इति, वह् + तृच्। **सप्तिः** = सपति सङ्ग्रामेषु सहसा समवैति, अश्वः। **पुरन्धिः** = पुरं शरीरं रूपादिगुणसमन्वितं दधाति पुर + धा + कि। **जिष्णुः** = जयति इति, जि + ग्स्नु = जयशीलः। **रथेष्ठाः** = रथे तिष्ठति इति। **सभेयः** = सभायां साधुः, सभा + ढ। **युवा** = युवन्, प्रथमा एकवचन। **योगः** = अप्राप्तस्य प्राप्तिः योगः, युज् + घञ्। **क्षेमः** = प्राप्तस्य रक्षणं क्षेमः = क्षि (निवासे) + मन्, कुशलम्। **आजायताम्** = आ + जन् + लोट् प्र. पु. एकवचन (वेदों में कभी-कभी उपसर्ग क्रियापद के साथ न रहकर कुछ पदों के अन्तराल पर भी रहते हैं)। **कल्पताम्** = कल्प् + लोट् लकार प्र. पु. एकवचन।



प्रथमः पाठः

अस्माकं राष्ट्रियप्रतीकानि

पाठपरिचयः

राष्ट्रीय प्रतीक किसी भी देश की संस्कृति के परिचायक होते हैं। हमारे देश के राष्ट्रीय प्रतीक भारतीय पहचान और विरासत का मूलभूत भाग हैं, जो भारतीय नागरिकों के हृदयों में देशभक्ति, राष्ट्रगौरव और स्वाभिमान की भावना का संचार करते हैं। भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों में से कुछ राष्ट्रीय प्रतीक हैं—भारत का राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान, राष्ट्रीय पक्षी मयूर, राष्ट्रीय पशु व्याघ्र, एवं राष्ट्रीय पुष्प कमल।

सर्वेषु राष्ट्रेषु राष्ट्रियवैशिष्ट्ययुक्तानि वस्तूनि प्रतीकरूपेण स्वीक्रियन्ते तत्रत्यैः जनैः। तेषु प्रतीकेषु तद्वाष्ट्रस्य गौरवं चारित्र्यं गुणाश्च प्रतिभासन्ते। तान्येव राष्ट्रियप्रतीकानि निगद्यन्ते।

अस्माकं राष्ट्रेऽपि कतिपयानि प्रतीकानि स्वीकृतानि सन्ति। तान्यस्माकं संस्कृतिं महत्त्वं च व्यञ्जन्ति। पक्षिषु कतमः पशुषु कतमः पुष्पेषु कतमत् वाऽस्माकं राष्ट्रस्य प्रातिनिध्यं विदधातीति विचार्यैव प्रतीकानि निर्धारितानि सन्ति।

मयूरः—पक्षिषु मयूरः राष्ट्रियपक्षिरूपेण स्वीकृतोऽस्ति। मयूरोऽतीव मनोहरः पक्षी वर्तते। चन्द्रकवलसंवलितानि चित्रितानि तस्य पिच्छानि मनांसि हरन्ति। यदा गगनं मेघैराच्छन्नं भवति तदा मयूरो नृत्यति। तस्य तदानीन्तनं नर्तनं नयनसुखकरमपि च चेतश्चमत्कारकं भवति। मयूरो विषधरान् खादति।

व्याघ्रः—पशुषु व्याघ्रः भारतस्य राष्ट्रियप्रतीकम्। व्याघ्रेषु चित्रव्याघ्रः विशिष्टो विद्यते। को न जानाति चित्रव्याघ्रस्यौजः पराक्रमं स्फूर्तिञ्च? एतज्जातीयाः व्याघ्राः अस्मद्देशस्य वनेषूपलभ्यन्ते। एतेषां शरीरे स्थूल-कृष्णरेखाः भवन्ति। व्याघ्रोऽसावतीव तीव्रधावकः सततसावहितः सङ्कटं विदूरादेव जिघ्रन् तदपनेतुं सचेष्टः स्वलक्ष्यमवाप्तुं तत्परः स्वसीम्नि एव पर्यटन् वन्यो जन्तुर्विश्रुतो जगति।

कमलम्—कमलं सरसिजं पद्मं पङ्कजं शतदलमित्यादिनामभिः प्रसिद्धं पुष्पमस्माकं राष्ट्रियप्रतीकत्वेन स्वीकृतम्। तस्य कोमलत्वं मनोहरत्वं विकासशीलत्वं पवित्रत्वञ्चाभिलक्ष्यैव कविभिः तस्य बहुशः वर्णनं कृतम्। न कश्चिन्महाकविः संस्कृतभाषायां हिन्दीभाषायां वा विद्यते येनैतस्य पुष्पस्य माहात्म्यं न गीतम्।

शरदृतौ मनोहरं पुष्पमिदं यत्र तत्र जलसंकुलेषु तडागेषु सरस्सु चानायासेनोत्पद्यते वर्धते रविकरनिकरसंसर्गात् प्रस्फुटति। पङ्के जायते पङ्कजं जलसंयोगं शरत्कालञ्चावाप्य वर्धते शोभते च। तथैव कस्मिंश्चित् कुले जातः जनः सौविध्यमुपयुक्तावसरञ्च लब्ध्वा वर्धितुं क्षमत इति तत्पुष्पस्य राष्ट्रकृते सन्देशः।



राष्ट्रगानम्— सर्वेषां स्वतन्त्रदेशानां स्वकीयमेकं गानं भवति तदेव राष्ट्रगानसंज्ञयाऽवबुध्यते। प्रत्येकं राष्ट्रं स्वराष्ट्रगानस्य सम्मानं करोति। महत्सु अवसरेषु तद्गानं गीयते। यदि कश्चिदन्यराष्ट्राध्यक्षोऽस्माकं देशमागच्छति तदा तस्य सम्मानाय तस्य राष्ट्रगानमस्मद्राष्ट्रगानं च वादकैः वाद्येते। विद्यालयेषु प्रार्थनानन्तरं प्रतिदिनं राष्ट्रगानं गीयते।

अस्माकं राष्ट्रगानं विश्वकविना कवीन्द्रेण रवीन्द्रेण रचितं, 'जनगणमन' इति संज्ञया सम्पूर्णे जगति विश्रुतं वर्तते। राष्ट्रगानमिदं द्वापञ्चाशत्पलात्मकं भवति। राष्ट्रगानं सदोत्थितैः जनैः सावधानमुद्रया गेयम्। राष्ट्रगानावसरेऽङ्गसञ्चालनं निषिद्धम्। चलतोऽपि कस्यचित्कर्णकुहरे गीयमानस्य राष्ट्रगानस्य ध्वनिः दूरादप्यापतति चेत्तदा तत्रैव सावधानमुद्रया तेनाविचलं स्थातव्यम्।

राष्ट्रध्वजः— सर्वेषु राष्ट्रप्रतीकेषु राष्ट्रध्वजस्य महत्त्वं वर्तते। सर्वस्य स्वतन्त्रराष्ट्रस्य स्वकीयो ध्वजो भवति। तद्देशवासिनो जनाः— नराः नार्यश्च स्वराष्ट्रध्वजस्य सम्मानं प्राणपणेन रक्षन्ति।

त्रिवर्णात्मको मध्येऽशोकचक्राङ्कितोऽस्माकं राष्ट्रध्वजः 'तिरङ्गा' शब्देन संसारे विश्रुतो विद्यते। ध्वजस्याधोभागः हरितवर्णात्मकः सुखसमृद्धिविकासानां सूचकः, मध्यभागे श्वेतवर्णः ज्ञान-सौहार्द-सदाशयादिसद्गुणानां द्योतकः, ऊर्ध्वभागे च स्थितः गैरिक वर्णः त्यागस्य शौर्यस्य च बोधकः। ध्वजस्य मध्यभागस्थितश्वेतवर्ण-मध्येऽवस्थितमशोकचक्रं धर्मस्य सत्यस्याहिंसायाश्च प्रत्यायकम्। चक्रे चतुर्विंशति शलाकाः पृथगपि चक्रमूले एकत्र सम्बद्धाः भारते भाषाधर्मजातिवर्णलिङ्गभेदेषु सत्स्वपि भारतमेकं राष्ट्रमिति द्योतयन्ति।

राष्ट्रध्वजेन निर्धारितदीर्घविस्तारपरिमितेन भवितव्यम्। एषः सदा स्वच्छोऽविकृतवर्णः तिष्ठेत्। जीर्णः शीर्णो विदीर्णो वा ध्वजो नोपयोगयोग्यः। राष्ट्रियशोकावसरे ध्वजोऽर्धमुच्छ्रीयते।

इत्येतानि राष्ट्रियप्रतीकान्यस्माकं स्वातन्त्र्यस्य प्रत्यायकानि समादरणीयानि।

शब्दार्थः

प्रतीकानि = चिह्न। व्यञ्जन्ति = व्यक्त करते हैं। चन्द्रकवलयसंवलितानि = चन्द्रमा के आकार के वृत्तों से युक्त। मेघाच्छन्नम् = बादलों से ढका हुआ। चित्रव्याघ्रः = चितकबरा बाघ। सततसावहितः = निरन्तर सावधान। रविकरनिकरसंसर्गात् = सूर्य की किरणों के सम्पर्क से। जलसंकुलेषु = जल से भरे हुए। अवबुध्यते = समझा जाता है। द्वापञ्चाशत्पलात्मकम् = बावन पलों का (बावन सेकेण्ड)। गैरिकवर्णः = केसरिया रंग। प्रत्यायकम् = ज्ञान कराने वाला। चतुर्विंशतिः शलाकाः = चौबीस तीलियाँ। समवतार्य = ठीक से उतार कर। अर्धमुच्छ्रीयते = आधा ऊँचा किया जाता है। समादरणीयानि = आदर करने योग्य हैं।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत-

- (क) भारतस्य राष्ट्रियः पक्षी कः?
- (ख) मयूरः कान् खादति?
- (ग) व्याघ्रस्य शरीरे कस्य वर्णस्य रेखाः सन्ति?
- (घ) कमलं कस्याम् ऋतौ प्रस्फुटति?
- (ङ) राष्ट्रगानं कति पलात्मकं भवति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

- (क) मयूरः कदा नृत्यति?
- (ख) कमलपुष्पस्य राष्ट्रस्य कृते कः सन्देशः?
- (ग) भारतदेशस्य राष्ट्रगानावसरे किं निषिद्धम्?
- (घ) किंप्रकारकः राष्ट्रध्वजः नोपयोगयोग्यः भवति?

3. स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

- (क) पक्षिषु मयूरः राष्ट्रियपक्षिरूपेण स्वीकृतोऽस्ति।
- (ख) व्याघ्रेषु चित्रव्याघ्रः विशिष्टो विद्यते।
- (ग) शरदृतौ मनोहरं पुष्पमिदं यत्र-तत्र जलसङ्कुलेषु तडागेषु सरस्सु चानायासेनोत्पद्यते।
- (घ) राष्ट्रगानं सदोत्थितैः जनैः सावधानमुद्रया गेयम्।

4. सुमेलयत्—

‘क’—स्तम्भः

तीव्रधावकः

चित्रितपिच्छयुक्तः

द्वापञ्चाशत्पलात्मकम्

त्रिवर्णात्मकः

‘ख’—स्तम्भः

राष्ट्रगानम्

राष्ट्रध्वजः

व्याघ्रः

मयूरः

5. अधोलिखितानां गद्यांशानां हिन्दीभाषया अनुवादं कुरुत—

- (क) पक्षिषु मयूरः विषधरान् खादति।
 (ख) पशुषु व्याघ्रः जन्तुर्विश्रुतो जगति।
 (ग) सर्वेषां स्वतन्त्रदेशानां राष्ट्रगानं गीयते।
 (घ) त्रिवर्णात्मको राष्ट्रमिति द्योतयन्ति।

6. ‘अस्माकं राष्ट्रियप्रतीकानि’ पाठस्य सारांशं लिखत।

7. अधोलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा उत्तरत—

कमलं सरसिजं न गीतम्।

(i) कः कमलस्य पर्यायवाची शब्दः नास्ति—

(क) सरसिजम् (ख) पद्मम् (ग) पङ्कजम् (घ) पाटलम्

(ii) कस्य पुष्पस्य वर्णनं कविभिः बहुशः कृतम्?

(क) कर्णिकारस्य (ख) कुमुदिन्याः (ग) कमलस्य (घ) कुन्दस्य

8. बहुविकल्पीयप्रश्नाः

समीचीनं विकल्पं चिनुत—

(क) भारतीयः राष्ट्रियपक्षी कः अस्ति?

(क) चटका (ख) चकोरः (ग) मयूरः (घ) कपोतः

(ख) अस्माकं राष्ट्रियपुष्पं किम् अस्ति?

(क) चम्पकः (ख) पाटलम् (ग) शेफालिका (घ) कमलम्

(ग) भारतस्य राष्ट्रगानस्य रचयिता कः ?

(क) महात्मा गांधी (ख) बंकिमचन्द्रचटर्जी

(ग) रवीन्द्रनाथ टैगोरः (घ) डॉ० भीमराव आंबेडकरः

(घ) राष्ट्रियशोकावसरे राष्ट्रध्वजस्य स्थितिः का?

(क) पूर्णमुच्छ्रीयते (ख) अर्धमुच्छ्रीयते (ग) न उच्छ्रीयते (घ) अल्पमुच्छ्रीयते

द्वितीयः पाठः

आदिकविः वाल्मीकिः

पाठपरिचयः

आदिकवि वाल्मीकि संस्कृत साहित्याकाश के देदीप्यमान नक्षत्र की तरह हैं। वाल्मीकि ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के आदर्श चरित को काव्यबद्ध किया है। आदिकवि शब्द 'आदि' और 'कवि' के मेल से बना है। 'आदि' का अर्थ होता है—'प्रथम' और 'कवि' का अर्थ होता है—'काव्य का रचयिता'। वाल्मीकि ने संस्कृत के प्रथम महाकाव्य की रचना की थी, जो रामायण के नाम से प्रसिद्ध है। प्रथम संस्कृत महाकाव्य की रचना करने के कारण वाल्मीकि आदिकवि कहलाये।

संस्कृतवाङ्मयस्यादिकविः महामुनिः वाल्मीकिः अस्ति। महामुनिना रामायणी कथा स्वरचिते काव्यग्रन्थे निबद्धा। भगवतो रामस्य चरितमस्माकं देशस्य संस्कृतेश्च प्राणभूतं तिष्ठति। वस्तुतस्तु महामुनिना रामस्य लोककल्याणकारकं रम्यमादर्शभूतं रूपं जनानां समक्षमुपस्थापितम्।

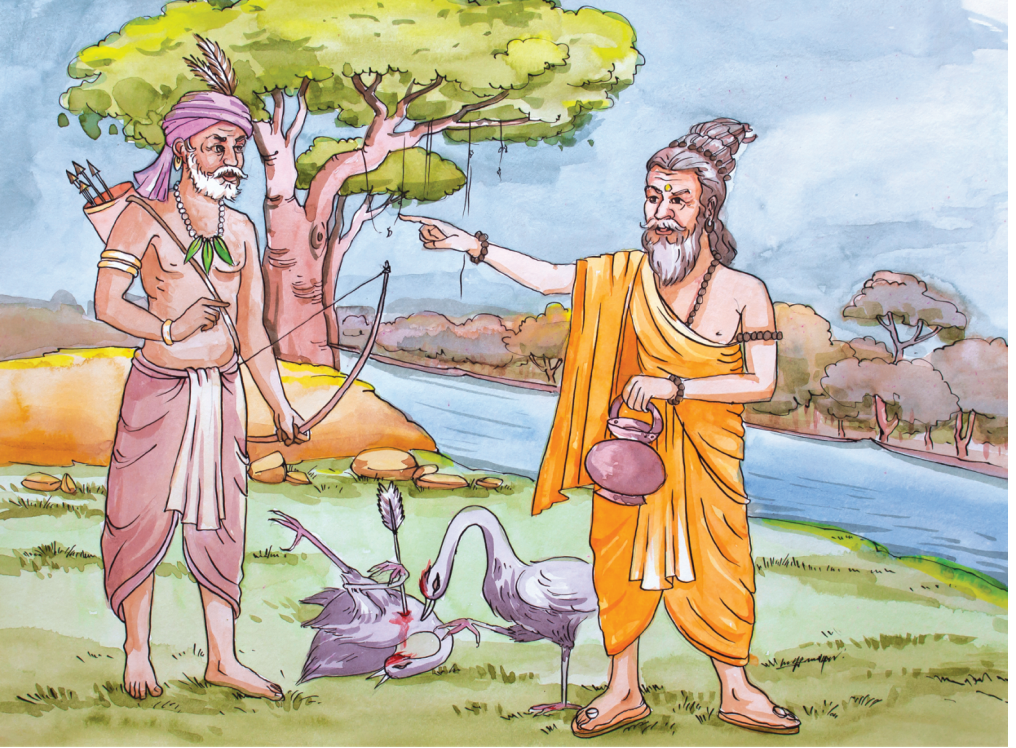
पूर्वजन्मनः विपाकात् परधनलुण्ठनमेवास्य कर्माभूत्। वनान्तरे पथिकानां धनलुण्ठनमेव तस्य जीविकासाधनमासीत्। लुण्ठनव्यापारे संशयश्चेत् प्राणघातेऽपि सः सङ्कोचं नाऽकरोत्। इत्थं हिंसाकर्मणि लिप्तः एकदा वनपथे पथिकमाकुलतया प्रतीक्षमाणोऽसौ मुनिवरमेकमागच्छन्तमपश्यत्, दृष्ट्वा च हर्षेण प्रफुल्लो जातः। समीपमागते मुनिवरे रक्ते अक्षिणी भ्रामयन् भीमेन रवेण तम् अवदत्—“यत्किञ्चित्तवास्ति तत्सर्वं मह्यं देहि नो चेत्तव प्राणसंशयो भविष्यति।” मुनिनाऽप्युक्तं, “लुण्ठक! मत्पाश्वे तु किञ्चिदपि नास्ति, परं त्वां पृच्छामि किं करोषि लुण्ठितेन धनेन? इदं पापकर्म किमिति न जानासि? जानामि तथापि करोमि। लुण्ठितेन धनेन परिवारजनस्य पोषणरूपं महत्कार्यं करोमीति तेनोक्तम्। मुनिः पुनरपृच्छत्—पापकर्मणार्जितेन वित्तेन पोषितास्तव परिवारसदस्याः किं तव पापकर्मफलेऽपि सहभागिनः स्युरिति। स अवदत्—“वक्तुं न शक्नोमि परं तान् पृष्ट्वा वदिष्यामि। त्वं तावदत्रैव विरम यावदहं तान् संपृच्छ्यागच्छामि।” इत्युक्त्वा तं मुनिवरं रज्जुभिः दृढं बद्ध्वा स्वकुटुम्बिनः प्रष्टुं जगाम।

अथ तस्य कुटुम्बिनः तस्य प्रश्नं श्रुत्वा भृशं क्रुद्धाः, अवदन् च—“कथं वयं तव पापफले सहभागिनो भवेम? वयं किं जानीमहे त्वं किं करोषि कया वा रीत्या धनार्जनं विदधासि? नास्माभिः त्वं पापकर्म कर्तुमादिष्टः।” तेषां स्वपरिवारजनानाम् उत्तरम् आकर्ण्य सोऽतीव विषण्णोऽभवत्। द्रुतं मुनिवरमुपगम्य सर्वं च तत्परिवारजनाख्यातम् अभाषत। परं निर्विण्णं तं मुनिः तस्य हृदयशोकशमनाय ‘राम’ इति जपितुमुपादिशत्। ‘राम’ इति समुच्चारणेऽक्षमः स्ववृत्त्यनुसारं ‘मरा’ इत्येव जपितुमारभत। इत्थं सः बहुवर्षाणि यावत् समाधौ लीनः तीव्रं तपश्चचार। तपसि रतस्य तस्य शरीरं वल्मीकमृत्तिकाभिः

आवृतं जातम्। अथ कदाचित् प्रचेतसा निरन्तरजलधारया तस्य शरीरात् वल्मीकमृत्तिकाः परिस्राविता अभवन्। मृत्तिकाभिः तिरोहितं तस्य शरीरं पुनः प्रकटितम्। ततो मुनिभिः सः संस्तुतोऽभ्यर्थितश्च चक्षुषी उन्मील्योदतिष्ठत्। वल्मीकात् प्रोद्भूतत्वाद् वाल्मीकिरिति, प्रचेतसा जलधारया मृत्तिकायाः परिस्रुतत्वाद् प्राचेतस इति तस्य नामद्वयं जातम्। रामायणे मुनिना स्वपितुः नाम प्रचेताः तस्य दशमः पुत्रोऽहमित्थमुल्लिलेख। यथा च-

“प्राचेतसोऽहं दशमः पुत्रो राघवनन्दन” (उत्तरकाण्डम्)

अथ कदाचित् स ब्रह्मर्षेः नारदात् भगवतो रामस्य लोककल्याणकरं वृत्तं शुश्राव। तदाप्रभृत्येव रामचरितं काव्यबद्धं कर्तुमाकाङ्क्षते स्म। अथैकदा महर्षिः मध्याह्नस्नानाय तमसानदीं गच्छन्नासीत्। तत्र वनश्रियं निरीक्षमाणो महामुनिः स्वच्छन्दं विचरन्तं क्रौञ्चमिथुनमेकमपश्यत्। पश्यत एव तस्य कश्चित् पापनिश्चयो व्याधः तस्मान्मिथुनादेकं बाणेन हतवान्। बाणेन विद्धं महीतले लुण्ठन्तं शोणितपरीताङ्गं तं विलोक्य क्रौञ्ची करुणया गिरा रुराव। क्रौञ्च्याः करुणारवं श्रुत्वा मुनिहृदयालीनः शोकानलपरिद्रुतः करुणरसः श्लोकच्छलाद् हृदयादेवं निर्गतोऽभवत्-



“मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।”

श्लोकोऽयमाम्नायादन्यत्र छन्दसां नूतनोऽवतार आसीत्। एवं ब्रुवतस्तस्य हृदि महती चिन्ता बभूव-
अहो! शकुनिशोकपीडितेन मया किमिदं व्याहृतम्। अत्रान्तरे वेदमूर्तिश्चतुर्मुखो भगवान् ब्रह्मा महामुनिमुपगम्य
सस्मितमुवाच-महामुने! श्लोकं ब्रुवता त्वया त्वेष एव धर्मः पालितः। तन्नात्र विचारणा कार्या। साम्प्रतं
यथा नारदाच्छ्रुतं तथा त्वं श्रीमद्भगवतो रामचन्द्रस्य कृत्स्नं चरितं वर्णय। मत्प्रसादात् निखिलं च रामचरितं
तव विदितं भविष्यति। किं बहुना, यावन्महीतले गिरिसरित्समुद्राः स्थास्यन्ति तावल्लोके रामायणकथा
प्रचलिष्यतीत्यादिश्य भगवानब्जयोनिरन्तर्हितोऽभवत्। ततो योगबलेन नारदोक्तं समग्रं रामचरितमधिगम्य
गङ्गातमसयोरन्तराले तटे सप्तकाण्डात्मकं रामायणाख्यमादिमहाकाव्यं रचयामास, तदनन्तरं मुनेः विश्रमार्थं
द्वौ अपराश्रमौ अभूताम्। एकश्चित्रकूटे अपरश्च कानपुरमण्डलान्तर्गत ब्रह्मावर्तान्तः, आधुनिके बिठूरनाम्नि
स्थाने आसीत्।

शब्दार्थः

वाङ्मयस्य = साहित्य के। आदिकविः = प्रथम कवि। निबद्धा = लिखी गयी है। प्राणभूतम् =
जीवनाधार। लोककल्याणकारकम् = संसार के लिए कल्याणकारी। समक्षम् = सामने। उपस्थापितम् =
उपस्थित किया (रखा)। विपाकात् = फलस्वरूप। परधनलुण्ठनम् = दूसरों का धन लूटना। प्राणघातेऽपि =
प्राण ले लेने में भी। इत्थम् = इस प्रकार। लिप्तः = लगा हुआ। पथिकमाकुलतया = पथिक की
व्याकुलता से। प्रतीक्षमाणः = प्रतीक्षा करते हुए। मुनिवरम् = श्रेष्ठ मुनि को। आगच्छन्तम् = आते
हुए। प्रफुल्लः जातः = प्रसन्न हो गया। रक्ते अक्षिणी = लाल-लाल दोनों आँखों को। भ्रामयन् =
घुमाता हुआ। प्रत्युक्तम् = उत्तर दिया। वित्तेन = धन से। पृष्ट्वा = पूछकर। रज्जुभिः = रस्सियों से।
प्रष्टुम् = पूछने के लिए। जगाम = चला गया। भृशम् = ज्यादा (बहुत)। सन्तः = होकर। अवदन् =
बोले। विषण्णः = दुःखी। द्रुतम् = शीघ्र ही। उपगम्य = पहुँचकर। शोकशमनाय = दुःख की शान्ति
के लिए। अक्षमः = असमर्थ। जपितुम् आरभत = जपना आरम्भ किया। तपश्चचार = तप करता रहा।
आवृतम् = ढका। प्रचेतसा = वरुण देव के द्वारा। परिस्त्राविता अभवन् = गीली होकर बह गयी। तिरोहितम्
= छिपा हुआ। उन्मील्य = खोलकर। उदतिष्ठत् = उठ बैठे। प्रोद्भूतत्वात् = प्रकट होने के कारण।
शुश्राव = सुना। वृत्तम् = चरित्र। मिथुनम् = जोड़े को। व्याधः = शिकारी। रुराव = रोने लगी।
शोणितपरीताङ्गम् = खून से लथपथ शरीरवाले। शाश्वतीः समाः = चिरकाल तक। अवधीः = मार
डाला। काममोहितम् = काम-क्रीड़ा में रत। मा = नहीं। अगमः = प्राप्त करो। प्रतिष्ठाम् = यश को।
ब्रुवतः = कहते हुए। शकुनिशोकपीडितेन = पक्षी के शोक से दुःखित हुए। व्याहृतम् = कह दिया।
कृत्स्नम् = सम्पूर्ण। स्थास्यन्ति = स्थित रहेंगे। अब्जयोनिः = कमल से उत्पन्न ब्रह्मा। रचयामास = रच
डाला।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत-

- (क) आदिकविः कः अस्ति?
- (ख) धनलुण्ठनं कस्य जीविकासाधनम् आसीत्?
- (ग) वाल्मीकिः मुनिवरं काभिः बद्ध्वा स्वकुटुम्बिनः प्रष्टुम् जगाम?
- (घ) वाल्मीकिः कस्मात् रामस्य वृत्तं शुश्राव?
- (ङ) रामायणे कति काण्डानि सन्ति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

- (क) वाल्मीकेः कृतिः का अस्ति?
- (ख) वाल्मीकेः पितुः नाम किमस्ति?
- (ग) 'राम' इत्यस्य स्थाने वाल्मीकिः किं जपितुमारभत?
- (घ) आदिकाव्यं किमस्ति?

3. अधोलिखितानां शब्दानां स्ववाक्येषु प्रयोगं कुरुत-

- (क) आदिकविः
- (ख) रामस्य
- (ग) एकदा
- (घ) जानासि
- (ङ) अभवत्

4. सन्धि-विच्छेदं कुरुत-

- (क) कर्माभूत् — कर्म + अभूत्
- (ख) नाकरोत् — +
- (ग) तेनोक्तम् — +
- (घ) इत्येव — +
- (ङ) सोऽतीव — +

5. अधोलिखितानां गद्यांशानां हिन्दीभाषया अनुवादं कुरुत-

- (क) संस्कृतवाङ्मयस्यादिकविः समक्षमुपस्थापितम्।
- (ख) पूर्वजन्मनः विपाकात् प्राणसंशयो भविष्यति।
- (ग) अथ तस्य कुटुम्बिनः 'मरा' इत्येव जपितुमारभत।
- (घ) अहो! शकुनिशोकपीडितेन अन्तर्हितोऽभवत्।

6. 'आदिकविवाल्मीकिः' पाठस्य सारांशं हिन्दीभाषया लिखत।

7. गद्यांशं पठित्वा उचितं विकल्पं चिनुत-

अथैकदा महर्षिः बाणेन हतवान्।

(क) महर्षिः किमर्थं तमसानदीं गतवान्?

(i) प्रातस्सवनाय (ii) मध्याह्नस्नानाय (iii) सायंसवनाय (iv) रात्रिसवनाय

(ख) महामुनिः किम् अपश्यत्?

(i) क्रौञ्चमिथुनम् (ii) कपोतमिथुनम् (iii) शुकमिथुनम् (iv) मयूरमिथुनम्

(ग) कः मिथुनात् एकं बाणेन हतवान्?

(i) भल्लूकः (ii) व्याधः (iii) व्याघ्रः (iv) श्वा

8. बहुविकल्पीयप्रश्नाः-

समीचीनं विकल्पं चिनुत-

(i) संस्कृतवाङ्मयस्य आदिकविः कः अस्ति?

(क) कबीरदासः (ख) वेदव्यासः (ग) वाल्मीकिः (घ) कात्यायनः

(ii) महामुनिना का कथा स्वरचिते काव्यग्रन्थे निबद्धा?

(क) रामायणी कथा (ख) नलदमयन्ती कथा (ग) दन्तकथा (घ) कृष्णकथा

(iii) वाल्मीकिः जीविकासाधनं किम् आसीत्?

(क) धनलुण्ठनं (ख) सेवनं (ग) दहनम् (घ) न किमपि

(iv) रामायणस्य प्रणेता कः आसीत्?

(क) पाणिनिः (ख) पतञ्जलिः (ग) वाल्मीकिः (घ) वेदव्यासः

(v) वाल्मीकिना रामायणस्य रचना कतिषु काण्डेषु कृता अस्ति?

(क) सप्तसु (ख) षट्सु (ग) नवसु (घ) अष्टसु

तृतीयः पाठः

बन्धुत्वस्य सन्देशा रविदासः

पाठपरिचयः

रामानन्द के बारह प्रसिद्ध शिष्यों में एक रविदास थे। उनका जन्म काशी जनपद के मडुवाडीह नामक ग्राम में संवत् 1471 विक्रमी में माघ मास की पूर्णिमा को हुआ था। रविवार के दिन जन्म होने के कारण इनका नाम रविदास पड़ा।

रविदास ने धर्म एवं कर्म की प्रतिष्ठा की। बाह्याडम्बर का विरोध किया और धर्म का सच्चे मन से आचरण का उपदेश दिया। रविदास ने प्रचारित किया कि फल की इच्छा से विरत रहकर बिना किसी अहंकार के ईश्वर-प्राप्ति संभव है। रविदास निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे, परन्तु सगुण सम्प्रदाय वालों से घृणा नहीं करते थे। रविदास ने दलितों, दीनों एवं निर्धनों में ईश्वर के दर्शन किए। उनके अनुसार सामाजिक विषमताएँ मानवकृत हैं, ईश्वर ने सबको समान बनाया है। विक्रम संवत् 1597 में राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में रविदास ने 126 वर्ष की अवस्था में शरीर त्याग किया।

परमोपासकस्य रामानन्दस्य द्वादश शिष्या आसन्। तेषु शिष्येषु रविदासो लोके रैदास इति संज्ञया ख्यात एकः शिष्यः आसीत्। रविदासस्य जन्म काश्यां माण्डुरनाम्नि (मडुवाडीह) ग्रामे एकसप्तत्युत्तरचतुर्दशशततमे (1471 वि.) विक्रमाब्दे माघमासस्य पूर्णिमायान्तिथौ रविवासरेऽभवत्। रविवासरे तस्य जन्म इति हेतोः रविदास इति नाम जातमित्यनुमीयते।

वस्तुतस्तु तादृशा एव महापुरुषाः 'सन्त' इति शब्देन भारतीयजनमानसे समादृता अभवन्, ये परदुःखकातराः परहितरताः दुःखजनसेवापरायणाः दलितान् शोषितान् प्रति सदयाः स्वसुखमविगणयन्तः यदृच्छालाभसन्तुष्टा आसन्।



सत्पुरुषो महात्मा रविदासः स्वकर्मणि निरतः सन् परमात्मनो माहात्म्यमुपवर्णयन् दुःखितान् जनान्प्रति सदयहृदयः कर्मणः प्रतिष्ठां लोकेऽस्थापयत्। धर्मस्य बाह्याचारः एव परस्परवैरस्य हेतुरिति सः विश्वसिति स्म। अतो बाह्याचारान् परिहाय धर्माचरणं विधेयम्। गङ्गास्नानाच्छरीशुद्धेरपेक्षया मनसः शुद्धिरावश्यकीति तेनोक्तम्। पूते तु मनसि काष्ठस्थाल्यामेव गङ्गेति तस्योक्तिः प्रसिद्धैवास्ति।

रविदासः कस्याञ्चिदपि पाठशालायां पठितुं न गतोऽतस्तस्य ज्ञानं पुस्तकीयं नासीत्। जगतो नश्वरत्वं परमात्मनोऽनश्वरत्वं व्यापकत्वमित्यादिदार्शनिकं ज्ञानं गुरोरनुकम्पया तेन लब्धं तस्य च प्रेरणयैव तथाभूतस्य ज्ञानस्योपदेशो जनेभ्यस्तेन दत्तः।

सः तपस्तप्तुं गहनं वनं न जगाम न वा गिरिगुहायामुपविश्य साधनरतः ज्ञानमधिगन्तुं चेष्टते स्म। वीतरागभयक्रोधोऽसौ जगति निवसन्नपि जगतः बन्धनात् पद्मपत्रमिव मुक्तः व्यवहरति स्म। स्वकर्मणि निरतः फलम्प्रति निराकाङ्क्षः स्वगृहेऽपि परमात्मानं साक्षात्कर्तुं शक्नोति इति रविदासः प्रत्येति। अतो विभिन्नोपासनास्थलेषु वनेषु रहसि वा ईश्वरानुसन्धानापेक्षया स्वहृदये एवानुसन्धानमुचितम्। रविदासः स्वरचिते पद्ये गायति-यदा अहमस्मि तदा त्वं नासि, यदा त्वमसि तदा अहं नास्मि।

रविदासः कबीरदासो नानकदेवप्रभृतयः सन्तो महात्मानः निर्गुणमेवेश्वरं गायन्ति स्म, परन्ते सगुणसम्प्रदायावलम्बिनः प्रति विद्वेषिणो नासन्। तैः रचितेषु पदेषु यत्र तत्र भक्तितत्त्वमवलोक्यते।

रविदासः पृथ्वीतले विद्यमानेषु दुःखितेषु, दरिद्रेषु दलितेषु च सुतरां रमते स्म। स दलितेषु, दीनेषु, दरिद्रेष्वेवेश्वरमपश्यत्। तेषां सेवा, तान्प्रति सहानुभूतिः प्रेमदर्शनं चेश्वरार्चनमिति तस्य विचारः। सामाजिकवैषम्यं न वास्तविकं प्रत्युत परमात्मना सर्वे समाना एव रचिताः, सर्वाश्च तस्येश्वरस्य सन्ततयोऽतः परस्परं बन्धुभूताः। मनुष्येषु तर्हि कथं मिथः वैरम्? इत्थं समत्वस्य बन्धुतायाश्चोपदेशं जनेभ्योऽददात्। जातिवर्णसम्प्रदायादिभेदा अपि मनुष्यरचिता परमात्मनः इच्छाप्रतिकूलाः। इत्थं रविदासेन मनुष्यजातौ स्पृश्यास्पृश्यादिदोषाणामुच्चावचभेदानां चातीवतीव्रस्वरेण विरोधः कृतः। हरिं भजति स हरेर्भवति। हरिभजने न कश्चित्पृच्छति जातिं वर्णं वेति सत्यं प्रतिपादयन् देशस्याखण्डतायाः राष्ट्रस्यैक्यस्य च रक्षणे सः प्रायतत।

शब्दार्थः

परमोपासकस्य = (परम + उपासकस्य) परम भक्त, महान् उपासक। भाष्यते = कहा जाता है। लोके = संसार में। संज्ञया = नाम से। ख्यातः = प्रसिद्ध। काश्याम् = काशी में। रविवासरे = रविवार के दिन। इत्यनुमीयते = (इति + अनुमीयते) ऐसा अनुमान किया जाता है। वस्तुतस्तु = वास्तव में। परदुःखकातराः = दूसरों के दुःख से दुःखी होनेवाले। परहितरताः = दूसरों के हित (भलाई) में लगे रहनेवाले। अविगणयन्तः = परवाह (चिन्ता) न करते हुए। स्वकर्मणि = अपने कर्म में, निरतः = लगे हुए। माहात्म्यम् = महिमा, महानुभावता। सदयहृदयः = दयालु हृदय। बाह्याचारः = (बाह्य + आचारः) बाहरी आचरण। विधेयम् = करना चाहिए। तेनोक्तम् = (तेन + उक्तम्) उन्होंने कहा। पूते = पवित्र

होने पर। **काष्ठस्थाल्याम्** = काठ की थाली में, कठौती में। **पठितुम्** = पढ़ने के लिए। **पुस्तकीयम्** = पुस्तक से सम्बन्धित। **नश्वरत्वम्** = नश्वरता। **गुरोरनुकम्पया** = गुरु की अनुकम्पा (कृपा) से। **दत्तः** = दिया। **तपस्तप्तुम्** = तपस्या करने के लिए। **गहनम्** = घना, सघना। **गिरिगुहायाम्** = पहाड़ की गुफा में। **साधनरतः** = साधना में लगकर। **ज्ञानमधिगन्तुम्** = ज्ञान प्राप्त करने के लिए। **जगति** = संसार में। **पद्मपत्रमिव** = कमल के पत्रों के समान। **निरतः** = लगा हुआ। **निराकाङ्क्षः** = बिना इच्छा के, आकांक्षा रहित। **प्रत्येति** = मानते हैं। **रहसि** = एकान्त में। **निर्गुणम्** = निर्गुण, मायारहित। **विद्वेषिणः** = द्वेष करनेवाले। **यत्र तत्र** = जहाँ-तहाँ। **विद्यमानेषु** = विद्यमान, स्थित। **सुतराम्** = अधिक। **ईश्वरार्चनम्** = (ईश्वर + अर्चनम्) ईश्वर की पूजा। **प्रत्युत** = बल्कि। **स्पृश्यास्पृश्य** = छुआछूत। **उच्चवचाभेदानाम्** = ऊँच-नीच के भेदों का। **प्रतिपादयन्** = प्रतिपादन करते हुए, बताते हुए। **प्रायतत** = प्रयत्न किया।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत-

- (क) परमोपासकस्य रामानन्दस्य कति शिष्याः आसन्?
- (ख) रविदासस्य जन्म काश्यां कस्मिन् ग्रामे अभवत्?
- (ग) कस्य ज्ञानं पुस्तकीयं नासीत्?
- (घ) बाह्याचारान् परिहाय किं विधेयम्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

- (क) रैदासः कस्य शिष्यः आसीत्?
- (ख) रविदासः इति नाम कथं जातम्?
- (ग) रविदासः स्वरचिते पद्ये किं गायति?
- (घ) हरिं भजति स हरेर्भवतीति कस्य उद्घोषः?

3. अधोलिखितानां गद्यांशानां हिन्दीभाषया अनुवादं कुरुत-

- (क) परमोपासकस्य जातमित्यनुमीयते।
- (ख) सत्पुरुषो महात्मा तस्योक्तिः प्रसिद्धैवास्ति।
- (ग) सः तपस्तप्तुं अहं नास्मि।
- (घ) रविदासः पृथ्वीतले प्रायतत।

4. पठितस्यास्य पाठस्य सारांशं लिखत।

5. अधोलिखितम् अनुच्छेदम् अधीत्य उचितं विकल्पं चिनुत-

परमोपासकस्य जातमित्यनुमीयते।

(i) रामानन्दस्य कति शिष्याः आसन्?

(क) एकादश शिष्याः (ख) द्वादश शिष्याः (ग) पञ्चदश शिष्याः (घ) सप्तदश शिष्याः

(ii) रविदासः कस्य शिष्यः आसीत्?

(क) रामानन्दस्य (ख) कबीरदासस्य (ग) नानकदेवस्य (घ) सूरदासस्य

(iii) रविदासस्य जन्म कस्मिन् वासरे अभवत्?

(क) सोमवासरे (ख) रविवासरे (ग) मङ्गलवासरे (घ) शनिवासरे

(iv) रविदासः लोके इति संज्ञया ख्यातः।

(क) रैदासः (ख) रहीमदासः (ग) धर्मदासः (घ) सूरदासः

6. बहुविकल्पीयप्रश्नाः

उचितं विकल्पं चिनुत-

(i) कः कर्मणः प्रतिष्ठां लोके अकरोत्?

(क) रविदासः (ख) सूरदासः (ग) तुलसीदासः (घ) मलूकदासः

(ii) रविदासस्य मतेन धर्मस्य बाह्याचारः कस्य हेतुः अस्ति?

(क) परस्परवैरस्य (ख) सद्भावस्य (ग) मित्रतायाः (घ) वैराग्यस्य

(iii) 'पूते तु मनसि काष्ठस्थाल्यामेव गङ्गा' इति कस्य उक्तिः?

(क) रविदासस्य (ख) कालिदासस्य (ग) कबीरदासस्य (घ) रहीमदासस्य

(iv) 'स्वहृदये एव ईश्वरानुसन्धानम् उचितम्' इति कस्य मतम् अस्ति?

(क) रविदासस्य (ख) सूरदासस्य (ग) रहीमदासस्य (घ) कबीरदासस्य

(v) 'हरिं भजति स हरेर्भवति' इति कस्योक्तिः अस्ति?

(क) रविदासस्य (ख) तुलसीदासस्य (ग) कबीरदासस्य (घ) सूरदासस्य

चतुर्थः पाठः

आजादः चन्द्रशेखरः

पाठपरिचयः

प्रस्तुत पाठ आजाद चन्द्रशेखर के जीवनवृत्त पर आधारित है। पाठ में चन्द्रशेखर आजाद के जीवन की प्रेरणाप्रद घटनाओं का उल्लेख है। इन्होंने संस्कृत पाठशाला वाराणसी में संस्कृत अध्ययन किया। वाराणसी में अध्ययन करते हुए स्वतन्त्रता संग्राम के आन्दोलन में कूद पड़े। अपना तन-मन धन न्यौछावर करते हुए भारतमाता की स्वतन्त्रता के लिए लड़ते हुए आजीवन स्वतन्त्र ही रहे।

राष्ट्रहितेऽनुरक्तानामात्मबलिं कर्तुं सहर्षमुद्यतानाम्
अग्रगण्यः चन्द्रशेखरः भारतस्य स्वातन्त्र्येतिहासे
सततमुल्लेखनीयः स्मरणीयश्च। स्वतन्त्रतायाः मधुरं
फलं भुञ्जानाः वयमधुना प्रकामं मोदामहे।
तद्वृक्षारोपकास्तु आत्मबलिदायकास्तादृशाः वीराः
एवासन्। प्रातःस्मरणीयास्ते वीराः कदापि
भारतीयैरस्माभिः नैव विस्मर्तुं शक्यन्ते। तेषां विस्मृतिस्तु
महती कृतघ्नता स्यात्। तेष्वेव वीरेषु मूर्धन्यः
परमस्वतन्त्रश्चन्द्रशेखरः आजीवनं स्वतन्त्र एवासीत्।
सततं प्रयतमानैरपि आरक्षकैः तत्करे लौहशृङ्खला न
पिनद्धा। मातृभूमिपरिचारकः राणाप्रताप इव असावपि
आत्मबलिदायको वीरः रक्तस्नातोऽपि स्वतन्त्र एव
परिभ्रमन् प्राणानत्यजत्। जीवितः स तैः कथमपि न
गृहीतः। देशभक्तानामादर्शभूतस्य चन्द्रशेखरस्य जन्म
षडधिवैकोनविंशतिशततमे (1906) ख्रिष्टाब्दे
जुलाईमासस्य त्रयोविंशतितमायां तारिकायां मध्यप्रदेशस्य
भाँवरा ग्रामेऽभवत्। तस्य जनकः श्रीसीतारामः स्वीयया
धर्मपत्न्या जगरानी नामधेयया सह उन्नावजनपदस्य बदरकाग्रामात् गत्वा तत्रैव न्यवसत्। सः तत्र
'अल्लीराजपुरराज्ये' वृत्त्यर्थं कार्यम् अकरोत्। अष्टमुद्रात्मकं मासिकं वेतनञ्चालभत्।



एकदा चन्द्रशेखरः तस्यैवोद्यानस्य फलमेकं पितरमपृष्ट्वैव अत्रोटयत्। क्रोधाविष्टस्तज्जनकः सीतारामः प्रियं सुतमेकादशवर्षदेशीयं चन्द्रशेखरं गृहान्निस्सारयामास। क्रोधाविष्टः जनकः अवोचत्, गत्वा मालाकारं क्षमां याचस्व, परं स एवं कर्तुं नोद्यतः। गृहान्निर्गत्य वर्षद्वयमितस्ततः सः प्रतिनगरं भ्रामं-भ्रामं घोरं श्रमं कृत्वा जीविकां निरवहत्। दैववशात् सः बालकः वाराणसीमुपगम्य कस्याञ्चित् संस्कृतपाठशालायाम् संस्कृताध्ययनमकरोत्।

एकदा कोऽपि दुष्टो युवा कामप्येकां भद्रयुवतीं पीडयन् चन्द्रशेखरेण बलात् गृहीतः। तं धराशायिनं कृत्वा तस्योरसि उपविष्टः चन्द्रशेखरः तं तावन्न मुमोच यावत् सः चञ्चलो दुष्टः धृष्टः निर्लज्जो युवा तां युवतिं भगिनिकेति नाकथयत् क्षमायाच्चाञ्च नाकरोत्। अनया घटनया चन्द्रशेखरस्य महती ख्यातिः जाता। आचार्यनरेन्द्रदेवस्तेन प्रभावितः काशीविद्यापीठे तस्याध्ययनव्यवस्थां कृतवान्। यदा विद्यापीठस्थानेके छात्राः असहयोगान्दोलने सम्मिलिताः जाताः तदाजादोऽपि तत्र सम्मिलितः त्रिवर्णं ध्वजमादाय 'जयतु महात्मा गाँधी', 'जयतु भारतमाता' इति घोषयन् न्यायाधीशस्य सम्मुखमानीतः। यदा स स्वकीयं नाम 'आजाद' इति पितुर्नाम 'स्वाधीन' इति गृहञ्च कारागारमवोचत्, तदा क्रुद्धो न्यायाधीशः तस्मै पञ्चदशकशाघातदण्डमददात्। तदापि सः जयकारं कृत्वा मनसि ब्रिटिशसाम्राज्यमुन्मूलयितुं संकल्पमकरोत्। कशाघातेन पीड्यमानोऽपि सः निश्चल एवासीत्। ततः बहिरागम्य सः जनैरभिनन्दितः द्वाविंशत्यधिकैकोनविंशतिशततमे (1922) वर्षे यदा महात्मना गान्धिमहोदयेनान्दोलनं निवारितं तदाजादो दुःखितो जातः यतोऽहिंसाकाण्डोलने तस्य निष्ठा नासीत्।

दैवादाजादस्य परिचयः क्रान्तिकारिणा प्रणवेशचटर्जीमहोदयेन सह संजातः। अनेन प्रसिद्धक्रान्तिकारिणा मन्मथनाथगुप्तेन साकं तस्य परिचयः कारितः। आजादस्य सत्यनिष्ठामवलोक्य मन्मथनाथगुप्तः क्रान्तिकारिदलस्य सदस्यं तमकरोत्। तदानीं क्रान्तिकारिदलस्य नेता अमरबलिदायी रामप्रसादबिस्मिलः आसीत्। अल्पीयसैव समयेन आजादः केन्द्रीयक्रान्तिकारिदलस्य सदस्यो जातः। गुलिकाचालने लक्ष्यबेधने च तेन महत् कौशलमवाप्तम्। अतः सः तस्मिन् दले अतीव समादृतः आसीत्। पञ्चविंशत्यधिकैकोनविंशतिशततमे (1925) वर्षे अगस्तमासस्य नवम्यां तारिकायां जायमाने काकोरीकाण्डे आजादेन सक्रियभागो गृहीतः। तस्मिन्नवसरे आजादं विहाय अन्ये बहवः सहयोगिनः निगडिताः शूलमारोपिताश्च। तदानीं परमदुःखितोऽपि आजादः क्रान्तेर्विरतो न जातः, प्रत्युत क्रान्तिकारिसेनायाः नायको जातः।

तेनानेकानि कार्याणि कृतानि, अनेकेऽधिकारिणः आरक्षणश्च हताः। लालालाजपतरायस्य हन्ता आरक्षिप्रधानः 'साण्डर्स'—नामधेयोऽपि आजादेन निहतः।

एकोनत्रिंशदधिकैकोनविंशतिशततमे (1929) वर्षे अप्रैलमासस्य अष्टम्यां तारिकायाम् आजादस्य परामर्शेनैव सरदारभगतसिंहः बटुकेश्वरदत्तश्च विधानसभाभवने बमविस्फोटमकुरुताम्। तस्मिन् समये चन्द्रशेखरोऽपि विधानसभाभवनाद् बहिः मोटरयानमादायोपस्थितः आसीत्। परं भगतसिंहः बटुकेश्वरदत्तश्च विधानसभाभवने एव आत्मसमर्पणं कृतवन्तौ। पश्चात् तौ द्वावपि शूलमारोपितौ। एवम् आजादस्य अनेके सहयोगिनः भगवतीचरणसालिकरामप्रभृतयो मृताः। अतः आजादचन्द्रशेखरो नितरां खिन्नो जातः,

केन्द्रीयक्रान्तिकारिदलस्य सदस्ययोः यशपालवीरभद्रयोः संदिग्धाचरणेन तु आजादो विक्षुब्धोऽभवत्। यदा दलस्य सदस्याः एव विश्वासघातिनो जाताः तदा तस्य दुःखानुभूतिः स्वाभाविकी एव आसीत्। तदापि सः स्वमार्गात् विचलितो न जातः। कर्णपुरस्य वीरभद्रत्रिपाठिनः विश्वासघात एव आजादस्य कृतेऽनिष्टकारको जातः।

एकत्रिंशदधिकैकोनविंशतिशततमे (1931) वर्षे फरवरीमासस्य सप्तविंशतितम्यां तारिकायां प्रातः नववादने प्रयागस्य अल्फ्रेड नाम्नि उद्याने एकस्य वृक्षस्याधश्छायायाम् आजादः यशपालेन सुखदेवेन च समं वार्तालापं कुर्वन् उपविष्टः आसीत्। तस्मिन्नेव समये गच्छन् वीरभद्रत्रिपाठी दृष्टः यशपालोऽपि उत्थाय चलितः, आजादः सुखदेवराजेन सह वार्तालापं कुर्वन्नेवासीत्। तदा आरक्षिणः आगत्य परितोऽवरुद्धवन्तस्तम्।

स्वकीयं सहयोगिनं कथञ्चित्ततः उद्यानात् निःसार्य आजादः पेस्तौलअस्त्रं संसाधितवान्। तदा विपक्षतः गुलिकावृष्टिः जाता। विपक्षतः आरक्षिणां गुलिकावृष्टिं दर्शं दर्शं आजादस्य मनः आकुलं नाभूत्। आजादोऽपि स्वकीयेनास्त्रेणानेकान् विमुग्धान् आहतांश्चाकरोत्। यदास्त्रे एका गुलिकावशिष्टा आसीत् तदा तथा स्वमेवाहन्। एवमाजादश्चन्द्रशेखरो यशःशरीरेणामरतामभजत्।

एवं विधाः अमरबलिदायिनो देशाभिमानिनो देशसंरक्षकाः क्रान्तिकारिणो नवयुवानः प्रतिदिनं नोत्पद्यन्ते। तेषां जन्म युगे कदाचिदेव जायते। यतश्च एतादृशाः अमरयुवानः युगान्तरमुपस्थापयितुमेवोत्पद्यन्ते। एतेषामावश्यकतापि क्वाचित्की कादाचित्की एव भवति। एवंविधाः आजादस्य चन्द्रशेखरस्य द्रष्टारः साक्षात्कारतारः अद्यापि जीवन्ति ये आत्मानं पावनं मन्यन्ते। भारतभूरपि धन्यैव यत्र एतादृशा आत्मबलिदायिनो शूराः स्वकीयेन जन्मना भूमिं पावनां कृतवन्तः, शोणितेन सिक्तवन्तश्च।

स्वातन्त्र्यमाप्तुकामोऽयं क्रान्तिकारी दृढव्रतः।

जातोऽमरो बलेर्दानादाजादश्चन्द्रशेखरः।।

शब्दार्थः

राष्ट्रहिते = देश-हित में। अनुरक्तानाम् = संलग्न रहनेवाले। स्मरणीयः = स्मरण करनेयोग्य। आजीवनम् = सम्पूर्ण जीवन भर। आरक्षकैः = सिपाहियों के द्वारा। लौहशृङ्खला = हथकड़ी। पिनन्दा = पहनाई गई। स्वीयया = अपनी। गत्वा = जाकर। तत्रैव = वहीं। वृत्त्यर्थम् = आजीविका के लिए। अष्टमुद्रात्मकम् = आठ रुपये का। भ्रामं-भ्रामम् = घूम-घूमकर। घोरम् = कठिन। श्रमम् = परिश्रम। निरवहत् = चलाया। दैववशात् = भाग्य से। कोऽपि = कोई। भद्रयुवतीम् = सुन्दर युवती को। पीडयन् = परेशान करते हुए। बलात् = जबरन। गृहीतः = पकड़ लिया। मुमोच = छोड़ा। भगिनिका = बहन। ख्यातिः = प्रसिद्धि। सम्मिलिताः = सम्मिलित हुए। संजातः = हुआ। कारितः = करवाया। तदानीम् = उस समय। लक्ष्यभेदने = निशाना लगाने में। हता = मारे गये। हन्ता = मारने वाला। शूलमारोपितौ = दोनों फाँसी में चढ़ा दिये गये। स्वमेवाहन् = अपने आपको ही मार डाला।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत-

- (क) चन्द्रशेखरस्य जनकः कः आसीत्?
 (ख) दुष्टो युवा कां पीडयन् आसीत्?
 (ग) चन्द्रशेखरं कः क्रान्तिकारिदलस्य सदस्यम् अकरोत्?
 (घ) चन्द्रशेखरः कस्य सम्मुखमानीतः?
 (ङ) आजादः किम् उन्मूलयितुं संकल्पम् अकरोत्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

- (क) चन्द्रशेखरस्य जन्म कदा अभवत्?
 (ख) चन्द्रशेखर-आजादस्य पितुः मासिकं वेतनं कियत् आसीत्?
 (ग) आजादस्य अध्ययनव्यवस्थां काशीविद्यापीठे कः अकरोत्?
 (घ) लाला-लाजपतरायस्य हन्ता कः आसीत्?

3. अधोलिखितपदानां सन्धिविच्छेदं कुरुत-

- नाकथयत् = +
 बहिरागत्य = +
 परामर्शेनैव = +
 नाभूत् = +

4. अधोलिखितगद्यांशानां हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरुत-

- (क) राष्ट्रहिते पिनद्धा।
 (ख) दैवादाजादस्य गृहीतः
 (ग) एकोनत्रिंशद् आसीत्।
 (घ) स्वकीयं अभजत्।

5. पाठस्य सारांशं हिन्दीभाषया लिखत।

6. गद्यांशं पठित्वा उचितविकल्पं लिखत-

राष्ट्रहिते पिनद्धा।

(i) उपर्युक्त-गद्यांशस्य शीर्षकम् अस्ति—

- (क) आदिकविः वाल्मीकिः (ख) आजादः चन्द्रशेखरः
 (ग) परमवीरः अब्दुलहमीदः (घ) भारतवर्षम्

(ii) आरक्षकैः तत्करे का न पिनद्धा—

- (क) लौहशृङ्खला (ख) रज्जुः (ग) काष्ठशृङ्खला (घ) सूत्रम्

(iii) चन्द्रशेखरः स्वतन्त्र एव आसीत्।

- (क) आयौवनम् (ख) आजीवनम् (ग) आबालम् (घ) आसमुद्रम्

7. बहुविकल्पीयप्रश्नाः—

उचितमुत्तरं चिनुत—

- (i) चन्द्रशेखरस्य जन्म कस्मिन् मासे अभवत्—
 (क) जुलाईमासे (ख) अगस्तमासे (ग) जनवरीमासे (घ) दिसम्बरमासे
- (ii) भगतसिंहः बटुकेश्वरदत्तश्च विधानसभाभवने बमविस्फोटं कृतवन्तौ—
 (क) 1919 तमे वर्षे (ख) 1929 तमे वर्षे (ग) 1939 तमे वर्षे (घ) 1924 तमे वर्षे
- (iii) लालालाजपतरायस्य हन्ता आरक्षिप्रधानः आसीत्—
 (क) साण्डर्सः (ख) विलियमः (ग) अब्दुलः (घ) डायरः
- (iv) 'आजादस्य' इति पदे विभक्तिः अस्ति—
 (क) पञ्चमी (ख) सप्तमी (ग) षष्ठी (घ) तृतीया
- (v) 'द्वावपि' पदस्य सन्धिविच्छेदः—
 (क) द्वा + अपि (ख) द्वौ + अपि (ग) द्वे + अपि (घ) द्व + अपि



पञ्चमः पाठः

भारतवर्षम्

पाठपरिचयः

भारत हमारी मातृभूमि है। भारत प्राकृतिक सुन्दरता, अनेक संस्कृतियों व परम्पराओं का देश है। भारत देश अध्यात्म व दर्शन तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी अग्रगण्य है, यहाँ अनेक ऋषि, महर्षि, सन्त, विद्वान्, महापुरुष, देशभक्त हुए हैं जिन्होंने देश को गौरवान्वित किया है। यहाँ अनेक नदियाँ व महासागर हैं जो इस धरा को पवित्र करती हैं। इस देश का प्राकृतिक सौन्दर्य सबको आकर्षित करता है। उत्तर दिशा में स्थित हिमालय पर्वत इसकी शोभा को द्विगुणित करता है। यहाँ सभी भाषा-सम्प्रदाय के लोग आपस में सौहार्द से रहते हैं। भारत का गौरवमय अतीत सम्पूर्ण विश्व में इसकी प्रतिष्ठा स्थापित करता है। सत्य ही कहा है—जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान् है।

भारतं नामास्माकं जन्मभूमिः। भरतनामानश्चत्वारो महापुरुषा अस्मिन् देशे अतिप्राचीनकाले बभूवुः। एको मर्यादापुरुषोत्तमरामचन्द्रस्यानुजो दाशरथिः भरतः, हस्तिनापुराधीशस्य पुरुवंशीयस्य दुष्यन्तस्य सुतश्शाकुन्तलेयः द्वितीयः, अभिनयकुशलो नाट्यशास्त्रप्रणेता भरतमुनिश्च तृतीयः, श्रीमद्भागवते वर्णितो ब्रह्मस्वरूपो जडभरतश्चतुर्थः। भागवते तत्रैव प्रतिपादितमस्ति यद् जडभरतस्य नामैव एव अस्माकं देशस्य संज्ञा अनुसरतीति। वयं तु एवं मन्यामहे यत् सर्वदा सर्वथा च भायाम् तेजसि रतत्वादेव भारतमिति अस्माकं प्राणप्रियस्य देशस्य प्राचीनं नाम। कालान्तरे सिन्धुनदीसंज्ञामनुसृत्य मुहम्मदीयैरस्य वासिनो हिन्दुनाम्ना कथिता, देशश्च हिन्दुस्थानमिति।

भारतस्य उत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजो विराजते। संसारस्य पर्वतेषु उत्तुङ्गतमस्यास्य गिरिरुच्छिताः शिखरमालाः सर्वदैव हिमाच्छादितास्तिष्ठन्ति तस्मादेवायं हिमालयः कथ्यते। एतस्य शिखराणि देशीयानां वैदेशिकानां च पर्वतारोहिणामाकर्षणकेन्द्राण्यपि वर्तन्ते। एवं विश्वस्यते यत् तुषाराच्छादितेष्वस्य प्रदेशेषु 'येति' इति जातीया केचन हिममानवा अपि प्राप्यन्ते। एषु वनेषु निःसीमा ओषधिसम्पत् पुष्पवृद्धिश्च भवतः। बहुप्रकाराणि फलानि उत्पद्यन्ते, नानाविधाः खगमृगाश्च वसन्ति। एवमनुश्रूयते यदन्तकाले सद्रौपदीकाः पाण्डवाः हिमालयमारोहन्त एव स्वर्गमाप्ताः। दीर्घकालं यावदसौ पर्वतः प्रहरीव स्थितो भारतस्य रक्षामकरोत् किन्तु अद्यत्वे अस्य रक्षा भारतेन करणीया आपतिता, यतो हि अस्माकं प्रतिवेशी चीनदेशः कञ्चिद् भूभागं स्वकीयं कृत्वा यदा कदा भारतीयसीम्नः उल्लङ्घनं करोति। तदनेकत्रास्मकं शूराः सैन्ययुवानोऽत्युच्छ्रितेषु हिमाच्छादितेषु स्थानेषु दिवानिशं दृढं तिष्ठन्तो रक्षन्ति। हिमालयस्य क्रोडे जम्मूकश्मीर-हिमाचल-सिक्किम-अरुणाचलप्रदेशाः सन्ति। अमरनाथ-

वैष्णवदेवी-गङ्गोत्री-यमुनोत्री-केदारनाथ-बद्रीनाथादीनि नैकानि सुप्रसिद्धानि तीर्थान्यपि हिमालयस्य क्रोडे विराजन्ते। यत्र देशस्य प्रत्येकात् भूभागात् प्रतिवर्षं सहस्रशस्तीर्थयात्रिणः आगच्छन्ति। श्रीनगर-पहलगौव-शिमला-नैनीताल-मंसूरी-दार्जिलिङ्गादीनि मनोरमनगराण्यपि अत्रैव वर्तन्ते।

भारतस्य दक्षिणस्यां दिशि हिन्दमहासागरः, प्राच्यां बङ्गसमुद्रः, प्रतीच्याम् अरबसागरश्च वर्तते। पश्चिमोत्तरदिग्भागे सम्प्रति 'पाकिस्तानदेशः' पूर्वोत्तरस्मिंश्च 'बांग्लादेशः' तिष्ठति। पूर्वमिवाप्यास्माकं भारतस्यैव भागावास्तां राजनीतिकारणाद् विदेशिनां षड्यन्त्राणामस्माकमेव एकस्य वर्गस्य कतिपयनेतृणां हठधर्मितायाश्च कारणात् पार्थक्यं सज्जातम्। दक्षिणस्यां दिशि भारतस्य दूरतमो भूभागः 'कन्याकुमारी' नाम्ना प्रसिद्धो यत्र त्रयाणां सागराणां सङ्गमो भारतस्य चरणप्रक्षालनं कुर्वन्नतिशयपावनतां भजते।

पारेसागरं चतुर्योजनमात्रे 'श्रीलङ्का' नामास्माकं प्रतिवेशी देशो विद्यते। एतदपि न जातु विस्मरणीयं यद् हिन्दमहासागरे 'लक्षद्वीप' नामा बंगसमुद्रे 'अण्डमान' नामा द्वीपसमूहश्चापि अस्माकं भारतस्यैव अविच्छिन्नौ प्रदेशौ स्तः। गुर्जर-महाराष्ट्र-कर्णाटक-केरल-तमिल-आन्ध्र-उत्कल-बङ्गराज्यानां भूमिं सागरः स्पृशति। तस्मादेते तटीयप्रदेशाः कथ्यन्ते। यत्र अनेकानि महान्ति पत्तनानि विद्यन्ते येषु असंख्यजलपोतानां साहाय्येन वैदेशिकैर्विनिमेयानां पण्यानां निर्यातमायातं च क्रियते। प्राचीनकालेऽपि भारतवर्षस्य नौपरिवहन-व्यवस्था अतीव समृद्धा आसीत्। अनेकैर्द्वीपैर्देशान्तरैश्च साकं सागरमार्गेण वाणिज्यं प्रचलति स्म। एवमेव सागरतटीयजलेषु मत्स्यग्रहणव्यापारोऽधुनातनो महानुद्योगः।

प्रकृतिदेव्या भारते महती कृपा वर्तते। षड्भिः ऋतुभिर्विराजमानम् ऋतुचक्रमत्रैव परिवर्तते। शशिसूर्ययोः प्रकाशो यथात्र प्रसरति तथा संसारस्यात्यल्पेषु एव देशेषु स्यात्। सूर्यास्तस्य चन्द्रास्तस्य च रविचन्द्रयोः अस्तगमनवेलायाः मनोरमाणि दृश्यानि यथा अत्र भवन्ति तथा नान्यत्र। सकलेऽपि भारतदेशे नदीनां प्राकृतिकं जालं प्रसृतं येनात्रत्या भूमिरत्युर्वरा सज्जाता। सिन्धु-वितस्ता-शतद्रु-सरस्वती-गङ्गा-यमुना-ब्रह्मपुत्रादयः सरितः उत्तरभागे चर्मण्वती, नर्मदादयोः मध्यभागे, गोदावरी-कावेरी-कृष्णा-पेरियारमहानद्यादयश्च दक्षिणभागे प्रवहन्ति। एतासां तटेषु हरिद्वार-प्रयाग-काशी-गयादीनि बहूनि तीर्थस्थानानि विद्यन्ते। यत्र प्रतिदिनं सहस्रशो यात्रिणः स्नानं कृत्वा धर्मं चिन्वन्ति। विशेषेष्ववसरेषु तु कुम्भसदृशानि मेलकानि भवन्ति। यत्र देशस्य प्रतिकोणतः सहस्रशो लक्षशो जनाः आगत्य सम्मिलन्ति। देशस्य वास्तविकीमेकतां च वाचं विनैव सुतरां मुखरयन्ति। भारतस्य वनानां शोभापि परमहृद्या। हिमालयस्य देवदारुवृक्षाणामुच्छ्रायो गगनं चुम्बति। सागरतटीयप्रदेशेषु नारिकेलपूगादिवृक्षाणां घना वनराजयः समुद्रजलमात्मनां दर्पणमिवाकलयन्ति। प्राकृतिकसुषमाकारणादेव कश्मीरस्तु पृथ्वीस्थः स्वर्ग एव मन्यते। अस्माकं राष्ट्रगीते भारतस्य प्रमुखाणां प्रदेशानां पर्वतानां नदीनाञ्च कीर्तनं वर्तते। अपरस्मिन् च वन्दे मातरमित्याख्ये गीते च अस्याः भुवः सुजलत्वं सुफलत्वं शस्यश्यामलत्वञ्च वर्णयन्ते।

अस्माकं भारतदेशः संसारस्य गुरुरप्युच्यते। उपनिषदाम् आध्यात्मिकता, श्रुतिस्मृत्यादिषु प्रतिपादितो नैतिकाचारः विविधसिद्धिप्रदाता योगाभ्यासः अद्यत्वेऽपि वैदेशिकानामाकर्षणकारणम्। अङ्गलेखनप्रणाली सर्वप्रथमं भारते एव आविर्भूता, ततश्च भारतीयैः अरबदेशीया अवबोधिता। भारतजन्मा बौद्धधर्मोऽद्यापि

कोटिभिर्वैदेशिकैः अनुस्त्रियते। अस्माकं प्राचीनां वास्तुकलां शिल्पकलां च दर्शं दर्शं विस्मयचकितानां वैदेशिकानां वागपि न स्फुरति। खजुराहोकोणार्कादिमन्दिराणां स्थापत्यं मूर्तिकलां चावलोकयितुं लक्षशो वैदेशिकाः पर्यटकाः आगच्छन्ति।

अद्भुतोऽयं देशः यत्र नचिकेता इव ज्ञानपिपासवः, ध्रुव इव तपस्विनः, अभिमन्युरिव शूराः किशोराः, एकलव्योद्दालककौत्ससदृशाः गुरुभक्ताः शिष्याः, शिविमयूरध्वजकर्णप्रभृतयो दानिनः, हरिश्चन्द्रयुधिष्ठिरादयः सत्यवादिनः, भरतलक्ष्मणसदृशाः भ्रातरः, सीतासावित्रीगान्धारीसदृश्यः पत्न्यः, दशरथ-सदृशाः पितरश्च बभूवुः। मैत्रेयीगार्गीभारतीसदृश्यो विदुष्यो, रजियासुल्ताना-दुर्गावती-लक्ष्मीबाईसदृश्यो वीराङ्गनाः, भगतसिंह-सुखदेव-चन्द्रशेखरसदृशाः देशभक्ताः, महावीर-गौतमबुद्धगान्धितुल्या महात्मानः सन्तश्च अस्याः एव भारतभुवः सन्ततयः आसन्।

उपर्युक्तविवरणेन विदितमेतद् भवति यत् भारतस्यातीतं तथा गौरवम् अद्याप्यस्मान् विश्वस्य सम्मुखं सम्मानस्योच्चैर्वैदिकायां प्रतिष्ठापयति। किन्तु केवलमतीतं तु भविष्यन्नैव निर्मातुं शक्नोति। वर्तमानकाले उपलब्धानां मानवसंसाधनानां सम्पदां च सर्वोत्तमः उपयोगो विधेयो येन विकासस्य गतिः प्रवर्धेत। सन्ति काश्चिद्दुर्दमाः समस्या याः कथमपि समाधेया एव।

शब्दार्थः

देवतात्मा = देवस्वरूप। नगाधिराजः = पर्वतो का राजा। उत्तुङ्गम् = ऊँचा। गिरेः = पर्वत की। उच्छ्रिता = ऊँची। शिखरमाला = शिखरों (चोटियों) के समूह। तुषार = बर्फ। आच्छादित = ढकी हुई। पुष्पवर्द्धिः = फूलों की समृद्धि। प्रतिवेशी = पड़ोसी। दिवानिशम् = दिनरात। क्रोडे = गोद में। अनुस्त्रियते = अनुसरण किया जाता है। वागपि (वाक् + अपि) = वाणी भी। न स्फुरति = नहीं निकलती। सन्ततयः = सन्तानें। वेदिकायाम् = वेदी पर। विधेयः = करना चाहिए। समाधेया = समाधान करना चाहिए। नानाविधाः = अनेक प्रकार के। अद्यत्वे = आजकल।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत-

- उत्तरस्यां दिशि कः पर्वतः विराजते?
- भारतस्य दक्षिणस्यां दिशि कः महासागरः वर्तते?
- अङ्गलेखनप्रणाली कस्मिन् देशे आविर्भूता?
- ज्ञानपिपासुः कः आसीत्?

2. रिक्तस्थानानि पूरयत-

- भारतस्य उत्तरस्यां दिशि देवतात्मा नाम नगाधिराजो विराजते।
- हिमालयस्य क्रोडे प्रदेशाः सन्ति।
- यत्र देशस्य प्रत्येकम् भागात् प्रतिवर्षं सहस्रशः आगच्छन्ति।
- अयमस्माकं भारतदेशः संसारस्य अपि उच्यते।

3. सन्धिविच्छेदं कुरुत-

- (क) तुषाराच्छादितेष्वस्य (ख) यूरोपीयैस्तु
(ग) अद्याप्यस्मान् (घ) सर्वोत्तमः

4. अधोलिखितानां गद्यांशानां हिन्दीभाषया अनुवादं कुरुत-

- (क) भारतस्य उत्तरस्यां दिशि पुष्पद्विश्च भवतः
(ख) हिमालस्य क्रोडे अत्रैव वर्तन्ते।
(ग) अस्माकं भारतदेशः पर्यटकाः आगच्छन्ति।
(घ) अद्भुतोऽयं देशः सन्ततयः आसन्।

5. भारतवर्षम् इति पाठस्य सारांशं हिन्दीभाषया लिखत।

6. अधोलिखितगद्यांशमधिकृत्य बहुविकल्पीयप्रश्नान् उत्तरत-

भारतं नाम हिन्दुस्थानमिति।

- (i) नाट्यशास्त्रस्य प्रणेता कः ?

(क) नारदमुनिः (ख) भरतमुनिः (ग) वाल्मीकिः (घ) कालिदासः

- (ii) भरतनामानः कति महापुरुषाः बभूवुः ?

(क) पञ्च (ख) षट् (ग) चत्वारः (घ) द्वौ

7. अधोलिखितेषु विकल्पेषु कतमः समीचीनः-

- (i) कः पर्वतः प्रहरीव स्थितः भारतस्य रक्षामकरोत् ?

(क) हिमालयः (ख) कैलाशपर्वतः (ग) गंगोत्री (घ) विन्ध्यपर्वतः

- (ii) कः देशः संसारस्य गुरुः उच्यते ?

(क) भारतदेशः (ख) बांग्लादेशः (ग) श्रीनगरः (घ) अमेरिका

- (iii) भारतस्य उत्तरस्यां दिशि कः विराजते ?

(क) हरिद्वारः (ख) कन्याकुमारी (ग) प्रयागराजः (घ) हिमालयः

- (iv) गुरुभक्तः शिष्यः कः आसीत् ?

(क) शिविः (ख) मयूरध्वजः (ग) कौत्सः (घ) अभिमन्युः

- (v) वीराङ्गना का आसीत् ?

(क) मैत्रेयी (ख) दुर्गावती (ग) भारती (घ) गार्गी

षष्ठः पाठः

परमवीरः अब्दुलहमीदः

पाठपरिचयः

भारतभूमि के परमवीर देशभक्तों की श्रेणी में वीर अब्दुल हमीद का पराक्रम और उत्सर्ग सदैव स्मरणीय रहेगा। उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के धुमआपुर नामक ग्राम में जन्मे अब्दुल हमीद को बाल्यकाल से ही कुस्ती और लाठी चलाने जैसे खेलों में बहुत रुचि थी। अपनी रुचि के अनुकूल ही उनकी भर्ती सेना में हो गयी। 1965 ई. में भारत-पाक युद्ध में अब्दुल हमीद ने अपनी वीरता और सूझ-बूझ का परिचय देते हुए पाकिस्तान के अत्याधुनिक पेंटन टैंकों का सामना किया। दुर्भाग्य से पेंटन टैंक के एक गोले से अब्दुल हमीद वीरगति को प्राप्त हो गए। माँ भारती के अमर सपूत को भारत सरकार द्वारा परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया और उनके गाँव का नाम हमीदपुर कर दिया गया।

वीराणाम् अन्यतमः श्रीअब्दुलहमीदः
पञ्चषष्ठ्युत्तरैकोनविंशतिशततमे (1965) ईस्वीये
संवत्सरे कसूरयुद्धे पाकिस्तानिभिः सैनिकैरभियुध्यन्
असूनपि विहाय तेषां भारताभिमुखीं गतिं
अवरुद्धवान्।

अस्य वीरपुङ्गवस्य जन्म त्रयस्त्रिंशदुत्तरैकोन-
विंशतिशततमे (1933) ख्रीष्टाब्दे अस्माकं प्रदेशस्य
गाजीपुरमण्डलस्य धुमआपुराख्ये ग्रामे अतिसाधारणे
कुटुम्बे जातम्। बाल्यादेवास्य मल्लविद्या-
यष्टिचालनादिषु शारीरिकबलोपचयाधायिनीषु क्रीडासु
सहजेवाभिरुचिरासीत्। सैनिकगुणानात्मसात्कर्तुं
दृढनिश्चयोऽसौ पौनःपुन्येन तथा अभ्यस्यति स्म
यथा लक्ष्यवेधनादिक्रीडास्वपि प्रावीण्यमुपागमत्।
श्रूयते यदेकस्यां रात्रौ कस्याचिदुलूकस्य
विरावमेवानुसृत्य लक्ष्ये प्रहरताऽनेनासौ न्यपाति



ततः क्षणादेव चासौ सैनिको भूत्वा मातृभूमे रक्षणाय समकल्पत। सौभाग्यात्तस्यायं मनोरथश्चतुःपञ्चाशदुत्तरैकोनविंशतिशततमे (1954) वर्षे दिसम्बरमासस्य सप्तमेऽहनि पर्यपूर्यत यदा स सेनायां प्रवेशं प्राप्तवान्। चतुर्दश मासान् यावद् राजस्थानस्य नसीराबादसैनिकशिविरे 'ग्रेनेडियर्स रेजीमेण्टल' प्रशिक्षणकेन्द्रे सैनिकप्रशिक्षणं प्राप्य अब्दुलहमीदः पूर्णतया सैनिकोऽभवत् षड्वर्षाभ्यन्तरे च लान्सनायकपदे प्रोन्नतः वर्षमात्रेण च हवलदारपदमाप्तवान्।

भारतसीमान्ते चीनदेशस्याक्रमणकाले श्रीअब्दुलहमीदो नेफाक्षेत्रे नियुक्तः आसीत्। तत्रैवासौ युद्धस्याद्यं साक्ष्यमकरोत्। मातृभूमेः कृते प्राणानपि मुञ्चतो मे चेतो न तनुकमपि व्यथिष्यते, प्रत्युत प्राप्यैव तादृशं सुयोगं परां मुदमेवापत्स्यते इति नैकधासौ स्वमित्राणि अकथयत्। मनोनीतस्तादृशोऽवसरोऽपि नातिविलम्बेनागतः। पञ्चषष्ट्युत्तरैकोनविंशतिशततमे (1965) वर्षे दैवदुर्विपाकात् पाकिस्तानेन भारतवर्षे आक्रमणं कृतम्। श्री अब्दुलहमीदः लवपुरसमरक्षेत्रे कसूरनाम्नि स्थले सैनिकनियोगमादिष्टो युद्धनिरतः संवृत्तः। पाकिस्तानं प्रति सदैव पक्षपातिना अमेरिकादेशेन पाकिस्तानायातिशक्तिशालिनो दूरमारका अभेद्यत्वेन प्रसिद्धाः पैटनटैंकाः प्राचुर्येण प्रदत्ता आसन्। तच्छक्तिदृप्ताः पाकिस्तानिनः सैनिकास्तानग्रे कृत्वा भारतसैन्ये गोलकानि वर्षन्तो दुर्दान्ता दानवा नाकमिव भारतधरामधिचिकीर्षन्तस्तस्याः सीमसु प्रविष्टाः। तेषां प्रतिरोधाय भारतसैनिका अपि गोलकानि वर्षन्ति स्म किन्तु तेषां पुरातनटैंका न तथा दुर्भेद्या दूरमारका शक्तिशालिनश्च आसन्, तथापि मातृभुवं रक्षितुं मनोबलं तु आकाशं स्पृशति स्म। 'क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे' इति। तेषां मनसि पैटनटैंकादपि गरीयसीं दृढतामुपाबध्नात्।

तथाभूतेन दिव्योत्साहेन दीपितः श्रीहमीदस्तु तद् भयावहं युद्धं कन्दुकक्रीडनमिव, युद्धक्षेत्रं क्रीडाक्षेत्रमिव, गोलकजातं च कन्दुकमिव मन्यमानो जीपवाहनमारूढः पैटनटैंकानां छायायामग्रेसरन् पाकिस्तानिसैन्यमुपरोद्धुं तेषां टैंकेषु गोलकानि प्रक्षिपन् अभिमुखमागतः। टैंकरक्षितै रिपुसैनिकैर्हमीदस्य जीपयानं शतत्रयहस्तदूरं दृष्टं तदभिलक्ष्य च महाभीषणो गोलकक्षेपः कर्तुमारब्धः। तत्क्षणमेव हमीदेन विद्युद्गत्या हस्तगोलकं प्रक्षिप्य सः टैंको विनाशितः। तद् दृष्ट्वा अपरेण पाकिस्तानटैंकेन हमीदस्योपरि आक्रमणं कृतं किन्तु वीरोत्तमेनानेन सोऽपि हस्तगोलकेन तथैव ध्वंसं नीतः। अहो! वैचित्र्यम्, भारतवीरस्य तस्य शौर्यस्य येनोत्तमोपकरणा अपि शत्रवो निरुद्धाः। परन्तु हा! हन्त! हन्त! रणशिरसि वर्तमानस्यास्य भारतवीरधौरेयस्यानुपदमेव पाकिस्तानटैंकात् प्रक्षिप्तेनैकेन गोलकेन प्राणान्तो जातः। मृतस्याप्यस्य वदने मातृभूमिरक्षार्थं प्राणोत्सर्गजनितः संतोषः सुतरामङ्कित आसीत्।

भारतशासनेनासौ शूरशिरोमणिर्मरणोपरान्तं परमवीरचक्रेण सम्मानितः। उत्तरप्रदेशशासनेन च तस्य कुटुम्बस्य भूयसी सहायता कृता तस्य स्मृतेश्च चिरस्थायितायै तस्य ग्रामस्य नामापि हमीदपुरमिति कृतम्।

रक्षणाय जनुभूमेः प्राणानपि त्यजन्ति ये।

यशोदेहेन जीवन्तो मार्गमन्यान् दिशन्ति ते।।

मातृभू-पादयोर्भक्त्या शिरःपुष्पसमर्पकाः।

यशःकायाः स्वयंदेवा धन्या वीरवरा नराः।।

शब्दार्थः

असूनपि = प्राणों को भी। अवरुद्धवान् = रोक दिया। वीरपुङ्गवस्य = श्रेष्ठ वीर का। मल्लविद्या = कुशती। यष्टिचालनादिषु = लाठी चलाने आदि में। पौनःपुन्येन = बारम्बार। विरावम् = आवाज को। न्यपाति = गिरा दिया। समकल्पत = संकल्प किया। सप्तमेऽहनि = सात तारीख को। तनुकमपि = थोड़ा भी। मुदमेवापत्स्यते = हर्षित ही होगा। दैवदुर्विपाकात् = दुर्भाग्य से। तच्छक्तिदृप्ताः = उसकी शक्ति से गर्वित। नाकमिव = स्वर्ग के समान। भारतधरामधिचिकीर्षतः = भारत की धरती को अधिग्रहीत करने की इच्छा से। नोपकरणे = न कि साधन से। गरीयसी = श्रेष्ठ। प्रक्षिपन् = फेंकते हुए। अभिमुखमागतः = सामने आ गया। शतत्रयहस्तदूरम् = तीन सौ हाथ की दूरी पर। भारतवीरधौरेयस्य = भारतीय वीरों में अग्रणी।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत-

- (क) 1965 ईस्वीये केन भारतवर्षे आक्रमणं कृतम्?
- (ख) श्रीअब्दुलहमीदः कस्मिन् प्रशिक्षणकेन्द्रे सैनिकप्रशिक्षणं प्राप्तवान्?
- (ग) चीनदेशस्याक्रमणकाले श्रीअब्दुलहमीदः कुत्र नियुक्तः आसीत्?
- (घ) श्रीअब्दुलहमीदेन किं प्रक्षिप्य टैंको विनाशितः?
- (ङ) अब्दुलहमीदः लांसनायकपदे प्रोन्नतः वर्षमात्रेण किं पदमाप्तवान्?

2. एकवाक्येन उत्तरत-

- (क) श्री अब्दुलहमीदस्य जन्म कुत्र अभवत्?
- (ख) बाल्यादेव हमीदस्य कासु क्रीडासु अभिरुचिरासीत्?
- (ग) श्रीअब्दुलहमीदस्य कथं प्राणान्तो जातः?
- (घ) भारतशासनेन वीरहमीदः मरणोपरान्तं केन सम्मानेन सम्मानितः?
- (ङ) भारतशासनेन वीरहमीदस्य मरणानन्तरं तस्य ग्रामस्य नाम किं कृतम्?

3. रिक्तस्थानानि पूरयत-

(वीरवराः, प्राणानपि, नोपकरणे, पौनःपुन्येन)

- (क) सैनिकगुणानात्मसात्कर्तुं दृढनिश्चयोऽसौ तथा अभ्यसति स्म।
- (ख) मातृभूमेः कृते मुञ्चतो मे चेतो न तनुकमपि व्यथिष्यते।
- (ग) क्रियासिद्धिः सात्त्वे भवति महतां।
- (घ) यशःकायाः स्वयंदेवाः धन्या नराः।

4. सन्धिविच्छेदं कुरुत-

- (क) बाल्यादेव = +
 (ख) अभिरुचिरासीत् = +
 (ग) स्वामित्राण्यकथयत् = +
 (घ) पुरातनटैंकाः = +

5. अधोलिखितानां गद्यांशानां हिन्दीभाषया अनुवादं कुरुत-

- (क) सैनिकगुणानात्मसात्कर्तुं प्रवेशं प्राप्तवान्।
 (ख) भारतसीमान्ते आक्रमणं कृतम्।
 (ग) तच्छक्तिदृष्टाः दृढतामुपाबध्नात्।
 (घ) तथाभूतेन दिव्योत्साहेन टैंको विनाशितः।

6. 'परमवीरः अब्दुलहमीदः' इस पाठ का सारांश लिखें।

7. अधोलिखितगद्यांशमधिकृत्य बहुविकल्पीयप्रश्नान् उत्तरत-

(अ) अस्य वीरपुङ्गवस्य सहजेवाभिरुचिरासीत्।

(i) अब्दुल हमीदस्य जन्म कुत्र अभवत्?

(क) उत्तरप्रदेशे (ख) मध्यप्रदेशे (ग) हिमाचलप्रदेशे (घ) अरुणाचलप्रदेशे

(ii) अब्दुलहमीदस्य सहजेवाभिरुचिः कस्मिन् आसीत्?

(क) अध्ययने (ख) मल्लविद्यायां (ग) कन्दुके (घ) भ्रमणे

(आ) तद् दृष्ट्वा अपरेण शत्रवो निरुद्धाः।

(i) हमीदस्योपरि केन आक्रमणं कृतम्?

(क) टैंकेन (ख) हस्तगोलकेन (ग) जीपयानेन (घ) असिना

(ii) हमीदस्य शौर्येण के निरुद्धाः?

(क) पशवः (ख) साधवः (ग) शत्रवः (घ) गुरवः

8. अधोलिखितेषु कतमः समीचीनः-

(i) दूरमारका पैटनटैंकाः कस्मिन् देशे आसन्—

(क) भारते (ख) चीनदेशे (ग) पाकिस्ताने (घ) लवपुरे

(ii) वीरहमीदः कस्य विरावम् अनुसृत्य लक्ष्ये प्रहारं कृतवान्?

(क) काकस्य (ख) उलूकस्य (ग) पिकस्य (घ) शुकस्य

(iii) पाकिस्तानेन आक्रमणसमये हमीदः कुत्र युद्धनिरतः संवृत्तः?

(क) कसूरनाम्नि स्थले (ख) राजस्थाननाम्नि स्थले

(स) नेफानाम्नि स्थले (घ) गाजीपुरनाम्नि स्थले

(iv) उत्तरप्रदेशस्य शासनेन श्रीअब्दुलहमीदस्य ग्रामस्य नाम किं कृतम्—

(क) अब्दुलपुरम् (ख) कसूरपुरम् (ग) परमवीरपुरम् (घ) हमीदपुरम्

सप्तमः पाठः

पुण्यसलिला गङ्गा

पाठपरिचयः

स्वर्गवासिनी गङ्गा भगीरथ के अथक प्रयास से कपिलमुनि के शाप से भस्म हुए सगर के साठ हजार पुत्रों के उद्धार के लिए पृथ्वी पर अवतरित हुई। इसी कारण गङ्गा को भागीरथी कहते हैं। मोक्षदायिनी गङ्गा का उद्गम स्थल भारतवर्ष ही है। गङ्गा की दो धाराएँ—एक गंगोत्री से निकली भागीरथी, दूसरी अलकनन्दा। ये दोनों धाराएँ देवप्रयाग के निकट मिलकर हरिद्वार के समतल प्रदेशों में बहती है। गङ्गा का जल स्वच्छ, शीतल, तृषा शान्त करने वाला एवं रोगनाशक है। गङ्गा दर्शन, स्नान, पान एवं दान का बहुत महत्त्व है। गङ्गा शब्द गम् धातु से औणादिक गन् प्रत्यय और स्त्रीलिङ्ग के टाप् प्रत्यय के योग से बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ है—‘निरन्तर गतिशील रहना’ अर्थात् अबाध गति से बहते रहने के कारण ही इस नदी का गङ्गा नाम सार्थक है। केन्द्रीय विकास प्राधिकरण ने गङ्गा के प्रदूषण को दूर करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया है।

गङ्गायाः न केवलं भारतवर्षे अपितु निखिलजगतः नदीषु महत्त्वपूर्णं स्थानं वर्तते। इयं खलु भारतीयप्राणिनां जीवनप्रदा सुखशान्तिसमृद्धिविधायिनी च नदी अस्ति। “गङ्गा तारयति वै पुंसो दृष्टा पीताऽवगाहिता”। मनुजस्य दैहिकदैविकभौतिकतापत्रयमस्याः सम्पर्कमात्रेण विनश्यति। तथा चोक्तम्—

“गङ्गां पश्यति यः स्तौति स्नाति भक्त्या पिबेज्जलम्।

स स्वर्गज्ञानममलं योगं मोक्षं च विन्दति।।”

इयं हिमवतः स्थानद्वयात् निःसृता। धारैका भारतस्योत्तराखण्डे उत्तरकाशीजनपदे गोमुखात् प्रसूता भागीरथी। द्वितीया ‘चमोली’ जनपदे अलकापुर्यां हिमप्रस्त्रवणात् निर्गतालकनन्देति विदिता। देवप्रयागे भागीरथ्यलकनन्दयोः सङ्गमानन्तरं संयुक्ताधारा ‘गङ्गा’ इति लोके प्रसिद्धा। वेदपुराणादीनां मतेन ‘देवी’ रूपा गङ्गा स्वर्गे एव वसति स्म। द्रवीभूता च सा विधातुः कमण्डलौ संस्थिता। कपिलमुनिशापेन भस्मीभूतषष्ठिसहस्रसगरपुत्रान् समुद्धर्तुं भगीरथस्य वर्त्मानुसरन्तीयं गिरिगह्वरकानननगरग्रामान् प्लावयन्ती महामुनेः जह्नोः यज्ञस्थलीमप्लावयत्। सञ्जातक्रोधः मुनिः निखिलजलप्रवाहं क्षणमात्रेणापिबत्। भग्नमनोरथः नृपः रुष्टं महामुनिं प्रसादयितुं प्रायतत। देवानामृषीणाम् आराधनेन च विगतक्रोधो महात्मा कर्णरन्ध्राभ्यामशेषमुदकं निष्कास्य वसुन्धरायां पातयामास, अतएव जाह्नवीति प्रसिद्धा।

गङ्गेति नाम सहजं सार्थकञ्च।
गम् धातोः औणादिक-गन् प्रत्यये
सति स्त्रीत्वात् टापि 'गङ्गा' शब्दः
निष्पद्यते। अतः सततगमनशीलत्वात्
'गङ्गा' इति नाम सर्वथाऽन्वर्थम्।

गङ्गा हिमालयस्य दुर्लङ्घ्य-
प्रस्तरखण्डानि चूर्णयन्ती, गिरिगह्वरेषु
प्रविशन्ती नतोन्नतपर्वतप्रदेशान्
लङ्घन्ती हरिद्वारे समतलप्रदेशे
निर्बाधतया प्रवहति।

कृषिप्रधाने भारतदेशे गङ्गा
कृषिभूमिं सिञ्चन्ती अन्नोत्पादने
साहाय्यं करोति। अस्याः क्षेत्रे
समुत्पन्नानां वनस्पतीनाम् ओषधीनां
लाभा अनिर्वचनीयाः।

गङ्गायाः प्रकृतिमनोहारिणी
नैसर्गिकी च शोभा सर्वेषां चित्तमाह्ला-
दयति। हृदयहारिणीमम्बुच्छटां दृष्ट्वा
मनः मुग्धं भवति। तटवर्तिनां
दर्शनीयस्थानानां शोभां द्रष्टुं देशीयाः
वैदेशिकाश्च पर्यटकाः नित्यमिमां
सेवन्ते। दिवाकरकिरणैः निशाकररश्मिभिश्च जलस्य शोभा नितरां वर्धते।

तत्र बदरीनाथः विष्णुनन्दकर्णरुद्रदेवाख्याः पञ्च प्रयागाः, ऋषिकेशहरिद्वारगङ्गमुक्तेश्वरतीर्थराज-
प्रयागवाराणसीत्यादीनि अनेकानि तीर्थस्थानानि चिरकालाद् आकर्षयन्ति। आदिकवेः वाल्मीकेः भरद्वाजर्वेष्टाश्रमौ
अस्याः तीरे आस्ताम्। श्रद्धाभाजनानां रामानुज-वल्लभ-कबीर-तुलसी-प्रभृति-महापुरुषाणां गङ्गातटमेव
प्रेरणास्थलम्।

हरिद्वारे, त्रिवेण्याः सङ्गमे च कुम्भस्नानं वाराणस्यां दशाश्वमेधघट्टे जलावगाहनानन्तरं भगवतो
विश्वनाथस्य दर्शनं पुण्यप्रदं वर्तते। देशदेशान्तरादागतः सधनः निर्धनः सामान्यो विशिष्टो वा सर्वे
एकस्मिन्नेव घट्टे स्नानं कुर्वन्ति। एवंविधायाः भारतीयसंस्कृतिं विलोक्य वैदेशिकाः आश्चर्यान्विताः
भवन्ति। गङ्गा समस्तं राष्ट्रं सुदृढीकर्तुं महतीं भूमिकां निर्वहति।



गङ्गाया तटे नैकाः विशिष्टाः ऐतिहासिकस्मरणीयाः घटनाः सञ्जाताः। रघुवंशीयाः नृपतयः निखिलविश्वविजयानन्तरं काश्यां दशाश्वमेधघट्टे यज्ञानकुर्वन्। तीर्थराजे प्रयागे आयोजिते मेलके हर्षवर्धनः सर्वसम्पदं याचेकभ्यः ददाति स्म।

आधुनिककाले गङ्गातटे नानाविधानि औद्योगिककेन्द्राण्यपि वर्तन्ते। इयं विविधौद्योगिक-विकासायानुकूलमवसरं संयोजयति। रेलमोटरयानाविष्कारात्पूर्वं नदीमार्गाः गमनागमनसाधनान्यासन्। औद्योगिकप्रतिष्ठानानां कृते अस्याः महान् जलराशिः नित्यं प्रयुज्यते। जलप्रवाहसाहाय्येन विद्युद्धारयाः प्रचुरमुत्पादनं सम्पाद्यते येन देशस्य नवनिर्माणं जायते। बुलन्दशहरनामके जनपदे 'नरौरा'-नामस्थाने गङ्गातटे एतादृशमणुशक्तिसञ्चालितं विद्युद्गृहं वर्तते यत्राणुशक्त्याः समुपयोगः क्रियते।

गङ्गाजलस्य वैशिष्ट्यं वैज्ञानिकविश्लेषणेनापि प्रमाणीभूतम्। गङ्गोदकं स्वच्छं शीतलं तृषाशामकं रुचिवर्धकं सुस्वादु रोगापहारि च भवति। तत्र रोगकारकाः जीवाणवः अनायासेन नश्यन्ति। इदं दीर्घकालं विकृतिं न लभते।

दौर्भाग्यमिदं यत् साम्प्रतं मनुष्यैरेव तटेषु संस्थापितानामौद्योगिकप्रतिष्ठानानां रासायनिकद्रवा अस्याः जले प्रवाह्यन्ते। विपुलजनसंख्याभागमुद्वहतां नगराणां मालिन्यं प्रणालिकाभिः गङ्गायाम् प्रक्षिप्यते। घातकरोगाक्रान्तानां मानवानां पशूनाञ्च शवाः वारिधारायां निलीयन्ते। अज्ञानवशात् प्रमादाच्च मानवः सर्वकल्याणकारिणीं गङ्गा प्रदूषयति, हन्त! कीदृशीयं विडम्बना या गङ्गा सर्वशुद्धिकरी प्रख्याता सा सम्प्रति स्वशुद्धये मानवमुखमपेक्षते।

सौभाग्यात् भारतीयशासनेन गङ्गाप्रदूषणस्य विनाशाय महती योजना सञ्चालिता। केन्द्रीयविकासप्राधिकरणेन प्रदूषणमपाकर्तुं शुचिताञ्च प्रतिष्ठापयितुं योजनाबद्धं कार्यमारब्धम्। चलचित्रदूरदर्शनाकाशवाणी समाचारपत्रादिसञ्चारमाध्यमैः गङ्गाप्रदूषणं निवारयितुं जनचेतना प्रबोध्यते, परं महानयं राष्ट्रियः कार्यक्रमः, क्षेत्रञ्च विशालम्। स्वल्पैः जनैः शासनतन्त्रैर्वा तदनुष्ठातुं न शक्यते। तत्र आबालवृद्धानां स्त्रीपुरुषाणां सक्रियसहयोगस्य अहर्निशमावश्यकता वर्तते। पुण्यसलिला गङ्गा जगद्धात्री भविष्यत्येव। अपरञ्च-

अहो गङ्गा जगद्धात्री स्नानपानादिभिर्जगत्।

पुनाति पावनीत्येषा न कथं सेव्यते नृभिः।।

शब्दार्थः

खलु = निश्चय ही। **निखिलजगतः** = सम्पूर्ण संसार की। **विधायिनी** = करने वाली। **जीवनप्रदा** = जीवन प्रदान करने वाली। **अमलम्** = पवित्र। **विन्दति** = प्राप्त करता है। **हिमवतः** = हिमालय से। **धारैका** = एक धारा। **प्रसूता** = उत्पन्न हुई। **षष्टिसहस्र** = साठ हजार। **वसुन्धराम् + आनीता** = (वसुन्धरामानीता) धरती पर लायी गयी। **ख्याता** = प्रसिद्ध हुई। **ज्ञाता** = जानी गयी। **वर्तमानुसरन्ती** = मार्ग का अनुसरण करती हुई। **प्लावयन्ती** = डुबोती हुई। **जह्नुः** = जहु की। **सञ्जातक्रोधः** = क्रोधित हुए। **प्रसादयितुम्** = प्रसन्न करने के लिए। **प्रायतत** = प्रयत्न किया। **घट्टे** = घाट पर। **बद्ध्वा** = बाँधकर। **सुदृढीकर्तुम्** = सुदृढ़ करने के लिए। **कर्णरन्ध्राभ्यामशेषमुदकम्** = (कर्ण + रन्ध्राभ्याम् + अशेषम् + उदकम् = कानों के दोनों छिद्रों से पूरे जल

को। निष्कास्य = निकालकर। पातयामास = गिरा दिया। निष्पद्यते = निष्पन्न या पूर्ण होता है (सिद्ध होता है)। सर्वथाऽवर्थम् = सभी प्रकार के अर्थ के अनुसार। दुर्लङ्घ्य = कठिनाई से लाँघने योग्य। प्रस्तरखण्डानि = पत्थर के टुकड़े। चूर्णयन्ती = चूर-चूर करती हुई। गिरिगह्वरेषु = पर्वत की गुफाओं में। नतोन्नतपर्वतप्रदेशान् = नीचे ऊँचे पर्वत के भागों को। लङ्घयन्ती = लाँघती हुई। अनिर्वचनीयः = कहा न जा सकने वाला अर्थात् अकथनीय। नैसर्गिकी = स्वाभाविक (प्राकृतिक)। आह्लादयति = आनन्दित करती है। अम्बुच्छटाम् = जल की शोभा को। रश्मिभिः = किरणों से। नितराम् = अत्यधिक। आकर्षयन्ति = आकर्षित करते हैं। आस्ताम् = थे। पुलिने = किनारे पर। जलावगाहानन्तरम् = जल में स्नान करने के बाद। निर्वहति = निभाती है। नैकाः = बहुत से। स्मरणीयाः = स्मरण करने योग्य। सञ्जाताः = हुई। निखिलविश्वविजयानन्तरम् = सम्पूर्ण विश्व की विजय के पश्चात्। मेलके = मेले में। क्रोडे = गोद में। संयोजयति = प्राप्त करती है। सौविध्यम् = सुविधा। प्रयुज्यते = प्रयुक्त होती है। प्रचुरम् = अधिक। जनपदे = जिले में। वैशिष्ट्यम् = विशिष्टता। प्रमाणीभूतम् = सिद्ध है। तृषाशामकम् = प्यास बुझाने वाला। रोगापहारि = रोग को दूर करने वाला। अनायासम् = बिना प्रयत्न के। निर्विवादतया = विवादरहित रूप से। गङ्गोदकम् = गङ्गा का जल। आनीय = लाकर। समादरधिया = आदर के साथ विचार से। रक्ष्यते = रखा जाता है। विकृतिम् = खराब।

दौर्भाग्यमिदम् = दुर्भाग्य यह है। साम्प्रतम् = इस समय। उत्पाद्यन्ते = उत्पन्न किये जा रहे हैं। प्रवाह्यन्ते = बहाये जाते हैं। मालिन्यम् = मैला (गन्दगी)। प्रणालिकाभिः = नालियों के द्वारा। निलीयन्ते = डुबोये जाते हैं। कूलेषु = किनारे पर। अज्ञानात् = अज्ञानतावश (जानकारी के अभाव से)। कीदृशीयम् = कैसी यह। विडम्बना = निन्दनीय बात। प्रख्याता = प्रसिद्ध है। अपाकर्तुम् = दूर करने के लिए। शुचिताम् = पवित्रता को। प्रतिष्ठापयितुम् = पुनः लाने के लिए। योजनाबद्धम् = योजना बनाकर। निवारयितुम् = मिटाने के लिए। प्रबोध्यते = जागृत की जा रही है। अहर्निशम् = दिन-रात। जगद्धात्री = संसार का पालन करने वाली। पुनाति = पवित्र करती है। नृभिः = मनुष्य द्वारा।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत-

- नरौरा कस्मिन् प्रान्ते अस्ति?
- कस्याः जलस्य वैशिष्ट्यं वैज्ञानिकविश्लेषणेनापि प्रमाणीभूतम्?
- तीर्थराजप्रयागे कः सर्वसम्पदं याचकेभ्यः ददाति स्म?
- नगराणां मालिन्यं काभिः प्रक्षिप्यते?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

- गङ्गायाः जलं कीदृशं भवति?
- तीर्थराजप्रयागे हर्षवर्धनः सर्वसम्पदं केभ्यः ददाति स्म?
- भारतीयशासनेन गङ्गाप्रदूषणस्य विनाशाय का सञ्चालिता?
- गङ्गायाः पावनतटे कानि तीर्थस्थानानि सन्ति?

3. मञ्जूषायाः उपयुक्तपदैः रिक्तस्थानानि पूरयत-

चित्तम्, गङ्गा, हरिद्वारे, नरौरा

- (क) समतलप्रदेशे निर्बाधतया प्रवहति।
 (ख) गङ्गायाः प्रकृतिमनोहारिणी नैसर्गिकी च शोभा सर्वेषां आह्लादयति।
 (ग) बुलन्दशहरनामके जनपदे वर्तते।
 (घ) आधुनिककाले नानाविधानि औद्योगिककेन्द्राण्यपि वर्तन्ते।

4. अधोलिखितगद्यांशानां हिन्दीभाषया अनुवादं कुरुत-

- (क) गङ्गायाः न केवलं भारतवर्षे सम्पर्कमात्रेण विनश्यति।
 (ख) इयं हिमवतः गङ्गा इति लोके प्रसिद्धा।
 (ग) गङ्गातटे नैकाः विशिष्टा ददाति स्म।
 (घ) सौभाग्यात् भारतीयशासनेन अहर्निशमावश्यकता वर्तते।

5. अस्य पाठस्य सारांशं हिन्दीभाषया लिखत।

6. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा उचितं विकल्पं चिनुत-

इयं हिमवतः स्थानद्वयात् लोके प्रसिद्धा।

(क) गङ्गा कुतः प्रसूता?

- (i) अमरकण्टकात् (ii) हिमवतः स्थानद्वयात् (iii) गङ्गासागरात् (iv) विन्ध्यपर्वतात्

(ख) देवप्रयागे कयोः संयुक्तधारा लोके गङ्गा नाम्ना प्रसिद्धा—

- (i) भागीरथ्यलकनन्दयोः (ii) गङ्गोत्रीभागीरथ्योः (iii) गङ्गायमुनयोः (iv) तमसाकर्णावत्योः

7. उचितं विकल्पं चिनुत-

(क) यः गङ्गां स्तौति सः किम् विन्दति?

- (i) स्वर्गम् (ii) दानम् (iii) शक्तिम् (iv) नरकम्

(ख) देवीरूपिणी गङ्गा कुत्र वसति स्म?

- (i) संसारे (ii) मृत्युलोके (iii) स्वर्गे (iv) जलयाने

(ग) कस्य तपःप्रभावेण गङ्गा वसुन्धरामानीता?

- (i) कपिलमुनेः (ii) भगीरथस्य (iii) रामस्य (iv) अन्यस्य

(घ) 'गङ्गा' शब्दस्य अर्थः कः?

- (i) गमनशीला (ii) स्फुरणशीला (iii) स्मरणशीला (iv) दयाशीला

अष्टमः पाठः

पर्यावरणशुद्धिः

पाठपरिचयः

पृथ्वी पर जीवन के लिए 'पर्यावरण' प्रकृति का अनमोल उपहार है। वे सभी प्राकृतिक सम्पदाएँ जो जीवन को संभव बनाती हैं, पर्यावरण कहलाती हैं। जब वे अपने मूल रूप में रहकर कार्य करती हैं, तो पर्यावरण संतुलित रहता है, लेकिन जब मानव अपनी सुविधा व स्वार्थसिद्धि हेतु आविष्कार करता है तब इसका सन्तुलन बिगड़ता है। मिट्टी, जल, वायु, कीट, पतङ्ग, जीवाणु पर्यावरण के प्रमुख घटक हैं। मनुष्य ने विकास की शीघ्रता में इन घटकों के साथ अत्याचार कर प्राकृतिक पर्यावरण सन्तुलन को हानि पहुँचाई है।

वनस्पतियों से प्राप्त होने वाली प्राणवायु के बिना कोई प्राणी एक पल भी जीवित नहीं रह सकता। हमारे पूर्वज वनों के मध्य रहकर ही प्राणायाम, योग व आध्यात्मिक साधना करते थे। प्राकृतिक घटक पशु-पक्षी, कीट-पतङ्ग आदि पर्यावरण में सन्तुलन बनाए रखते हैं।

निष्कर्ष यही निकलता है कि यदि मानव को सर्वसमाज का कल्याण करना है तो अधिक से अधिक वृक्ष लगाने का संकल्प लेना चाहिए। स्वस्थ जीवन के लिए स्वस्थ वातावरण आवश्यक है, जिसका स्रोत वनस्पतियाँ ही हैं।

परितः आवृत्य संस्थितम् पर्यावरणमित्युच्यते। मनुष्येण स्वबुद्ध्याः प्रभावेण जीवनमुन्नतुं नानाविधा आविष्काराः कृताः। बहुविधं सौविध्यं सौकर्यं चाधिगतं किन्तु विकासस्य प्रक्रियायां नैका उपलब्धयः प्राप्ताः किन्तु अधिका हानिरपि अभवत्। मृत्ना-जल-वायु-वनस्पति-खग-मृग-कीट-पतङ्ग-जीवाणव इति पर्यावरणस्य घटका विद्यन्ते। विकासहेतवे क्षिप्रकारिणा मानवेन तान् प्रति विहितेनातिचारेण प्राकृतिकपर्यावरणस्य अधिकं दोहनं कृतम्।

बहुलाभलोभी मानवो वनानि नाशयितुं तथा प्रवृत्तो यदधुना वनानां सुमहान् भाग उच्छिन्नः। वनेभ्यो मनुष्यः काष्ठम्, ओषधीः, फलानि, पुष्पाणि प्राप्नोति किन्तु काष्ठस्य लोभाद् असंख्या हरिता वृक्षा कर्तिताः। मन्ये पर्वतानां पक्षा एव छिन्नाः। पर्वतप्रदेशीयभूप्रदेशानामुर्वरत्वं विनश्यति तेन। भूस्खलनेन केदारा अपि लुप्ता भवन्ति, धनजनहानिर्भवति। ग्रामा अपि ध्वंस्यन्ते।

सर्वे जानन्त्येव यत् प्राणवायुं (ऑक्सीजनेति प्रसिद्धम्) विना मनुष्यः कतिपयक्षणपर्यन्तमेव जीवितुं शक्नोति। प्राणवायोरुत्पादने वृक्षाणां महान् योगः अस्ति। प्रत्येकवृक्षः एका महती प्रयोगशालेव भवति। एष सूर्यस्य तापं हरति, वायुमालिन्यमपनयति, वाष्पोत्सर्गेण वातावरणे आर्द्रतां जनयति, प्रतिवर्षं निजपत्राणि निपात्य उर्वरकमुत्पादयति, भूक्षरणं निरुणद्धि, जलवर्षणे कारणं च भवति।

एकतो मनुष्यो वायुप्रदूषणनिवारकाणां वृक्षाणां हत्यां विदधाति अपरतश्च विविधैः प्रकारैः स्वयं वायुप्रदूषणस्य कारणान्युत्तरोत्तरमाविष्करोति। उद्योगशालाभ्यो निस्सृता धूमाः, खनिजाणवः, रासायनिकाः, लवाः, पूतिगन्धयः वायवो वातावरणं दूषयन्तः प्राणवायुं विशेषतो विकारयन्ति। प्रत्यहं तैलचालितवाहनानां संख्या परिवर्धते। दूषितवायौ श्वसनाद् अस्मत्फुफ्फुसकार्यभारः प्रवर्धते, येन तत्रत्यरोगा हृदयरोगाश्च जायन्ते। शुद्धीकरणे पादपैरपि अत्यधिकं कार्यं करणीयं भवति तत्राक्षमत्वात्तेऽपि रुग्णा जायन्ते। वायुप्रदूषणस्य दुश्चक्रं निरोधातीतं गच्छति।

कोलाहलेनापि पर्यावरणे बहवो दोषा उत्पद्यन्ते, रेलयानानां, मोटरवाहनानां, उद्योगशालासु बृहतां यन्त्राणां, ध्वनिविस्तारकयन्त्राणां, उत्सवेषु अतिमुखरवाद्यानां च घोषः, जनसम्मर्दकलकलेन मिलितो महान् कोलाहलः संपद्यते। विशेषतो नगरेषु ध्वनिप्रदूषणं महती समस्या। अतिकोलाहलेन श्रवणदोषस्तदनु बधिरत्वं च संपद्यते। मस्तिष्कदोषा अपि अनेन उत्पाद्यन्ते यच्चरमपरिणतिरुन्मादो भवति। रक्तचापरोगोऽपि पदं निदधाति येन हृदयं रुग्णं जायते। अस्याः समस्यायाः समाधानार्थं ध्वनिविस्तारकयन्त्राणामनावश्यकः प्रयोगो रोधनीयः, यन्त्राणां कोलाहलो नव-नवसाइलेंसराणामविष्कारेण उपलब्धानां च सम्यगनिवार्यप्रयोगेण परिहरणीयः। अतः सर्वत्रापि राजपथमभितः, मध्ये-मध्ये चोपनगराणां वनस्पतय आरामाश्च आरोपणीयाः।

खगमृगाणां मांसादिलोभिना मानवेन एतादृशी निर्दयता अङ्गीकृता यदधुना तेषां नैकाः प्रजातयो लुप्ता एव, वस्तुतः सर्वेऽपि पशुपक्षिणः पर्यावरणसन्तुलननिर्वाहे यथायोगमुपकारका भवन्ति, सिंहव्याघ्रादयो मांसभक्षकाः हरिणादीनां वृद्धिं परिसीमयन्ति। आशीविषाजगरादयो मूषकशशकादीनां भक्षणेन कृषिकाराणां सुहृद एव। पक्षिणो बीजानां विकिरणं कुर्वन्ति, कीटपतङ्गादयः पुष्पाणां प्रजननक्रियायां सहायका भवन्ति येन फलानि बीजानि चोत्पद्यन्ते। पशुपक्षिणां पुरीषेण भूमिरुर्वरा भवति येन वनस्पतीनां विकासो भवति। 'जीवो जीवस्य भोजनम्' इति प्रकृतिनियमस्यानुसारं पक्षिणः कीटपतङ्गान्, केऽपि हिंसाः पशवश्च तृणचरान् भक्षयन्तः पर्यावरणसंतुलनं स्वत एव विदधति।

जलं यद्धि जीवनायात्यावश्यकत्वाज्जीवनमेव कथ्यते तदपि मनुजस्याविवेकेन दूषितम्। गङ्गायमुनासदृशीषु स्वादुपवित्रपेयसलिलासु नदीषु तटीयनगराणां मलमूत्रादिकं सर्वप्रकारकं मालिन्यं नदीषु निपात्यते। औद्योगिकविषमयरसायनदूषितजलं तासु निपात्यते। नराणां पशूनां च शवास्तत्र प्रवाह्यन्ते। सर्वमेतदतिभीतिकरं प्रदूषणं कुरुते। जलं तथा विषाक्तं जायते यन्मत्स्या अपि ग्रियन्ते। तथाविधं जलं मानवानां स्नानपानादिजनितं रोगमेव प्रकुरुते। सौभाग्येन संप्रति शासनेन गङ्गाप्रदूषणनिवारकं प्राधिकरणं घटतिम्। एष खलु प्रारम्भ एव।

मानवस्य विविधक्रियाभिरुत्पन्नस्तापोऽपि पर्यावरणं दूषयति। परमाणुपरीक्षणैर्महती तापविकृतिर्निष्पाद्यते तेन च मानवप्राणहरा दोषा उत्पद्यन्ते। उद्योगशालानां तापोऽपि वातावरणस्य तापं वर्धयति। ग्रीष्मकाले पक्वेष्टिकासीमेंटकंक्रीट-निर्मितानि भवनानि, कार्यशालाः, लौहनिर्माणानि मानवजीवनेऽस्वास्थ्यकरं प्रभावं

जनयन्ति। अत्रापि वनस्पतयो मानवस्य त्राणं कर्तुं प्रभवः सन्ति। तेषां सघनमारोपणं तापं नियमयत्येव। एवमेव मुहुर्मुहुरनुरुध्यते यन्मानवेनात्मकल्याणाय अधिकाधिकाः वृक्षा आरोपणीयाः।

शब्दार्थः

जनुः = जन्म। मृत्स्ना = प्रशस्त मिट्टी। क्रोडे = गोद में। आवृत्य = ढककर। घटका = अंग। नाशयितुम् = नष्ट करने के लिए। केदाराः = खेत की मेड़ें। प्रवाह्य = बहाकर। निस्सृता = निकला। लवाः = अंश। रोधनीयः = रोकना चाहिए। जाल्मता = क्रूरता। आशीविषः = सर्प। विशोधयितुम् = शुद्ध करने के लिए। पक्वेष्टिका = पक्की ईंटें। राजयः = पंक्तियाँ। आरामाः = उद्यान/बगीचा। पुरीषेण = मल/गन्दगी से। शोधनाय = शुद्ध करने के लिए। तापविकृतिः = ऊष्मा का विकार।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत-

- (क) बीजानां विकिरणं के कुर्वन्ति?
- (ख) काष्ठस्य लोभाद् असंख्या वृक्षाः कैः कर्तिताः?
- (ग) भूस्खलनेन के लुप्ता भवन्ति?
- (घ) प्राणवायोरुत्पादने कस्य योगः वर्तते?
- (ङ) कोलाहलेन किम् उत्पद्यते?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

- (क) नराणां पशूनां च शवाः कुत्र प्रवाह्यन्ते?
- (ख) पर्यावरणस्य घटकाः के विद्यन्ते?
- (ग) वनेभ्यो जनः किं किं प्राप्नोति?
- (घ) शासनेन गङ्गाप्रदूषणनिवारणाय किं घटितम्?
- (ङ) उद्योगशालानां तापः किं वर्धयति?

3. स्थूलपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

- (क) ध्वनिविस्तारकयन्त्राणाम् अनावश्यकः प्रयोगः रोधनीयः।
- (ख) दूषितवायोः श्वसनाद् फुफ्फुसकार्यभारः प्रवर्धते।
- (ग) वाष्पोत्सर्गेण वातावरणं आर्द्रतां जनयति।
- (घ) तैलचालितवाहनानां संख्या परिवर्धते।

4. अधोलिखितपदानां संस्कृतवाक्येषु प्रयोगं कुरुत-

परितः, ध्वनिप्रदूषणम्, क्रोडे, पर्यावरणम्, पुष्पाणि, वृक्षाणाम्

5. अधोलिखितानां गद्यांशानां हिन्दीभाषया अनुवादं कुरुत-

- (क) परितः आवृत्य आविष्काराः कृता।
 (ख) सर्वे जानन्त्येव कारणं च भवति।
 (ग) एकतो मनुष्यो निरोधातीतं गच्छति।
 (घ) जलं यद्धि प्रारम्भ एव।

6. 'पर्यावरणशुद्धिः' इति पाठस्य सारांशं हिन्दीभाषया लिखत।

7. उचितं विकल्पं चिनुत-

(अ) बहुलाभलोभी मानवो अपि ध्वंस्यन्ते।

(i) उक्तगद्यांशस्य शीर्षकः अस्ति—

(क) भारतवर्षम् (ख) पर्यावरणम् (ग) पुण्यसलिला गङ्गा (घ) अन्तरिक्षविज्ञानम्

(ii) 'विनश्यत्येव' अस्य सन्धि-विच्छेदः अस्ति—

(क) विनश्य + एव (ख) विनश्यति + एव
 (ग) विनश्य + इत्येव (घ) विनश्य + इति एव

(iii) वनेभ्योः जनाः प्राप्नुवन्ति।

(क) ओषधिम् (ख) फलानि-पुष्पाणि (ग) काष्ठम् (घ) उपर्युक्तसर्वाणि

(आ) कोलाहलेनापि..... आरोपणीयः।

(i) विशेषतः ध्वनिप्रदूषणं महती समस्या अस्ति।

(क) ग्रामेषु (ख) वनेषु (ग) नगरेषु (घ) विद्यालयेषु

(ii) बहवो दोषाः उत्पद्यन्ते।

(क) वनस्पतीनामारोपणेनापि (ख) भ्रमणेनापि
 (ग) कोलाहलेनापि (घ) जनसम्मर्दनेनापि

(iii) कोलाहलसमस्यायाः समाधानार्थं अनावश्यकः प्रयोगः रोधनीयः।

(क) वनस्पतीनाम् (ख) ध्वनिविस्तारकयन्त्राणाम्
 (ग) साइलेंसराणामाविष्कारस्य (घ) विद्युद्वाहनानामुपयोगस्य

8. बहुविकल्पीयप्रश्नाः

(i) मृत्स्ना-जल-वायु इति पर्यावरणस्य घटका विद्यन्ते।

(क) वनस्पतयः (ख) खग-मृगाः (ग) कीट-पतङ्ग-जीवाणवः (घ) उपर्युक्ताः सर्वे

- (ii) काष्ठस्य लोभाद् असंख्या कर्तिता।
 (क) पर्वताः (ख) हरिता वृक्षाः (ग) फलानि-पुष्पाणि (घ) असंख्यानि वनानि
- (iii) प्राणवायोरुत्पादने महान् योगः अस्ति।
 (क) फलानाम् (ख) ओषधीनाम् (ग) वृक्षाणाम् (घ) पुष्पाणाम्
- (iv) प्रत्येक एका महती प्रयोगशाला भवति।
 (क) पर्वतः (ख) वृक्षः (ग) पृथिवी (घ) जलम्
- (v) दूषितवायौ श्वसनाद् कार्यभारः प्रवर्धते।
 (क) मुखस्य (ख) फुफ्फुसस्य (ग) हृदयस्य (घ) नासिकायाः
- (vi) उत्सर्गेण वातावरणे आर्द्रतां जनयति।
 (क) वाष्प (ख) जलम् (ग) वायु (घ) एतेषु न किमपि



नवमः पाठः

अन्तरिक्षविज्ञानम्

पाठपरिचयः

प्रस्तुत पाठ अन्तरिक्ष-विज्ञान पर आधारित है। लेखक ने इस पाठ में आकाश की निःसीमता का वर्णन करते हुए सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों, उपग्रहों, सप्तर्षि-मण्डल, धूमकेतु, उल्काओं और नीहारिकाओं की रोचक जानकारी प्रस्तुत करते हुए बताया है कि आधुनिक वैज्ञानिक शुक्र, पृथ्वी, मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शनि, यूरेनस (अरुण), नेपच्यून (वरुण) और प्लूटो (यम)—ये नौ ग्रह बताते हैं; किन्तु भारतीय ज्योतिर्विदों ने सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु इन नव ग्रहों को स्वीकार किया है।

विशालमिदमन्तरिक्षं निःसीमकमनन्तं चास्ति। अस्मिन्ननन्ते आकाशे अनन्तानि नक्षत्राणि, ग्रहाः, उपग्रहाः, आदित्यः, चन्द्रमाः, सप्तर्षयः, पुच्छलताराः, नीहारिकाः, सप्तविंशतिनक्षत्राणि, संवत्सरप्रवर्तकाः राशयः चाकचिक्व्यं प्रकटयन्ति।

केवले सौरसाम्राज्ये एकः आदित्यः, तस्य नवग्रहाः अष्टाविंशतिरुपग्रहाः सन्ति। अनेकाः ग्रहकणिकाः, सहस्रं धूमकेतवः तथैव अनन्ता उल्काश्च समुपलभ्यन्ते। ग्रहकणिकाः, मङ्गलबृहस्पतिनक्षत्रयोरन्तराले विकीर्णाः सन्ति। ताः लघ्व्यः सन्ति। उल्काश्च ततोऽपि अतिलघ्व्यः। धूमकेतवः ग्रहेभ्यः उपग्रहेभ्यश्च भिन्नाः भवन्ति। ते परिमाणेन लघवः आकाशे इतस्ततः विकीर्णाः सन्ति।

अल्पीयांसं प्रकाशबिन्दुं दधानाः टिमटिमायन्ते तास्तास्ताराः। तत्र भीषणमौष्ण्यं जलाभावश्चः अतः प्राणिनां निवसनमसम्भवम्।

सूर्यः स्थाल्याकारः प्रतीयते परम् एवं नास्ति। अयम् पृथिव्याः त्रयोदशलक्षात्मको गुणितः अतीव महान् विद्यते। नक्षत्राणामाकारं दृष्ट्वा मनोऽतीव विमुग्धतां भजते। तानि सूर्यापेक्षया अतीव महान्ति प्रतिभान्ति परं लघूनि दृश्यन्ते, कारणमिदं यद्वस्तु यावद्दूरं भवति, तद्वस्तु तावत् लघु दृश्यते। सूर्यो यदि एकं क्षणमपि नैजमाकर्षणमवरुन्धीत, तदा सर्वे ग्रहाः उपग्रहाश्च परस्परं संघर्षणं, परिघट्टनञ्च कुर्वाणाः स्वस्थानात् च्यवेरन्। सौरसाम्राज्ये यानि पिण्डानि सन्ति तेषां गतिः सुनिश्चिता, तानि एकस्यामेव दिशि गतिं प्रकुर्वते, तस्यामेव धुरि परिचलन्ति। द्वौ त्रयो वा उपग्रहा एवंविधाः सन्ति ये विपरीतां दिशं वहन्ति। ते सर्वे सौरसाम्राज्ये नियतां व्यवस्थामेवालम्बन्ते। पृथिवीतः सूर्यः अतीव दूरेऽस्ति।

सप्तर्षयः ध्रुवं च

उत्तरस्यां दिशि सप्तर्षयः हलाकारं प्रतिभासन्ते। तिस्रः ताराः उपरि एकस्यां पङ्क्तौ पुच्छरूपेण, चतस्रः चतुरस्रतयाधः प्रतिभासन्ते। समीपे ध्रुवं भासते।

धूमकेतुः

अष्टाधिकैकोनविंशतितमेऽब्दे एको महान् धूमकेतुः रात्रेरन्तिमे प्रहरे गगने उत्तरस्यां दिशि दृष्टः। इत्थम् द्वितीयो धूमकेतुः दशाधिकैकोनविंशतितमे ख्रिष्टाब्देऽपि वीक्षितो जनैः। धूमकेतोः पुच्छमतिविशालमल्पीयसा वाष्पेण निर्मितं भवति। अयम् अतिथिः दैवयोगात् सौरसाम्राज्यमाविशति। यः शक्तिहीनः धूमकेतुर्भवति, स सततं परिभ्रमन्नेव तिष्ठति। कश्चन नश्यत्येव। एनमपशुकुनस्यापि द्योतकं मन्यते।

उल्काः

गहने निशीथे यदा गगनमतिस्वच्छं भवति तदा एकः शराकारः विभ्राजिष्णुः चाकचिक्यमादधानः पुञ्जीभूतः प्रकाशः सकलं नभः द्विधा विभजन् महता वेगेन धावन् दूरं गत्वा लुप्तो भवति।

जनाः उल्का त्रुटिता इति कथयन्ति। तां दृष्ट्वा केचन पञ्चानां पुष्पाणां नामोच्चारणेन, केचन प्ठीवनेन अशुभनिवारणं कुर्वते। वस्तुतः उल्काः पिण्डीभूताः इतस्ततः परिभ्रमन्ति। यदा पृथिव्याः सीमानमाश्रयन्ते तदा घनीभूतेन वायुमण्डलेन संघर्षणं कृत्वा निष्क्रामन्ति तदा ज्वलन्त्यः अग्रे प्रसरन्ति पुनश्च नश्यन्ति। कदाचिद् अर्धज्वलनावस्थायां पतित्वा भूमिमाविशन्ति। एवंविधाः उल्काः कलिकातानगरस्य संग्रहालये संस्थापिताः सन्ति।

चन्द्रमाः

चन्द्रमाः पृथिव्या एव निर्गत्य गतः एवं वैज्ञानिका अपि भाषन्ते। सर्वेष्वपि नक्षत्रेषु एकः चन्द्रमा एव धरायाः समीपवर्ती वर्तते। चन्द्रः पृथिवीं परितः अण्डाकारं भ्रमति। पृथिवी स्वयं सूर्यं परितः भ्रमति। चन्द्रमास्तु पृथिवीं परितः चलति। प्रायः अष्टाविंशतितमे दिवसे परिक्रमां पूरयति। चन्द्रस्य कलाभिः तिथीनां मासानञ्च निर्माणं भवति। चन्द्रः सूर्यप्रकाशात् प्रकाशितो भवति। यदा चन्द्रः सूर्यपृथिव्योरन्तराले जायते, तदा ग्रहणं भवति एवं वदन्ति वैज्ञानिकाः। चन्द्रोपरि सूर्यस्य प्रकाशः यस्मिन् भागे पतति सः भागः प्रकाशितः कलारूपेण दृष्टिपथमायाति। स एव प्रकाशः तेनैव क्रमेण वर्धते, ह्रसति च।

अमावास्यायां चन्द्रः सूर्यपृथिव्योः मध्ये भवति, चन्द्रस्य यः अर्धभागः सूर्याभिमुखो भवति स भागः प्रकाशमानो भवति। प्रकाशितः स भागः पृथिव्या न दृष्टो जायते। केवलः अप्रकाशितोऽर्धभागः पृथिवीस्थैः जनैः दृश्यते। प्रकाशाभावे चन्द्रस्य दर्शनं न जायते। अयं कालः अमानाम्नाभिधीयते।

पूर्णिमायां पृथिवी सूर्याचन्द्रमसोः मध्ये भवति। सूर्येण प्रकाशितं सकलं चन्द्रमण्डलं दृष्टिगोचरं भवति।

नीहारिकाः

विशालतमानामाकाराणां वाष्पीयपदार्थानां समूहो नीहारिका। रात्रौ आकाशं द्विधा कुर्वन् विशालो राजमार्ग इव यः प्रकाशः मध्येऽलोक्यते सः नीहारिकानाम्ना कथ्यते। आकाशे बह्व्यः नीहारिकाः भवन्ति। इमा नतावन्ताः, बृहदाकाराः, दीर्घवृत्ताकाराः कुण्डलिताः वा भवन्ति। दीर्घा नीहारिका एकं पृथक् ब्रह्माण्डं भवति। नीहारिकामध्ये अगणिताः ताराः परितः वाष्पीयपदार्था भवन्ति। रात्रौ निर्मला गङ्गा इव दृष्टिपथमायाति। अतः आकाशगङ्गानाम्नाभिधीयते।

आधुनिका वैज्ञानिकाः (सूर्यग्रहेषु) बुध-शुक्र-पृथ्वी-मङ्गल-बृहस्पति-शनि-यूरेनस (अरुण)-नेपच्यून (वरुण)-प्लूटो (यम) इति नव ग्रहान् वर्णयन्ति। चन्द्रं पृथिव्याः उपग्रहं कथयन्ति। भारतीयाः ज्योतिर्विदः सूर्य-चन्द्र-मङ्गल-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनि-राहु-केतून् नव ग्रहान् निर्दिशन्ति।

एवमन्तरिक्षं विभु अनन्तं निःसीमात्मकं चास्ते। अत्रत्यमेकमपि नक्षत्रं वर्णनातीतमस्ति।

शब्दार्थः

निःसीमकम् = सीमारहित। सप्तर्षयः = सात तारों का समूह। नीहारिकाः = आकाशगङ्गायें। संवत्सरप्रवर्तकाः = वर्ष को करनेवाली। राशयः = राशियाँ। चाकचिक्वम् = चकाचौंध। नक्षत्राणि = तारे। धूमकेतवः = पुच्छल तारे। विकीर्णाः = फैली हुई। लघ्व्यः = छोटी-छोटी। औष्ण्यम् = गर्मी, उष्णता। निवसनम् = रहना। लक्ष = लाख। विमुग्धताम् = अत्यन्त मूढ़ता को। भजते = प्राप्त करता है। प्रतिभान्ति = प्रतीत होती हैं। नैजम् = अपना। अवरुन्धीत = रोक दे। परिघट्टनम् = टकराना। च्यवेरन् = गिर पड़े। धुरि = धुरी पर। परिचलन्ति = घूमते हैं। चतुरस्रतया = चतुर्भुज की तरह। अब्दे = वर्ष में। शराकारः = बाण के आकार का। विभ्राजिष्णुः = अत्यधिक चमकीला। सकलम् = सम्पूर्ण। विभजन् = बाँटता हुआ। आविशति = प्रवेश करता है। द्योतकः = सूचक। सततम् = निरन्तर। उल्का = टूटा हुआ तारा। ष्ठीवनेन = थूकने के द्वारा। पिण्डीभूत = एकत्रित। निर्गत्य = निकलकर। परितः = चारों ओर। अन्तराले = बीच में। आयाति = आता है। हसति = घटता है। सूर्याभिमुखः = सूर्य के सामने। अमा = अमावस्या। दृष्टिगोचरम् = जो आँखों से देखने में आ सके। द्विधा = दो भागों में। अवलोक्यते = दिखाई पड़ता है। कथ्यते = कहा जाता है। नतावनताः = ऊँची-नीची। विभु = व्यापक। अत्रत्यम् = यहाँ का। नक्षत्रम् = तारा, तारों का समूह। वर्णनातीतम् = वर्णन से परे।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत-

- किं निःसीमात्मकम् अस्ति?
- सौरसाम्राज्ये कति ग्रहाः सन्ति?
- ग्रहकणिकाः कयोः अन्तराले विकीर्णाः सन्ति?
- कस्यां दिशि सप्तर्षयः हलाकारं प्रतिभासन्ते।
- कः ग्रहः धरायाः समीपवर्ती वर्तते?

2. अधोलिखितानां गद्यांशानां हिन्दीभाषया अनुवादं कुरुत-

- (क) केवले सौरसाम्राज्ये..... निवसनमसम्भवम्।
 (ख) सूर्यः स्थाल्याकारः च्यवेरन्।
 (ग) अष्टाधिकैकोनविंशतितमेऽब्दे..... निर्मितं न भवति।
 (घ) गहने निशीथे परिभ्रमन्ति।

3. 'अन्तरिक्षविज्ञानम्' इति पाठस्य सारांशं स्वशब्दैः लिखत।

4. अनुच्छेदाधृताः प्रश्नाः-

गद्यांशं पठित्वा उचितं विकल्पं चिनुत-

(अ) चन्द्रमाः पृथिव्या अण्डाकारं भ्रमति।

(i) चन्द्रमाः कुतः निर्गत्य गतः ?

- (क) सूर्यात् (ख) बृहस्पते (ग) पृथिव्याः (घ) शुक्रात्

(ii) कस्य कलाः क्षीणाः भवन्ति परिवर्धन्ते च ?

- (क) सूर्यस्य (ख) चन्द्रमसः (ग) मङ्गलस्य (घ) शनेः

(iii) चन्द्रः कं परितः अण्डाकारं भ्रमति ?

- (क) सूर्यम् (ख) मङ्गलम् (ग) शनिम् (घ) पृथिवीम्

(आ) विशालतमानामाकाराणां ब्रह्माण्डं भवति।

(i) केषां समूहः नीहारिका ?

- (क) जलानाम् (ख) तेजसाम् (ग) वायूनाम् (घ) वाष्पीयपदार्थानाम्

(ii) आकाशे नीहारिकाः भवन्ति।

- (क) पञ्च (ख) षट् (ग) बह्व्यः (घ) लघ्व्यः

(iii) दीर्घा नीहारिका किम् भवति ?

- (क) पृथक् ब्रह्माण्डम् (ख) लघुनक्षत्रम् (ग) क्षुद्रः ग्रहः (घ) उपग्रहः

5. उचितं विकल्पं चिनुत-

(i) अस्मिन्ननन्ते आकाशे कति नक्षत्राणि भवन्ति ?

- (क) पञ्चविंशतिः (ख) सप्तविंशतिः (ग) त्रिंशत् (घ) चत्वारिंशत्

(ii) सौरसाम्राज्ये कति उपग्रहाः सन्ति ?

- (क) एकविंशतिः (ख) द्वाविंशतिः (ग) सप्तविंशतिः (घ) अष्टाविंशतिः

(iii) सूर्यः कीदृशः प्रतीयते ?

- (क) अण्डाकारः (ख) शराकारः (ग) स्थाल्याकारः (घ) तुलाकारः

- (iv) सूर्यः कियद्गुणितो अतीव महान् विद्यते?
 (क) पञ्चलक्षात्मकः (ख) दशलक्षात्मकः (ग) एकादशलक्षात्मकः (घ) त्रयोदशलक्षात्मकः
- (v) एवंविधाः उल्काः सङ्ग्रहालये संस्थापिताः सन्ति।
 (क) देहलीनगरस्य (ख) कलिकातानगरस्य (ग) मुम्बईनगरस्य (घ) प्रयागराजस्य
- (vi) चन्द्रः कस्य प्रकाशात् प्रकाशितो भवति?
 (क) पृथिव्याः (ख) बृहस्पतेः (ग) शुक्रस्य (घ) सूर्यस्य
- (vii) सप्तर्षीणां समीपे किम् भासते?
 (क) धूमकेतुः (ख) ध्रुवम् (ग) चन्द्रमाः (घ) नीहारिका

रचनात्मकं कार्यम्

6. अधोलिखितानां शब्दानां स्ववाक्येषु प्रयोगं कुरुत-

- (1) अन्तरिक्षम् — अन्तरिक्षम् विशालम् अस्ति।
- (2) चन्द्रः —।
- (3) सूर्यः —।
- (4) पृथिवी —।
- (5) भासते —।

आन्तरिकं मूल्याङ्कनम्

- (1) राशयः के? तेषां नामानि लिखत।
- (2) सूर्यस्य, चन्द्रमसः, पृथिव्याः, धूमकेतोः नीहारिकायाश्च चित्रम् आलिख्य तेषां विषये सङ्क्षेपेण लिखत।

योग्यता-विस्तारः

अन्तर्मध्ये ऋक्षाणि नक्षत्राणि यस्य तत् अन्तरिक्षम् अर्थात् जिसके भीतर ग्रह, उपग्रह, तारे इत्यादि नक्षत्र हों, उसे अन्तरिक्ष कहते हैं। अन्तरिक्ष-विज्ञान (Astronomy) प्राचीन भारतीय ज्योतिषशास्त्र का अङ्गभूत है। भारतीय ज्योतिष, पञ्चाङ्ग एवं प्राचीन वेधशालाओं की महान् वैज्ञानिक उपलब्धियाँ विश्वविदित हैं। ज्योतिषशास्त्र छः वेदाङ्गों में से एक है। इसकी महत्ता को ध्यान में रखकर ही वैदिक ऋषियों ने ज्योतिष को ज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा मानते हुए, उसे वेदरूपी पुरुष का नेत्र कहा है—“ज्योतिषामयनं चक्षुः”।

दशमः पाठः

भारतीयसंविधानस्य निर्माता डॉ० भीमराव रामजी आंबेडकरः

पाठपरिचयः

भारतीय संविधान के शिल्पकार स्वतन्त्र भारत के प्रथम विधिमन्त्री, विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ, शिक्षाविद्, समाजशास्त्री, समाजसुधारक, प्रोफेसर, सम्पादक डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 ई. को मध्य प्रदेश के महु नामक स्थान पर हुआ। बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ० आंबेडकर 9 भाषाओं (अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, गुजराती, हिन्दी, मराठी, संस्कृत, पालि और फारसी) के जानकार थे। 1920 ई. में साप्ताहिक पत्रिका 'मूक नायक' का प्रकाशन कराया और पत्रिका के माध्यम से समाज में व्याप्त जातीय-विभेद को दूर करने का प्रयास किया। भारत में महिला सशक्तीकरण की दिशा में 1950 ई. में 'हिन्दू कोड बिल' लाकर पहला प्रयास आंबेडकर ने किया। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित किया। उनके द्वारा किए गए योगदान को राष्ट्र सदैव याद रखेगा।



डॉ० भीमराव रामजी आंबेडकरस्य जन्म अप्रैलमासस्य चतुर्दशदिनाङ्के एकनवत्यधिकाष्टादशशततमे ख्रीष्टाब्दे (14 अप्रैल, 1891 ई.) अभवत्। अयं बाबासाहेब इति नाम्ना विख्यातो जातः। अयं भारतीयविधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञः समाजसुधारकश्चासीत्। अयं दलितबौद्धान्दोलनं प्रेरितवान् दलितोत्थानायाभियानं च सञ्चालितवान्। सः स्वतन्त्रभारतस्य प्रथमविधिमन्त्री भारतीयसंविधानस्य प्रमुखवास्तुकारश्चासीत्। आंबेडकरः विपुलप्रतिभायाः छात्रः आसीत्। सः तु कोलम्बियाविश्वविद्यालयात् लन्दनविश्वविद्यालयात् च अर्थशास्त्रविषये शोधकार्यं (डॉक्टरेट) सम्पादितवान्। सः तु विधि-अर्थशास्त्र-राजनीतिविज्ञानस्य शोधकार्ये ख्यातिं लब्धवान्। जीवनस्य प्रारम्भिकोत्थानकाले सः अर्थशास्त्रविषयस्य

आचार्यः (प्रोफेसरः) आसीत्। अनन्तरमधिवक्तृकार्यमप्यकरोत्। षट्पञ्चाशदधिकैकोनविंशतिशततमे ख्रीष्टाब्दे (1956 ई.) सः बौद्धधर्मं स्वीकृतवान्। नवत्यधिकैकोनविंशतिशततमे (1990) ख्रीष्टाब्दे भारतस्य सर्वोच्चनागरिकसम्मानेन भारतरत्नेन अलङ्कृतोऽयं जातः।

आंबेडकरमहोदयस्य जन्म भारतस्य मध्यप्रदेशस्य महूनामके स्थानेऽभवत्। सः तु रामजी मालोजी सकपालमहोदयस्य भीमाबाई इत्याख्यायाः च चतुर्दशः पुत्रः आसीत्। तस्य कुटुम्बः महाराष्ट्रियः आसीत्। इदानीम् आंबेडके ग्रामः आधुनिकमहाराष्ट्रस्य रत्नागिरिजनपदे स्थितः अस्ति। सः हिन्दू महाराजात्या सम्बन्धितः आसीत्। तस्य जातिं अस्पृश्यां मन्यन्ते स्म तात्कालिकजनाः। अस्मात् कारणात् तेन सह सामाजिक-आर्थिकरूपेण अत्यधिकपङ्क्तिभेदः प्रचलितः आसीत्। डॉ० भीमराव रामजी आंबेडकरस्य पूर्वजः बहुकालं यावत् ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी इत्याख्याः सेनायां कार्यरतः आसीत्। तस्य पिता भारतीयसेनायाः मऊशिवरे (छावनी) सेवायामासीत्। अत्रैव कार्येषु तल्लीनः सः सूबेदारपदवीं प्राप्तवान्। सः महाराष्ट्रीं (मराठी) आङ्ग्लभाषायाञ्च औपचारिकशिक्षायाः उपाधिम् अलभत। डॉ० आंबेडकरः गौतमबुद्धस्य शिक्षया प्रभावितः आसीत्। स्वजातेः कारणात् सः अस्मै सामाजिकं प्रतिरोधम् असहत। रामजी सकपालः विद्यालये स्वपुत्रस्य भीमरावस्य उपनाम सकपालस्य स्थाने अंबाडवेकर लेखितवान्। एकः ब्राह्मणशिक्षकः कृष्णा महादेव आंबेडकरः तस्मिन् स्निह्यति स्म। सः तस्य नाम्नः अंबाडवेकरं परित्यज्य आंबेडकर उपनाम संयोजितवान्। तस्मात् सः आंबेडकरनाम्ना विख्यातः। आंबेडकरः अष्टचत्वारिंशदधिकैकोनविंशतिशततमे (1948) ख्रीष्टाब्दे पुनर्विवाहं कृतवान्। गायकवाडशासकः त्रयोदशाधिकैकोनविंशतिशततमे (1913) ख्रीष्टाब्दे संयुक्तराज्य-अमेरिकायाः कोलम्बियाविश्वविद्यालये अध्ययनाय भीमराव आंबेडकरस्य चयनमभवत्। अस्मै कार्याय साढेकादश (11.5) डालर इति प्रतिमासं छात्रवृत्तिरपि तस्मै प्रदत्ता। न्यूयार्कनगरे आगमनस्य पश्चात् डॉ० भीमराव रामजी आंबेडकरः राजनीतिविज्ञानविभागस्य स्नातकाध्ययने प्रवेशं प्राप्तवान्। षोडशाधिकैकोनविंशतिशततमे ख्रीष्टाब्दे (1916 ई.) सः शोधप्रबन्धं लिखित्वा पी-एच.डी. उपाधिना सम्मानितः जातः। सः इदं शोधपुस्तकम् 'इवोल्युशन ऑफ प्रोविन्सिअल फिनान्स इन ब्रिटिश इण्डिया' एतद्रूपेण प्रकाशितं कारितवान्। डॉ० आंबेडकरः स्वीयं पी-एच.डी. इत्युपाधिं गृहीत्वा षोडशाधिकैकोनविंशतिशततमे ख्रीष्टाब्दे (1916 ई.) लन्दननगरमगच्छत्, यत्र सः 'ग्रेज् इन एव लन्दन स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स' इति विषये विधेः (कानून) अध्ययनायार्थशास्त्रे च डॉक्टरेट इत्युपाधये पञ्जीकरणं कारितवान्। अग्रिमवर्षे छात्रवृत्तिसमाप्तेः कारणात् सः स्वाध्ययनं परित्यज्य भारतं प्रत्यागच्छत्। प्रथमविश्वयुद्धस्य कालोऽयमासीत्। बङ्गालराज्यस्य सेनासचिवरूपेण कार्यं कुर्वन् स्वजीवने अकस्मादुपस्थितां समस्यां दृष्ट्वा तस्य मनो तत्र नारमत, स्ववृत्तिकां त्यक्त्वा सः व्यक्तिगतशिक्षक-लेखाकाररूपेण कार्यं कर्तुमारभत। सः स्ववैदेशिकमित्रस्य पूर्वराज्यपालस्य लॉर्ड सिडेनम महोदयस्य कारणात् मुम्बईस्थिते 'सिडेनम कॉलेज ऑफ कॉमर्स एण्ड एकाॅनॉमिक्स' इति विद्यालये राजनीतिक अर्थव्यवस्थायाः आचार्यस्य (प्रोफेसर) सेवां लब्धवान्। विंशत्यधिकैकोनविंशतिशततमे (1920) ख्रीष्टाब्दे कोल्हापुरनगरस्य महाराजा स्वपारसीमित्रसाहय्येन तम् इंग्लैण्डदेशं गमयितुं समर्थोऽभवत्।

त्रयोविंशत्यधिकैकोनविंशतिशततमे (1923) ख्रीष्टाब्दे सः स्वशोधं 'रूप्यकाणां समस्या (प्रोब्लेम ऑफ द रूपी) सम्पूरितवान्। सः लन्दनविश्वविद्यालयात् 'डॉक्टर ऑफ साइन्स' इत्युपाधिमलभत। सः विधेः (कानून) अध्ययनं सम्पूर्य 'ब्रिटिशबार' इति संस्थाने बैरिस्टररूपेण प्रवेशमलभत। भारतप्रत्यागमनकाले डॉ० भीमराव रामजी आंबेडकरः त्रिमासपर्यन्तं जर्मनीदेशे स्थितः। तत्र सः अर्थशास्त्रस्याध्ययनं 'बॉन विश्वविद्यालये' कृतवान्। सः जूनमासस्य अष्टमे दिनांके सप्तविंशत्यधिकैकोनविंशतिशततमे ख्रीष्टाब्दे (8 जून, 1927 ई.) कोलम्बिया-विश्वविद्यालयात् पी-एच.डी. उपाधिमलभत।

विंशत्यधिकैकोनविंशतिशततमे ख्रीष्टाब्दे (1920 ई.) मुम्बईनगरात् सः साप्ताहिकमूकनायकपत्रिकां प्रकाशितवान्। सा पत्रिका सत्वरगत्या जनानां मनसि स्थानं स्थापितवती। अस्याः पत्रिकायाः माध्यमेन सः रूढिवादिहिन्दूनेतृणां जातीयविभेददूरीकरणाय प्रायतत। दलितसमाजस्यैकस्मिन् सम्मेलने अस्य व्याख्यानेन प्रभावितः स्थानीयशासकः शाहूः चतुर्थः आंबेडकरमहोदयेन सह भुक्तवान्। तस्य भोजनेन रूढिवादिसमाजे कोलाहलोऽजायत। आंबेडकरः लब्धप्रतिष्ठः प्राड्विवाकः संजातः। अनन्तरं सः बहिष्कृतहितकारिणीसभां स्थापयामास, यस्याः उद्देश्यं दलितवर्गेषु शिक्षायाः प्रचारः प्रसारश्चासीत्। अपि च तेषां कृते सामाजिकार्थिकोन्नतयै कार्यं प्रधानमासीत्। महानुभावोऽयं अस्पृश्यतादूरीकरणार्थं व्यापकम् आन्दोलनं समचालयत्। तस्योद्देश्यं अस्पृश्यतादूरीकरणम् अस्पृश्यानां देवालयगमनं तेषां पेयजलसमस्यादिसमाधानमासीत्। स्वल्पेषु दिवसेषु डॉ० आंबेडकरः प्रख्यातः दलितनेता अभवत्। सः मुख्यधारायां महत्त्वपूर्णराजनीतिकदलस्य जातेः व्यवस्थायाः उन्मूलनार्थमुदासीनतायाः कट्वालोचनामकरोत्। अयं ब्रिटिशशासनस्य विफलतयापि असन्तुष्टः आसीत्। सः अस्पृश्यसमुदायस्य कृते पृथक् राजनीतिकपरिचयस्य विचारधारां स्थापितवान् यत्र कांग्रेसस्य ब्रिटिशशासनस्य च हस्तक्षेपः न स्यात्।

अक्टूबरमासस्य त्रयोदशदिनांके पञ्चत्रिंशदधिकैकोनविंशतिशततमे ख्रीष्टाब्दे (13 अक्टूबर, 1935 ई.) अयं विधिमहाविद्यालये प्रधानाचार्यपदे नियुक्तः। प्रधानाचार्यरूपेण अयं वर्षद्वयं कार्यमकरोत्। अस्मिन्नेव वर्षे अस्य भार्या कालकवलिता सज्जाता। अस्य भार्या तीर्थयात्रायै गन्तुमिच्छति स्म परञ्चायं तां नादिशत्। तस्य चिन्तनमासीत् यत् तत्र गमनं निष्फलं यत्र तस्याः सम्मानं न स्यात्। षट्त्रिंशदधिकैकोनविंशतिशततमे ख्रीष्टाब्दे (1936 ई.) अयं 'स्वतंत्र लेबर पार्टी' इति दलस्य स्थापनामकरोत्। केन्द्रीयविधानसभायाः निर्वाचने सः पञ्चदशस्थाने विजयं लब्धवान्। सः स्वपुस्तकं 'जातेः विनाशः' अपि अस्मिन्नेव वर्षे प्रकाशितवान् यत् न्यूयार्के लिखिते शोधपत्रमाधृत्य प्रणीतमासीत्। भारतपाकिस्तानविभाजनकाले तस्य कथनमासीत् यत् कनाडानामके देशेऽपि साम्प्रदायिकविचारधारा सततं प्रचलति तथापि तत्र अंग्रेज-फ्रांसीसीजनाः सहैव निवसन्ति, अतः अस्मिन् देशे हिन्दू-मुस्लिमजनाः कथं न सहैव स्थातुं शक्नुवन्ति। तस्य चिन्तनमासीत् यत् देशनिर्माणस्य समाधानम् अत्यन्तं दुष्करं भविष्यति। विशालजनसंख्यायाः स्थानान्तरेण सह सीमाविवादस्यापि समस्या स्थास्यति। तस्य कथनं भारतस्य स्वतन्त्रतायाः पश्चात् हिंसां दृष्ट्वा समीचीनमेव प्रतिभाति।

अगस्तमासस्य पञ्चदशदिनाङ्के सप्तचत्वारिंशदधिकैकोनविंशतिशततमे ख्रीष्टाब्दे (15 अगस्त, 1947 ई.) भारतस्य स्वतन्त्रतायाः पश्चात् कांग्रेसदलस्य नेतृत्वे घटितस्य सर्वकारस्य अस्तित्वे डॉ० भीमराव

रामजी आंबेडकरः देशस्य प्रथमो विधिमन्त्री सञ्जातः। अगस्तमासस्य एकोनत्रिंशे दिनाङ्के सप्तचत्वारिंशदधिकैकोनविंशतिशततमे ख्रीष्टाब्दे (29 अगस्त, 1947) डॉ० भीमराव रामजी आंबेडकरः स्वतन्त्रभारतस्य नवीनसंविधानसमितेः अध्यक्षः नियुक्तोऽभवत्। अयं समाननागरिकसंहितायाः पक्षधरः आसीत्।

पञ्चाशदधिकैकोनविंशतिशततमे ख्रीष्टाब्दे (1950 ई.) अयं बौद्धधर्मं प्रत्याकर्षितोऽभूत्। बौद्धधर्मेण प्रभावितोऽयं बौद्धधर्मं स्वीकृतवान्। दिसम्बरमासस्य षष्ठे दिनाङ्के षट्पञ्चाशदधिकैकोनविंशतिशततमे ख्रीष्टाब्दे (6 दिसम्बर, 1956 ई.) अस्य मृत्युरभवत्।

अयं स्वजीवने बहूनि पुस्तकानि व्यरचयत्। यथा- 'हू वेयर शूद्राज?', 'द बुद्धा एंड हिज धम्मा', 'थाट्स ऑन पाकिस्तान', 'अनहिलेशन ऑफ कास्ट', 'द अनटचेबल', 'फिलोसफी ऑफ हिन्दुइज्म', 'सोशल जस्टिस एंड पालिटिकल सेफगार्ड्स', 'फार डिप्रेस्ड क्लासेज', 'गाँधी एंड गांधीज्म' इत्यादीनि।

शब्दार्थः

विधिवेत्ता = कानून को जानने वाला। वास्तुकारः = शिल्पी। विधिमन्त्री = कानून मंत्री। गत्वा = जाकर। प्रत्यागच्छत् = लौट आये। कुटुम्बः = परिवार। पङ्क्तिभेदः = जाति-पांति का भेद। प्रदत्तम् = दिया गया। परित्यज्य = छोड़कर। दुष्करम् = कठिन। समीचीनम् = सही, उचित। कवलिता = नष्ट। पक्षधरः = पक्ष लेने वाले, समर्थक। सञ्जातः = हो गये।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत-

- (क) बाबा साहेबेति नाम्ना कः प्रसिद्धः अस्ति?
- (ख) डॉ० भीमराव रामजी आंबेडकरः कस्मिन् विषये शोधकार्यम् कृतवान्?
- (ग) स्वतन्त्रभारतस्य संविधानसमितेः अध्यक्षः कः आसीत्?
- (घ) डॉ० भीमराव रामजी आंबेडकरमहोदयः कं धर्मं स्वीकृतवान्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

- (क) स्वतन्त्रभारतस्य प्रथमः विधिमन्त्री कः आसीत्?
- (ख) डॉ० भीमराव रामजी आंबेडकरस्य पितुः नाम किम् आसीत्?
- (ग) डॉ० भीमराव रामजी आंबेडकरस्य जन्म कुत्र अभवत्?
- (घ) डॉ० भीमराव रामजी आंबेडकरमहोदयः कस्मात् नगरात् साप्ताहिकी 'मूकनायकः' इति पत्रिकां प्रकाशितवान्?
- (ङ) भारतीयसंविधानस्य प्रमुखः वास्तुकारः कः आसीत्?

3. अधोलिखितरिक्तस्थानानि पूरयत-

(महूनामके, पी-एच.डी., बौद्धधर्मम्, समाननागरिक, भारतरत्नेन)

- (क) भारतस्य सर्वोच्चनागरिक सम्मानेन अलङ्कृतोऽयं जातः।
 (ख) डॉ० भीमराव रामजी आंबेडकरमहोदयस्य जन्म भारतस्य मध्यप्रदेशस्य स्थाने अभवत्।
 (ग) अयं संहितायाः पक्षधरः आसीत्।
 (घ) कोलम्बिया-विश्वविद्यालयस्य उपाधिं प्राप्तवान्।
 (ङ) बौद्धधर्मेण प्रभावितोऽयं स्वीकृतवान्।

4. अधोलिखितानां सन्धि-विच्छेदं कुरुत-

- (क) अर्थशास्त्राध्ययनम् =
 (ख) तल्लीनः =
 (ग) स्वानुयायी =
 (घ) प्रत्यागमनम् =
 (ङ) परञ्चायम् =

5. अधोलिखितगद्यांशानां हिन्दीभाषया अनुवादं कुरुत-

- (क) डॉ० भीमराव रामजी आंबेडकरस्य जन्म अलंकृतोऽयं जातः।
 (ख) अक्टूबरमासस्य त्रयोदशदिनाङ्के शोधपत्रमाधृत्य प्रणीतमासीत्।।
 (ग) आंबेडकरमहोदयस्य जन्म उपाधिना सम्मानितमकरोत्।
 (घ) अगस्तमासस्य पञ्चदशदिनाङ्के अस्य मृत्युरभवत्।
 (ङ) विंशत्यधिकैकोनविंशतितमे समाधानं च आसीत्।

6. अस्य पाठस्य सारांशं हिन्दीभाषया लिखत।

7. अधोलिखितगद्यांशं पठित्वा उचितं विकल्पं चिनुत-

डॉ० भीमराव रामजी आंबेडकरमहोदयस्य जन्म जनपदे स्थितः अस्ति।

(i) आंबेडकरस्य कुटुम्बः कः आसीत्?

- (क) महाराष्ट्रियः (ख) बिहारीयः (ग) दक्षिणदेशीयः (घ) हिमालयीयः

(ii) इदानीम् आंबेडकवेग्रामः कुत्र स्थितः अस्ति?

- (क) रत्नागिरिजनपदे (ख) सीतापुरजनपदे (ग) नागपुरजनपदे (घ) कोल्हापुरजनपदे

(iii) डॉ० भीमराव रामजी आंबेडकरस्य मातुः नाम किम्?

- (क) भीमाबाई (ख) रमाबाई (ग) गीताबाई (घ) सावित्री

8. अधोलिखितप्रश्नेषु उचितं विकल्पं चिनुत-

- (i) डॉ० भीमराव रामजी आंबेडकरस्य मृत्युः कदा अभवत्?
 (क) 6 नवम्बर 1956 ख्रीष्टाब्दे (ख) 25 नवम्बर 1956 ख्रीष्टाब्दे
 (ग) 2 दिसम्बर 1936 ख्रीष्टाब्दे (घ) 6 दिसम्बर 1956 ख्रीष्टाब्दे
- (ii) डॉ० भीमराव रामजी आंबेडकरः भारतस्य सर्वोच्चनागरिकसम्मानेन भारतरत्नेन कदा अलङ्कृतः?
 (क) 1985 ई. (ख) 1990 ई. (ग) 1992 ई. (घ) 1994 ई.
- (iii) डॉ० भीमराव रामजी आंबेडकरः जीवनस्य प्रारम्भिके काले अर्थशास्त्रविषयस्य कः आसीत्?
 (क) आचार्यः (ख) वैद्यः (ग) शिल्पकारः (घ) गणितज्ञः
- (iv) स्वतन्त्रभारतस्य प्रथमः विधिमन्त्री कः आसीत्?
 (क) आचार्यः कृपलानी (ख) सच्चिदानन्दः
 (ग) राजेन्द्रप्रसादः (घ) डॉ० भीमराव रामजी आंबेडकरः
- (v) केन्द्रीय विधानसभायाः निर्वाचने सः विजयं लब्धवान्—
 (क) पञ्चदशस्थाने (ख) अष्टादशस्थाने (ग) षोडशस्थाने (घ) सप्तदशस्थाने

संस्कृतपद्यपीयूषम्

मङ्गलाचरणम्

किसी भी कार्य के आरम्भ में मङ्गलाचरण करने का विधान है जिससे कार्य निर्विघ्न पूरा हो सके। प्रस्तुत पाठ के ऋग्वेद, शुक्लयजुर्वेद और अथर्ववेद से सङ्कलित इन मन्त्रों में वैदिक ऋषियों ने पर्यावरण के कल्याणकारी होने, परस्पर साहचर्य-भाव के साथ शुभ सङ्कल्पों वाला होने की कामना करते हुए परब्रह्म परमेश्वर की स्तुति की है।

1. भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ (ऋग्वेद 1/89/8)
2. मधुमान् नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ (ऋग्वेद 1/90/8)
3. सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सज्जानाना उपासते॥ (ऋग्वेद 10/191/2)
4. सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान् नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ (शुक्ल यजुर्वेद 34/6)
5. यो भूतं च भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति।
स्वर्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः॥ (अथर्ववेद 10/8/1)

दिग्दर्शिका

1. **अन्वयः**—देवाः! यजत्राः कर्णेभिः भद्रम् शृणुयाम अक्षभिः भद्रम् पश्येम। स्थिरैः अङ्गैः तनूभिः स्तुष्टुवांसः यत् देवहितम् आयुः व्यशेमहि।

अर्थः—हे देवताओं! यज्ञ करनेवाले (हम) कानों से कल्याणकारी सुनें और आँखों से कल्याणकारी देखें। दृढ़ अङ्गोंवाले शरीर से स्तुति करते हुए जो देवताओं द्वारा निर्धारित आयु है, उसे प्राप्त करें।

शब्दार्थः—देवाः! = हे देवताओं!। **यजत्राः** = यज्ञ करनेवाले। **कर्णेभिः** = कानों से। **भद्रम्** = कल्याणकारी। **शृणुयाम** = सुनें। **अक्षभिः** = आँखों से। **पश्येम** = देखें। **तनूभिः** = शरीरों से। **स्तुष्टुवांसः** = स्तुति करते हुए। **यत्** = जो। **देवहितम्** = देवताओं की उपासना के योग्य। **व्यशेमहि** = प्राप्त करें।

2. **अन्वयः**—नः वनस्पतिः मधुमान् सूर्यः मधुमान् अस्तु। नः गावः माध्वीः भवन्तु।

अर्थ:—हमारे लिए वनस्पति (वट आदि वृक्ष) कल्याणकारी हों और सूर्य कल्याणकारी हो। हमारे लिए गायें कल्याणकारिणी हों।

शब्दार्थ:—**नः** = हमारे लिए। **वनस्पतिः** = (बिना पुष्प के फलनेवाले) वट आदि वृक्ष। **मधुमान्** = कल्याणकारी। **अस्तु** = हो। **गावः** = गायें। **माध्वीः** = मधुर, कल्याणकारिणी। **भवन्तु** = हों।

3. अन्वयः—सङ्गच्छध्वम् संवदध्वम्, वः मनांसि सज्जानताम्। यथा पूर्वे देवाः सज्जानानाः भागम् उपासते।

अर्थ:—साथ-साथ (मिलकर) चलो, साथ-साथ बोलो (परस्पर संवाद करो)। तुम्हारे मन एक-दूसरे को भलीभाँति जानें। जिस प्रकार पूर्वकाल में देवतागण एक-दूसरे को भलीभाँति जानते हुए अपना भाग ग्रहण करते थे, उसी प्रकार मिलकर चलने वाला अपना अभीष्ट प्राप्त करता है।

शब्दार्थ:—**सङ्गच्छध्वम्** = साथ-साथ (मिलकर) चलो। **संवदध्वम्** = साथ साथ बोलो (परस्पर संवाद करो)। **वः** = तुम सबके। **मनांसि** = मन। **सज्जानताम्** = एक-दूसरे को भलीभाँति समझें। **यथा** = जिस प्रकार। **पूर्वे** = पूर्वकाल में। **देवाः** = देवतागण। **सज्जानानाः** = दूसरों को भलीभाँति समझकर (मिलकर) चलनेवाला। **उपासते** = (अपना अभीष्ट) प्राप्त कर लेता है।

4. अन्वयः—यत् सुषारथिः इव अभीशुभिः वाजिनः अश्वान् इव मनुष्यान् नेनीयते। यत् हृत्प्रतिष्ठम् अजिरम् जविष्ठम् तत् मे मनः शिवसङ्कल्पम् अस्तु।

अर्थ:—जो (मन) योग्य सारथि के समान लगामों से वेगवान् घोड़ों के समान मनुष्यों को ले जाता है (नियन्त्रित करता है)। जो हृदय में प्रतिष्ठित, वृद्धावस्था से रहित (कभी बूढ़ा न होनेवाला), सबसे अधिक तेज गतिवाला है वह मेरा मन कल्याणकारी सङ्कल्पों वाला हो।

शब्दार्थ:—**यत्** = जो। **सुषारथिः** = योग्य सारथि। **इव** = समान। **अभीशुभिः** = लगामों से। **वाजिनः** = वेगवान्। **अश्वान्** = घोड़ों को। **नेनीयते** = बार-बार ले जाता है। **हृत्प्रतिष्ठम्** = हृदय में स्थित। **अजिरम्** = वृद्धावस्था से रहित। **जविष्ठम्** = सबसे अधिक वेगवान्। **तत्** = वह। **मे** = मेरा। **शिव** = कल्याणकारी, मङ्गलकारी। **सङ्कल्पम्** = विचार। **अस्तु** = हो।

5. अन्वयः—यः भूतम् च भव्यम् च, यः च सर्वम् अधितिष्ठति। यस्य च केवलं स्वः, तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।

अर्थ:—जो भूतकाल में हो चुके और भविष्यत्काल में होने वाले और (वर्तमान में विद्यमान) सबमें (सभी पदार्थों में) विद्यमान रहता है और दिव्यलोक का भी केवल वही अधिष्ठाता है उस सबसे बड़े (सर्वश्रेष्ठ) परब्रह्म को नमस्कार है।

शब्दार्थ:—**यः** = जो। **भूतम्** = हो चुका है। **भव्यम्** = भविष्यत्काल में होनेवाला। **च** = और। **सर्वम्** = सबके। **अधितिष्ठति** = भीतर विद्यमान रहता है। **यस्य** = जिसका। **स्वः** = दिव्यलोक। **तस्मै** = उसे। **ज्येष्ठाय** = सबसे बड़े (महान्), सर्वश्रेष्ठ। **ब्रह्मणे** = परब्रह्म के लिए (को)। **नमः** = नमस्कार है।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत-

- (क) कर्णेभिः किं शृणुयाम?
- (ख) सूर्यः कीदृशः भवेत्?
- (ग) अश्वान् कः नेनीयते?
- (घ) कः मनुष्यान् नियन्त्रयति?
- (ङ) कस्मै ज्येष्ठाय नमः?

2. एकवाक्येन उत्तरत-

- (क) मनः कः इव मनुष्यान् नेनीयते?
- (ख) मनः कीदृशम् अस्ति?
- (ग) ब्रह्म कुत्र अधितिष्ठति?

3. अधोलिखितान् श्लोकान् पूरयत-

- (क) मधुमान् नो वनस्पतिः।
..... भवन्तु नः॥
- (ख) संगच्छध्वं सं वदध्वं।
..... सञ्जानाना उपासते॥
- (ग) सर्वं यश्चाधितिष्ठति।
स्वर्यस्य च केवलं तस्मै॥

4. उचितं विकल्पं चिनुत-

- (i) 'मङ्गलाचरणम्' इति पाठः कस्मात् समुद्धृतः?
(क) पुराणात् (ख) वेदात् (ग) इतिहासात् (घ) व्याकरणात्
- (ii) यजत्राः अक्षभिः किं पश्येम?
(क) भद्रम् (ख) अभद्रम् (ग) सर्वम् (घ) न किमपि
- (iii) काः नः माध्वीः भवन्तु?
(क) अजाः (ख) चटकाः (ग) अश्वाः (घ) गावः
- (iv) कः मनुष्यान् नेनीयते?
(क) अश्वः (ख) मनः (ग) सुषारथिः (घ) न कोऽपि
- (v) विश्वेऽस्मिन् जविष्ठं किम् अस्ति?
(क) अश्वः (ख) वायुयानम् (ग) प्रक्षेपास्त्रम् (घ) मनः
- (vi) 'सं गच्छध्वं सं वदध्वम्' इति मन्त्रः कस्मात् वेदात् समुद्धृतः?
(क) ऋग्वेदात् (ख) यजुर्वेदात् (ग) सामवेदात् (घ) अथर्ववेदात्

5. अधोलिखितानां मन्त्राणां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत-

- (क) भद्रं कर्णेभिः देवहितं यदायुः॥
 (ख) सुषारथिरश्वानिव मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥
 (ग) यो भूतं च ब्रह्मणे नमः॥

6. अधोलिखितानां सूक्तीनां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत-

- (क) सं गच्छध्वं सं वदध्वम्।
 (ख) माध्वीर्गावो भवन्तु नः।
 (ग) तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।

7. अधोलिखितानां मन्त्राणां संस्कृतार्थं लिखत-

- (क) मधुमान् नो भवन्तु नः॥
 (ख) सं गच्छध्वं सञ्जानाना उपासते॥
 (ग) यो भूतं च ब्रह्मणे नमः॥

आन्तरिकं मूल्याङ्कनम्

- (1) 'मङ्गलाचरणम्' इति पाठस्य सर्वान् मन्त्रान् लिखित्वा कण्ठस्थान् कुरुत।
 (2) वैदिकैः ऋषिभिः मङ्गलाचरणे कस्य स्तुतिः कृताऽस्ति।

योग्यता-विस्तारः

विश्व का प्राचीनतम साहित्य वैदिक साहित्य को माना जाता है। वैदिक साहित्य के अन्तर्गत संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् ग्रन्थों की गणना की जाती है। संहिता के अन्तर्गत आने वाले—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की अपनी-अपनी शाखायें हैं। पाठ में आये हुए मन्त्रों से भावसाम्य रखने वाले मन्त्र इस प्रकार हैं—

1. आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्ध्यासो अपरीतास उद्भिदः।

देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे। (ऋग्वेद 1/89/1)

अर्थः—सब ओर से अहिंसक, न त्यागने योग्य, अन्य विचारों (यज्ञों) को प्रकट करने वाले कल्याणकारी विचार (यज्ञ) हमारे पास आयें, जिस प्रकार से आलस्यरहित (अमर) प्रतिदिन रक्षा करने वाले देवता सदैव हमारी वृद्धि करें।

2. मधु नक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः।

मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ (ऋग्वेद 1/90/7)

अर्थः—हमारे लिए रात्रि मधुर (कल्याणकारी) हो और दिन (उषःकाल) कल्याणकारी हो। पृथ्वी की धूल कल्याणकारिणी हो। हमारे लिए पिता आकाश कल्याणकारी हो।

3. समानो मन्त्रः समिति समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।

समानं मन्त्रमभिमन्त्रये समानेन वो हविषा जुहोमि॥ (ऋग्वेद 10/191/3)

अर्थः—तुम सभी का सङ्कल्प (परामर्श, मन्त्रणा) समान हो, सभा समान हो, मन (संकल्प-विकल्प करने वाली अन्तःकरणवृत्ति) सहित चित्त (अनुसन्धान करने वाली अन्तःकरणवृत्ति) समान हो। मैं तुम सभी के लिए समान मन्त्र अभिमन्त्रित करके समान हवि से हवन करता हूँ।

प्रथमः पाठः

रामस्य पितृभक्तिः

पाठपरिचयः

प्रस्तुत पाठ महर्षि वाल्मीकि द्वारा प्रणीत 'रामायण' महाकाव्य के अयोध्याकाण्ड के 18वें एवं 19वें सर्ग से संकलित है। देवासुर युद्ध में कैकेयी ने राजा दशरथ की जो सहायता की उसके कारण राजा ने उन्हें दो वर देने का वचन दिया था। राम ने उन्हीं वचनों के अनुपालन में पिता दशरथ की विवशता का अनुभव किया और चौदह वर्षों के वनवास को सहर्ष स्वीकार करके वचन-पालन जैसी रघुकुल की रीति का मानवर्धन किया। पिता दशरथ ने पुत्र-वियोग में अपने प्राण भी त्याग दिये। आज्ञाकारी पुत्र राम की यही पितृभक्ति इस रामकथा का मूल आदर्श है।

स ददर्शासने रामो विषण्णं पितरं शुभे।
कैकेय्या सहितं दीनं मुखेन परिशुष्यता॥1॥
स पितुश्चरणौ पूर्वमभिवाद्य विनीतवत्।
ततो ववन्दे चरणौ कैकेय्याः सुसमाहितः॥2॥
रामेत्युक्त्वा तु वचनं वाष्पपर्याकुलेक्षणः।
शशाक नृपतिर्दीनो नेक्षितुं नाभिभाषितुम्॥3॥
चिन्तयामास चतुरो रामः पितृहिते रतः।
किंस्विदद्यैव नृपतिर्न मां प्रत्यभिनन्दति॥4॥
स दीन इव शोकार्तो विषण्णवदनद्युतिः।
कैकेयीमभिवाद्यैव रामो वचनमब्रवीत्॥5॥
कच्चिन्मया नापराद्धमज्ञानाद् येन मे पिता।
कुपितस्तन्ममाचक्ष्व त्वमेवैनं प्रसादय॥6॥
प्रियं त्वामप्रियं वक्तुं वाणी नास्य प्रवर्त्तते।
तदवश्यं त्वया कार्यं यदनेनाश्रुतं मम॥7॥



तद् ब्रूहि वचनं देवि! राज्ञो यदभिकाङ्क्षितम्।
 करिष्ये प्रतिजाने च रामो द्विर्नाभिभाषते॥८॥
 पुरा देवासुरे युद्धे पित्रा ते मम राघव!
 रक्षितेन वरौ दत्तौ सशल्येन महारणे॥९॥
 तत्र मे याचितो राजा भरतस्याभिषेचनम्।
 गमनं दण्डकारण्ये तव चाद्यैव राघव!॥१०॥
 यदि सत्यप्रतिज्ञं त्वं पितरं कर्तुमिच्छसि।
 आत्मानं च नरश्रेष्ठ! मम वाक्यमिदं शृणु॥११॥
 त्वयारण्यं प्रवेष्टव्यं नव वर्षाणि पञ्च च।
 भरतः कोशलपतेः प्रशास्तु वसुधामिमाम्॥१२॥
 एवमस्तु गमिष्यामि वनं वस्तुमहं त्वितः।
 जटाचीरधरो राज्ञः प्रतिज्ञामनुपालयन्॥१३॥

न ह्यतो धर्मचरणं किञ्चिदस्ति महत्तरम्।
यथा पितरि शुश्रूषा तस्य वा वचनक्रिया।।14।।

दिग्दर्शिका

1. **अन्वयः**—सः रामः विषण्णम् परिशुष्यता मुखेन दीनम् पितरम् कैकेय्या सहितम् शुभे आसने ददर्श।

अर्थः—उन राम ने दुःखी, सूखते हुए मुखवाले, दयनीय पिता को कैकेयी के सहित सुन्दर आसन पर (बैठे हुए) देखा।

शब्दार्थः—सः = उन। **विषण्णम्** = दुःखी, विषादग्रस्त। **परिशुष्यता** = सूखते हुए। **मुखेन** = मुख से (युक्त)। **दीनम्** = दयनीय, दुःखी। **पितरम्** = पिता को। **शुभे** = सुन्दर। **ददर्श** = देखा।

2. **अन्वयः**—सः विनीतवत् पूर्व पितुः चरणौ अभिवाद्य ततः सुसमाहितः कैकेय्याः चरणौ ववन्दे।

अर्थः—उन (राम ने) विनम्रता पूर्वक पहले पिता के चरणों का अभिवादन कर उसके बाद दत्तचित्त होकर कैकेयी के चरणों की वन्दना की।

शब्दार्थः—**विनीतवत्** = विनम्रता से। **पूर्वम्** = पहले। **पितुः** = पिता के। **चरणौ** = चरणों को। **अभिवाद्य** = अभिवादन कर, प्रणाम कर। **ततः** = उसके बाद। **सुसमाहितः** = दत्तचित्त। **कैकेय्याः** = कैकेयी के। **ववन्दे** = वन्दना की।

3. **अन्वयः**—‘राम! इति वचनम् उक्त्वा वाष्पपर्याकुलेक्षणः दीनः नृपतिः तु न ईक्षितुम्, न अभिभाषितुम् शशाक।

अर्थः—‘राम!’ यह वचन कहकर आँसुओं से व्याकुल नेत्रों वाले दुःखी (दयनीय) राजा (दशरथ) न तो देख सके और न ही बोल सके।

शब्दार्थः—**इति** = यह, ऐसा। **उक्त्वा** = कहकर। **वाष्पपर्याकुलेक्षणः** = आँसुओं से भरे व्याकुल नेत्रोंवाले। **नृपतिः** = राजा। **ईक्षितुम्** = देखने के लिए। **अभिभाषितुम्** = बोलने के लिए। **न शशाक** = समर्थ न हो सके।

4. **अन्वयः**—पितृहिते रतः चतुरः रामः चिन्तयामास किंस्विद् नृपतिः मां न प्रत्यभिनन्दति।

अर्थः—पिता के कल्याण में लगे हुए चतुर राम ने सोचा कि किस कारण से राजा मेरा प्रत्यभिनन्दन नहीं कर रहे हैं (प्रसन्न होकर मुझसे आशीर्वचन इत्यादि नहीं कह रहे हैं)।

शब्दार्थः—**पितृहिते** = पिता के कल्याण में। **रतः** = संलग्न, लगे हुए। **किंस्विद्** = किस कारण से। **प्रत्यभिनन्दति** = अभिवादन के उत्तर में प्रसन्न होकर आशीर्वचन इत्यादि कहना।

5. **अन्वयः**—दीन इव शोकार्तः विषण्णवदनद्युतिः सः रामः कैकेयीम् अभिवाद्य एवम् वचनम् अब्रवीत्।

अर्थ:—दुःखी के समान शोक से पीड़ित मलिन मुखकान्ति वाले उन राम ने कैकेयी का अभिवादन कर इस प्रकार वचन कहा।

शब्दार्थ:—**शोकार्तः** = शोक से पीड़ित। **विषण्णवदनद्युतिः** = मलिन मुखकान्ति वाले। **अभिवाद्य** = अभिवादन करके। **एवम्** = इस प्रकार। **अब्रवीत्** = कहा।

6. अन्वयः:—कच्चित् मया अज्ञानात् अपराद्धम् न येन पिता मे कुपितः। तत् मम आचक्ष्व। त्वम् एव एनं प्रसादय।

अर्थ:—कहीं मेरे द्वारा अनजाने में अपराध तो नहीं किया गया, जिससे पिता मेरे पर क्रुद्ध हैं। वह मुझे बताइये और आप ही इन्हें प्रसन्न कीजिए।

शब्दार्थ:—**कच्चित्** = कहीं, शायद। **मया** = मेरे द्वारा। **अज्ञानात्** = अज्ञान के कारण। **अपराद्धम्** = अपराध तो नहीं कर दिया गया। **येन** = जिससे। **कुपितः** = क्रुद्ध। **तत्** = वह। **मम** = मुझसे। **आचक्ष्व** = कहिए। **एव** = ही। **एनम्** = इन्हें। **प्रसादय** = प्रसन्न कीजिए, मनाइये।

7. अन्वयः:—अस्य वाणी प्रियम् त्वाम् अप्रियम् वक्तुम् न प्रवर्तते। त्वया तत् अवश्यम् कार्यम् यत् अनेन मम आश्रुतम्।

अर्थ:—इनकी (दशरथ की) वाणी प्रिय तुम (राम) से अप्रिय बोलने में समर्थ नहीं हो रही है। तो तुम्हारे द्वारा वह अवश्य किया जाना चाहिए जिसकी इन्होंने मुझसे प्रतिज्ञा की है।

शब्दार्थ:—**अस्य** = इनकी। **त्वाम्** = तुमसे। **अप्रियम्** = कठोर। **वक्तुम्** = बोलने के लिए। **न प्रवर्तते** = नहीं समर्थ हो रही है। **त्वया** = तुम्हारे द्वारा। **तत्** = उसे। **कार्यम्** = किया जाना चाहिए। **यत्** = जिसे। **अनेन** = इन्होंने। **आश्रुतम्** = प्रतिज्ञा की है।

8. अन्वयः:—देवि! तद्वचनं ब्रूहि यद् राज्ञः अभिकाङ्क्षितम्। करिष्ये प्रतिजाने च। रामः द्विः न अभिभाषते।

अर्थ:—हे देवि! वह वचन कहिये जो राजा का अभीष्ट है। (उसे) मैं करूँगा—इसकी प्रतिज्ञा करता हूँ। राम दुहरी (दो प्रकार की) बातें नहीं कहता।

शब्दार्थ:—**ब्रूहि** = बोलिये। **यद्** = जो। **राज्ञः** = राजा का। **अभिकाङ्क्षितम्** = अभीष्ट। **करिष्ये** = करूँगा। **प्रतिजाने** = प्रतिज्ञा करता हूँ। **द्विः** = दो प्रकार की, दुहरी। **न अभिभाषते** = नहीं कहता है।

9. अन्वयः:—राघव! पुरा देवासुरे युद्धे महारणे सशल्येन (मया) रक्षितेन ते पित्रा मम वरौ दत्तौ।

अर्थ:—हे रघुनन्दन! पहले देवताओं और असुरों के युद्ध में, (उस) महासंग्राम में बाणों से बिंधे और (मेरे द्वारा) बचाये गये तुम्हारे पिता के द्वारा मुझे दो वरदान दिये गये।

शब्दार्थ:—**राघव** = रघुवंश में उत्पन्न (राम के लिए सम्बोधन)। **पुरा** = पहले। **सशल्येन** = बाणों से बिंधे। **ते** = तुम्हारे। **पित्रा** = पिता के द्वारा। **मम** = मुझे। **वरौ** = दो वरदान। **दत्तौ** = दिये गये।

10. अन्वयः—राघव! तत्र मे राजा भरतस्य अभिषेचनम्, तव च अद्य एव दण्डकारण्ये गमनं याचितः।

अर्थः—हे रघुवंशी राम! उन (वरदानों) में मेरे द्वारा राजा से (पहला) भरत का राज्याभिषेक और दूसरा आज ही तुम्हारा दण्डकवन में चले जाना माँगा गया है।

शब्दार्थः—तत्र = उनमें। अभिषेचनम् = राजा के पद पर अभिषेक। तव = तुम्हारा। अद्य = आज। एव = ही। दण्डकारण्ये = 'दण्डक' नामक वन में। गमनम् = जाना। याचितः = माँगा गया है।

11. अन्वयः—नरश्रेष्ठ! यदि त्वम् पितरम् आत्मानम् च सत्यप्रतिज्ञम् कर्तुम् इच्छसि (तर्हि) मम इदं वाक्यं शृणु।

अर्थः—हे मनुष्यों में श्रेष्ठ राम! यदि तुम पिता को और अपने को सत्यप्रतिज्ञ करना चाहते हो, तो मेरा यह वाक्य सुनो।

शब्दार्थः—नरश्रेष्ठ! = हे मनुष्यों में श्रेष्ठ। आत्मानम् = अपने को, स्वयं को। सत्यप्रतिज्ञम् = सत्यप्रतिज्ञा वाला। कर्तुम् = करने वाला। इच्छसि = चाहते हो। इदम् = यह। शृणु = सुनो।

12. अन्वयः—त्वया नव पञ्च च वर्षाणि अरण्यम् प्रवेष्टव्यम्। भरतः कोशलपतेः इमाम् वसुधाम् प्रशास्तु।

अर्थः—तुम्हें चौदह वर्षों के लिए वन में प्रवेश करना चाहिए और भरत कोशल-नरेश (दशरथ) की इस पृथ्वी का शासन करें।

शब्दार्थः—त्वया = तुम्हारे द्वारा। नव पञ्च च = नौ और पाँच, चौदह। प्रवेष्टव्यम् = प्रवेश किया जाना चाहिए। कोशलपतेः = कोशल देश के राजा की। इमाम् = इस। वसुधाम् = पृथ्वी को। प्रशास्तु = शासित करें।

13. अन्वयः—एवम् अस्तु। अहं तु राज्ञः प्रतिज्ञाम् अनुपालयन् जटाचीरधरः इतः वनम् वस्तुम् गमिष्यामि।

अर्थः—ऐसा ही हो। मैं राजा की प्रतिज्ञा का पालन करते हुए जटा और वल्कल वस्त्र धारण कर यहाँ से वन में रहने के लिए चला जाऊँगा।

शब्दार्थः—एवम् = ऐसा। अस्तु = हो। राज्ञः = राजा की। अनुपालयन् = पालन करते हुए। चीर = वल्कल (पेड़ों की छालसे बना) वस्त्र। इतः = यहाँ से। वस्तुम् = रहने के लिए। गमिष्यामि = जाऊँगा।

14. अन्वयः—पितरि शुश्रूषा तस्य वचनक्रिया वा यथा धर्मचरणम्, अतः महत्तरम् किञ्चिद् न हि अस्ति।

अर्थः—पिता की सेवा अथवा उनके वचनों का पालन जैसा धर्माचरण है, इससे बड़ा कोई दूसरा धर्माचरण नहीं है।

शब्दार्थः—शुश्रूषा = सेवा। तस्य = उनके। वचनक्रिया = वचनों का पालन। वा = या, अथवा। यथा = जैसा, के समान। धर्मचरणम् = धर्म का आचरण। अतः = इससे। महत्तरम् = बड़ा। किञ्चिद् = कोई।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत-

- (क) 'रामस्य पितृभक्तिः' पाठः कस्मात् ग्रन्थात् सङ्कलितः?
- (ख) रामः विषण्णं कं ददर्श?
- (ग) रामः काम् अभिवाद्य वचनम् अब्रवीत्?
- (घ) देवासुरे युद्धे केन वरौ दत्तौ?
- (ङ) कः कोशलपतेः वसुधाम् इमाम् प्रशास्तु?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

- (क) रामः कैकेयीम् अभिवाद्य किं वचनम् अब्रवीत्?
- (ख) राज्ञा दशरथेन कौ वरौ दत्तौ?
- (ग) महत्तरं धर्मचरणं किम्?

3. अधोलिखितान् श्लोकान् पूरयत-

- (क) तद् ब्रूहि वचनं देवि।
..... रामो द्विर्नाभिभाषते॥
- (ख) नववर्षाणि पञ्च च।
भरतः कोशलपतेः॥
- (ग) न ह्यतो धर्मचरणं।
..... तस्य वा वचनक्रिया॥

4. अधोलिखितानां श्लोकानां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत-

- (क) स ददर्शासने रामो मुखेन परिशुष्यता॥
- (ख) कच्चिन्मया त्वमेवैनं प्रसादय॥
- (ग) प्रियं त्वामप्रियं यदनेनाश्रुतं मम॥

5. अधोलिखितानां सूक्तीनां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत-

- (क) रामः पितृहिते रतः।
- (ख) रामो द्विर्नाभिभाषते।
- (ग) न ह्यतो धर्मचरणं किञ्चिदस्ति महत्तरम्।

6. अधोलिखितानां श्लोकानां संस्कृतार्थं लिखत-

- (क) पितुश्चरणौ कैकेय्याः सुसमाहितः॥
 (ख) पुरा देवासुरे युद्धे सशल्येन महारणे॥
 (ग) रामेत्युक्त्वा तु यदनेनाश्रुतं मम॥

7. उचितं विकल्पं चिनुत-

- (i) 'रामस्य पितृभक्तिः' इति पाठः कस्मात् महाकाव्यात् समुद्भूतः?
 (क) रघुवंशमहाकाव्यात् (ख) किरातार्जुनीयमहाकाव्यात्
 (ग) नैषधीयचरितात् (घ) रामायणात्
- (ii) 'रामायण'—महाकाव्यस्य रचयिता कः?
 (क) कालिदासः (ख) वाल्मीकिः (ग) भारविः (घ) माघः
- (iii) रामवनगमनस्य घटना कस्मिन् काण्डे अस्ति?
 (क) बालकाण्डे (ख) अयोध्याकाण्डे (ग) अरण्यकाण्डे (घ) सुन्दरकाण्डे
- (iv) रामः कैकेय्या सहितं शुभे आसने कं ददर्श?
 (क) पितरम् (ख) भ्रातरम् (ग) मातरम् (घ) शत्रुघ्नम्
- (v) रामः विनीतवत् पूर्वं पितुः चरणौ अभिवाद्य ततः कस्याः चरणौ ववन्दे?
 (क) कौशल्यायाः (ख) कैकेय्याः (ग) सुमित्रायाः (घ) अरुन्धत्याः
- (vi) राज्ञः प्रतिज्ञाम् अनुपालयन् कः जटाचीरधरः वनम् अगच्छत्?
 (क) रामः (ख) भरतः (ग) शत्रुघ्नः (घ) सुमन्त्रः
- (vii) रामः कति वर्षाणि वने न्यवसत्?
 (क) द्वादश (ख) त्रयोदश (ग) चतुर्दश (घ) पञ्चदश
- (viii) देवासुरे युद्धे सशल्यः कः अभवत्?
 (क) रामः (ख) दशरथः (ग) भरतः (घ) शत्रुघ्नः

आन्तरिकं मूल्याङ्कनम्

1. रामायणस्य कथां सङ्क्षेपेण लिखत।
2. पितृभक्तः बालकः किं किं च कुर्यात्?

योग्यता-विस्तारः

1. महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित 'रामायण' को लौकिक संस्कृत-साहित्य की प्रथम रचना माना जाता है। इसलिए उसे आदिकाव्य और वाल्मीकि को आदिकवि कहा जाता है। वाल्मीकिरामायण में सात काण्ड—बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड हैं। इस आदि महाकाव्य में 24000 श्लोक हैं। अतः इसे 'चतुर्विंशतिसाहस्रीसंहिता' भी कहा जाता है।

2. संक्षेप में रामायण की कथा 'एकश्लोकी रामायण' में मिलती है—

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं काञ्चनं
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम्।
बालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनं
पश्चाद् रावणकुम्भकर्णहननं एतद्धि रामायणम्॥



द्वितीयः पाठः

सुभाषितानि

पाठपरिचयः

प्रस्तुत पाठ 'सुभाषितानि' संस्कृत के अनेक ग्रन्थों से संकलित सुभाषितों का पद्य-संग्रह है। इसमें विद्यार्थियों के ज्ञानार्थ दस श्लोक रखे गए हैं जिनमें जीवनोपयोगी सद्बचनों की उपयोगी एवं प्रेरणापरक सामग्री विद्यमान है।

अन्यायोपार्जितं वित्तं दश वर्षाणि तिष्ठति।
प्राप्ते चैकादशे वर्षे समूलं तद् विनश्यति॥१॥
नालसाः प्राप्नुवन्त्यर्थान् न शठाः न च मायिनः।
न च लोकापवाद् भीता न च शश्वत् प्रतीक्षिणः॥२॥
नात्यन्तं सरलैर्भाव्यं गत्वा पश्य वनस्थलीम्॥
छिद्यन्ते सरलास्तत्र कुब्जास्तिष्ठन्ति पादपाः॥३॥
मौनं कालविलम्बश्च प्रयाणं भूमिदर्शनम्॥
भृकुट्यन्यमुखी वार्ता नकारः षड्विधः स्मृतः॥४॥
प्रत्यक्षे गुरवः स्तुत्याः परोक्षे मित्रबान्धवाः।
कर्मान्ते दासभृत्याश्च पुत्रा नैव च नैव च॥५॥
क्षणे तुष्टाः क्षणे रुष्टास्तुष्टा रुष्टाः क्षणे क्षणे।
अव्यवस्थितचित्तानां प्रसादोऽपि भयङ्करः॥६॥
षड् दोषा पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता।
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता॥७॥
सर्वे यत्र विनेतारः सर्वे पण्डितमानिनः।
सर्वे महत्त्वमिच्छन्ति तद् वृन्दमवसीदति॥८॥
सम्पूर्णकुम्भो न करोति शब्दमर्थो घटो घोषमुपैति नूनम्।
विद्वान् कुलीनो न करोति गर्वं जल्पन्ति मूढास्तु गुणैर्विहीनाः॥९॥

दरिद्रता धीरतया विराजते कुरूपता शीलतया विराजते।

कुभोजनं चोष्णतया विराजते कुवस्त्रता शुभ्रतया विराजते॥10॥

दिग्दर्शिका

1. **अन्वयः**—अन्यायोपार्जितं वित्तं दश वर्षाणि तिष्ठति। एकादशे च वर्षे प्राप्ते तद् समूलं विनश्यति॥

अर्थः—अन्याय से कमाया गया धन दस वर्ष तक ही रहता है और ग्यारहवें वर्ष के आने पर वह मूल सहित नष्ट हो जाता है।

शब्दार्थः—अन्यायोपार्जितम् = अन्याय से प्राप्त किया गया। वित्तम् = धन। दश वर्षाणि = दस वर्ष तक ही। तिष्ठति = रहता है। एकादशे = ग्यारहवें। वर्षे = वर्ष में। समूलम् = मूल सहित। विनश्यति = नष्ट हो जाता है।

2. **अन्वयः**—न अलसाः, न मायिनः, न शठाः, न च लोकापवाद् भीताः न च शशवत् प्रतीक्षिणः अर्थान् प्राप्नुवन्ति।

अर्थः—न आलसी, न धूर्त, न कपटी, न लोकनिन्दा से डरे हुए और न हमेशा प्रतीक्षा करने वाले धन प्राप्त करते हैं।

शब्दार्थः—अलसाः = आलसी। शठाः = धूर्त। मायिनः = कपटी। लोकापवाद् = लोक निन्दा। भीताः = डरे हुए। शशवत् = निरन्तर। प्रतीक्षिणः = प्रतीक्षा करने वाले। अर्थान् = धन को। प्राप्नुवन्ति = प्राप्त करते हैं।

3. **अन्वयः**—अत्यन्तं सरलैः न भाव्यम्। वनस्थलीं गत्वा पश्य तत्र सरलाः (वृक्षाः) छिद्यन्ते, कुब्जाः पादपाः तिष्ठन्ति।

अर्थः—अधिक सरल नहीं होना चाहिए। वनभूमि (जंगल) में जाकर देखो। वहाँ सरल (सीधे) पेड़ काट दिये जाते हैं, और टेढ़े-मेढ़े पेड़ हमेशा खड़े रहते हैं।

शब्दार्थः—अत्यन्तम् = अधिक। सरलैः = सरल। भाव्यम् = होना चाहिए। वनस्थलीम् = जंगल में। गत्वा = जाकर। पश्य = देखो। छिद्यन्ते = काटे जाते हैं। कुब्जाः = टेढ़े-मेढ़े। तिष्ठन्ति = खड़े रहते हैं।

4. **अन्वयः**—मौनं, कालविलम्बः, प्रयाणम्, भूमिदर्शनम्, भृकुटी, अन्यमुखी वार्ता च इति नकारः षड्विधः स्मृतः।

अर्थः—मौन (चुप) रहना, देर करना, चले जाना, पृथ्वी पर देखना, भौंहें टेढ़ी करना और दूसरे के मुख की ओर देखकर बातें करना—ये नकार (मना करने) के छः तरीके हैं।

शब्दार्थः—मौनम् = चुप रहना। कालविलम्बः = बहुत देर करना। प्रयाणम् = चले जाना। भूमिदर्शनम् = पृथ्वी की ओर देखना। भृकुटी = भौंहों के द्वारा। अन्यमुखी = दूसरों के मुख की ओर देखना। वार्ता = बातें करना।

5. **अन्वयः**—गुरवः प्रत्यक्षे स्तुत्याः, मित्रबान्धवाः परोक्षे, दासभृत्याः च कर्मान्ते, पुत्राः नैव च नैव च।

अर्थः—गुरुजनों की सामने (मुँह पर) प्रशंसा करनी चाहिए। मित्र-भाइयों की परोक्ष में और गुलाम एवं नौकरों की कार्य करने के अन्त में प्रशंसा करनी चाहिए; किन्तु पुत्रों की प्रशंसा कभी नहीं करनी चाहिए।

शब्दार्थः—**गुरवः** = गुरुओं की। **प्रत्यक्षे** = सामने। **स्तुत्याः** = प्रशंसा। **परोक्षे** = परोक्ष में, पीठ पीछे। **भृत्याः** = दास (गुलाम) और नौकरों की। **कर्मान्ते** = कार्य के अन्त में। **नैव** = कभी नहीं।

6. **अन्वयः**—क्षणे तुष्टाः क्षणे रुष्टाः, तुष्टाः रुष्टाः क्षणे क्षणे, अव्यवस्थितचित्तानाम् प्रसादः अपि भयङ्करः भवति।

अर्थः—पल भर में सन्तुष्ट (प्रसन्न) हो जाने वाले और पल भर में नाराज होने वाले—इस प्रकार पल-पल में प्रसन्न और नाराज होने वाले चञ्चल मन वालों की प्रसन्नता भी भयंकर होती है।

शब्दार्थः—**क्षणे** = पल भर में। **तुष्टाः** = प्रसन्न होने वाले। **रुष्टाः** = नाराज होने वाले। **अव्यवस्थित-चित्तानाम्** = चंचल मन वालों की। **प्रसादः** = प्रसन्नता। **भयङ्कर** = भयानक। **भवति** = होती है।

7. **अन्वयः**—इह भूतिम् इच्छता पुरुषेण निद्रा, तन्द्रा, भयम्, क्रोधः, आलस्यम् दीर्घसूत्रता षड् दोषाः हातव्याः।

अर्थः—यहाँ अर्थात् इस संसार में कल्याण चाहने वाले पुरुष के द्वारा नींद, ऊँघना, डर, क्रोध, आलस्य और देरी से कार्य करने की आदत—ये छः दोष त्याग देने चाहिए।

शब्दार्थः—**इह** = यहाँ। **भूतिम्** = कल्याण को। **इच्छता** = चाहने वाले। **पुरुषेण** = पुरुष के द्वारा। **निद्रा** = नींद। **तन्द्रा** = ऊँघना। **भयम्** = डर। **क्रोधः** = क्रोध करना। **आलस्यम्** = आलस्य। **दीर्घसूत्रता** = देरी से कार्य करने की आदत। **हातव्याः** = त्याग देना चाहिए।

8. **अन्वयः**—यत्र सर्वे विनेतारः, सर्वे पण्डितमानिनः, सर्वे महत्त्वम् इच्छन्ति, तद् वृन्दम् अवसीदति।

अर्थः—जहाँ सभी नेता हों। सभी स्वयं को विद्वान् माननेवाले हों और सभी महत्त्व की इच्छा (महत्वाकांक्षा) रखते हों, वह समूह नष्ट हो जाता है।

शब्दार्थः—**यत्र** = जहाँ। **सर्वे** = सभी। **विनेतारः** = नेता। **पण्डितमानिनः** = स्वयं को विद्वान् माननेवाले। **इच्छन्ति** = चाहते हैं। **वृन्दम्** = समूह। **अवसीदति** = नष्ट हो जाता है।

9. **अन्वयः**—सम्पूर्णकुम्भः शब्दम् न करोति, अर्थः घटः नूनम् घोषम् उपैति कुलीनः विद्वान् गर्वम् न करोति, गुणैः विहीनाः मूढाः तु जल्पन्ति।

अर्थः—भरा हुआ घड़ा आवाज नहीं करता। आधा भरा हुआ घड़ा अवश्य आवाज करता है। उसी प्रकार अच्छे कुल का विद्वान् घमण्ड नहीं करता; किन्तु मूर्ख लोग व्यर्थ की बातें (प्रलाप) करते हैं।

शब्दार्थः—**सम्पूर्णकुम्भः** = भरा हुआ घड़ा। **अर्थः** = आधा। **घोषम्** = शब्द, आवाज को। **उपैति** = प्राप्त करता है। **मूढाः** = मूर्ख लोग। **जल्पन्ति** = व्यर्थ की बातें करते हैं।

10. अन्वयः—दरिद्रता धीरतया विराजते, कुरूपता शीलतया विराजते, कुभोजनम् उष्णतया विराजते। कुवस्त्रता च शुभ्रतया विराजते।

अर्थः—गरीबी धैर्य से शोभा पाती है, कुरूपता सच्चरित्रता से शोभा पाती है, खराब (स्वादरहित) भोजन गर्म करने से अच्छा लगता है और खराब वस्त्र साफ-सुथरा होने से शोभा पाता है।

शब्दार्थः—दरिद्रता = गरीबी। धीरतया = धैर्य से। विराजते = शोभा पाती है। शीलतया = सच्चरित्रता। कुभोजनम् = खराब (स्वादरहित) भोजन। कुवस्त्रता = खराब वस्त्र। शुभ्रतया = साफ-सुथरा होने से।

अभ्यासकार्यम्

1. अधोलिखितप्रश्नान् एकपदेन उत्तरत—

- (क) अन्यायोपार्जितं वित्तं कति वर्षाणि तिष्ठति?
- (ख) कुवस्त्रता केन विराजते?
- (ग) इह लोके भूतिम् इच्छता पुरुषेण कति दोषाः हातव्या?
- (घ) प्रत्यक्षे के स्तुत्याः?

2. श्लोकांशान् पूरयत—

- (क) विद्वान् कुलीनो न गर्वम्।
- (ख) क्षणे तुष्टाः।
- (ग) नालसाः प्राप्नुवन्त्यर्थान्।
- (घ) मौनं कालविलम्बश्च।

3. अधोलिखितश्लोकानां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत—

- (क) नात्यन्तं सरलैर्भाव्यं गत्वा तिष्ठन्ति सर्वदा।
- (ख) अन्यायोपार्जितं वित्तं समूलं तद् विनश्यति।
- (ग) क्षणे तुष्टाः क्षणे भयङ्करः।

4. अधोलिखितसूक्तीनां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत—

- (क) अव्यवस्थितचित्तानां प्रसादोऽपि भयङ्करः।
- (ख) जल्पन्ति मूढास्तु गुणैर्विहीनाः।
- (ग) छिद्यन्ते सरलास्तत्र।
- (घ) विद्वान् कुलीनो न करोति गर्वम्।

5. अधोलिखितश्लोकानां संस्कृतार्थं लिखत-

- (क) षड् दोषा हि पुरुषेणेह दीर्घसूत्रता।
 (ख) सम्पूर्णकुम्भो न करोति गुणैर्विहीनाः।
 (ग) प्रत्यक्षे गुरवः स्तुत्याः नैव च।

6. उचितं विकल्पं चिनुत-

- (i) अन्यायोपार्जितं वित्तं कति वर्षाणि तिष्ठति?
 (क) दशवर्षाणि (ख) द्वादशवर्षाणि (ग) पञ्चदशवर्षाणि (घ) विंशतिवर्षाणि
- (ii) प्रत्यक्षे के स्तुत्याः?
 (क) मित्रबान्धवाः (ख) गुरवः (ग) पुत्राः (घ) दासभृत्याः
- (iii) दरिद्रता कया विराजते?
 (क) धीरतया (ख) शुभ्रतया (ग) शीलतया (घ) उष्णतया
- (iv) कुरूपता कया विराजते?
 (क) धीरतया (ख) शीलतया (ग) शुभ्रतया (घ) उष्णतया
- (v) कुलीनो विद्वान् किं न करोति?
 (क) ज्ञानम् (ख) दयाम् (ग) गर्वम् (घ) क्षमाम्



तृतीयः पाठः

अन्योक्तिमौक्तिकानि

पाठपरिचयः

जिसमें अप्रस्तुत (उपमान) के माध्यम से प्रस्तुत (उपमेय) का वर्णन हो, उसे अन्योक्ति कहते हैं। इसी को संस्कृत-काव्यशास्त्र में अप्रस्तुतप्रशंसा अलंकार भी कहते हैं। इस कथन में जिस पर बात सार्थक होती है, उसे 'प्रस्तुत' और जिस किसी पर बात रखकर कही जाती है, वह 'अप्रस्तुत' कहलाता है। इसकी आवश्यकता इसलिए होती है कि कभी किसी को सीधे कोई बात कह देने से उसे अपने विषय में कही गयी बात बुरी लग सकती है या अच्छी लगने पर उसे अपने पर अहंकार भी हो सकता है, अतः किसी की बुराई और प्रशंसा करने का अच्छा एवं प्रभावशाली माध्यम 'अन्योक्ति' ही होती है।

जैसे—हे बादल! तुम्हारे द्वारा बरसाया गया जल कहीं (जल में) जल ही रहता है, कहीं (गर्म तवे आदि पर) कुछ भी नहीं रहता है और कहीं पर (जल सर्प आदि के मुख में) विष हो जाता है। कहीं (सीपी) में बरसाया गया वही जल मोती बन जाता है, उस सीपी में अपना जल बरसाने से तुम किस कारण से उदासीन हो। तात्पर्य यह है कि हे दानशील व्यक्ति ! तुम्हें सत्पात्र को ही दान देना चाहिए।

ध्यातव्य है कि यहाँ पर बादल को माध्यम बनाकर उसकी उपयोगिता के विषय में बताया गया है। निष्कर्षतः जो भी श्लोक प्रस्तुत पाठ में दिये गये हैं वे किसी-न-किसी के माध्यम हैं। प्रस्तुत पाठ में संकलित अन्योक्तियाँ 'अन्योक्तिमाला' से ली गयी हैं।

आपो विमुक्ताः क्वचिदाप एव क्वचिन्न किञ्चिद् गरलं क्वचिच्च।

यस्मिन् विमुक्ताः प्रभवन्ति मुक्ताः पयोद! तस्मिन् विमुखः कुतस्त्वम्॥१॥

जलनिधौ जननं धवलं वपुर्मुदरिपोरपि पाणितले स्थितः।

इति समस्तगुणान्वितशङ्ख भोः कुटिलता हृदयान्न निवारिता॥२॥

अलिरयं नलिनीदल-मध्यगः कमलिनी-मकरन्द-मदालसः।

विधिवशात् परदेशमुपागतः कुटजपुष्परसं बहु मन्यते॥३॥

एकेन राजहंसेन या शोभा सरसो भवेत्।

न सा वक-सहस्रेण परितस्तीरवासिना॥४॥

अहमस्मि नीलकण्ठस्तव खलु तुष्यामि शब्दमात्रेण।
 नाहं जलधर! भवतश्चातक इव जीवनं याचे॥५॥
 अग्निदाहे न मे दुःखं छेदे न निकषे न वा।
 यत्तदेव महद्दुःखं गुञ्जया सह तोलनम्॥६॥
 सुमुखोऽपि सुवृत्तोऽपि सन्मार्गपतितोऽपि सन्।
 सतां वै पादलग्नोऽपि व्यथयत्येव कण्टकः॥७॥
 अयि त्यक्तासि कस्तूरि! पामरैः पङ्कशङ्कया।
 अलं खेदेन भूपालाः किं न सन्ति महीतले॥८॥

दिग्दर्शिका

1. प्रसङ्ग—प्रस्तुत श्लोक में बादल के माध्यम से ऐसे धनी व्यक्ति की ओर संकेत किया गया है, जो सत्पात्र को दान न देकर अयोग्य व्यक्ति को दान देता है।

अन्वयः—पयोद! (त्वया) विमुक्ताः आपः क्वचित् आपः एव (भवन्ति)। क्वचित् किञ्चित् न (भवति) क्वचित् च गरलं (भवति) यस्मिन् विमुक्ताः (आपः) मुक्ताः प्रभवन्ति तस्मिन् त्वं कुतः विमुखः (असि)?

अर्थः—हे बादल! तुम्हारे द्वारा बरसाया गया जल कहीं (जल में) जल ही रहता है, कहीं (गर्म तवे आदि पर) कुछ भी नहीं रहता है और कहीं (सर्प आदि के मुख में) विष हो जाता है। जिसमें (सीपी में) बरसाया गया वह (जल), मोती बन जाता है! उस सीपी में जल बरसाने से तुम किस कारण से उदासीन हो।

शब्दार्थः—पयोद! = हे बादल। त्वया = तुम्हारे द्वारा। विमुक्ताः = बरसाया गया। आपः = जल। क्वचित् = कहीं (जल में)। आपः एव = जल ही (रहता है)। क्वचित् = कहीं (गर्म तवे पर)। किञ्चित् = कुछ भी। न भवति = नहीं रहता है। च = और। क्वचित् = कहीं (सर्प आदि के मुख में)। गरलं भवति = विष हो जाता है। यस्मिन् = जिसमें (सीपी में)। विमुक्ताः (आपः) = बरसाये गये वे जल। मुक्ताः = मोती। प्रभवन्ति = बन जाते हैं। तस्मिन् = उसमें (सीपी में अपना जल बरसाने से)। त्वं = तुम (मेघ), कुतः = कहाँ से या किस कारण से। विमुखः = उदासीन। असि = हो।

2. प्रसंग—प्रस्तुत श्लोक में शंख के माध्यम से ऐसे व्यक्ति के प्रति उक्ति है, जो उच्च कुल में जन्म लेकर और अच्छी संगति पाकर भी दुष्टता नहीं छोड़ता है।

अन्वयः—भो शङ्ख! (तव) जननं जलनिधौ (अभवत्), वपुः धवलं (अस्ति), स्थितिः अपि मुररिपोः पाणितले (अस्ति), इति समस्तगुणान्वित (भो शङ्ख तव) हृदयात् कुटिलता न निवारिता।

अर्थः—हे शंख! तुम्हारा जन्म समुद्र में हुआ है, तुम्हारा शरीर श्वेत वर्ण का है, तुम्हारा निवास भी मुर नामक दैत्य के शत्रु अर्थात् विष्णु की हथेली में है। इस प्रकार सभी गुणों से युक्त हे शंख! तुम्हारे हृदय से कुटिलता (टेढ़ापन) दूर नहीं हुआ है।

शब्दार्थः—हे शङ्ख! = हे शंख। तव जननम् = तुम्हारा जन्म। जलनिधौ = समुद्र में। अभवत् = हुआ है। वपुः = तुम्हारा शरीर। धवलम् = श्वेत वर्ण का। अस्ति = है। स्थितिः = (तुम्हारा) निवास। अपि = भी। मुररिपोः = मुर नामक दैत्य के शत्रु अर्थात् विष्णु की। पाणितले (अस्ति) = हथेली में है। इति = इस प्रकार। समस्तगुणान्वित (भो शङ्ख) = सभी गुणों से युक्त हे शंख!। (तव) हृदयात् = तुम्हारे हृदय से। कुटिलता = टेढ़ापन। न = नहीं। निवारिता = दूर हुआ।

3. प्रसंग—प्रस्तुत श्लोक में भ्रमर के माध्यम से ऐसे व्यक्ति के प्रति उक्ति है जो सभी प्रकार की सुविधाओं में पला-बढ़ा है। वह विदेश में विषम परिस्थिति को पाकर तुच्छ वस्तु से भी सन्तुष्ट रहता है।

अन्वयः—नलिनीदलमध्यगः कमलिनीमकरन्दमदालसः अयं अलिः विधिवशात् परदेशम् उपागतः (सन्) कुटजपुष्परसं बहु मन्यते।

अर्थः—कमलिनी की पंखुड़ियों के मध्य में विचरण करने वाला, कमलिनी के रस को पीकर नशे में अलसाया हुआ यह भौरा भाग्य से परदेश में आकर कुटज के फूल के रस को ही बहुत सम्मान दे रहा है।

विशेष—तात्पर्य यह है कि सम्प्रान्त व्यक्ति चाहे जितनी सुख-सुविधाओं के बीच रहा हो, विपरीत समय आने पर वह तुच्छ वस्तु को भी अत्यधिक महत्त्व देता है।

शब्दार्थः—नलिनीदलमध्यगः = कमलिनी की पंखुड़ियों के मध्य में विचरण करने वाला। कमलिनीमकरन्दमदालसः = कमलिनी के रस को पीकर नशे में अलसाया हुआ। अयं अलिः = यह भौरा। विधिवशात् = भाग्य से या दैवयोग से। परदेशम् = परदेश में। उपागतः (सन्) = आया हुआ। कुटजपुष्परसम् = कुटज के फूल के रस को। बहु = बहुत। मन्यते = सम्मान दे रहा है।

4. प्रसंग—प्रस्तुत श्लोक में यह बताया गया है कि एक गुणवान् व्यक्ति से जो शोभा होती है, वह गुणहीन हजारों व्यक्तियों से भी नहीं होती है।

अन्वयः—एकेन राजहंसेन सरसः या शोभा भवेत् सा परितः तीरवासिना वक्र-सहस्रेण न (भवति)।

अर्थः—अकेले राजहंस के द्वारा तालाब की जो शोभा होती है, वह (शोभा) तालाब के चारों ओर किनारे पर रहनेवाले हजारों बगुलों से भी नहीं होती।

शब्दार्थः—एकेन = अकेले (एक द्वारा)। राजहंसेन = राजहंस के द्वारा। सरसः = तालाब की। या = जो। शोभा = शोभा। भवेत् = होती है। सा = वह (शोभा)। परितः = (तालाब के) चारों ओर। तीरवासिना = किनारे पर रहने वाले। वक्रसहस्रेण = हजारों बगुलों से। न = नहीं (भवति) होती है।

5. प्रसंग—प्रस्तुत श्लोक में निःस्वार्थ प्रेम की श्रेष्ठता का वर्णन किया गया है।

अन्वयः—जलधर! अहं नीलकण्ठः अस्मि। तव शब्दमात्रेण खलु तुष्यामि। अहं चातकः इव भवतः जीवनं न याचे।

अर्थः—(मोर बादल से कह रहा है कि) हे बादल! मैं मोर हूँ। मैं निश्चय ही तुम्हारे शब्दमात्र (गर्जन) से सन्तुष्ट हो जाता हूँ। मैं (मोर) आपके (बादल के) प्रिय चातक की तरह आपके (बादल के) जीवन (प्राण, जल) को नहीं माँगता हूँ।

विशेष—कहने का तात्पर्य यहाँ यह है कि एक श्रेष्ठ मित्र को अपने किसी सामर्थ्यवान मित्र से भी अत्यन्त बहुमूल्य वस्तु की माँग नहीं करनी चाहिए।

शब्दार्थः—**जलधरः** = हे बादल। **अहम्** = मैं। **नीलकण्ठः** = मोर। **अस्मि** = हूँ। **तव** = तुझ बादल के। **शब्दमात्रेण** = शब्दमात्र (गर्जन) से। **खलु** = निश्चय ही। **तुष्यामि** = सन्तुष्ट हो जाता हूँ। **अहम्** = मैं (मोर)। **चातकः** **इव** = चातक की तरह। **भवतः** = आपके (बादल के)। **जीवनम्** = प्राण को (जल को)। **न याचे** = नहीं माँगता हूँ।

6. प्रसंगः—प्रस्तुत श्लोक में उस मनस्वी व्यक्ति की मनोव्यथा व्यक्त की गयी है जिसकी तुलना नीच व्यक्ति से की जाती है।

अन्वयः—अग्निदाहे छेदे निकषे वा मे दुःखं न (अस्ति), यत् गुञ्जया सह तोलनं तद् एव महद् दुःखम् (अस्ति)।

अर्थः—(यहाँ पर स्वर्ण कह रहा है कि) आग में जलाने, काटने अथवा कसौटी पर कसे जाने में मुझे दुःख नहीं है, जो गुंजा (घूँघची) के साथ मुझे तौलना है, वही मेरा सबसे बड़ा दुःख है।

विशेष—गुंजा (घूँघची) जंगल में पायी जाती है। इसका वजन एक रत्ती के बराबर माना जाता है। सोना तौलने में पहले इसी के दानों का प्रयोग होता था।

शब्दार्थः—**अग्निदाहे** = आग में जलाने पर। **छेदे** = काटने पर। **निकषे** = कसौटी पर कसे जाने पर। **वा** = अथवा। **मे** = मुझे। **दुःखं न (अस्ति)** = दुःख नहीं है। **गुञ्जया सह** = गुंजा के साथ। **तोलनम्** = (मुझे) तौलना है। **तद् एव** = वही। **महद्** = बड़ा। **दुःखम्** = दुःख। **अस्ति** = है।

अन्योक्ति—प्रस्तुत श्लोक की अन्योक्ति यह है कि एक मनस्वी व्यक्ति कठिन-से-कठिन परीक्षा देने को सदैव तत्पर रहता है, चाहे वह कितने भी कष्ट में रहे, उसे कोई चिन्ता नहीं होती, लेकिन अपना अवमूल्यन अर्थात् नीचों के साथ तुलना उसे किसी भी स्थिति में सहा नहीं है।

7. प्रसंगः—प्रस्तुत श्लोक उस दुष्ट व्यक्ति को लक्ष्य करके कहा गया है जो सुन्दर मुख वाला, अच्छे आचरण वाला, सज्जनों के मार्ग पर लगा हुआ तथा सज्जनों के आश्रय में पड़ा हुआ होने पर भी उन्हें कष्ट देता है।

अन्वयः—सुमुखः अपि, सुवृत्तः अपि, सन्मार्गपतितः अपि सन् सतां पादलग्नः अपि कण्टकः वै व्यथयति एव।

अर्थः—सुन्दर नोक वाला, अच्छी गोल आकृति वाला, साफ-सुथरे मार्ग में पड़ा हुआ तथा सज्जनों के पैर में धँसा हुआ होते हुए भी काँटा केवल दुःख ही देता है।

अन्योक्ति—तात्पर्य यह है कि दुष्ट चाहे जितने भी भले लोगों के बीच में रहे, वह अपने दुष्ट स्वभाव को नहीं छोड़ता।

शब्दार्थः—सुमुखः = सुन्दर नोक वाला। **अपि** = भी। **सुवृत्तः** = अच्छी गोल आकृति वाला। **सन्मार्गपतितः** = साफ सुथरे मार्ग में पड़ा। **सन्** = हुआ। **सताम्** = सज्जनों के। **पादलग्नः** = पैर में गड़ा हुआ होने पर। **अपि** = भी। **कण्टकः** = काँटा। **वै** = निश्चित रूप से। **व्यथयति एव** = दुःख ही देता है।

8. प्रसंग—प्रस्तुत श्लोक में बताया गया है कि गुणवान् व्यक्ति को अज्ञानियों के द्वारा सम्मान न मिलने पर दुःखी नहीं होना चाहिए, क्योंकि संसार में गुणज्ञों की कमी नहीं है। वे तुम्हारे गुणों का आदर करेंगे।

अन्वयः—अयि कस्तूरी! पामरैः पङ्क-शङ्कया त्यक्ता असि, खेदेन अलम्। किं महीतले भूपालाः न सन्ति।

अनुवाद—हे कस्तूरी! मूर्खों ने तुझे कीचड़ समझकर त्याग दिया है, इसका तुम खेद मत करो। क्या पृथ्वी पर (संसार में) तुम्हारा मूल्य समझनेवाला राजा नहीं है?

शब्दार्थः—अयि = हे। **कस्तूरी!** = कस्तूरी!। **पामरैः** = मूर्खों के द्वारा। **पङ्क-शङ्कया** = कीचड़ की आशंका से। **(त्वम्)** = तुम। **त्यक्ता** = छोड़ दी गयी। **असि** = हो। **अलं खेदेन** = खेद मत करो। **किम्** = क्या। **महीतले** = पृथ्वी पर। **भूपालाः** = राजा। **न** = नहीं। **सन्ति** = हैं।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत—

- (क) शङ्खस्य वपुः कीदृशं भवति?
- (ख) सरसः शोभा केन भवति?
- (ग) शब्दमात्रेण कः तुष्यति?
- (घ) कीदृशः कण्टकः व्यथयति?

2. अधोलिखितानां पदानां संस्कृतवाक्येषु प्रयोगं कुरुत—

क्वचित्, अलिः, भवेत्, परितः, शोभा, या, अहम्, बहु, कण्टकः, सन्ति, अस्मि, मन्यते।

3. सन्धिविच्छेदं कुरुत—

क्वचिच्च, कुतस्त्वम्, सुमुखोऽपि, व्यथयत्येव, अहमस्मि, अलिरयम्।

4. पदानां विभक्तिं वचनं च लिखत—

आपः, यस्मिन्, जलनिधौ, अलिः, सरसः, पामरैः, भूपालाः, महीतले

5. अधोलिखितानां श्लोकानां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत—

- (क) अलिरयं नलिनीदलमध्यगः बहु मन्यते।
- (ख) एकेन राजहंसेन या शोभास तीरवासिना।
- (ग) जलनिधौ जननं हृदयान्न निवारिता।

(घ) अग्निदाहे न मे सह तोलनम्।

(ङ) अयि त्यक्तासि सन्ति महीतले।

6. अधोलिखितानां श्लोकानां संस्कृतभाषया अर्थं लिखत-

(क) एकेन राजहंसेन तीरवासिना।

(ख) अहमस्मि नीलकण्ठः जीवनं याचे।

7. अधोलिखितानां सूक्तीनां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत-

(क) कुटिलता हृदयात्र निवारिता।

(ख) एकेन राजहंसेन या शोभा सरसो भवेत्।

(ग) भूपालाः किं न सन्ति महीतले।

(घ) सतां वै पादलग्नोऽपि व्यथयत्येव कण्ठकः।

(ङ) नाहं जलधर! भवतश्चातक इव जीवनं याचे।

8. उचितं विकल्पं चिनुत-

(i) शङ्खस्य कुत्र जननं भवति?

(क) सरसि (ख) भूमौ (ग) जलनिधौ (घ) गृहे

(ii) शङ्खस्य कीदृशं वपुः अस्ति?

(क) धवलम् (ख) कृष्णम् (ग) रक्तम् (घ) कपिशम्

(iii) अलेः कुत्र निवासः?

(क) पत्रदलमध्ये (ख) नलिनीदलमध्ये (ग) नदीतीरमध्ये (घ) मातृदलमध्ये

(iv) परदेशमुपागतः अलिः कं बहु मन्यते?

(क) अशोकपुष्परसम् (ख) कुटजपुष्परसम् (ग) गृहपुष्परसम् (घ) सकलपुष्परसम्

(v) सरसः शोभा केन भवति?

(क) वकेन (ख) राजहंसेन (ग) काकेन (घ) मूषकेन

(vi) नीलकण्ठः कः अस्ति?

(क) मयूरः (ख) मार्जारी (ग) श्वा (घ) हंसः

(vii) 'महीतले' इति पदे का विभक्तिः अस्ति?

(क) सप्तमी (ख) पञ्चमी (ग) तृतीया (घ) द्वितीया

चतुर्थः पाठः

भारतदेशः

पाठपरिचयः

प्रस्तुत पाठ महर्षि व्यास द्वारा रचित 'विष्णुपुराण' से सङ्कलित है। इस पाठ में वक्ता महर्षि पराशर, मैत्रेय जी से भगवान् विष्णु की अवतार स्थली पुण्यभूमि भारतदेश की महिमा का गान करते हुए बताते हैं कि देवतागण भी भारतभूमि का गौरवगान करते हैं और मोक्षदायिनी इस भूमि में जन्म लेने के लिए लालायित रहते हैं। अतः इस पवित्र भूमि में जन्म लेनेवालों को सत्कर्म करके भगवान् का गुणकीर्तन करते हुए मोक्ष-प्राप्ति का प्रयत्न करना चाहिए।

गायन्ति देवाः किल गीतकानि, धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदहेतुभूते, भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥१॥
कर्माण्यसङ्कल्पिततत्फलानि, संन्यस्य विष्णौ परमात्मभूते।
अवाप्य तां कर्ममहीमनन्ते, तस्मिँल्लयं ते त्वमलाः प्रयान्ति॥२॥
अहो भुवः सप्तसमुद्रवत्याः, द्वीपेषु वर्षेष्वधिपुण्यमेतत्।
गायन्ति यत्रत्यजनाः मुरारेर्भद्राणि कर्माण्यवतारवन्ति॥३॥
अहो अमीषां किमकारि शोभनं प्रसन्न एषां स्विदुत स्वयं हरिः।
यैर्जन्म लब्धं नृषु भारताजिरे मुकुन्दसेवौपयिकं स्पृहा हि नः॥४॥
कल्पायुषां स्थानजयात् पुनर्भवात् क्षणायुषां भारतभूजयो वरम्।
क्षणेन मर्त्येन कृतं मनस्विनः संन्यस्य संयान्त्यभयं पदं हरेः॥५॥
यद्यस्ति नः स्वर्गसुखावशेषितं, स्विष्टस्य सूक्तस्य कृतस्य शोभनम्।
तेनाजनाभे स्मृतिमज्जन्म नः स्यात्, वर्षे हरिर्यद् भजतां शं तनोति॥६॥
सञ्चितं सुमहत् पुण्यमक्षय्यममलं शुभम्।
कदा वयं न लप्स्यामो जन्म भारतभूतले॥७॥
सम्प्राप्य भारते जन्म सत्कर्मसु पराङ्मुखः।
पीयूषकलशं हित्वा विषभाण्डं स इच्छति॥८॥



दिग्दर्शिका

1. **अन्वयः**—देवाः किल गीतकानि गायन्ति—स्वर्गापवर्गास्पदहेतुभूते भारतभूमिभागे (ये) सुरत्वात् भूयः पुरुषाः भवन्ति ते तु धन्याः।

अर्थः—देवतागण गीत गाते हैं कि स्वर्ग और मोक्ष स्थान के कारणभूत (साधनस्वरूप) भारतभूमि के भाग में (जो) देवत्व से पुनः पुरुष होते हैं (देवता से फिर मनुष्य के रूप में जन्म लेते हैं), वे धन्य हैं।

शब्दार्थः—**देवाः** = देवता गण। **किल** = निश्चय ही। **गीतकानि** = गीत। **गायन्ति** = गाते हैं। **अपवर्ग** = मोक्ष। **आस्पद** = स्थान। **हेतुभूते** = कारणभूत। **भारतभूमिभागे** = भारतभूमि के भाग पर। **सुरत्वात्** = देवत्व से। **भूयः** = फिर। **भवन्ति** = होते हैं। **ते** = वे। **धन्याः** = कृतार्थ हैं।

2. **अन्वयः**—ते तु ताम् कर्ममहीम् अवाप्य असङ्कल्पिततत्फलानि कर्माणि परमात्मभूते विष्णौ संन्यस्य अमलाः (सन्तः) तस्मिन् अनन्ते लयम् प्रयान्ति।

अर्थ:—वे (भारतभूमि में उत्पन्न होने वाले) उस कर्मभूमि (भारत) को प्राप्त करके असङ्कल्पित फलों वाले (निष्काम) कर्मों को परमात्मस्वरूप विष्णु में अर्पित करके पापरहित होते हुए उस अनन्त परब्रह्म में लय को प्राप्त करते हैं।

शब्दार्थ:—ते = वे। तु = निपात है (कथन पर बल देने के लिए प्रयुक्त हुआ है)। ताम् = उस। कर्ममहीम् = कर्मभूमि को। अवाप्य = प्राप्त करके। असङ्कल्पिततत्फलानि = फलों की इच्छा से रहित, निष्काम। कर्माणि = कर्मों को। परमात्मभूते = परमात्मस्वरूप। विष्णौ = विष्णु में। संन्यस्य = अर्पित कर। अमलाः = निर्मल, पापरहित। तस्मिन् = उसमें। अनन्त = अन्तरहित, परब्रह्म, अविनाशी। लयम् = लय को। प्रयान्ति = प्राप्त करते हैं।

3. अन्वयः:—अहो! सप्तसमुद्रवत्याः भुवः द्वीपेषु वर्षेषु एतत् अधिपुण्यम्। यत्रत्यजनाः मुरारेः अवतारवन्ति भद्राणि कर्माणि गायन्ति।

अर्थ:—अहो! सात समुद्रोंवाली पृथ्वी के दीपों और देशों में यह (भारतवर्ष) अधिक पुण्यशाली है, जहाँ के लोग भगवान् विष्णु के अवतार वाले कल्याणकारी कर्मों का गान करते हैं।

शब्दार्थ:—अहो = आश्चर्य, सम्बोधन। सप्तसमुद्रवत्याः = सात समुद्रों वाली। भुवः = पृथ्वी के। द्वीपेषु = दीपों में। वर्षेषु = देशों में। एतत् = यह। अधिपुण्यम् = अधिक पुण्यशाली है। यत्रत्यजनाः = जहाँ के लोग। मुरारेः = मुर नामक दैत्य के शत्रु, भगवान् विष्णु। भद्राणि = कल्याणकारी। गायन्ति = गाते हैं।

4. अन्वयः:—अहो! यैः भारताजिरे नृषु मुकुन्दसेवौपयिकम् जन्म लब्धम्, अमीषाम् किम् शोभनम् अकारि? स्विदुत हरिः एषाम् स्वयम् प्रसन्नः? हि नः स्पृहा।

अर्थ:—अहो! जिनके द्वारा भारतरूपी आंगन में मनुष्यों में, भगवान् विष्णु की सेवा ही उपाय है ऐसा जन्म लिया गया है, उनके द्वारा कौन-सा शुभ कर्म किया गया है? अथवा भगवान् विष्णु इन पर स्वयं प्रसन्न हैं? क्योंकि हमारी भी प्रबल इच्छा है कि हम भी उसी भारतभूमि पर जन्म लें।

शब्दार्थ:—यैः = जिनके द्वारा। भारताजिरे = भारत रूपी आंगन में। नृषु = मनुष्यों में। मुकुन्दसेवौपयिकम् = मुकुन्द (विष्णु या कृष्ण) की सेवा ही उपाय है जिसका, ऐसा। लब्धम् = प्राप्त किया गया है। अमीषाम् = उनके द्वारा। किम् = क्या। शोभनम् = शुभ कर्म, पुण्यकर्म। अकारि = किया गया है। स्विदुत = अथवा। स्वयम् = अपने आप। हि = क्योंकि। नः = हमारी। स्पृहा = तीव्र इच्छा, लालसा।

5. अन्वयः:—कल्पायुषाम् पुनर्भवात् स्थानजयात् क्षणायुषाम् भारतभूजयः वरम्। मनस्विनः क्षणेन मर्त्येन कृतम् संन्यस्य हरेः अभयम् पदम् संयान्ति।

अर्थ:—कल्पों की आयु वालों के पुनर्जन्म वाले स्थान पर जन्म लेने से क्षण भर की आयु वालों की भारतभूमि पर जन्म लेना श्रेष्ठ है। (क्योंकि) श्रेष्ठ मनवाले क्षण भर में मरणशील शरीर से किए हुए (कर्म) को अर्पित कर भगवान् विष्णु के अभय पद (अमरत्व या मोक्ष) को प्राप्त कर लेते हैं।

शब्दार्थः—**कल्यायुषाम्** = कल्पों की आयु वालों के। **पुनर्भवात्** = पुनर्जन्मवाले। **स्थानजयात्** = स्थान पर जन्म लेने से। **क्षणायुषाम्** = क्षण भर आयु वालों की। **भारतभूजयः** = भारतभूमि पर जन्म लेना। **वरम्** = श्रेष्ठ। **मनस्विनः** = श्रेष्ठ मन वाले, मानी। **क्षणेन** = क्षण भर में ही। **मर्त्येन** = मरणशील (शरीर) से। **कृतम्** = किये गये (पुण्य) को। **संन्यस्य** = अर्पित करके। **हरेः** = विष्णु के। **अभयपदम्** = भयरहित पद को, अमरत्व या मोक्ष को। **प्रयान्ति** = प्राप्त कर लेते हैं, चले जाते हैं।

6. अन्वयः—यदि नः स्विष्टस्य सूक्तस्य कृतस्य स्वर्गसुखावशेषितं शोभनम् अस्ति, (तर्हि) तेन नः अजनाभे वर्षे स्मृतिमत् जन्म स्यात् यत् हरिः भजताम् शम् तनोति।

अर्थ—यदि हमारा किये गये यज्ञादि कार्यों का, कहे गये सुन्दर वचनों का और किये गये कर्मों का स्वर्गसुख से बचा हुआ पुण्य है, तो उससे हमारा अजनाभ वर्ष (भारतवर्ष) में भगवान् (विष्णु) की स्मृति वाला जन्म हो। क्योंकि हरि भजने वालों का कल्याण करते हैं।

शब्दार्थः—**नः** = हमारा। **स्विष्टस्य** = किये गये यज्ञादि कार्यों, सुन्दर वचनों। **कृतस्य** = किए गए कर्मों का। **स्वर्गसुखावशेषितम्** = स्वर्ग सुख से बचा हुआ। **अजनाभे वर्षे** = भारत देश में। **स्मृतिमत्** = भगवान् की स्मृति वाला। **स्यात्** = हो। **भजताम्** = भजने वालों का। **शम्** = कल्याण। **तनोति** = करते हैं, विस्तार करना।

7. अन्वयः—(अस्माभिः) सुमहत् अक्षयम् अमलम् शुभम् पुण्यम् सञ्चितम्। वयं कदा नु भारतभूतले जन्म लप्स्यामः।

अर्थ—हमारे द्वारा अत्यधिक, कभी न समाप्त होने वाला, निर्मल कल्याणकारी पुण्य सञ्चित कर लिया गया है। हम सब कब भारतभूमि पर जन्म लेंगे?

शब्दार्थः—**सुमहत्** = अत्यधिक, अत्यन्त महान्। **अक्षयम्** = कभी न समाप्त होनेवाला। **अमलम्** = निर्मल, पवित्र। **शुभम्** = कल्याणकारी। **सञ्चितम्** = सञ्चित (इकट्ठा) कर लिया है। **वयम्** = हम सब। **कदा** = कब। **नु** = अनुनय अर्थ में निपात। **लप्स्यामः** = प्राप्त करेंगे।

8. अन्वयः—(यः) भारते जन्म सम्प्राप्य सत्कर्मसु पराङ्मुखः, सः पीयूषकलशं हित्वा विषभाण्डम् इच्छति।

अर्थ—जो भारत देश में जन्म लेकर अच्छे (पुण्य) कर्मों से विमुख है, वह अमृत के घड़े को छोड़कर विष के घड़े को चाहता है।

शब्दार्थः—**भारते** = भारत देश में। **सम्प्राप्य** = प्राप्त कर, लेकर। **सत्कर्मसु** = अच्छे कर्मों के विषय में (से)। **पराङ्मुखः** = विमुख, मुँह फेरे हुए, दूर। **सः** = वह। **पीयूषकलशम्** = अमृत के कलश को। **हित्वा** = छोड़कर। **विषभाण्डम्** = जहर के पात्र को, विष के घड़े को। **इच्छति** = चाहता है।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत-

- (क) देवाः किल किम् गायन्ति?
- (ख) सप्तसमुद्रवत्याः द्वीपेषु वर्षेषु किम् अधिपुण्यम्?
- (ग) भारताजिरे कस्य सेवौपयिकं जन्म लब्धम्?
- (घ) हरिः भजतां किं तनोति?
- (ङ) 'भारतदेशः' इति पाठः कस्मात् पुराणात् समुद्धृतः?

2. एकवाक्येन उत्तरत-

- (क) के धन्याः सन्ति?
- (ख) अमलाः कथं तस्मिन् परब्रह्मणि लयं प्रयान्ति?
- (ग) यैः भारताजिरे जन्म लब्धम्, तेषां विषये देवाः किं कथयन्ति?
- (घ) कल्पायुषां स्थानजयात् भारतभूजयः कथं वरम्?
- (ङ) भारते जन्म सम्प्राप्य सत्कर्मसु पराङ्मुखः किं हित्वा किम् इच्छति?

3. अधोलिखितान् श्लोकान् पूरयत-

- (क) गायन्ति देवाः किल गीतकानि।
..... भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥
- (ख) क्षणायुषां भारतभूजयो वरम्।
क्षणेन मर्त्येन कृतं मनस्विनः॥
- (ग) सम्प्राप्य भारते जन्म।
..... विषभाण्डं स इच्छति॥

4. सत्यम् (✓) असत्यम् (X) वा कथनं चिह्नितं कुरुत-

- (क) ये सुरत्वात् भूयः पुरुषाः भवन्ति ते तु धन्याः। ()
- (ख) भारतीयाः जनाः मुरारेः भद्राणि कर्माणि न गायन्ति। ()
- (ग) मनस्विनः हरेः अभयं पदं संयान्ति। ()
- (घ) सत्कर्मसु पराङ्मुखः पीयूषकलशम् इच्छति। ()
- (ङ) सत्कर्मसु पराङ्मुखः विषभाण्डम् इच्छति। ()

5. उचितं विकल्पं चिनुत-

- (i) विष्णुपुराणस्य प्रणेता कः?
(क) वाल्मीकिः (ख) व्यासः (ग) कालिदासः (घ) भारविः

- (ii) के किल गीतकानि गायन्ति?
 (क) दैत्याः (ख) पुरुषाः (ग) देवाः (घ) सिद्धाः
- (iii) 'भारतदेशः' इति पाठः कुतः समुद्धृतः?
 (क) विष्णुपुराणात् (ख) वाराहपुराणात् (ग) कूर्मपुराणात् (घ) शिवपुराणात्
- (iv) स्वर्गापवर्गास्पदहेतुभूतः कः भूमिभागः?
 (क) चीनदेशः (ख) पाकिस्तानदेशः (ग) आङ्ग्लदेशः (घ) भारतदेशः
- (v) विष्णुपुराणानुसारं भुवः कति समुद्राः?
 (क) पञ्च (ख) षट् (ग) सप्त (घ) अष्टौ
- (vi) भारतभूतले जन्म प्राप्त्यर्थं किं सञ्चितम्?
 (क) द्रव्यम् (ख) पापम् (ग) ज्ञानम् (घ) पुण्यम्
- (vii) भारतीयाः कस्य कर्माणि गायन्ति?
 (क) मुरारेः (ख) शिवस्य (ग) दुर्गायाः (घ) रावणस्य

6. अधोलिखितानां श्लोकानां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत-

- (क) कर्माण्यसंकल्पिततत्फलानि तस्मिंल्लयं ते त्वमलाः प्रयान्ति॥
 (ख) अहो अमीषां किमकारि शोभनं मुकुन्दसेवौपयिकं स्पृहा हि नः॥
 (ग) यद्यस्ति नः स्वर्गसुखावशेषितं वर्षे हरिर्यद् भजतां शं तनोति॥

7. अधोलिखितानां सूक्तीनां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत-

- (क) द्वीपेषु वर्षेष्वधिपुण्यमेतत्।
 (ख) क्षणायुषां भारतभूजयो वरम्।
 (ग) पीयूषकलशं हित्वा विषभाण्डं स इच्छति।

8. अधोलिखितानां श्लोकानां संस्कृतभाषया अर्थं लिखत-

- (क) गायन्ति देवाः किल गीतकानि पुरुषाः सुरत्वात्॥
 (ख) सञ्चितं सुमहत् जन्म भारतभूतले॥
 (ग) सम्प्राप्य भारते विषभाण्डं स इच्छति॥

आन्तरिकं मूल्याङ्कनम्

1. 'भारतदेशः' इति विषयमधिकृत्य दशवाक्यानि लिखत।

योग्यताविस्तारः

1. 'वन्देमातरम्' इति राष्ट्रगीतं लिखित्वा कण्ठस्थं कुरुत।

2. अधोलिखितस्य भावार्थं लिखत-

अपि स्वर्णमयी लङ्का न मे लक्ष्मण रोचते।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी॥

3. संस्कृतभाषायां प्रकृतिप्रत्यययोगेन शब्दनिर्माणं भवति। उदाहरणं दृष्ट्वा शब्दनिर्माणं कुरुत-

प्रकृतिः प्रत्ययः अव्ययशब्दः अर्थः

पठ् + क्त्वा = पठित्वा = पढ़कर

लिख् + क्त्वा =

खाद् + क्त्वा =

धाव् + क्त्वा =

क्रीड् + क्त्वा =

गम् + क्त्वा = गत्वा = जाकर

पा + क्त्वा = पीत्वा = पीकर

दा + क्त्वा =

ज्ञा + क्त्वा =

श्रु + क्त्वा =

नी + क्त्वा =

दृश् + क्त्वा =

4. उदाहरणं दृष्ट्वा एतेषां शब्दानां वाक्येषु प्रयोगं कुरुत-

यथा-छात्रः = छात्रः संस्कृतकक्षायां पठति।

(1) बालकः = ।

(2) मुनिः = ।

(3) फलम् = ।

(4) नदी = ।

(5) भानुः = ।



पञ्चमः पाठः

नारीमहिमा

पाठपरिचयः

प्रस्तुत पाठ मानव के सामाजिक एवं व्यक्तिगत जीवन के विविध पक्षों पर प्रकाश डालने वाले ग्रन्थ मनुस्मृति से लिया गया है। पाठान्तर्गत श्लोकों में समाज एवं परिवार के लिए स्त्रियों के महत्त्व का वर्णन है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥१॥
स्त्रियां तु रोचमानायां सर्वं तद्रोचते कुलं।
तस्यां त्वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते॥२॥
तस्मादेताः सदा पूज्या भूषणाच्छादनाशनैः।
भूतिकामैर्नरैर्नित्यं सत्कार्येषूत्सवेषु च॥३॥
पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा।
पूज्या भूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः॥४॥
उपाध्यायान्दशाचार्यः आचार्याणां शतं पिता।
सहस्रं तु पितृन्माता गौरवेणातिरिच्यते॥५॥
पूजनीया महाभागाः पुण्याश्च गृहदीप्तयः।
स्त्रियः श्रियो गृहस्योक्ताः तस्माद् रक्ष्या विशेषतः॥६॥

दिग्दर्शिका

1. **अन्वयः**—यत्र नार्यः तु पूज्यन्ते तत्र देवताः रमन्ते। यत्र एताः तु न पूज्यन्ते तत्र सर्वाः क्रियाः अफलाः (भवन्ति)।

अर्थः—जहाँ स्त्रियाँ पूजी जाती हैं, अर्थात् सम्मानित होती हैं वहाँ देवता निवास करते हैं। जहाँ पर ये पूजी अर्थात् सम्मानित नहीं की जाती हैं वहाँ के सम्पूर्ण कार्य असफल हो जाते हैं।



शब्दार्थः—यत्र = जहाँ। नार्यः = महिलाएँ। पूज्यन्ते = पूजी जाती हैं। तत्र = वहाँ। रमन्ते = निवास करते हैं। एताः = ये (महिलाएँ)। सर्वाः = सम्पूर्ण। क्रियाः = कार्य। अफलाः = असफल।

2. **अन्वयः—**स्त्रियां तु रोचमानायां तत् सर्वं कुलं रोचते। तस्याम् अरोचमानायां तु सर्वम् एव न रोचते।

अर्थः—स्त्रियों के प्रसन्न रहने पर वह सम्पूर्ण कुल शोभित होता है (प्रसन्न रहता है)। उनके प्रसन्न न रहने पर तो कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

शब्दार्थः—स्त्रियाँ = स्त्रियों के। रोचमानायाम् = प्रसन्न रहने पर। तत् = वह। सर्वं कुलम् = सम्पूर्ण कुल। रोचते = प्रसन्न रहता है। अरोचमानायाम् = प्रसन्न न रहने पर। सर्वमेव = सभी कुछ।

3. **अन्वयः—**तस्मात् भूतिकामैः नरैः सत्कार्येषु उत्सवेषु च नित्यम् एताः भूषणैः आच्छादनैः अशनैः च सदा पूज्याः।

अर्थः—इसलिए कल्याण चाहनेवाले मनुष्यों के द्वारा शुभ कार्यों में और उत्सवों में नित्य आभूषण, वस्त्र और भोजन के द्वारा इन (स्त्रियों) का हमेशा सम्मान किया जाना चाहिए।

शब्दार्थः—तस्मात् = इसलिए। भूतिकामैः = कल्याण चाहनेवाले। नरैः = मनुष्यों के द्वारा। सत्कार्येषु = अच्छे कार्यों में। उत्सवेषु = उत्सवों में। भूषणैः = आभूषणों से। आच्छादनैः = कपड़ों से। अशनैः = भोजन से। सदा = हमेशा। पूज्याः = सम्मान करने योग्य।

4. **अन्वयः**—बहुकल्याणम् ईप्सुभिः पितृभिः भ्रातृभिः पतिभिः तथा देवरैः च एताः सदा पूज्याः भूषयितव्याः च।

अर्थः—अपना अधिक कल्याण चाहने वाले पिता आदि द्वारा, भाइयों द्वारा, पति द्वारा तथा देवों द्वारा इन स्त्रियों को सदैव वस्त्र, आभूषण आदि से सम्मानित करना चाहिए।

शब्दार्थः—**बहुकल्याणमीप्सुभिः** = बहुत कल्याण चाहनेवाले। **पितृभिः** = पिता आदि द्वारा। **भ्रातृभिः** = भाइयों द्वारा। **पतिभिः** = पति द्वारा। **देवरैः** = देवों द्वारा। **पूज्याः** = सम्मान योग्य। **भूषयितव्याः** = वस्त्र आभूषण से युक्त की जानी चाहिए।

5. **अन्वयः**—दश उपाध्यायान् आचार्यः आचार्याणां शतं पिता सहस्रं पितृन् तु माता गौरवेण अतिरिच्यते।

अर्थः—दस शिक्षकों की अपेक्षा आचार्य श्रेष्ठ होता है। सौ आचार्यों की अपेक्षा पिता श्रेष्ठ होता है। हजारों पिताओं की अपेक्षा माता श्रेष्ठ होती है।

शब्दार्थः—**शतम् आचार्याणां** = सौ आचार्यों की। **सहस्रम्** = हजार गुना। **गौरवेण** = श्रेष्ठता में। **अतिरिच्यते** = बढ़कर होती है।

6. **अन्वयः**—पूजनीयाः महाभागाः पुण्याः गृहदीप्तयः च स्त्रियः गृहस्य श्रियः उक्ताः। तस्मात् विशेषतः रक्ष्याः।

अर्थः—सम्मान के योग्य महाभाग्यशालिनी पुण्यशीला तथा घर की शोभास्वरूप स्त्रियाँ घर की लक्ष्मी कही गयी हैं। इसलिए इनकी विशेष रूप से रक्षा करनी चाहिए।

शब्दार्थः—**पूजनीयाः** = सम्मान के योग्य। **महाभागाः** = महाभाग्यवती। **पुण्याः** = पवित्र। **गृहदीप्तयः** = घर की शोभा। **श्रियः** = लक्ष्मी। **उक्ताः** = कही गयी हैं। **तस्मात्** = इसलिए। **विशेषतः** = विशेष रूप से। **रक्ष्याः** = रक्षा के योग्य हैं।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत—

- (क) यत्र नार्यः पूज्यन्ते तत्र काः रमन्ते?
- (ख) सत्कार्येषु काः सम्माननीयाः?
- (ग) दश उपाध्यायान् कः अतिरिच्यते?
- (घ) शतम् आचार्याणाम् अपेक्षया कः श्रेष्ठः?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत—

- (क) देवताः कुत्र रमन्ते?
- (ख) अफलाः क्रियाः कुत्र भवन्ति?
- (ग) सर्वं कुलं कदा रोचते?
- (घ) कीदृशैः जनैः स्त्रियः पूज्याः?

3. अधोलिखितश्लोकानां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत-

- (क) यत्र क्रियाः॥
 (ख) स्त्रियां तु न रोचते॥
 (ग) तस्मादेताः उत्सवेषु च॥
 (घ) पितृभिः ईप्सुभिः॥
 (ङ) उपाध्यायान् अतिरिच्यते॥
 (च) पूजनीया विशेषतः।

4. अधोलिखितसूक्तीनां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत-

- (क) यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
 (ख) स्त्रियां तु रोचमानायां सर्वं तद्रोचते कुलम्।
 (ग) सहस्रं तु पितृन्माता गौरवेणातिरिच्यते।
 (घ) स्त्रियः श्रियो गृहस्योक्ताः तस्माद्रक्ष्या विशेषतः।

5. अधोलिखितश्लोकानां संस्कृतेन अर्थं लिखत-

- (क) यत्र नार्यस्तु क्रियाः॥
 (ख) तस्मादेताः उत्सवेषु च॥
 (ग) पूजनीया विशेषतः।

6. समुचितमुत्तरं चिनुत-

- (i) 'नारीमहिमा' इति पाठः गृहीतः—
 (क) मनुस्मृतेः (ख) रामायणात् (ग) मेघदूतात् (घ) उत्तररामचरितात्
 (ii) काः गृहश्रियः उक्ताः—
 (क) शिक्षिकाः (ख) गायिकाः (ग) स्त्रियः (घ) नर्तक्यः
 (iii) माता केन अतिरिच्यते—
 (क) अभिमानेन (ख) क्रोधेन (ग) गौरवेण (घ) न केनापि
 (iv) कति उपाध्यायान् आचार्यः श्रेष्ठः भवति—
 (क) अष्ट (ख) द्वादश (ग) दश (घ) नव
 (v) का गौरवेण अतिरिच्यते—
 (क) माता (ख) पिता (ग) पुत्रः (घ) आचार्यः

षष्ठः पाठः

क्रियाकारककुतूहलम्

पाठपरिचयः

किसी भी भाषा को उसके व्याकरण के ज्ञान के बिना ठीक-ठीक समझा नहीं जा सकता है। संस्कृत भाषा का व्याकरण पूर्ण समृद्ध, प्रामाणिक और श्लिष्ट है। वाक्य को बोलने और समझने के लिए कारक और क्रिया (लकार) का बोध आवश्यक है। प्रस्तुत पाठ में प्रारम्भ के सात श्लोकों में विभक्तियों का बोध कराया गया है तथा बाद के पाँच श्लोकों में लकार (क्रिया) का परिचय है।

(विभक्ति-परिचयः)

उद्यमः	साहसं	धैर्यं	बुद्धिः	शक्तिः	पराक्रमः।	
षडेते	यत्र	वर्तन्ते	तत्र	देवः	सहायकृत्॥१॥	(प्रथमा)
विनयो	वंशमाख्याति	देशमाख्याति	भाषितम्।			
सम्भ्रमः	स्नेहमाख्याति	वपुराख्याति	भोजनम्॥२॥			(द्वितीया)
मृगाः	मृगैः	सङ्गमनुव्रजन्ति	गावश्च	गोभिस्तुरगास्तुरङ्गैः।		
मूर्खाश्च	मूर्खैः	सुधियः	सुधीभिः	समानशील-व्यसनेषु	सख्यम्॥३॥	(तृतीया)
विद्या	विवादाय	धनं	मदाय	शक्तिः	परेषां परिपीडनाय।	
खलस्य	साधोर्विपरीतमेतद्	ज्ञानाय	दानाय	च	रक्षणाय॥४॥	(चतुर्थी)
क्रोधात्	भवति	संमोहः	संमोहात्	स्मृतिविभ्रमः।		
स्मृतिभ्रंशाद्	बुद्धिनाशो	बुद्धिनाशात्	प्रणश्यति॥५॥			(पञ्चमी)
अलसस्य	कुतो	विद्या	अविद्यस्य	कुतो	धनम्।	
अधनस्य	कुतो	मित्रम्	अमित्रस्य	कुतः	सुखम्॥६॥	(षष्ठी)
शैले	शैले	न	माणिक्यं	मौक्तिकं	न	गजे गजे।
साधवो	न	हि	सर्वत्र	चन्दनं	न	वने वने॥७॥ (सप्तमी)

(लकार-परिचयः)

पापान्निवारयति योजयते हिताय

गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति।

आपद्गतं च न जहाति ददाति काले

सन्मित्र-लक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः॥१॥

(लट्)

निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु

लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।

अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा

न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥२॥

(लोट्)

अपठद् योऽखिला विद्याः कलाः सर्वा अशिक्षत

अजानात् सकलं वेद्यं स वै योग्यतमो नरः॥३॥

(लङ्)

दृष्टिपूतं न्यसेत् पादं वस्त्रपूतं जलं पिबेत्।

सत्यपूतां वदेद् वाचं मनःपूतं समाचरेत्॥४॥

(विधिलिङ्)

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्

भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कजश्रीः।

इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे

हा ! हन्त! हन्त! नलिनीं गज उज्जहार॥५॥

(लृट्)

दिग्दर्शिका

(विभक्ति-परिचयः)

1. **अन्वयः**—उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः एते षट् यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहायकृत्।

अर्थः—उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम—ये छह जहाँ उपस्थित रहते हैं वहाँ पर देवता भी सहायता करते हैं।

शब्दार्थः—**उद्यमः** = उद्योग, परिश्रम। **साहसम्** = साहस, हिम्मत। **धैर्यम्** = चित्त की स्थिरता, धीरज। **षडेते** = ये छः। **यत्र** = जहाँ। **वर्तन्ते** = वर्तमान हों, रहते हैं। **तत्र** = वहाँ। **देवः** = देवता, भगवान्। **सहायकृत्** = सहायक, सहायता करनेवाला।

विशेषः—इस श्लोक में प्रथमा विभक्ति का सुन्दर प्रयोग दृष्टिगोचर होता है।

2. **अन्वयः**—विनयः वंशम् आख्याति, भाषितं देशम् आख्याति, सम्भ्रमः स्नेहम् आख्याति वपुः च भोजनम् आख्याति।

अर्थः—मनुष्य की विनम्रता उसके वंश के विषय में बतलाती है। बोली देश (वासस्थल) के विषय में बता देती है। व्याकुलता (अधीरता, हाव-भाव) से प्रेम का पता चल जाता है और शरीर भोजन के विषय में बता देता है।

शब्दार्थः—**विनयः** = विनम्रता। **आख्याति** = कहती है, बताती है। **भाषितम्** = बोली (वाणी)। **सम्भ्रमः** = अधीरता, हाव-भाव। **वपुः** = शरीर।

विशेषः—इस श्लोक में द्वितीया विभक्ति का आकर्षक प्रयोग है।

3. अन्वयः—मृगाः मृगैः सङ्गम् अनुव्रजन्ति, गावः गोभिः तुरगाः च तुरङ्गैः (सङ्गम् अनुव्रजन्ति); मूर्खैः मूर्खाः सुधियः च सुधीभिः (सङ्गम् अनुव्रजन्ति), समानशीलव्यसनेषु सख्यं (भवति)।

अर्थः—हिरण हिरणों के साथ घूमा करते हैं, गायें गायों के साथ, घोड़े घोड़ों का साथ करते हैं। मूर्ख मूर्खों का और बुद्धिमान् बुद्धिमानों की संगति करते हैं। वास्तव में समान आचरण और समान स्वभाव वालों में ही मित्रता होती है।

शब्दार्थः—**मृगाः** = हिरण, पशु। **सङ्गम्** = साथ। **अनुव्रजन्ति** = पीछे चलते हैं, अनुसरण करते हैं। **गावः** = गायें। **तुरगाः** = घोड़े। **सुधियः** = बुद्धिमान्। **समानशीलव्यसनेषु** = समान आचरण तथा समान स्वभाव वालों में। **सख्यम्** = मित्रता। **भवति** = होती है।

विशेषः—प्रस्तुत पद्य में तृतीया विभक्ति का सुन्दर प्रयोग परिलक्षित हो रहा है।

4. अन्वयः—खलस्य विद्या विवादाय, धनं मदाय, शक्तिः परेषां परिपीडनाय (भवति)। एतद् विपरीतम् साधोः विद्या ज्ञानाय, धनं दानाय शक्तिः च रक्षणाय (भवति)।

अर्थः—दुष्ट की विद्या विवाद के लिए, धन घमण्ड (अहंकार, मद) के लिए और शक्ति दूसरों को पीड़ा देने के लिए (सताने के लिए) होती है। इसके विपरीत सज्जन की विद्या ज्ञान के लिए, धन (दीन, दुःखियों, दरिद्रों को) दान के लिए और शक्ति दूसरों की रक्षा के लिए होती है।

शब्दार्थः—**खलस्य** = (दुष्टस्य) दुष्ट की। **विवादाय** = विवाद के लिए, लड़ने-झगड़ने के लिए। **मदाय** = मद के लिए, घमण्ड (अहंकार) के लिए। **परेषाम्** = दूसरों को। **परिपीडनाय** = सताने के लिए, पीड़ित करने के लिए। **एतद् विपरीतम्** = इसके विपरीत। **साधोः** = सज्जन की। **ज्ञानाय** = ज्ञान के लिए। **दानाय** = दान के लिए। **रक्षणाय** = रक्षा के लिए।

विशेषः—इस श्लोक में चतुर्थी विभक्ति का अत्यन्त सुन्दर प्रयोग दृष्टिगोचर हो रहा है।

5. अन्वयः—क्रोधात् संमोहः, सम्मोहात् स्मृतिविभ्रमः, स्मृतिभ्रंशात् बुद्धिनाशः भवति, बुद्धिनाशात् (मानवः) प्रणश्यति।

अर्थः—श्रीकृष्ण अर्जुन को क्रोध का भयंकर परिणाम बताते हुए कहते हैं कि क्रोध से अज्ञान पैदा होता है, अज्ञान से स्मरण शक्ति नष्ट हो जाती है, स्मरण शक्ति के नष्ट होने से बुद्धि का नाश हो जाता है और बुद्धि के नाश हो जाने से मनुष्य नष्ट हो जाता है।

शब्दार्थः—क्रोधात् = क्रोध से। संमोहः = अज्ञान। संमोहात् = अज्ञान से। स्मृतिविभ्रमः = स्मरण शक्ति का नाश, बुद्धि का भ्रमित होना। स्मृतिभ्रंशात् = स्मरण शक्ति के नष्ट होने से। प्रणश्यति = नष्ट हो जाता है।

विशेषः—इस पद्य में पञ्चमी विभक्ति का मनोरम चित्रण दृष्टिगत हो रहा है।

6. अन्वयः—अलसस्य विद्या कुतः, अविद्यस्य धनं कुतः, अधनस्य मित्रं कुतः, अमित्रस्य सुखं कुतः (भवति)?

अर्थः—आलसी मनुष्य को विद्या कैसे प्राप्त हो सकती है, जो विद्याहीन है, उसे धन कहाँ? धनहीन को मित्र कहाँ? जिसका कोई मित्र नहीं, उसे सुख कहाँ से मिल सकता है? अर्थात् उसे सुख नहीं मिल सकता है।

शब्दार्थः—अलसस्य = आलसी मनुष्य को। कुतः = कहाँ। अविद्यस्य = विद्याहीन को। अधनस्य = धनहीन को। अमित्रस्य = मित्रहीन को।

विशेषः—इस श्लोक में षष्ठी विभक्ति का चमत्कार प्रदर्शित हो रहा है।

7. अन्वयः—शैले शैले माणिक्यं न, गजे गजे मौक्तिकं न, सर्वत्र साधवः न हि, वने वने चन्दनं न।

अर्थः—प्रत्येक पर्वत पर मणि नहीं होती, प्रत्येक हाथी (के मस्तक) में मोती (गजमुक्ता) नहीं होती, प्रत्येक स्थान पर सज्जन पुरुष नहीं होते और प्रत्येक वन में चन्दन नहीं होता।

शब्दार्थः—शैले शैले = प्रत्येक पर्वत पर। माणिक्यम् = मणि। गजे गजे = प्रत्येक हाथी में। मौक्तिकम् = मोती (गजमुक्ता)। सर्वत्र = सब जगह। साधवः = सज्जन। वने वने = प्रत्येक वन में। चन्दनम् = चन्दन।

विशेषः—इस श्लोक में सप्तमी विभक्ति का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

(लकार-परिचय)

1. अन्वयः—पापात् निवारयति, हिताय योजयते, गुह्यं निगूहति, गुणान् प्रकटीकरोति, आपद्गतं न जहाति काले च ददाति, सन्तः इदं सन्मित्रलक्षणं प्रवदन्ति।

अर्थः—अच्छ मित्र अपने मित्र को पाप कार्य से रोकता है, हित के कार्य में लगाता है। मित्र की छिपाने योग्य बातों को छिपाता है, गुणों को प्रकट करता है, आपत्ति में फँस जाने पर साथ नहीं छोड़ता, आवश्यकता के समय सब कुछ देता है। श्रेष्ठ पुरुषों ने यही अच्छे मित्र का लक्षण बताया है।

शब्दार्थः—पापात् = पाप से, बुरे कार्य से। निवारयति = रोकता है, दूर करता है, गुप्त या छिपाने योग्य बात को। निगूहति = छिपाता है। आपद्गतम् = आपत्ति के समय, आपत्ति में फँस जाने पर। जहाति = छोड़ता है। काले = समय पर। सन्तः = सज्जन। प्रवदन्ति = कहते हैं।

विशेषः—इस श्लोक में लटलकार की क्रियाओं का प्रयोग हुआ है।

2. **अन्वयः**—नीतिनिपुणाः निन्दन्तु यदि वा स्तवन्तु, लक्ष्मीः समाविशतु यथेष्टं वा गच्छतु, अद्यैव युगान्तरे वा मरणम् अस्तु, (परञ्च) धीराः न्याय्यात् पथः पदं न प्रविचलन्ति।

अर्थः—नीतियों में निपुण लोग चाहे निन्दा करें या प्रशंसा करें, लक्ष्मी अपनी इच्छा से चाहे आ जाए अथवा चली जाए, आज ही मृत्यु हो जाए अथवा युगों के बाद; किन्तु धीर पुरुष न्याय के मार्ग से पग मात्र नहीं डिगते (पीछे नहीं हटते)।

शब्दार्थः—नीतिनिपुणाः = नीति में चतुर लोग। निन्दन्तु = निन्दा करें। स्तवन्तु = प्रशंसा करें। समाविशतु = आ जाये। यथेष्टम् = अपनी इच्छा से। अद्यैव = आज ही। युगान्तरे = युगों के बाद। मरणम् = मृत्यु। अस्तु = हो जाये। न्याय्यात् पथः = न्यायपूर्ण रास्ते, न्याय के मार्ग से। न प्रविचलन्ति = नहीं हटते, नहीं डिगते।

विशेषः—इस श्लोक में लोट् लकार की क्रियाओं का सुन्दर प्रयोग परिलक्षित हो रहा है।

3. **अन्वयः**—यः अखिलाः विद्याः अपठत्, सर्वाः कलाः अशिक्षत, सकलं वेद्यम् अजानात्, सः वै नरः योग्यतमः।

अर्थः—जिसने सम्पूर्ण विद्याएँ पढ़ लीं, सभी कलाएँ सीख लीं और सभी जानने योग्य बातें जान लीं। वह अवश्य ही सबसे योग्य मनुष्य है।

शब्दार्थः—यः = जो (जिसने)। अखिलाः = सम्पूर्ण। विद्याः = विद्याओं को। अपठत् = पढ़ लिया। सर्वाः = सभी। कलाः = साहित्य, संगीत आदि कलाएँ। अशिक्षत = सीख लीं। सकलम् = सम्पूर्ण। वेद्यम् = जानने योग्य। अजानात् = जान लिया, ज्ञान प्राप्त कर लिया। सः = वह। वै = अवश्य ही। नरः = मनुष्य। योग्यतमः = सबसे अधिक योग्य।

विशेषः—इस श्लोक में लङ् लकार की क्रियाओं का प्रयोग दर्शनीय है।

4. **अन्वयः**—दृष्टिपूतं पादं न्यसेत्, वस्त्रपूतं जलं पिबेत्, सत्यपूतां वाचं वदेत्, मनःपूतं समाचरेत्।

अर्थ—दृष्टि से पवित्र अर्थात् भली-भाँति देखकर ही कदम रखना चाहिए, कपड़े से छानकर जल पीना चाहिए, सत्य से पवित्र अर्थात् सत्य से युक्त वाणी बोलनी चाहिए और मन से पवित्र अर्थात् जिसे मन ठीक कहे, वही आचरण करना चाहिए।

शब्दार्थः—दृष्टिपूतम् = दृष्टि से पवित्र अर्थात् भली-भाँति देखकर। पादम् = पैर। न्यसेत् = रखना चाहिए। वस्त्रपूतम् = कपड़े से पवित्र किया हुआ अर्थात् छानकर। पिबेत् = पीना चाहिए। सत्यपूताम् = सत्य से पवित्र अर्थात् सत्यतापूर्ण। वाचम् = वाणी को। वदेत् = बोलना चाहिए। मनःपूतम् = मन से पवित्र अर्थात् जिसे मन ठीक कहे। समाचरेत् = आचरण करना चाहिए।

विशेषः—इस श्लोक में विधिलिङ् लकार की क्रियाओं का सुन्दर प्रयोग दृष्टिगोचर हो रहा है।

5. **अन्वयः**—रात्रिः गमिष्यति, सुप्रभातं भविष्यति, भास्वान् उदेष्यति, पङ्कजश्रीः हसिष्यति, कोशगते द्विरेफे इत्थं विचिन्तयति हा हन्त! हन्त! नलिनीं गज उज्जहार।

अर्थः—इसमें भाग्य की प्रबलता दिखलायी गयी है। मनुष्य सोचता तो कुछ है और हो कुछ और ही जाता है, जिससे उसकी सब आशाओं पर पानी फिर जाता है। कवि कहता है कि कमल के कोश में बन्द हुआ भौरा सोच रहा था कि रात बीतेगी, तब सुन्दर प्रातःकाल होगा, सूर्य उदित होगा, तब कमल की शोभा शोभित होगी; किन्तु खेद है, कमलकोश में बन्द भौरै के इस प्रकार सोचते-ही-सोचते उस कमल को हाथी ने जड़ से उखाड़ दिया।

शब्दार्थः—रात्रिः = रात्रि। गमिष्यति = चली जाएगी, बीत जाएगी। सुप्रभातम् = सुन्दर प्रातःकाल, सबेरा। भविष्यति = होगा। भास्वान् = सूर्य। उदेष्यति = उदित होगा। पङ्कजश्रीः = कमल की शोभा। हसिष्यति = हँसेगी, शोभित होगी। कोशगते = कमल के कोश (भीतर) बन्द हुए। द्विरेफे = भौरै के। इत्थम् = इस प्रकार। विचिन्तयति = विचार करते हुए, सोचते हुए। हन्त = अफसोस है, दुःख है, दुर्भाग्य है। नलिनीम् = कमल को। गजः = हाथी ने। उज्जहार = उखाड़ दिया।

विशेषः—इस श्लोक में लृट् लकार की क्रियाओं का सुन्दरतम प्रयोग दर्शनीय है।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत-

- (क) सम्भ्रमः किम् आख्याति?
- (ख) साधोः विद्या किमर्थं भवति?
- (ग) केषु सख्यं भवति?
- (घ) आपद्गतं कः न जहाति?
- (ङ) नलिनीं कः उज्जहार?

2. अधोलिखितानां श्लोकानां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत-

- (क) उद्यमः साहसं देवः सहायकृत्॥
- (ख) विनयो भोजनम्॥
- (ग) मृगाः मृगैः सख्यम्॥
- (घ) विद्या विवादाय च रक्षणाय॥
- (ङ) अलसस्य कुतो कुतः सुखम्॥
- (च) शैले शैले न वने वने॥
- (छ) पापान्निवारयति प्रवदन्ति सन्तः॥
- (ज) निन्दन्तु पदं न धीराः॥
- (झ) दृष्टिपूतं समाचरेत्॥
- (ञ) रात्रिर्गमिष्यति गज उज्जहार॥

3. अधोलिखितानां सूक्तीनां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत-

- (क) समानशीलव्यसनेषु सख्यम्।
- (ख) विनयो वंशमाख्याति।
- (ग) अलसस्य कुतो विद्या।
- (घ) साधवो न हि सर्वत्र।
- (ङ) न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।
- (च) सत्यपूतां वदेत् वाचं मनःपूतं समाचरेत्।

4. अधोलिखितानां श्लोकानां संस्कृतेन अर्थं लिखत-

- (क) उद्यमः सहायकृत्॥
- (ख) विद्या विवादाय च रक्षणाय॥
- (ग) अलसस्य कुतो कुतः सुखम्॥
- (घ) शैले शैले वने वने।
- (ङ) पापान्निवारयति प्रवदन्ति सन्तः॥
- (च) निन्दन्तु पदं न धीराः॥

5. उचितं विकल्पं चिनुत-

- (i) विनयः कम् आख्याति?
 - (क) वंशम् (ख) देशम् (ग) स्नेहम् (घ) भोजनम्
- (ii) मूर्खाः कैः सङ्गम् अनुव्रजन्ति?
 - (क) मृगैः (ख) मूर्खैः (ग) तुरङ्गैः (घ) सुधीभिः
- (iii) खलस्य विद्या किमर्थं भवति?
 - (क) विवादाय (ख) मदाय (ग) ज्ञानाय (घ) दानाय।
- (iv) साधोः धनं किमर्थं भवति?
 - (क) दानाय (ख) रक्षणाय (ग) ज्ञानाय (घ) मदाय
- (v) अलसस्य कुतः भवति?
 - (क) विद्या (ख) धनम् (ग) मित्रम् (घ) सुखम्



सप्तमः पाठः

नीतिनवनीतम्

पाठपरिचयः

प्रस्तुत पाठ महर्षिवेदव्यास-कृत महाभारत के उद्योगपर्व से संगृहीत है, जिसमें महात्मा विदुर धृतराष्ट्र को नीतिमय वचनों से उपदेश प्रदान करते हैं। इसे 'विदुरनीति' के नाम से भी जाना जाता है।

प्रस्तुत पाठ में उपदेश दिया गया है कि प्रिय बोलनेवाले मनुष्य तो सरलता से मिल जाते हैं, परन्तु हितकारी वचन कहने वाले और सुनने वाले बहुत दुर्लभ होते हैं। उपदेश देते हुए धर्म की महत्ता, चरित्रसंरक्षण की अनिवार्यता तथा जीवन में सुख के साधनों का परिगणन किया गया है।

सुलभाः पुरुषाः राजन् सततं प्रियवादिनः।

अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः॥१॥

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चाप्यवधार्यताम्।

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥२॥

न विश्वसेदविश्वस्ते विश्वस्ते नातिविश्वसेत्।

विश्वासाद् भयमुत्पन्नं मूलान्यपि निकृन्तति॥३॥

अक्रोधेन जयेत् क्रोधमसाधुं साधुना जयेत्।

जयेत् कदर्यं दानेन जयेत् सत्येन चानृतम्॥४॥

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमायाति याति च।

अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः॥५॥

दिवसेनैव तत्कुर्याद् येन रात्रौ सुखं वसेत्।

अष्टमासेन तत् कुर्याद् येन वर्षाः सुखं वसेत्॥६॥

पूर्वं वयसि तत्कुर्याद् येन वृद्धः सुखं वसेत्।

यावज्जीवेन तत्कुर्याद् येन प्रेत्य सुखं वसेत्॥७॥

सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः।

शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम्॥८॥

अर्थागमो	नित्यमरोगिता	च
प्रिया	च	भार्या
वश्यश्च	पुत्रोऽर्थकरी	च
षड्	जीवलोकस्य	सुखानि
		राजन्।।१।।

दिग्दर्शिका

1. **अन्वयः**—राजन् ! सततम् प्रियवादिनः पुरुषाः सुलभाः, अप्रियस्य पथ्यस्य तु वक्ता श्रोता च दुर्लभः।

अर्थः—हे राजन्! हमेशा प्रिय बोलने वाले पुरुष सरलता (आसानी) से मिल जाते हैं; किन्तु अप्रिय (कड़वा) एवं हितकारी वचन बोलने वाले और सुनने वाले दोनों कठिनाई से मिलते हैं।

शब्दार्थः—राजन् = हे राजन्!, सततम् = सदा, हमेशा। प्रियवादिनः = प्रिय बोलने वाले। सुलभाः = सरलता से मिल जाते हैं। पथ्यस्य = हितकारी। वक्ता = कहनेवाले। श्रोता = सुनने वाला। दुर्लभः = कठिनाई से मिलता है।

2. **अन्वयः**—धर्मसर्वस्वम् श्रूयताम् श्रुत्वा च अपि अवधार्यताम्। आत्मनः प्रतिकूलानि परेषाम् न समाचरेत्।

अर्थः—धर्म का सार (मूल तत्त्व) सुनो और सुनकर धारण भी करो। अपने प्रतिकूल आचरण दूसरों से नहीं करना चाहिए।

शब्दार्थः—धर्मसर्वस्वम् = धर्म का सार। श्रूयताम् = सुनो। श्रुत्वा = सुनकर। अपि = भी। अवधार्यताम् = धारण करो। आत्मनः = अपने। प्रतिकूलानि = विपरीत। परेषाम् = दूसरों से। समाचरेत् = आचरण करना चाहिए।

3. **अन्वयः**—अविश्वस्ते न विश्वसेत्, विश्वस्ते न अतिविश्वसेत्। विश्वासात् उत्पन्नम् भयम् मूलानि अपि निकृन्तति।

अर्थः—विश्वास न करने योग्य (व्यक्ति) पर विश्वास नहीं करना चाहिए, विश्वास करने योग्य पर भी अधिक विश्वास नहीं करना चाहिए। विश्वास से उत्पन्न भय जड़ों को भी काट देता है।

शब्दार्थः—अविश्वस्ते = विश्वास न करने योग्य पर। विश्वसेत् = विश्वास करना चाहिए। भयम् = डर। निकृन्तति = काट देता है। मूलान्यपि = जड़ों को भी।

4. **अन्वयः**—अक्रोधेन क्रोधम् जयेत्, साधुना असाधुम् जयेत्, दानेन कदर्यम् जयेत्, सत्येन च अनृतम् जयेत्।

अर्थः—क्रोध न करने के द्वारा क्रोध को जीतना चाहिए। दुष्ट को सज्जनता से जीतना चाहिए। कंजूस व्यक्ति को दान से जीतना चाहिए। झूठ को सत्य से जीतना चाहिए।

शब्दार्थः—अक्रोधेन = क्रोध न करने के द्वारा। क्रोधम् = क्रोध को। जयेत् = जीतना चाहिए। असाधुम् = दुष्ट को। साधुना = सज्जनता से। कदर्यम् = कंजूस को। दानेन = दान से। सत्येन = सत्य से। अनृतम् = झूठ को।

5. **अन्वयः**—वृत्तम् यत्नेन संरक्षेत्, वित्तम् आयाति याति च, वित्ततः क्षीणः अक्षीणः, वृत्ततः हतः तु हतः।

अर्थ—चरित्र की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। धन आता और जाता रहता है। जिसका धन नष्ट हुआ, उसका कुछ भी नहीं नष्ट हुआ। किन्तु जिसका चरित्र नष्ट हो गया, वह मरे हुए के समान है।

शब्दार्थ—वृत्तम् = चरित्र की। यत्नेन = यत्नपूर्वक। संरक्षेत् = रक्षा करनी चाहिए। वित्तम् = धन। आयाति = आता है। याति = चला जाता है। क्षीणः = नष्ट हुआ। अक्षीणः = नाशरहित। वृत्ततः = चरित्र से। हतः = मरा हुआ।

6. **अन्वयः**—दिवसेन एव तत् कुर्यात् येन रात्रौ सुखं वसेत्। अष्टमासेन तत् कुर्यात् येन वर्षाः सुखं वसेत्।

अर्थ—दिन भर में वह कार्य कर लेना चाहिए जिससे रात्रि में सुखपूर्वक रहें। आठ महीने में वह (सब) कार्य कर लेना चाहिए जिससे वर्षा (के चार मास) सुखपूर्वक रहें।

शब्दार्थ—दिवसेन = दिन से। तत् = वह। कुर्यात् = करे। येन = जिससे। रात्रौ = रात में। वसेत् = रहें। अष्टमासेन = आठ महीने से। वर्षाः = वर्षा ऋतु में।

7. **अन्वयः**—पूर्वे वयसि तत् कुर्यात् येन वृद्धः सुखं वसेत्, यावज्जीवेन तत् कुर्यात् येन प्रेत्य सुखं वसेत्।

अर्थ—मनुष्य को पूर्व अवस्था अर्थात् युवावस्था में वह कार्य (धनार्जन) कर लेना चाहिए जिससे वृद्ध होने पर सुखपूर्वक रहे। जीवित रहते वह कार्य (पुण्य) कर लेना चाहिए जिससे मरकर भी (स्वर्गादि) में सुखपूर्वक रहे।

शब्दार्थ—पूर्वे = प्रथम। वयसि = अवस्था में। तत् = वह। कुर्यात् = करना चाहिए। येन = जिससे। वृद्धः = बूढ़ा हुआ। सुखम् = सुख से। वसेत् = बीते। यावज्जीवेन = जीवन रहते हुए। प्रेत्य = मरकर।

8. **अन्वयः**—त्रयः पुरुषाः सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति। शूरः च कृतविद्यः च, यः च सेवितुं जानाति।

अर्थ—तीन (प्रकार के) पुरुष स्वर्णरूपी पुष्पों से युक्त अर्थात् धन-धान्य से परिपूर्ण पृथ्वी के सुखों का भोग करते हैं—वीर, विद्वान् और जो सेवा करना जानता हो।

शब्दार्थ—चिन्वन्ति = चुनते हैं (प्राप्त करते हैं)। सुवर्णपुष्पाम् = स्वर्ण रूपी फूलों से युक्त। त्रयः = तीन। शूरः = वीर। कृतविद्यः = जिसकी विद्या सफल हो। सेवितुम् = सेवा करना। जानाति = जानता है।

9. **अन्वयः**—राजन्! नित्यम् अर्थागमः, अरोगिता च, प्रिया भार्या च प्रियवादिनी च, वश्यः पुत्रः च अर्थकरी विद्या च, जीवलोकस्य षड् सुखानि।

अर्थ—हे राजन्! हमेशा धन का आते रहना, रोग का अभाव (स्वस्थ रहना), प्रिय पत्नी और प्रिय बोलने वाली (भी हो), आज्ञाकारी पुत्र और धन कमाने वाली विद्या—ये पृथ्वी लोक (संसार) के छह सुख हैं।

शब्दार्थः—नित्यम् = निरन्तर, हमेशा। **अर्थागमः** = धन का आना। **अरोगिता** = नीरोग रहना, स्वस्थ रहना। **भार्या** = पत्नी। **प्रियवादिनी** = मधुरभाषिणी। **वश्यः** = आज्ञाकारी। **अर्थकरी** = धन देनेवाली। **जीवलोकस्य** = मनुष्य लोक के। **षड्** = छह।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तर—

- (क) किं यत्नेन संरक्षेद्?
- (ख) दानेन किं जयेत्?
- (ग) जीवलोकस्य कति सुखानि?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत—

- (क) साधुना किं जयेत्?
- (ख) के पुरुषाः सुवर्ण-पुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति?
- (ग) कः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्?
- (घ) धर्मसर्वस्वं किं क्रियताम्?

3. मञ्जूषातः अव्ययपदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत—

- (न, च)
- (क) आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां समाचरेत्।
- (ख) शूरश्च कृतविद्यश्च यः जानाति सेवितुम्।
- (ग) प्रिया भार्या प्रियवादिनी।

4. श्लोकांशान् योजयत—

(क)

(ख)

- | | |
|------------------------|--------------------------|
| श्रूयतां धर्मसर्वस्वं | सततं प्रियवादिनः |
| सुलभाः पुरुषाः राजन् | मूलान्यपि निकृन्तति |
| विश्वासाद् भयमुत्पन्नं | श्रुत्वा चाप्यवधार्यताम् |

5. अधोलिखितश्लोकानां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत—

- (क) सुलभाः पुरुषाः राजन् श्रोता च दुर्लभः॥
- (ख) वृत्तं यत्नेन संरक्षेत् हतो हतः।
- (ग) श्रूयतां धर्मसर्वस्वं न समाचरेत्॥

6. अधोलिखितसूक्तीनां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत-

- (क) आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।
 (ख) अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः।
 (ग) अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।

7. अधोलिखितश्लोकानां संस्कृतार्थं लिखत-

- (क) अक्रोधेन जयेत् सत्येन चानृतम्॥
 (ख) सुवर्णपुष्पां पृथिवीं जानाति सेवितुम्॥
 (ग) पूर्वे वयसि तत्कुर्याद् प्रेत्य सुखं वसेत्॥

8. समुचितम् उत्तरं चिनुत-

- (i) सत्येन किं जयेत्?
 (क) कदर्यम् (ख) असाधुम् (ग) अनृतम् (घ) शीलम्
- (ii) विश्वासात् किम् उत्पन्नम्?
 (क) सुखम् (ख) भयम् (ग) शीलम् (घ) अनृतम्
- (iii) सुलभाः पुरुषाः कीदृशाः?
 (क) प्रियवादिनः (ख) अप्रियवादिनः (ग) मिथ्यावादिनः (घ) अनृतवादिनः
- (iv) कस्मात् हतो हतः?
 (क) वित्ततः (ख) विचारतः (ग) कायतः (घ) वृत्ततः

अष्टमः पाठः

यक्षयुधिष्ठिरसंलापः

पाठपरिचयः

महर्षि वेदव्यासरचित महाभारत के 'वनपर्व' के 313वें अध्याय से उद्धृत 'यक्ष-युधिष्ठिर-संलापः' में पाण्डवों के वनवास के उस समय की घटना है, जब जल की खोज में गए हुए चार पाण्डव देर तक नहीं लौटते। युधिष्ठिर अपने भाइयों को खोजने जाते हैं। एक सरोवर के पास अपने चारों भाइयों को मृत देखकर धर्मराज युधिष्ठिर व्याकुल हो जाते हैं, तभी सरोवर से अद्भुत आवाज आती है। वह अद्भुत आवाज यक्ष की होती है। वह युधिष्ठिर से कहता है कि यदि तुम मेरे प्रश्नों का सम्यक् उत्तर दे दोगे तो मैं तुम्हें सरोवर से जल लेने दूँगा और तुम्हारे भाइयों को जीवित कर दूँगा। इस प्रकार यक्ष बार-बार प्रश्न करता है और युधिष्ठिर उसके प्रश्नों के उत्तर देते जाते हैं। प्रस्तुत पाठ में यही संलाप वर्णित है।

यक्ष उवाच—

किंस्विद् गुरुतरं भूमेः किंस्विदुच्चतरं च खात्।

किंस्विच्छीघ्रतरं वायोः किंस्विद् बहुतरं तृणात्॥1॥

युधिष्ठिर उवाच—

माता गुरुतरा भूमेः खात्पितोच्चतरस्तथा।

मनः शीघ्रतरं वाताच्चिन्ता बहुतरी तृणात्॥2॥

यक्ष उवाच—

किंस्वित्सुप्तं न निमिषति किंस्विज्जातं न चेङ्गते।

कस्यस्विद् हृदयं नास्ति कास्विद्वेगेन वर्धते॥3॥

युधिष्ठिर उवाच—

मत्स्यः सुप्तो न निमिषत्यण्डं जातं न चेङ्गते।

अश्मनो हृदयं नास्ति नदी वेगेन वर्धते॥4॥

यक्ष उवाच—

किंस्वित्प्रवसतो मित्रं किंस्विन्मित्रं गृहे सतः।

आतुरस्य च किं मित्रं किंस्विन्मित्रं मरिष्यतः॥5॥

युधिष्ठिर उवाच-

विद्या प्रवसतो मित्रं भार्या मित्रं गृहे सतः।
आतुरस्य भिषङ् मित्रं दानं मित्रं मरिष्यतः॥6॥

यक्ष उवाच-

किं नु हित्वा प्रियो भवति किं नु हित्वा न शोचति।
किं नु हित्वाऽर्थवान्भवति किं नु हित्वा सुखी भवेत्॥7॥

युधिष्ठिर उवाच-

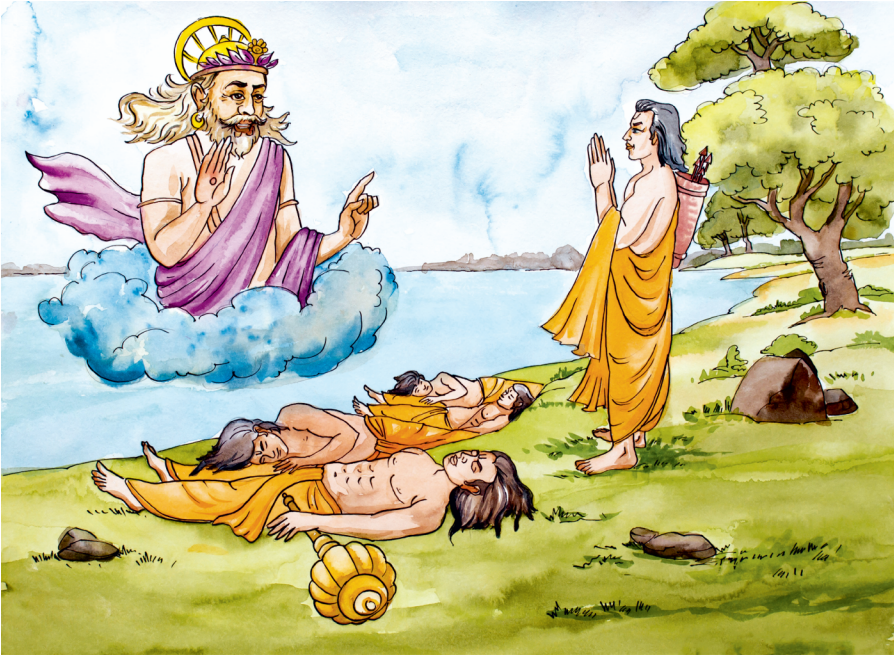
मानं हित्वा प्रियो भवति क्रोधं हित्वा न शोचति।
कामं हित्वाऽर्थवान्भवति लोभं हित्वा सुखी भवेत्॥8॥

यक्ष उवाच-

मृतः कथं स्यात्पुरुषः कथं राष्ट्रं मृतं भवेत्।
श्राद्धं मृतं कथं वा स्यात्कथं यज्ञो मृतो भवेत्॥9॥

युधिष्ठिर उवाच-

मृतो दरिद्रः पुरुषो मृतं राष्ट्रमराजकम्।
मृतमश्रोत्रियं श्राद्धं मृतो यज्ञस्त्वदक्षिणः॥10॥



यक्ष उवाच—

कः शत्रुर्दुर्जयः पुंसां कश्च व्याधिरनन्तकः।

कीदृशश्च स्मृतः साधुरसाधुः कीदृशः स्मृतः।।11।।

युधिष्ठिर उवाच—

क्रोधः सुदुर्जयः शत्रुर्लोभो व्याधिरनन्तकः।

सर्वभूतहितः साधुरसाधुर्निर्दयः स्मृतः।।12।।

दिग्दर्शिका

1. **अन्वयः**—किंस्वित् भूमेः गुरुतरम्? किंस्वित् खात् उच्चतरम्? किंस्वित् वायोः शीघ्रतरम्? किंस्वित् तृणात् बहुतरम्?

अर्थः—यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा कि भूमि से अधिक भारी क्या है? आकाश से अधिक ऊँचा क्या है? हवा से अधिक तेज चलनेवाला क्या है? तिनके से भी अधिक (असंख्य) क्या है?

शब्दार्थः—भूमेः = भूमि से। किंस्विद् = क्या। गुरुतरम् = भारी। खात् = आकाश से। उच्चतरम् = ऊँचा। वायोः = वायु से। शीघ्रतरम् = अधिक तीव्रगामी। तृणात् = तिनके से। बहुतरम् = अधिक (असंख्य)।

2. **अन्वयः**—भूमेः माता गुरुतरा, खात् पिता उच्चतरः, वातात् मनः शीघ्रतरम्, तृणात् चिन्ता बहुतरा।

अर्थः—यक्ष के प्रश्नों का उत्तर देते हुए युधिष्ठिर ने कहा कि माता भूमि से अधिक भारी है। पिता आकाश से भी अधिक ऊँचा है। मन वायु से भी अधिक तेज है। चिन्ता तिनके से भी अधिक (असंख्य) है।

शब्दार्थः—वातात् = वायु से, बहुतरा = हल्का।

3. **अन्वयः**—किंस्वित् सुप्तं न निमिषति? च जातं किंस्वित् न इङ्गते? हृदयं कस्यस्वित् न अस्ति? वेगेन कास्विद् वर्धते?

अर्थः—यक्ष ने कहा कि कौन सोते हुए भी पलकें बन्द नहीं करता? कौन पैदा होकर भी चेष्टा नहीं करता? किसका हृदय नहीं होता? और कौन वेग से बढ़ता है?

शब्दार्थः—सुप्तम् = सोया हुआ। निमिषति = पलक बन्द करता है। इङ्गते = चेष्टा करता है। वेगेन = गति के साथ।

4. **अन्वयः**—मत्स्यः सुप्तः न निमिषति, जातं च अण्डं न इङ्गते, अश्मनः हृदयं न अस्ति, नदी वेगेन वर्धते।

अर्थः—यक्ष को उत्तर देते हुए युधिष्ठिर ने कहा कि मछली सोते हुए भी पलकें बन्द नहीं करती और अण्डा पैदा होकर भी चेष्टा नहीं करता। पत्थर का हृदय नहीं होता। नदी वेग से बढ़ती है।

शब्दार्थः—मत्स्यः = मछली। अण्डम् = अण्डा। अश्मनः = पत्थर का।

5. **अन्वयः**—किंस्वित् प्रवसतः मित्रं? किंस्वित् गृहे सतः मित्रं? आतुरस्य किं मित्रं? किंस्वित् मरिष्यतः च मित्रं?

अर्थः—यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा कि विदेश में रहने वाले का मित्र कौन है? घर में रहने वाले का मित्र कौन है? रोगी का मित्र कौन है? और मरनेवाला का मित्र कौन है?

शब्दार्थः—प्रवसतः = विदेश में रहने वाले का। गृहे सतः = घर में रहने वाले का। आतुरस्य = बीमार का। मरिष्यतः = मरने वाले का।

6. **अन्वयः**—प्रवसतो मित्रं विद्या, गृहे सतः मित्रं भार्या, आतुरस्य मित्रं भिषक्, मरिष्यतः मित्रं दानं (भवति)।

अर्थः—यक्ष के प्रश्नों का उत्तर देते हुए युधिष्ठिर ने कहा कि विदेश में रहने वाले का मित्र विद्या है। घर में रहने वाले का मित्र पत्नी है। रोगी का मित्र वैद्य होता है और मरने वाले का मित्र दान होता है।

शब्दार्थः—भार्या = पत्नी। भिषक् = वैद्य।

7. **अन्वयः**—किं नु हित्वा प्रियो भवति? किं नु हित्वा न शोचति? किं नु हित्वा अर्थवान् भवति? किं नु हित्वा सुखी भवेत्?

अर्थः—यक्ष ने युधिष्ठिर से प्रश्न किया कि क्या छोड़कर मनुष्य प्रिय हो जाता है? क्या छोड़कर दुःखी नहीं होता? क्या छोड़कर धनवान् होता है? क्या छोड़कर सुखी हो जाता है?

शब्दार्थः—किम् = क्या। हित्वा = छोड़कर। शोचति = दुःखी होता है। अर्थवान् = धनवान्।

8. **अन्वयः**—मानं हित्वा प्रियः भवति, क्रोधं हित्वा न शोचति, कामं हित्वा अर्थवान् भवति, लोभं हित्वा सुखी भवति।

अर्थः—उत्तर देते हुए युधिष्ठिर ने कहा कि मनुष्य घमण्ड (अहंकार) छोड़कर प्रिय हो जाता है। क्रोध को त्यागकर दुःखी नहीं होता। इच्छाओं को त्यागकर धनवान् होता है और लोभ को छोड़कर सुखी हो जाता है।

शब्दार्थः—मानम् = घमण्ड। कामम् = कामना (इच्छा)। लोभम् = लालच।

9. **अन्वयः**—पुरुषः मृतः कथं स्यात्? राष्ट्रं मृतं कथं भवेत्? श्राद्धं कथं मृतं स्यात्? यज्ञः कथं मृतः भवेत्?

अर्थः—यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा कि कैसा पुरुष मरा हुआ होता है? कैसा राष्ट्र मरा हुआ होता है? कैसा श्राद्ध (कर्म) मरा हुआ (निष्फल) है? और कैसा यज्ञ मरा हुआ है?

शब्दार्थः—मृतः = मरा हुआ। स्यात् = होता है। श्राद्धम् = श्रद्धा से किया कर्म। भवेत् = होता है।

10. अन्वयः—दरिद्रः पुरुषः मृतः (स्यात्), अराजकं राष्ट्रं मृतं भवेत्, अश्रोत्रियं श्राद्धं मृतः, अदक्षिणो यज्ञस्तु मृतः (स्यात्)।

अर्थः—उत्तर देते हुए युधिष्ठिर ने कहा कि दरिद्र पुरुष मरा हुआ होता है। राजा से रहित (बिना राजा के) राष्ट्र मरा हुआ होता है। वेदज्ञ ब्राह्मण से रहित (के बिना) श्राद्ध मरा हुआ है और दक्षिणा के बिना यज्ञ मरा हुआ होता है।

शब्दार्थ—दरिद्रः = निर्धन। अराजकम् = बिना राजा के। अश्रोत्रियम् = शास्त्रज्ञाता ब्राह्मण के बिना। अदक्षिणो = दान के बिना।

11. अन्वयः—पुंसां दुर्जयः शत्रु कः? अनन्तकः व्याधिः कः? साधुः कीदृशः स्मृतः असाधुः च कीदृशः स्मृतः?

अर्थः—मनुष्यों का दुर्जय (कठिनाई से जीता जा सकने योग्य) शत्रु कौन है? और कभी समाप्त न होने वाला रोग कौन-सा है? सज्जन किसे कहा गया है और दुर्जन किसे कहा गया है?

शब्दार्थ—पुंसाम् = मनुष्यों का। दुर्जयः = कठिनाई से जीता जा सकने वाला। अनन्तकः = कभी समाप्त न होने वाला। व्याधिः = रोग। साधुः = सज्जन। कीदृशः = कैसा। असाधुः = दुर्जन। स्मृतः = माना जाता है।

12. अन्वयः—क्रोधः सुदुर्जयः शत्रुः, लोभः अनन्तकः व्याधिः सर्वभूताहितः साधुः निर्दयः असाधुः स्मृतः।

अर्थः—मनुष्यों का दुर्जय शत्रु क्रोध है। लोभ (लालच) कभी न समाप्त होने वाला रोग है। सभी प्राणियों के कल्याण में लगा रहने वाला सज्जन है और जो दयारहित है वह दुर्जन (बुरा आदमी) है।

शब्दार्थ—सुदुर्जयः = कठिनाई से जीता जा सकने वाला। सर्वभूताहितः = सभी प्राणियों के हित में लगा रहने वाला। निर्दयः = दयारहित।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत—

- (क) किंस्वित् गुरुतरं भूमेः?
- (ख) किंस्वित् प्रवसतो मित्रम्?
- (ग) किं नु हित्वा प्रियो भवति?
- (घ) कीदृशः साधुः स्मृतः?

2. एकवाक्येन उत्तरत-

- (क) किंस्विद् बहुतरं तृणात्?
- (ख) कास्विद्वेगेन वर्धते?
- (ग) अराजकं राष्ट्रं कीदृशं भवेत्?
- (घ) कः शत्रुर्दुर्जयः पुंसाम्?

3. सुमेलनं कुरुत-

- | | |
|-----------------------------|------------------------------|
| (क) माता गुरुतरा भूमेः | (अ) नदी वेगेन वर्धते |
| (ख) अश्मनो हृदयं नास्ति | (ब) मृतो यज्ञस्त्वदक्षिणः |
| (ग) आतुरस्य च किं मित्रं | (स) खात्पितोच्चतरस्तथा |
| (घ) मृतमश्रोत्रियं श्राद्धं | (द) किंस्विन्मित्रं मरिष्यतः |

4. अधोलिखितानां श्लोकानां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत-

- (क) माता गुरुतरा बहुतरी तृणात्।
- (ख) विद्या प्रवसतो मित्रं मरिष्यतः।
- (ग) मृतः कथं स्यात् यज्ञो मृतो भवेत्।
- (घ) क्रोधः सुदुर्जयः निर्दयः स्मृतः।

5. अधोलिखितानां सूक्तीनां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत-

- (क) मानं हित्वा प्रियो भवति क्रोधं हित्वा न शोचति।
- (ख) आतुरस्य भिषङ् मित्रं दानं मित्रं मरिष्यतः।
- (ग) क्रोधः सुदुर्जयः शत्रुर्लोभो व्याधिरनन्तकः।

6. अधोलिखितानां श्लोकानां संस्कृतार्थं लिखत-

- (क) किं नु हित्वा सुखी भवेत्।
- (ख) मृतो दरिद्रः यज्ञस्त्वदक्षिणः।
- (ग) मत्स्यः सुप्तो नदी वेगेन वर्धते।
- (घ) किंस्वित्प्रवसतो मित्रं मरिष्यतः।

7. उचितं विकल्पं चिनुत-

- (i) 'यक्षयुधिष्ठिर-संलापः' इति पाठः कुतः उद्धृतोऽस्ति?
 (क) रामायणात् (ख) भगवद्गीतायाः (ग) महाभारतात् (घ) ऋग्वेदात्
- (ii) अस्मिन् पाठे प्रश्नकर्ता कः?
 (क) युधिष्ठिरः (ख) यक्षः (ग) अर्जुनः (घ) श्रीकृष्णः
- (iii) अस्मिन् पाठे उत्तरदाता कः?
 (क) युधिष्ठिरः (ख) यक्षः (ग) अर्जुनः (घ) श्रीकृष्णः
- (iv) खात् उच्चतरः—
 (क) माता (ख) भूमिः (ग) पिता (घ) वायुः



नवमः पाठः

आरोग्यसाधनानि

(चरकसुश्रुतसंहिताभ्याम्)

पाठपरिचयः

भारतीय चिकित्सा-विज्ञान के क्षेत्र में हमारे ऋषियों का महत्वपूर्ण योगदान है। चरकसंहिता एवं सुश्रुतसंहिता आयुर्वेद के उत्कृष्ट ग्रन्थ हैं। इन ग्रन्थों में रोगी की चिकित्सा-पद्धति के साथ-साथ वे उपाय भी बताये गये हैं, जिनका पालन करने से शरीर में रोगों की उत्पत्ति होती ही नहीं है। इन ग्रन्थों में प्रातःकाल जागने से लेकर व्यायाम, व्यायाम की उचित मात्रा, स्नान, भोजन, सिर में तेल मालिश एवं रात्रि-शयन तक की व्यवस्थित दिनचर्या का वर्णन किया गया है।

शरीरचेष्टा या चेष्टा स्थैर्यार्था बलवर्धिनी।

देहव्यायामसङ्ख्याता मात्रया तां समाचरेत्॥१॥

श्रमः क्लमः क्षयस्तृष्णा रक्तपित्तं प्रतामकः।

अतिव्यायामतः कासो ज्वरश्छर्दिश्च जायते॥२॥

शरीरोपचयः कान्तिर्गात्राणां सुविभक्तता।

दीप्ताग्नित्वमनालस्यं स्थिरत्वं लाघवं मृजा॥३॥

न चास्ति सदृशं तेन किञ्चित् स्थौल्यापकर्षणम्।

न च व्यायामिनं मर्त्यमर्दयन्त्यरयो भयात्॥४॥

पवित्रं वृष्यमायुष्यं श्रमस्वेदमलापहम्।

शरीरबलसन्धानं स्नानमोजस्करं परम्॥५॥

मेध्यं पवित्रमायुष्यमलक्ष्मीकलिनाशनम्।

पादयोर्मलमार्गाणां शौचाधानमभीक्ष्णशः॥६॥

बलं शिरः कपालानां विशेषेणाभिवर्धते।

दृढमूलाश्च दीर्घाश्च कृष्णाः केशा भवन्ति च॥७॥

इन्द्रियाणि प्रसीदन्ति सुत्वग् भवति चाननम्।
 निद्रालाभः सुखं च स्यान्मूर्ध्नि तैलनिषेवणात्॥८॥
 हिताशी स्यान्मिताशी स्यात् कालभोजी जितेन्द्रियः।
 पश्यन् रोगान् बहून् कष्टान् बुद्धिमान् विषमाशनात्॥९॥
 नरो हिताहारविहारसेवी समीक्ष्यकारी विषयेष्वसक्तः।
 दाता समः सत्यपरः क्षमावानाप्तोपसेवी च भवत्यरोगः॥१०॥

दिग्दर्शिका

1. **अन्वयः**—या शरीरचेष्टा स्थैर्यार्था बलवर्धिनी, (सा) देहव्यायामसङ्ख्याता। तां मात्रया समाचरेत्।
अर्थ—शरीर की जो क्रिया स्थिरता तथा बल बढ़ाने के लिए होती है, उसे शरीर का व्यायाम कहते हैं। उसे उचित मात्रा में करना चाहिए।

शब्दार्थ—**स्थैर्यम्** = स्थिरता। **देहव्यायामसङ्ख्याता** = शरीर का व्यायाम कही जाती है।

2. **अन्वयः**—अतिव्यायामातः श्रमः क्लमः क्षयः तृष्णा रक्तपित्तं प्रतामकः कासः ज्वरः छर्दिः च जायते।
अर्थ—(उचित मात्रा से) अधिक व्यायाम करने से थकान, मलिनता, प्यास, रक्तादि धातुओं का हास, रक्त-दोष, श्वास सम्बन्धी रोग, खाँसी, बुखार तथा वमन (उल्टी) उत्पन्न होती है।

शब्दार्थ—**क्लमः** = मलिनता (शिथिलता)। **प्रतामकः** = श्वास सम्बन्धी रोग। **कासः** = खाँसी। **छर्दिः** = उल्टी।

3. **अन्वयः**—(व्यायामात्) शरीरोपचयः कान्तिः गात्राणाम् सुविभक्तता दीप्ताग्नित्वम् अनालस्यं स्थिरत्वं लाघवं मृजा।

अर्थ—व्यायाम करने से शरीर का विकास, सुन्दरता, अंगों का सही प्रकार से विभाजन, पाचन शक्ति, (भूख) की वृद्धि, आलस्यहीनता, स्थिरता (मजबूती), स्फूर्ति (शरीर का हल्का होना) और स्वच्छता आदि गुण उत्पन्न होते हैं।

शब्दार्थ—**शरीरोपचयः** = शरीर का विकास। **मृजा** = स्वच्छता। **दीप्ताग्नित्वम्** = भूख की वृद्धि। **कान्तिः** = आभा। **गात्राणाम्** = शरीरों का (शरीर के अंगों का)। **सुविभक्तता** = सही प्रकार से विभाजन (शारीरिक सौष्ठव)। **स्थिरत्वम्** = स्थिरता, मजबूती। **लाघवम्** = स्फूर्ति या शरीर का हल्का होना। **मृजा** = स्वच्छता।

4. **अन्वयः**—तेन सदृशं स्थौल्यापकर्षणं च किञ्चित् न अस्ति; अरयः च व्यायामिनम् मर्त्यम् भयात् न अर्दयन्ति।

अर्थ—उस व्यायाम के समान शरीर के मोटापे को कम करने वाला भी कुछ नहीं है। व्यायाम करने वाले को शत्रु भी भय के कारण पीड़ित नहीं करते हैं।

शब्दार्थ—**स्थौल्यापकर्षणम्** = मोटापा दूर करने वाला। **अरयः** = शत्रुगण। **व्यायामिनम्** = व्यायाम करने वाले को। **अर्दयन्ति** = कुचल डालते हैं।

5. अन्वयः—स्नानं पवित्रं वृष्यम् आयुष्यं श्रमस्वेदमलापहम्, शरीरबलसन्धानं परम् ओजस्करं (भवति)।

अर्थ—स्नान करने से शरीर पवित्र होता है, वीर्य एवं आयु की वृद्धि होती है। शरीर की थकावट, पसीना, धूल आदि को स्नान दूर करता है, बल को बढ़ाने वाला है एवं अत्यन्त ओज (तेज) प्रदान करता है।

शब्दार्थ—**वृष्यम्** = वीर्य को बढ़ाने वाला। **आयुष्यम्** = आयु को बढ़ाने वाला। **श्रम** = थकान। **स्वेद** = पसीना। **मल** = गन्दगी, मलिनता। **अपहम्** = दूर करने वाला। **ओजस्करम्** = ओज प्रदान करने वाला।

6. अन्वयः—पादयोः मलमार्गाणां च अभीक्ष्णशः शौचाधानं मेध्यं पवित्रम् आयुष्यं अलक्ष्मीकलिनाशनम् (भवति)।

अर्थ—पैरों तथा मलद्वारों की पवित्रता का निरन्तर ध्यान रखने से स्मरणशक्ति की वृद्धि होती है। स्वच्छता आती है, आयु बढ़ती है, दरिद्रता और मलिनता का नाश होता है।

शब्दार्थ—**मेध्यम्** = बुद्धि बढ़ाने वाला। **शौचाधानमभीक्ष्णशः** = निरन्तर सफाई करने से। **अलक्ष्मी** = दरिद्रता। **कलि** = पाप, मलिनता।

7. अन्वयः—(स्नेहार्द्रशिरसः) शिरःकपालानां बलं विशेषेण अभिवर्द्धते, केशाः कृष्णाः दीर्घाः च दृढमूलाः च भवन्ति।

अर्थ—सिर में तेल लगाने से सिर की हड्डियाँ शक्तिशाली हो जाती हैं। बाल लम्बे तथा काले हो जाते हैं। बालों की जड़ मजबूत होती है।

शब्दार्थ—**शिरः कपालानाम्** = सिर की हड्डियों का। **अभिवर्द्धते** = बढ़ जाता है। **दृढमूलाः** = मजबूत जड़ों वाले।

8. अन्वयः—मूर्ध्नि तैलनिषेवणात् इन्द्रियाणि प्रसीदन्ति, आननं च सुत्वग् भवति, निद्रालाभः सुखं च स्यात्।

अर्थ—सिर पर तेल लगाने से इन्द्रियाँ प्रसन्न हो जाती हैं। मुख सुन्दर त्वचा वाला हो जाता है तथा सुखपूर्वक नींद आती है।

शब्दार्थ—**आननम्** = मुख। **मूर्ध्नि** = सिर पर। **तैलनिषेवणात्** = तेल लगाने से। **प्रसीदन्ति** = प्रसन्न होती है।

9. अन्वयः—विषमाशनात् रोगान् बहून् कष्टान् पश्यन् बुद्धिमान् जितेन्द्रियः हिताशी, मिताशी स्यात् कालभोजी च स्यात्।

अर्थ—विषम भोजन करने के कारण बहुत से रोग एवं कष्टों को देखते हुए बुद्धिमान एवं जितेन्द्रिय मनुष्य को समय पर तथा कम भोजन अच्छा (पौष्टिक, सुपाच्य) करना चाहिए।

शब्दार्थ—हिताशी = हितकारी, मिताशी = कम खाने वाला। कालभोजी = समय पर भोजन करने वाला। विषमाशनात् = विषम भोजन करने के कारण।

10. अन्वयः—हिताहारविहारसेवी, समीक्ष्यकारी, विषयेषु असक्तः, दाता समः सत्यपरः, क्षमावान् आप्तोपसेवी नरः अरोगः भवति।

अर्थ—हितकारी भोजन करनेवाला, उचित विहार (टहलना या चलना फिरना) करने वाला, विषयों में अनासक्त, उदार (दानी) तथा समभाव रखने वाला, क्षमावान्, सत्यभाषी तथा विश्वसनीय लोगों के साथ रहनेवाला मनुष्य सदैव नीरोग रहता है।

शब्दार्थ—समीक्ष्यकारी = सोच-विचार कर काम करने वाला। विषयेष्वसक्तः = (इन्द्रियों के) विषयों में अनासक्त। आप्तोपसेवी = विश्वसनीय व्यक्तियों के वचनों का पालन करने वाला।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत—

- (क) का देहव्यायामसङ्ख्याता?
- (ख) शरीरोपचयः केन माध्यमेन सुगमतया प्राप्यते?
- (ग) ओजस्करं किं भवति?
- (घ) इन्द्रियाणि कस्मात् प्रसीदन्ति?

2. अधोलिखितानां प्रश्नानां पूर्णवाक्येन उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत—

- (क) अतिव्यायामतः शरीरे कानि लक्षणानि जायन्ते?
- (ख) मूर्ध्नि तैलनिषेवणात् किं भवति?
- (ग) जितेन्द्रियः कीदृशं भोजनं करोति?

3. अधोलिखितान् श्लोकांशान् पूरयत—

- (क) देहव्यायामसङ्ख्याता तां समाचरेत्॥
- (ख) निद्रालाभः सुखं च स्यान्मूर्ध्नि॥
- (ग) पश्यन् रोगान् बहून् विषमाशनात्॥
- (घ) इन्द्रियाणि प्रसीदन्ति चाननम्॥

4. अधोलिखितानां श्लोकानां व्याख्यां हिन्दीभाषया कुरुत—

- (क) शरीरचेष्टा समाचरेत्॥
- (ख) शरीरोपचयः सुविभक्तता।
- (ग) पवित्रं वृष्यमायुष्यं स्नानमोजस्करं परम्॥
- (घ) हिताशी स्यान्मिताशी विषमाशनात्॥

5. अधोलिखितानां सूक्तीनां हिन्दीभाषया व्याख्यां लिखत-

(क) न च व्यायामिनं मर्त्यमर्दयन्त्यरयो भयात्।

(ख) दाता समः सत्यपरः।

6. 'व्यायामस्य लाभाः' इति विषयमधिकृत्य पञ्च वाक्यानि लिखत।

7. उपयुक्तं विकल्पं चिनुत-

(i) व्यायामतः के गुणाः उपजायन्ते?

(क) अनालस्यम् (ख) कान्तिः (ग) शरीरोपचयः (घ) सर्वे

(ii) व्यायामिनः जनस्य सकाशं नायाति—

(क) लाघवम् (ख) स्थिरत्वम् (ग) स्थौल्यम् (घ) कर्मसामर्थ्यम्

(iii) कः नरः अरोगः भवति?

(क) हिताहारी (ख) समीक्ष्यकारी (ग) आप्तोपसेवी (घ) सर्वे

(iv) निद्रालाभः सुखं च केन स्यात्?

(क) व्यायामात् (ख) स्नानात् (ग) शौचाधानात् (घ) मूर्ध्नि तैलनिषेवणात्



संस्कृत-कथा-नाटक-कौमुदी

प्रथमः पाठः

गार्गी-याज्ञवल्क्य-संवादः

पाठपरिचयः

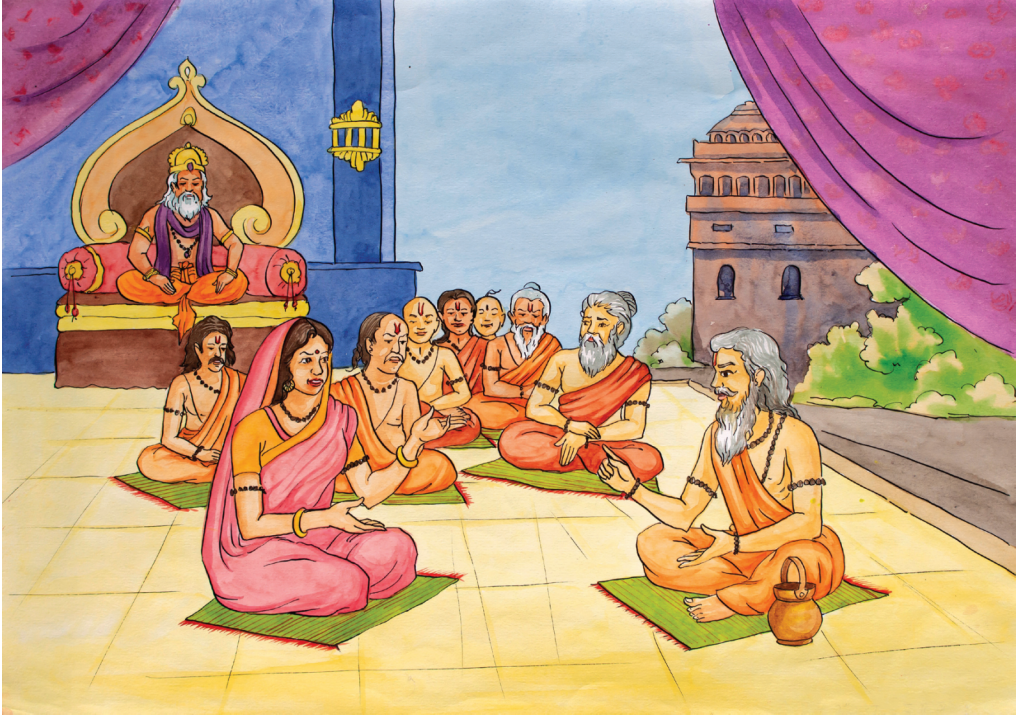
उपनिषद् ग्रन्थ भारतीय मनीषा की आध्यात्मिक चेतना के प्रतीक हैं। भारत में प्राचीनकाल से ही स्त्री-शिक्षा की महती परम्परा विद्यमान है। 'बृहदारण्यकोपनिषद्' के प्रथम ब्राह्मण में 'याज्ञवल्कीय काण्ड' में वर्णित है कि विदेहाधिपति जनक की राजसभा में गर्गवंशी ऋषि वचक्नु की विदुषी पुत्री गार्गी तथा महर्षि याज्ञवल्क्य का ब्रह्मविद्या से सम्बन्धित गूढ़ दार्शनिक शास्त्रार्थ हुआ। ब्रह्मवेत्ता महर्षि याज्ञवल्क्य ने गार्गी के प्रश्नों का बड़े ही धैर्यपूर्वक युक्तिसंगत उत्तर दिया। अन्ततः संतुष्ट होकर गार्गी ने सभा में उपस्थित सभी ब्राह्मणों के समक्ष ऋषि याज्ञवल्क्य को ब्रह्मनिष्ठ स्वीकार कर लिया और कहा कि आप सभी ऋषि याज्ञवल्क्य को सम्मानपूर्वक प्रणाम करके अपने-अपने स्थान को चले जायें।

आसीत् पुरा मिथिलायां जनको नाम राजा। एकदा सः बहुदक्षिणेन यज्ञेन ईजे। बहुदक्षिणतया प्रसिद्धे तस्मिन् यज्ञे विद्वद्भूयिष्ठकुरुपाञ्चालदेशेभ्यः ब्राह्मणाः समागताः। एवं बहुषु ब्राह्मणेष्वगत्य यष्टुं प्रवृत्तस्य राज्ञः मनसि विजिज्ञासा बभूव, कः स्विदेषां ब्राह्मणानां ब्रह्मविद्यानुवचनकुशल इति। राजा जनकः स्वजिज्ञासाप्रशमनार्थं स्वगोष्ठे स्वर्णशृङ्गयुतां गवां सहस्रमवरुधे।

अथ सः तान् ब्राह्मणान् प्रत्यकथयत्—“हे भगवन्तः ब्राह्मणाः! भवतां मध्ये यो ब्रह्मिष्ठः, स एताः गाः स्वगृहं नयतु” इति। एवं वदत्यपि जनके न कश्चिदपि ताः गाः नेतुमुद्यतो बभूव। तूष्णीमुपगतेषु समस्तेषु ब्राह्मणेषु तेष्वन्यतमः याज्ञवल्क्यः स्वशिष्यमित्थमुवाच—“हे सोमार्ह! एताः गाः अस्मद्गृहान् नयतु” इति। सः ताः तद्गृहान् नेतुमुद्यतो बभूव। याज्ञवल्क्येन ब्रह्मिष्ठपणस्वीकारे तदितरे ब्राह्मणाः क्रुद्धाः बभूवुः। ते सर्वे सकोपं याज्ञवल्क्यमूचुः यत् कथं नः अनादृत्य त्वमात्मानं ब्रह्मिष्ठं मन्यसे?

ततः विदेहाधिपतेः जनकस्य होता अश्वलनामा प्रथममेव याज्ञवल्क्यमपृच्छत् यत् समवेतानां बहूनामस्माकं मध्ये कथं त्वमेव ब्रह्मिष्ठोऽसि? याज्ञवल्क्यः तं प्रत्युवाच-वयं ब्रह्मिष्ठाय नमस्कुर्मः, नास्माभिर्ब्रह्मिष्ठत्वाभिमानाद् गावो नीताः, किन्तु गोकामा वयमित्यतो गोकामनया एव गाः नीताः। एतच्छ्रुत्वा अश्वलप्रमुखाः केचिद् ब्राह्मणाः याज्ञवल्क्यं पराजेतुमुद्यताः बभूवुः। परं न तैर्जितो याज्ञवल्क्यः।

अश्वलादीनां विदुषां पराभवानन्तरं तत्रोपस्थिता वाचक्नवी गार्गी तेन सह शास्त्रार्थं कर्तुमुद्यताभूत्। सा प्रपच्छ—हे याज्ञवल्क्य! यदिदं दृश्यमानं पार्थिवं सर्वमप्यु ओतञ्च प्रोतञ्च, ताः आपः कस्मिन् खलु ओताः प्रोताश्च। याज्ञवल्क्यः प्रत्यवादीत्-वायौ इति।



- गार्गी : वायुः कुत्र?
- याज्ञवल्क्यः : अन्तरिक्षलोकेषु गार्गी!
- गार्गी : कुत्र खलु अन्तरिक्षलोकाः?
- याज्ञवल्क्यः : अन्तरिक्षलोकाः गन्धर्वलोकेषु कात्स्येन आश्रिताः।
- गार्गी : भगवन्! गन्धर्वलोकाः कस्मिन्?
- याज्ञवल्क्यः : आदित्यलोकेषु गार्गी!
- गार्गी : आदित्यालोकाः कुत्र ओताः प्रोताश्च?
- याज्ञवल्क्यः : चन्द्रलोकेषु।
- गार्गी : चन्द्रलोकाः कस्मिन्?
- याज्ञवल्क्यः : गार्गी! नक्षत्रलोकेषु।
- गार्गी : कस्मिन् खलु नक्षत्रलोकाः कात्स्येन व्याप्ताः?
- याज्ञवल्क्यः : देवलोकेषु देवि!
- गार्गी : देवलोकाः कुत्र?
- याज्ञवल्क्यः : इन्द्रलोकेषु देवलोकाः समाहिताः।
- गार्गी : हे याज्ञवल्क्य! इन्द्रलोकाः कस्मिन् कात्स्येन व्याप्ताः?
- याज्ञवल्क्यः : प्रजापतिलोकेषु गार्गी!

गार्गी : कुत्र खलु प्रजापतिलोकाः साकल्येन समाहिताः?

याज्ञवल्क्यः : हे गार्गी! प्रजापतिलोकाः ब्रह्मलोकेषु ओताः प्रोताश्च।

गार्गी : ब्रह्मर्षे! कुत्र खलु ब्रह्मलोकाः?

गार्गीः इमं प्रश्नं निशम्य याज्ञवल्क्यः प्रत्यवदत्—हे गार्गी! ब्रह्मलोकमप्यतिक्रम्य ततः ऊर्ध्वस्य तदाधारस्य प्रश्नं मा कुरु, अन्यथा चेत्ते मूर्ध्नः पतनं भविष्यति। एवं कथिते च याज्ञवल्क्ये गार्गी उपरराम। अथ उद्दालकः याज्ञवल्क्येन सह वादं कर्तुमारभत। परं विश्रुते ब्रह्मविदि उद्दालके याज्ञवल्क्येन पराजिते, समेषां ब्राह्मणानामेवमेव पराजयो भविष्यतीति मन्यमाना गार्गी याज्ञवल्क्यस्य सक्रोधोक्त्या भीत्या पूर्वमुपरतापि ब्राह्मणानामनुज्ञां प्राप्य पुनः प्रष्टुकामा अनुज्ञादानाय ब्राह्मणानुवाच—हे ब्राह्मणाः! इमं याज्ञवल्क्यमहं प्रश्नद्वयं प्रक्ष्यामि। यदि मे प्रश्नद्वयस्योत्तरं याज्ञवल्क्यो वक्ष्यति, तदा युष्माकं मध्ये न कश्चिद् तज्जेतुं शक्तः याज्ञवल्क्योऽयं यदि न प्रतिवक्ष्यति, तर्हि अस्यापि मूर्धा विपतिष्यति। अथ ब्राह्मणानामनुमतिं लब्ध्वा सा प्रथमं पृष्ठवती—“हे याज्ञवल्क्य! द्युलोकाद् यदूर्ध्वं वस्तुजातम्, पृथिव्याश्चाधस्तनं यद्वस्तुजातम्, अनयोरन्तरालवर्ति यत्, ये चेमे द्यावापृथिव्यौ, कालत्रयपरिच्छिन्नं यद्वस्तुजातम्, एतत्सर्वं कुत्र वा ओतं प्रोतञ्चेति ब्रूहि।” याज्ञवल्क्यः प्रत्युवाच—“हे गार्गी! एतत्सर्वमाकाशे कात्स्येन व्याप्तम्।” एतदनन्तरं गार्गी अकथयत्—“हे याज्ञवल्क्य! यस्त्वं मे प्रश्नमिमं विविच्योक्तवानसि, तस्मै ते नमः। द्वितीयप्रश्नाय चित्तं सावधानं कुरु।” याज्ञवल्क्यः आह—“हे गार्गी! पृच्छ” इति। एवं वदति याज्ञवल्क्ये गार्गी पुनरपृच्छत्—“हे याज्ञवल्क्य! सोऽयमाकाशः किमाश्रितः?” सः प्रत्युचे—“हे गार्गी! आकाशस्त्वक्षरे परब्रह्मण्येव ओतः प्रोतश्च। याज्ञवल्क्येनैवं प्रत्युक्ता सन्तुष्टा च गार्गी तत्र समवेतान् तान् ब्राह्मणानाह—हे भगवन्तो ब्राह्मणाः! युष्माकं मध्ये इमं याज्ञवल्क्यं ब्रह्मवादं प्रति नैवास्ति कश्चिदपि जेता। अतो नमस्कृत्य स्वं स्वं स्थानं गच्छन्तु तत्रभवन्तो भवन्तः।” एवमुक्त्वा सा तूष्णीं बभूव।

शब्दार्थः

बहुदक्षिणेन = प्रभूत दक्षिणावाला। **ईजे** = यज्ञ किया। **विद्वद्भूयिष्ठ** = विद्वानों की अधिकता वाले, **यष्टुम्** = यज्ञ करने के लिए। **प्रशमनार्थम्** = शान्त करने के लिए। **नेतुमुद्यताः** = ले जाने के लिए तत्परा। **ब्रह्मिष्ठपण** = सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मज्ञानी होने की शर्त। **विदेहाधिपतेः** = विदेह देश के राजा। **होता** = यज्ञ कराने वाला पुरोहित। **अश्वलनामा** = अश्वल नाम का। **वाचक्नवी** = वचक्नु ऋषि की पुत्री गार्गी। **अप्सु** = जल में। **कात्स्येन** = पूर्ण रूप से। **निशम्य** = सुनकर। **अतिक्रम्य** = मर्यादा पार करके। **उपरराम** = शान्त हो गई। **कर्तुमारभत** = करना प्रारम्भ किया। **मन्यमाना** = मानती हुई। **पूर्वमुपरतापि** = पहले से रुकी हुई। **अनुज्ञादानाय** = अनुमति प्राप्त करने के लिए। **प्रष्टुकामा** = पूछने की इच्छा वाली। **तज्जेतुम्** = उनको (याज्ञवल्क्य को) जीतने में। **प्रतिवक्ष्यति** = उत्तर देते हैं। **मूर्धा** = सिर। **अनयोरन्तरालवर्ति** = दोनों के बीच में रहने वाला। **कालत्रयपरिच्छिन्नम्** = तीनों कालों (भूत, भविष्य एवं वर्तमान) से व्याप्ता। **विविच्योक्तवान्** = विचार करके बताया है। **प्रत्युचे** = उत्तर दिया। **समवेतान्** = एकत्रित। **जेता** = जीतने वाला। **तत्रभवन्तः** = आदरणीय। **तूष्णीम्** = चुप।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत-

- (क) जनकः कः आसीत्?
 (ख) जनकस्य होता कः आसीत्?
 (ग) देवलोकाः कुत्र समाहिताः?
 (घ) “हे याज्ञवल्क्य! तस्मै ते नमः” इति कस्योक्तिः?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

- (क) जनकस्य यज्ञे कुतः ब्राह्मणाः समागताः?
 (ख) याज्ञवल्क्यः स्वशिष्यं किमकथयत्?
 (ग) गार्ग्याः द्वितीयप्रश्नस्य याज्ञवल्क्येन किमुत्तरं प्रदत्तम्?
 (घ) शास्त्रार्थे याज्ञवल्क्यः ‘गार्ग्याः मूर्ध्नः पतनं भविष्यति’ — इत्थं किमर्थम् अकथयत्?

3. अधोलिखितानि वाक्यानि कः कं प्रति कथयति-

	कः	कम्
(i) “हे सोमार्ह! एताः गाः अस्मद्गृहान् नयतु।”		
(ii) “भवतां मध्ये यो ब्रह्मिष्ठः, स एताः गाः स्वगृहं नयतु।”		
(iii) “अन्तरिक्षलोकाः गन्धर्वलोकेषु कात्सर्येन आश्रिताः।”		
(iv) “मूर्ध्नः पतनं भविष्यति।”		
(v) “चित्तं सावधानं कुरु।”		
(vi) “युष्माकं मध्ये नैवास्ति कश्चिदपि जेता।”		

4. “गार्गी-याज्ञवल्क्यसंवादः” इति पाठमधिकृत्य गार्ग्याः चरित्र-चित्रणं हिन्दीभाषया लिखत।

5. उपयुक्तं विकल्पं चित्वा लिखत-

- (i) गार्गी कस्याः पुत्री आसीत्?
 (क) वशिष्ठस्य (ख) कण्वस्य (ग) वचक्नोः (घ) विश्वामित्रस्य
- (ii) ‘गार्गी याज्ञवल्क्यसंवादः’ नामकः पाठः कस्याः उपनिषदः संगृहीतः अस्ति?
 (क) ईशोपनिषदः (ख) कठोपनिषदः (ग) माण्डूक्योपनिषदः (घ) बृहदारण्यकोपनिषदः
- (iii) याज्ञवल्क्यः प्रथमं केन पृष्ठः?
 (क) अश्वलेन (ख) जनकेन (ग) सोमार्हेण (घ) उद्दालकेन
- (iv) इन्द्रलोके के लोकाः समाहिताः?
 (क) आदित्यलोकाः (ख) नक्षत्रलोकाः (ग) गन्धर्वलोकाः (घ) देवलोकाः

द्वितीयः पाठः

वत्सराज-निग्रहः

पाठपरिचयः

महाकवि भास द्वारा रचित 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' नाटक के प्रथम अंक से उद्धृत यह अंश 'वत्सराजनिग्रहः' वीर रस से ओत-प्रोत है। इसमें वर्णित है कि उज्जयिनी के राजा प्रद्योत द्वारा वत्सराज उदयन का कपटपूर्वक अपहरण कर लिया जाता है, जिसे सुनकर वत्सराज का मन्त्री यौगन्धरायण आवेशित होकर वत्सराज को छुड़ाने की शपथ लेता है।

(ततः प्रविशति यौगन्धरायणः सालकेन सह)

यौगन्धरायणः—सालक! सज्जस्त्वम्?

सालकः—आर्य! अथ किम्।

यौगन्धरायणः—महान् खल्वध्वा गन्तव्यः।

सालकः—महत्तरेण स्नेहेन आर्यमुपतिष्ठे।

यौगन्धरायणः—हन्त! यास्यति बलवान् यस्य सौहार्दम्। अथ वेणुवनाश्रितेषु गहनेषु नागवनं श्वः प्रयाता स्वामी वत्सराजः प्रागेव सम्भावयितव्यः।

सालकः—आर्य! लेखः खलु मामपवहति, यस्मिन्नायत्तकार्यशरीरम्।

यौगन्धरायणः—विजये!

(प्रविश्य)

विजया—आर्य! इयमस्मि।

यौगन्धरायणः—विजये! त्वर्यतां लेखः प्रतिसरा च।

विजया—आर्य! तथा। (निष्क्रान्ता)

यौगन्धरायणः—अथ दृष्टपूर्वस्त्वयैष पन्थाः।

सालकः—न हि, श्रुतपूर्वः।

यौगन्धरायणः—एतदपि मेधाविलक्षणम्। भोः! वनगजप्रच्छादितशरीरं नीलहस्तिनम् उपन्यस्य प्रद्योतः स्वामिनं छलयितुकाम इति प्रवृत्तिरुपगता नः। अपीदानीं स्वामिनो बुद्ध्यतिक्रमो न स्यात्। अहो नु खलु वत्सराजभीरुत्वं प्रद्योतस्य। व्यक्तीकृतमसामर्थ्यमक्षौहिण्याः।

(प्रविश्य)

विजया—लेखः खल्वयम्, प्रतिसरा वधूजनहस्तात् त्वर्यत इति भर्तृमाता आह।

यौगन्धरायणः—विजये! विज्ञाप्यतां तत्रभवत्यै, सर्ववधूजनहस्तयुक्ता वा एका वा प्रतिसरा दीयतामिति।

विजया—आर्य! तथा। (निष्क्रान्ता)

(प्रविश्य)

निर्मुण्डकः—सुखमार्यस्य। आर्य एष भर्तृपादमूलादौपस्थितिको हंसकः आगतः।

यौगन्धरायणः—कथं हंसकः एकः प्राप्तः इति? सालक! विश्राम्यतामिति इदानीं मुहूर्तं त्वरिततरं वा यास्यसि सविश्रमो वा।

सालकः—आर्य! तथा (इति निष्क्रान्तः)

यौगन्धरायणः—निर्मुण्डक! प्रवेश्यतां हंसकः।

(ततः प्रविशति हंसकः निर्मुण्डकश्च)

निर्मुण्डकः—आर्य तथा। (निष्क्रान्ता)

हंसकः—कुत्र-कुत्र आर्यः?

निर्मुण्डकः—एष आर्यस्तिष्ठति उपसर्पत्वेनम्। (निष्क्रान्तः)

हंसकः—(उपसृत्य) सुखमार्यस्य?

यौगन्धरायणः—हंसक! न खलु गतः स्वामी नागवनम्?

हंसकः—आर्य! ह्य एव गतो भर्ता।

यौगन्धरायणः—हन्त! निष्फलमनुप्रेषणम्। छलिताः स्म। अथास्ति प्रत्याशा, अथवा अद्यैव प्राणाः मोक्तव्याः।

हंसकः—धरते खलु तावद् भर्ता।

यौगन्धरायणः—धरते तावदित्यर्जिता विपत्तिरभिहता। गृहीतेन स्वामिना भवितव्यं ननु। कथं गृहीतः स्वामी? हन्तः भोः! महान् खलु भारः प्रद्योतस्य भाग्यैर्निस्तीर्णः। इदानीं रुमण्वान् क्व गतः? इदानीमश्वारोहणीयं क्व गतम्?

हंसकः—यदि समग्रयोधबलपरिवारो भवेद् भर्ता, नैष दोषो भवेत्।

यौगन्धरायणः—कथमसमग्रयोधबलपरिवारो नाम स्वामी?

हंसकः—शृणोत्वार्यः। सावशेषप्रत्यूषायां रजन्यां बालुकातीर्थेन नर्मदां तीर्त्वा, छत्रमात्रपरिच्छेदेन, गजयूथविमर्दयोग्येन बलेन वीथ्या नागवनं प्रयातो भर्ता।

यौगन्धरायणः—ततस्ततः।

हंसकः—तदा योजनानि गत्वा विषमदर्शनं दृष्टं नागयूथं, तस्मिन् यूथे अस्यानर्थस्योत्पादकः कश्चित् पदातिः भर्तारमुपस्थितः।

यौगन्धरायणः—तिष्ठ! इतः क्रोशमात्रे मल्लिकासालप्रच्छादितशरीरः नखदन्तवर्ज एकनीलो हस्ती मयादृश्यत इत्युक्तवान् ननु?

हंसकः—कथं परिज्ञातं खल्वेतदार्येण? जाग्रति खलु समुत्पन्नोऽयं दोषः।

यौगन्धरायणः—हंसक! जाग्रतोऽपि बलवत्तरः कृतान्तः। ततस्ततः।

हंसकः—ततः सुवर्णशतप्रदानेन नृशंसं प्रतिपूज्य भर्त्रोक्तम् - अस्त्येष चक्रवर्ती हस्ती नीलकुवलयतनुर्नाम हस्तिशिक्षायां पठितः। गजं तमहं वीणाद्वितीयमानयामीति। ततः नीलबलाहकात् हस्तिनोऽवतीर्य सुन्दरपाटलं नाम अश्वमारुह्य विंशतिमात्रै पदातिभिः सह प्रयातो भर्ता। ततो द्विगुणमध्वानं गत्वा सालवृक्षच्छायायां धनुःशतमात्रेणैव दृष्टः सः दिव्यवारणप्रतिच्छन्दः। ततो भर्तावितीर्याश्वाद् देवानां प्रणामं कृत्वा गृहीता वीणा। ततः महान् कण्ठीरवः पृष्ठतः समुत्पन्नः।

यौगन्धरायणः—ततस्ततः।

हंसकः—तदा कण्ठीरवपरिज्ञाननिमित्तं परिवृताश्च वयम्। महामात्रोत्तरायुधीयाधिष्ठितः प्रत्युद्गतः सः कृतकहस्ती। ततो भर्ता प्रविष्टः एव तत्परबलम्।

यौगन्धरायणः—प्रविष्ट इति अथवा ननु स्थाने—

व्रीडितो वज्रनां प्राप्य मानी सत्त्वमुपाश्रितः।

शूरश्चैकायनस्थश्च किमन्यत् प्रतिपद्यते।।

ततस्ततः।

हंसकः—तदा अनुबद्धदिवसयुद्धपरिश्रान्तः, बहुप्रहारनिपतिततुरगः मोहं गतो भर्ता। ततः यथाशक्तिसन्निहितगहनोत्पाटिताभिः कर्कशाभिः लताभिः शरीरयन्त्रणात् प्रधर्षितो भर्ता।

यौगन्धरायणः—अथ कस्यां वेलायां प्रत्यागतप्राणः स्वामी?

हंसकः—आर्य! अवसितावलेपेषु पापेषु।

यौगन्धरायणः—दिष्ट्या शरीरं धर्षितं, न तेजः। ततस्ततः।

हंसकः—ततः प्रत्यागतप्राणमिदानीं भर्तारं प्रेक्ष्य सर्वतोऽभिद्रुतास्ते पापाः। तत्रैको व्यवसितोऽकार्यं कर्तुम्। स दक्षिणाभिमुखं परिवर्त्य भर्तारं करवालप्रहारवेगमुत्पादयितुकामः अधावत्।

यौगन्धरायणः—हंसकः! वृत्तान्तं तावदवधारय।

हंसकः—तदा रुधिरपाटलपिच्छिलायां भूमौ स्वेन वेगेन स नृशंसः पतितः। तदा शालङ्कायनो नाम प्रद्योतस्य अमात्यः “मा खलु-मा खलु साहसम्” इति भणित्वा तं देशमुपस्थितः। प्रणामं कृत्वा शरीरयन्त्रणात् तेन मोचितो भर्ता।

यौगन्धरायणः—विमुक्तः स्वामी! साधु भोः। शालङ्कायन! साधु। अवस्था खलु नाम शत्रुमपि सुहृत्वे कल्पयति। अथ किं प्रतिपन्नं तेन साधुना?

हंसकः—ततस्तेनार्येणानेकं सोपचारं शान्तिवचनं भणित्वा स्कन्धशयनमारोप्योज्जयिनीमेव नीतो भर्ता।

(प्रविश्य)

विजया—आर्य! एषा प्रतिसरा।

यौगन्धरायणः—विजये स्थाप्यताम्।

प्रतीहारी—किमिति भर्तृमातरं निवेदयामि?

यौगन्धरायणः—विजये! न खलु त्वया अत्रभवत्यै 'गृहीतः स्वामी' इति सहसा निवेदयितव्यम्। स्नेहदुर्बलं मातृहृदयं रक्ष्यम्।

यौगन्धरायणः—हंसक! त्वमिदानीं स्वामिना सह किं न गतः।

हंसकः—आर्य! शालङ्कायनेन नियुक्तो गच्छेमं वृत्तान्तं कौशाम्ब्यां निवेदय इति।

यौगन्धरायणः—अथ मामन्तरेण न स्वामी किञ्चिदाह।

हंसकः—आर्य! सन्देष्टुकामेनेवास्मि भर्त्रोक्तः।

यौगन्धरायणः—यदि शत्रुबलग्रस्तो राहुणा चन्द्रमा इव।।

मोचयामि न राजानं नास्मि यौगन्धरायणः।।

शब्दार्थः

उपतिष्ठे = सेवा करता हूँ। आयत्तम् = अधीन। प्रतिसरा = रक्षासूत्र। छलिताः = छले गए। प्रत्याशा = आशा। अनूर्जिता = थोड़ी-सी विपदा। निस्तीर्णः = पूरा हो गया। अश्वारोहणीयम् = घुड़सवारों को। साविघ्नम् = दुःखपूर्वक। सोपचारम् = सांत्वनापूर्ण वचन। सावशेषप्रत्यूषायाम् = थोड़ी रात ही शेष रहने पर। वीथ्या = पगडण्डी से। विषमदर्शनम् = भयानक। नागयूथम् = हाथियों का झुण्ड। नखदन्तवर्जः = नाखून एवं दाँतों से रहित। मल्लिकासालप्रच्छादितशरीरः = मल्लिका और साल नामक वृक्षों से ढके हुए शरीर वाला। कण्ठीरवः = शेर (दहाड़ मारने वाला)। परिज्ञानम् = पहचान। व्रीडितः = लज्जित। पिच्छिलायाम् = कीचड़ से भरी हुई। अध्वा = मार्ग। स्कन्धशयनम् = पालकी। भर्ता = राजा (स्वामी)

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत—

- (क) यौगन्धरायणः कः आसीत्?
- (ख) उदयनः नीलहस्तिनं वशीकर्तुं कुत्र गतः?
- (ग) वत्सराजेन का नदी तीर्णा?
- (घ) वत्सराजः केन विमुक्तः?

2. एकवाक्येन उत्तरत-

- (क) उदयनः नीलहस्तिनं वशीकर्तुं गत्वा किं दृष्टवान्?
 (ख) प्रद्योतस्य अमात्यः किं भणित्वा तं देशमुपस्थितः?
 (ग) उदयनः कथं मोहं गतः?
 (घ) यौगन्धरायणस्य का प्रतिज्ञा आसीत्?

3. शुद्धकथनानां समक्षम् 'आम्', अशुद्धकथनानां समक्षं 'न' इति लिखत-

- (क) उदयनः कौशाम्बीनरेशः आसीत्।
 (ख) यौगन्धरायणः वत्सराजस्य अमात्यः आसीत्।
 (ग) वत्सराजनिग्रहस्य प्रतिज्ञां हंसकः अकरोत्।
 (घ) वत्सराजः गङ्गां तीर्त्वा नागवनं प्रयातः।

4. 'वत्सराजनिग्रहः' इति पाठमधिकृत्य अधोलिखितानां पात्राणां चरित्रचित्रणं कुरुत-

- (क) उदयनः
 (ख) यौगन्धरायणः
 (ग) हंसकः

5. उचितं विकल्पं चिनुत-

- (i) यौगन्धरायणः कः?
 (क) नाटकस्य रचनाकारः (ख) कौशाम्बीनरेशः
 (ग) वत्सराजः (घ) वत्सराजस्य अमात्यः
- (ii) वत्सराजः कः?
 (क) नाटकस्य रचनाकारः (ख) उदयनः (ग) अमात्यः (घ) प्रद्योतः
- (iii) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् इति नाटकस्य रचनाकारः कः?
 (क) उदयनः (ख) यौगन्धरायणः (ग) भासः (घ) सालकः
- (iv) कतिभिः पदातिभिः सह राजा प्रयातः?
 (क) सप्तविंशतिमात्रैः (ख) विंशतिमात्रैः
 (ग) एकोनविंशतिमात्रैः (घ) त्रिंशन्मात्रैः

तृतीयः पाठः

न गङ्गदत्तः पुनरेति कूपम्

पाठपरिचयः

प्रस्तुत शिक्षाप्रद पाठ 'न गङ्गदत्तः पुनरेति कूपम्' विष्णुशर्मा द्वारा रचित 'पञ्चतन्त्र' के 'लब्धप्रणाश' से सङ्कलित है। इस कथा में गङ्गदत्त नामक मेढक अपने साथ रहने वाले अन्य मेढकों को समाप्त करने के लिए प्रियदर्शन नामक सर्प को बुलाता है; परन्तु प्रियदर्शन नामक सर्प अन्य मेढकों के साथ गङ्गदत्त के परिवार को भी खा जाता है और जब गङ्गदत्त की बारी आती है तब वह अपनी जान बचाकर वहाँ से भाग जाता है।

कस्मिंश्चित्कूपे गङ्गदत्तो नाम मण्डूकराजः प्रतिवसति स्म। स कदाचिद्वायादैरुद्वेजितोऽरघदृघटीमारुह्य निष्क्रान्तः। अत्र तेन चिन्तितम्—यत्कथं तेषां दायादानां मया प्रत्यपकारः कर्तव्यः। उक्तञ्च—

आपदि येनापकृतं येन च हसितं दशासु विषमासु।

अपकृत्य तयोरुभयोः पुनरपि जातं नरं मन्ये।।

एवं चिन्तयन्बिले प्रविशन्तं कृष्णसर्पमपश्यत्। तं दृष्ट्वा भूयोऽप्यचिन्तयत्—यदेनं तत्र कूपं नीत्वा सकलदायादानामुच्छेदं करोमि।

एवं स विभाव्य बिलद्वारं गत्वा तमाहूतवान्—“एह्येहि प्रिदर्शन, एहि।” तच्छ्रुत्वा सर्पश्चिन्तयामास—य एवं मामाह्वयति, स स्वजातीयो न भवति। यतो नैषा सर्पवाणी। अन्येन केनापि सह मम मर्त्यलोके सन्धानं नास्ति। तदत्रैव दुर्गे स्थितस्तद्वेदिमं कोऽयं भविष्यति। उक्तञ्च—

यस्य न ज्ञायते शीलं न कुलं न च संश्रयः।

न तेन सङ्गतिं कुर्यादित्युवाच बृहस्पतिः।।

कदाचित्कोऽपि मन्त्रवाद्यौषधचतुरो वा मामाहूय बन्धने क्षिपति। अथवा कश्चित् पुरुषो वैरमाश्रित्य कस्यचिद् भक्षणार्थं मामाह्वयति। आह च—भोः को भवान्? स आह—“अहं गङ्गदत्तो नाम मण्डूकाधिपतिस्त्वत्सकाशे मैत्र्यर्थमभ्यागतः।” तच्छ्रुत्वा सर्प आह—“भोः सत्यमेतत्। स्वभाववैरी त्वमस्माकम्। परं परपरिभवात्प्राप्तोऽहं ते सकाशम्।”

सर्प आह—“कथय कस्मात्ते परिभवः।” स आह—‘दायादेभ्यः।’



सोऽप्याह—“क्व ते आश्रयो वाप्यां, कूपे, तडागे हृदे वा। तत्कथय स्वाश्रयम्।” तेनोक्तम्—
“पाषाणचयनिबद्धे कूपे।” सर्प आह—“अहो, अपदा वयम्। तत्रास्ति तत्र मे प्रवेशः। प्रविष्टस्य च स्थानं
नास्ति। यत्र स्थितस्तव दायादान् व्यापादयामि। तद् गम्यताम्।” गङ्गदत्त आह—“भोः, समागच्छ त्वम्।
अहं सुखोपायेन तत्र तव प्रवेशं करिष्यामि। तथा तस्य मध्ये जलोपान्ते रम्यतरं कोटरमस्ति। तत्र स्थितस्त्वं
लीलया दायादान् व्यापादयिष्यसि।”

तच्छ्रुत्वा सर्पे व्यचिन्तयत्—“अहं तावत्परिणतवयाः, कदाचित्-कथञ्चिन्मूषकमेकं प्राप्नोमि। तत्सुखावहो
जीवनोपायोऽयमनेन कुलाङ्गारेण दर्शितः। तद् गत्वा तान्मण्डूकान्, भक्षयामि” इति।

एवं विचिन्त्य तमाह—“भो गङ्गदत्त, यद्येवं तदग्रे भव। येन तत्र गच्छावः।” गङ्गदत्त आह—“भोः,
प्रियदर्शन, अहं त्वां सुखोपायेन तत्र नेष्यामि स्थानं च दर्शयिष्यामि। परं त्वयास्मत्परिजनो रक्षणीयः।
केवलं यानहं तव दर्शयिष्यामि ते एव भक्षणीयाः” इति।

सर्प आह—“साम्प्रतं त्वं मे मित्रं जातम्। तत्र भेत्तव्यम्। तव वचनेन भक्षणीयास्ते दायादाः।” स
एवमुक्त्वा बिलान्निष्क्रम्य तमालिङ्ग्य च तेनैव सह प्रस्थितः। अथ कूपमासाधारघट्टघटिकामार्गेण सर्पस्तेनात्मना
स्वालयेन नीतः ततश्च गङ्गदत्तेन कृष्णसर्पं धृत्वा दर्शितास्ते दायादाः। ते च तेन शनैः शनैः भक्षिताः। अथ
मण्डूकाभावे सर्पेणाभिहितम् — “भद्र, निःशेषितास्ते रिपवः। तत्प्रयच्छान्यन्मे किञ्चिद् भोजनम्। यतोऽहं
त्वयात्रानीतः।” गङ्गदत्त आह—“भद्र, कृतं त्वया मित्रकृत्यं तत्साम्प्रतमनेनैव घटिकायन्त्रमार्गेण गम्यताम्”

इति। सर्प आह—“भो गङ्गदत्त, न सम्यगभिहितं त्वया। कथमहं तत्र गच्छामि। मदीयं बिलदुर्गमन्येन रुद्धं भविष्यति। तस्मादत्रस्थस्य मे मण्डूकमेकैकं स्ववर्गीयं प्रयच्छ। नो चेत्सर्वानपि भक्षयिष्यामि” इति। तच्छ्रुत्वा गङ्गदत्तो व्याकुलमना व्यचिन्तयत्—“अहो किमेतन्मया कृतं सर्पमानयता। तद्यदि निषेधयिष्यामि तत्सर्वानपि भक्षयिष्यति, तत्प्रयच्छाम्यस्मै एकं प्रतिदिनं सुहृदम्।” उक्तञ्च—

न स्वल्पस्य कृते भूरि नाशयेन्मतिमान्नरः।

एतदेव हि पाण्डित्यं यत्स्वल्पाद् भूरिरक्षणम्।।

एवं निश्चित्य नित्यमेकैकमादिशति। सोऽपि तं भक्षयित्वा तस्य परोक्षेऽन्यानपि भक्षयति।

अथान्यदिने तेनापरान् मण्डूकान् भक्षयित्वा गङ्गदत्तसुतो यमुनादत्तो भक्षितः। तं भक्षितं मत्वा गङ्गदत्तस्तारस्वरेण धिग्धिक्प्रलापपरः कथाञ्चिदपि न विरराम। ततः स्वपत्न्याभिहितः—

किं क्रन्दसि दुराक्रन्द स्वपक्षक्षयकारकः।

स्वपक्षस्य क्षये जाते को नस्त्राता भविष्यति।।

तदद्यापि विचिन्त्यतामात्मनो निष्क्रमणम्, अस्य वधोपायञ्च।

अथ गच्छता कालेन सकलमपि कवलितं मण्डूककुलम्। केवलमेको गङ्गदत्तस्तिष्ठति। ततः प्रियदर्शनेन भणितम्—“भो गङ्गदत्त, बुभुक्षितोऽहम्। निःशेषिताः सर्वे मण्डूकाः। तदीयतां मे किञ्चिद् भोजनम्, यतोऽहं त्वयात्रानीतः।” स आह—“भो मित्र, न त्वयात्रविषये मयावस्थितेन कापि चिन्ता कार्या। तद्यदि मां प्रेषयसि ततोऽन्यकूपस्थानपि मण्डूकान् विश्वास्यात्रानयामि।” स आह—“मम तावत्त्वमभक्ष्यो भ्रातृस्थाने। तद्यद्येवं करोषि तत्साम्प्रतं पितृस्थाने भवसि। तदेवं क्रियताम्।” इति। सोऽपि तदाकर्ण्यारघट्टघटिकामाश्रित्य विविधदेवतोपकल्पित-पूजोपयाचितस्तस्मात्कूपाद्विनिष्क्रान्तः। प्रियदर्शनोऽपि तदाकाङ्क्षया तत्रस्थः प्रतीक्षमाणस्तिष्ठति। अथ चिरादनागते गङ्गदत्ते प्रियदर्शनोऽन्यकोटरनिवासिनीं गोधामुवाच—“भद्रे, क्रियतां स्तोकं साहाय्यम्। यतश्चिरपरिचितस्ते गङ्गदत्तः। तद्गत्वा तत्सकाशं कुत्रचिज्जलाशयेऽन्विष्य मम सन्देशं कथय। आगम्यतामेकाकिनापि भवता द्रुततरं यद्यन्ये मण्डूका नागच्छन्ति। अहं त्वया विना नात्र स्थातुं शक्नोमि। तथा यद्यहं तव विरुद्धमाचरामि तत्सुकृतमन्तरे मया विधृतम्।” गोधापि तद्वचनाद् गङ्गदत्तं द्रुततरमन्विष्याह—“भद्र गङ्गदत्त, स तव सुहृत्प्रियदर्शनस्तव मार्गं समीक्षमाणस्तिष्ठति। तच्छ्रीघ्रमागम्यताम्” इति। अपरं च तेन तव विरूपकरणे सुकृतमन्तरे धृतम्। तन्निःशङ्केन मनसा समागम्यताम्। तदाकर्ण्य गङ्गदत्त आह—

बुभुक्षितः किं न करोति पापं क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति।

आख्याहि भद्रे प्रियदर्शनस्य न गङ्गदत्तः पुनरेति कूपम्।।

एवमुक्त्वा स तां विसर्जयामास।

शब्दार्थः

आरुह्य = चढ़कर। निष्क्रान्तः = निकल गया। दायादैः = बन्धुओं से। प्रविशन् = प्रवेश करते हुए।
 एहि = आओ। आहूय = बुलाकर। आह्वयति = बुलाता है। कूपे = कुएँ में। मूषकः = चूहा। भेत्तव्यम् =
 डरना चाहिए। रिपवः = शत्रु। सुतः = पुत्र। मण्डूकः = मेढक। कवलितम् = खा लिया गया। अन्विष्य = खोज
 कर। स्तोकम् = थोड़ा। आकर्ण्य = सुनकर।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत-

- (क) गङ्गदत्तः कः आसीत्?
 (ख) सर्पस्य नाम किम् आसीत्?
 (ग) गङ्गदत्तस्य सुतः कः?
 (घ) मण्डूकाः केन भक्षिताः?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

- (क) गङ्गदत्तः किमर्थं प्रियदर्शनम् आहूतवान्?
 (ख) प्रियदर्शनः गङ्गदत्तं प्रति कं संदेशं प्रेषितवान्?
 (ग) गङ्गदत्तः कुत्र प्रतिवसति स्म?

3. अधोलिखितशुद्धकथनानां समक्षम् 'आम्', अशुद्धकथनानां च समक्षं 'न' इति लिखत-

- (क) गङ्गदत्तः नागराजः आसीत्?
 (ख) मण्डूकराजः कूपे प्रतिवसति स्म?
 (ग) गङ्गदत्तसुतः यमुनादत्तः प्रियदर्शनेन भक्षितः?
 (घ) प्रियदर्शनः गङ्गदत्तम् आहूतवान्?

4. अधोलिखितपात्रयोः चरित्रचित्रणं कुरुत-

- (क) गङ्गदत्तः (ख) प्रियदर्शनः

5. समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (i) गङ्गदत्तः कुत्र प्रतिवसति स्म?
 (क) कूपे (ख) तडागे (ग) सागरे (घ) नद्याम्
 (ii) प्रियदर्शनः कः आसीत्?
 (क) मण्डूकः (ख) सर्पः (ग) सेवकः (घ) कुटुम्बः
 (iii) एषा कथा कुतः उद्धृता?
 (क) महाभारतात् (ख) रामायणात् (ग) पञ्चतन्त्रात् (घ) पुराणात्
 (iv) गङ्गदत्तसुतः कः आसीत्?
 (क) देवदत्तः (ख) यमुनादत्तः (ग) इन्द्रदत्तः (घ) शिवदत्तः

चतुर्थः पाठः

शकुन्तलायाः पतिगृहगमनम्

पाठपरिचयः

महाकवि कालिदास के विश्वप्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से सङ्कलित इस पाठ में शकुन्तला की विदाई का वर्णन है। शकुन्तला के पतिगृह-गमन के अवसर पर महर्षि कण्व सहित समस्त जड़-चेतन की व्यथा की स्वाभाविक एवं सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है।

(ततः प्रविशति स्नानोत्तीर्णः कण्वः)

कण्वः—(विचिन्त्य)

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया,
कण्ठः स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः।।

शकुन्तला—(उत्थाय सव्रीडम्) तात, वन्दे।

कण्वः—वत्से, सम्राजं सुतमवाप्नुहि। इतः सद्योहुताग्नीन् प्रदक्षिणीकुरुष्व।

(सर्वे परिक्रामन्ति)

कण्वः—प्रतिष्ठस्वेदानीम्। (सदृष्टिक्षेपम्) क्व ते शार्ङ्गरवमिश्राः?

शिष्यः—भगवन् इमे स्मः।

कण्वः—भगिन्यास्ते मार्गमादेशय।

शार्ङ्गरवः—इत इतो भवती।

(सर्वे परिक्रामन्ति)

कण्वः—भोः भोः सन्निहितास्तपोवनतरवः!

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्माध्वपीतेषु या
नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्।।



शार्ङ्गरवः—(कोकिलरवं सूचयित्वा) भगवन्!

अनुमतगमना शकुन्तला तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः।

परभृतविरुतं कलं यथा प्रतिवचनीकृतमेभिरात्मनः।।

शकुन्तला—(जनान्तिकम्) हला प्रियंवदे! नन्वार्यपुत्रदर्शनोत्सुकाया अप्याश्रमपदं परित्यजन्त्या दुःखेन मे चरणौ पुरतः प्रवर्तते।

प्रियंवदा—न केवलं तपोवनविरहकातरा सख्येव। त्वयोपस्थितवियोगस्य तपोवनस्यापि तावत् समवस्था दृश्यते।

उदगीर्णदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः।

अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः।।

शकुन्तला—(स्मृत्वा) तात ! लताभगिनीं वनज्योत्स्नां तावदामन्त्रयिष्ये।

कण्वः—अवैमि ते तस्यां सोदर्यास्नेहम्। इयं तावदक्षिणेन।

शकुन्तला—वनज्योत्स्ने! चूतसङ्गतापि मां प्रत्यालिङ्गेतोगताभिः शाखाबाहुभिः। अद्यप्रभृति दूरपरिवर्तिनी ते खलु भविष्यामि।

(सख्यौ प्रति) हला, एष द्वयोर्युवयोर्हस्ते निक्षेपः।

सख्यौ—अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः। (इति वाष्पं विसृजतः)

कण्वः—अनसूये, प्रियंवदे, अलं रुदितेन। ननु भवतीभ्यामेव शकुन्तला स्थिरीकर्तव्या।

शकुन्तला—तात! एषा उटजपर्यन्तचारिणी गर्भमन्थरा मृगवधूर्यदा अनघप्रसवा भविष्यति, तदा मे कमपि प्रियनिवेदयितृकं विसर्जयिष्यथ।

कण्वः—नेदं विस्मरिष्यामः।

शकुन्तला—(गतिभङ्गं रूपयित्वा) को नु खल्वेष निवसने मे सज्जते?

(इति परावर्तते)

कण्वः—वत्से!

यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनां
तैलं न्यषिच्यत मुखे कुशसूचिविद्धे।
श्यामाकमुष्टिपरिवर्द्धितको जहाति।
सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते॥

शकुन्तला—वत्स, किं सहवासपरित्यागिनीं मामनुसरसि। अचिरप्रसूतोपरतया जनन्या विना यथा मया वर्द्धितोऽसि, तथा इदानीमपि मया विरहितं तातस्त्वां चिन्तयिष्यति। निवर्तस्व तावत्।

(इति रुदती प्रस्थिता)

शार्ङ्गरवः—भगवन्! ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते। तदिदं सरस्तीरम्। अत्र संदिश्य प्रतिगन्तुमर्हसि।

कण्वः—वत्से, त्वमिदानीमनुशासनीयासि। सा त्वमितः पतिकुलं प्राप्य,

शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने
भतुर्विप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः॥

गौतमी—एतवान् वधूजनस्योपदेशः। जाते! एतत् खलु सर्वमवधारय।

कण्वः—वत्से! परिष्वजस्व मां सखीजनं च।

शकुन्तला—तात, इत एव किं प्रियसख्यौ निवर्तिष्येते।

कण्वः—वत्से! इमे अपि प्रदेये। न युक्तमनयोस्तत्र गन्तुम्। त्वया सह गौतमी यास्यति।

शकुन्तला—(पितरमाश्लिष्य) कथमिदानीं तातस्याङ्गात्परिभ्रष्टा मलयतटोन्मूलिता चन्दनलतेव देशान्तरे जीवितं धारयिष्ये।

कण्वः—वत्से! किमेवं कातरासि। यदिच्छामि ते तदस्तु।

(शकुन्तला पितुः पादयोः पतति)

शकुन्तला—हला, द्वे अपि मां सममेव परिष्वजेथाम्।

(सख्यौ तथा कुरुतः)

शार्ङ्गरवः—युगान्तरमारूढः सविता। त्वरतामत्रभवती।

कण्वः—(सनिःश्वासम्) गच्छ, शिवास्ते पन्थानः सन्तु।

(निष्क्रान्ता शकुन्तला सहाययिनश्च)

शब्दार्थः

स्नानोत्तीर्णः = स्नान करके निकली हुई। स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषः = आँसुओं को रोकने से रुँधा हुआ। वैक्लव्यम् = व्याकुलता। अरण्यौकसः = वनवासी का। तनयाविश्लेषदुःखैः = पुत्री के वियोग से दुःखी। सव्रीडम् = लज्जा के साथ। परभृतविरुतम् = कोयल का स्वर। उद्गीर्णदर्भकवलाः = कुश के निवाले को उगल देने वाली। श्यामाकः = साँवा (एक प्रकार का अनाज)। पदवीम् = मार्ग को। अनुत्सेकिनी = गर्व करने वाली। शिव = कल्याणकारी। भूयिष्ठम् = अत्यधिक।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत—

- (क) शकुन्तला कस्य पालिता पुत्री आसीत्?
- (ख) प्रियंवदा कस्याः प्रियसखी आसीत्?
- (ग) “वत्से! नेदं विस्मरिष्यामः” इति कः कथयति?
- (घ) के उद्गीर्णदर्भकवलाः?

2. एकवाक्येन उत्तरत—

- (क) गृहिणः कथं पीड्यन्ते?
- (ख) शकुन्तलायाः के द्वे सख्यौ आस्ताम्?
- (ग) शकुन्तलायाः उत्सवः कस्मिन् समये भवति?
- (घ) शकुन्तलायाः वियोगे लताः कथं अश्रूणि मुञ्चन्ति?

3. अधोलिखितशुद्धकथनानां समक्षम् ‘आम्’, अशुद्धकथनानां च समक्षं ‘न’ इति लिखत।

- (क) शकुन्तला महर्षिकण्वस्य पालिता पुत्री आसीत्।
- (ख) प्रियंवदा पतिगृहम् गच्छति।
- (ग) शार्ङ्गरवः कण्वशिष्यः आसीत्।
- (घ) ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः।
- (ङ) भर्तुर्विप्रकृतापि प्रतीपं गमः।

4. अधोलिखितपात्राणां चरित्रचित्रणं कुरुत-

(क) शकुन्तला (ख) कण्वः (ग) अनसूया

5. समुचितं विकल्पं चिनुत-

(i) प्रस्तुतपाठः कुतः उद्धृतोऽस्ति?

(क) मेघदूतात् (ख) रामायणात् (ग) अभिज्ञानशाकुन्तलात् (घ) रघुवंशात्

(ii) प्रियंवदा का आसीत्?

(क) कण्वस्य पालिता पुत्री (ख) शकुन्तलायाः प्रियसखी

(ग) शकुन्तलायाः सहोदरा (घ) दुष्यन्तस्य भगिनी

(iii) शकुन्तला कण्वस्य कीदृशी पुत्री अस्ति?

(क) स्वकीया पुत्री (ख) धर्मपुत्री (ग) औरसपुत्री (घ) न कापि

(iv) कान् शुश्रूषस्व?

(क) प्रियसखीः (ख) परिजनान् (ग) गुरुन् (घ) सपत्नीजनान्



संस्कृतव्याकरणम्

अनुवादः रचना च

माहेश्वर सूत्र एवं वर्णों का उच्चारण-स्थान

‘संस्कृतं नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः’ अर्थात् महर्षियों ने देवताओं की वाणी को संस्कृत कहा है। संस्कृत का अर्थ होता है शुद्ध, परिमार्जित, परिष्कृत। अतः व्याकरण द्वारा जिसका संस्कार किया गया हो ऐसी अत्यन्त परिष्कृत भाषा को संस्कृत कहते हैं। अपने व्याकरण की वैज्ञानिकता के कारण ही विश्व की सर्वप्राचीन, विशाल वाङ्मय से समृद्ध और सभी भाषाओं की जननी कही जाने वाली यह संस्कृत भाषा आज कम्प्यूटर के लिए सर्वाधिक उपयुक्त भाषा मानी जाती है।

व्याकरण—“व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते प्रकृति-प्रत्ययविभागद्वारा शब्दाः येन तत् शास्त्रं व्याकरणम्” अर्थात् जिसके द्वारा प्रकृति और प्रत्यय को अलग-अलग करके शब्द व्युत्पन्न किये जाते हैं उस शास्त्र को व्याकरण कहते हैं।¹

प्रकृति + प्रत्यय = व्युत्पन्न शब्द

सम् + सुट् + कृ + क्त = संस्कृतम्

वि + आ + कृ + ल्युट् = व्याकरणम्

यद्यपि संस्कृत के आठ प्रकार के व्याकरण बताये गये हैं, तथापि सर्वाधिक प्रचलित व्याकरण महर्षि पाणिनि के अष्टाध्यायी (आठ अध्यायों वाले) ग्रन्थ पर आधारित है। अतः इसे पाणिनीय व्याकरण कहा जाता है। पाणिनीय-व्याकरण में वार्तिक (अतिरिक्त नियम) जोड़ने वाले वररुचि कात्यायन और इस व्याकरण पर भाष्य लिखने वाले पतञ्जलि को श्रेय देते हुए इसे ‘त्रिमुनि-व्याकरण’ भी कहते हैं।

माहेश्वर सूत्र—संस्कृत व्याकरण अत्यन्त वैज्ञानिक है और यह माहेश्वर सूत्रों पर आधारित है। कथा प्रसिद्ध है कि भगवान् शिव ने नृत्य करने के पश्चात् चौदह बार डमरू बजाया और उससे जो ध्वनियाँ निकलीं, वे चौदह सूत्रों के रूप में ‘माहेश्वर (महेश्वर का) सूत्र’ के नाम से विख्यात हैं। वे सूत्र इस प्रकार हैं—

1. अइउण्, 2. ऋलृक्, 3. एओङ्, 4. ऐऔच्, 5. हयवरट्, 6. लण्, 7. जमङणनम्, 8. झभञ्, 9. घढधष्, 10. जबगडदश्, 11. खफछठथचटतव्, 12. कपय्, 13. शषसर्, 14. हल्।

1. दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः।

इन चौदह सूत्रों को 'संस्कृत-वर्णमाला', 'वर्णसमाम्नाय', 'प्रत्याहार-सूत्र' और 'शिवसूत्र' भी कहते हैं। यह वर्णमाला भाषाविज्ञान पर आधारित है और किसी भी अन्य भाषा की तुलना में सर्वाधिक वैज्ञानिक है।

प्रत्याहार—“प्रत्याह्रियन्ते सङ्क्षिप्यन्ते वर्णाः यत्र सः प्रत्याहारः” अर्थात् जिसके द्वारा अनेक वर्णों को सङ्क्षेप में कहा जाता है, उन्हें प्रत्याहार कहते हैं। यथा—अ, इ, उ, ऋ, लृ — इन वर्णों को सङ्क्षेप में 'अक्' कहते हैं।

प्रत्याहार बनाने की विधि—उपर्युक्त सभी चौदह सूत्रों में अन्तिम वर्ण हल् (व्यञ्जन) हैं, उन्हें जोड़कर ही प्रत्याहार बनाया जाता है; किन्तु उनकी गिनती नहीं होती। यथा—यदि अ, इ, उ, ऋ, लृ— इन वर्णों का प्रत्याहार बनाना है तो 'अ' से लेकर 'क्' के पूर्ववर्ती 'लृ' तक सभी वर्ण लिये जायेंगे; किन्तु सूत्रों के अन्त में विद्यमान हल् संज्ञक—ण्, क् वर्णों की गिनती नहीं होती। ये केवल प्रत्याहारों के नाम बनाने के लिये हैं यथा—

1. **अक्** = अ, इ, उ, ऋ, लृ।
2. **अच्** = अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ = सभी स्वर।
3. **अट्** = अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र्, ल्।
4. **अण्** = अ, इ, उ।
5. **अण्** = अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र्, ल्।
6. **अम्** = अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र्, ल्, ज्, म्, ङ्, ण्, न्।
7. **अश्** = अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र्, ल्, ज्, म्, ङ्, ण्, न्, झ, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ङ्, द्।
8. **अल्** = अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र्, ल्, ज्, म्, ङ्, ण्, न्, झ, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ङ्, द्, ख्, फ्, छ्, ट्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्, ह्। = सभी स्वर-व्यञ्जन
9. **इक्** = इ, उ, ऋ, लृ।
10. **इच्** = इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ।
11. **इण्** = इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र्, ल्।
12. **उक्** = उ, ऋ, लृ।
13. **एङ्** = ए, ओ।
14. **एच्** = ए, ओ, ऐ, औ।
15. **ऐच्** = ऐ, औ।

16. खय् = ख, फ, छ, ट, थ, च, ट, त, क, प।
17. खर् = ख, फ, छ, ट, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स।
18. डम् = ड, ण, न।
19. चर् = च, ट, त, क, प, श, ष, स।
20. छव् = छ, ट, थ, च, ट, त।
21. जश् = ज, ब, ग, ड, द।
22. झय् = झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ट, थ, च, ट, त, क, प।
23. झर् = झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ट, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स।
24. झल् = झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ट, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स, ह।
25. झश् = झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द।
26. झष् = झ, भ, घ, ढ, ध।
27. बश् = ब, ग, ड, द।
28. भष् = भ, घ, ढ, ध।
29. मय् = म, ड, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ट, थ, च, ट, त, क, प।
30. यज् = य, व, र, ल, ज, म, ड, ण, न, झ, भ।
31. यण् = य, व, र, ल।
32. यम् = य, व, र, ल, ज, म, ड, ण, न।
33. यच् = य, व, र, ल, ज, म, ड, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ट, थ, च, ट, त, क, प।
34. यर् = य, व, र, ल, ज, म, ड, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ट, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स।
35. रल् = र, ल, ज, म, ड, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ट, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स, ह।
36. वश् = व, र, ल, ज, म, ड, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द।
37. वल् = व, र, ल, ज, म, ड, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ट, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स, ह।

38. शर् = श, ष, स्।

39. शल् = श, ष, स्, ह।

40. हश् = ह, य, व, र, ल, ज, म, ड, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज्ञ, ब, ग, ङ, द्।

41. हल् = ह, य, व, र, ल, ज, म, ड, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज्ञ, ब, ग, ङ, द्, ख, फ, छ, ट, थ, च, ट, त, क्, प, श, ष, स्, ह = सभी व्यञ्जन

42. चय् = च, ट, त, क्, प।

नोट—पाणिनीय अष्टाध्यायी के सूत्रों में स्थित प्रत्याहारों की संख्या 42 है; किन्तु 'र' (र, ल) प्रत्याहार का उल्लेख पाणिनिसूत्र 'उरण् रपरः' में हुआ है जिसको मानने पर 43 प्रत्याहार होते हैं, तथा उणादिसूत्र 'जमन्ताडुः' के 'जम्' (ज, म, ड, ण, न) की गिनती करने पर प्रत्याहार 44 हो जाते हैं।

वर्ण-विचार

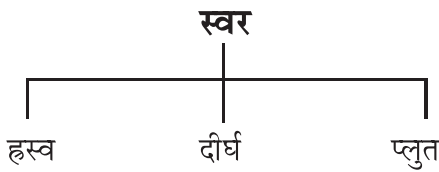
भाषा की लघुतम इकाई शब्द है और शब्द की लघुतम इकाई वर्ण है।

वर्ण—वृणोति ध्वनिम् वह छोटी-से-छोटी अविनाशी ध्वनि जिसके टुकड़े न किये जा सकें उसे वर्ण या अक्षर कहते हैं।

संस्कृत व्याकरण में वर्ण या अक्षर में कोई तात्त्विक भेद नहीं मानते। वर्ण का आशय ध्वनि के लिखित रूप से है—“वर्ण्यते लिख्यते लघुतमो ध्वनिः येन असौ वर्णः।” वर्ण धातु का अर्थ है रंगना या लिखना, उससे अच् प्रत्यय होकर 'वर्ण' शब्द निष्पन्न होता है। अक्षर का आशय ध्वनि के उच्चारित रूप से है—“न क्षरः क्षरणं यस्य तद् अक्षरम्।” अर्थात् वह ध्वनि जिसका नाश नहीं होता।

वर्ण के दो भेद होते हैं—(1) स्वर (2) व्यञ्जन

1. **स्वर**—“स्वयं राजन्ते इति स्वराः” अर्थात् जिनका उच्चारण विना किसी दूसरे वर्ण की सहायता के होता है उन्हें स्वर कहते हैं। स्वर के तीन भेद होते हैं—



(क) **ह्रस्व**—“एकमात्रो भवेद् ह्रस्वः” अर्थात् जिनके उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये 5 हैं—अ, इ, उ, ऋ, ए।

(ख) **दीर्घ**—“द्विमात्रो दीर्घ उच्यते” अर्थात् जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा का समय लगता है उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। ये 8 हैं—आ, ई, ऊ, ऋ, ए, ओ, ऐ, औ।

(ग) प्लुत—“त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयः” अर्थात् जिन स्वरों के उच्चारण में तीन मात्रा का समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। उदाहरण के लिए ‘ओ३म्’ के ‘ओ’ के उच्चारण में तीन मात्रा का समय लगता है अतः ‘ओ’ के आगे संख्या ‘३’ लिखकर इसके प्लुत होने को प्रकट करते हैं। प्लुत स्वर 9 हैं—अ३, इ३, उ३, ऋ३, लृ३, ए३, ऐ३, ओ३, औ३।

“निमेषकाला मात्रा स्यात्” अर्थात् पलक गिराने में अथवा चुटकी बजाने (अङ्गुलीस्फोटनं यावान् तावान् कालस्तु मात्रिकः) में जो समय लगता है, उसे एक मात्रा कहते हैं। व्यञ्जन के उच्चारण में आधी मात्रा का समय लगता है—

एकमात्रो भवेद्ध्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।

त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनं चार्धमात्रिकम्।।

2. व्यञ्जन—“व्यज्यन्ते स्वरसंयोगेन इति व्यञ्जनानि” अर्थात् जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है उन्हें व्यञ्जन कहते हैं। इनके मूलतः तीन भेद हैं—

(क) स्पर्श (ख) अन्तःस्थ (ग) ऊष्म

(क) स्पर्श व्यञ्जन—“स्पृशन्ति स्वानि स्वान्युच्चारणस्थानानि इति स्पर्शाः” अर्थात् जो उच्चारण के समय अपने-अपने उच्चारण स्थानों का स्पर्श करते हैं, उन्हें स्पर्श व्यञ्जन कहते हैं। ये 25 हैं (कादयो मावसानाः स्पर्शाः—क् से लेकर म् तक)

कु = कवर्ग—क्, ख्, ग्, घ्, ङ्

चु = चवर्ग—च्, छ्, ज्, झ्, ञ्

टु = टवर्ग—ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्

तु = तवर्ग—त्, थ्, द्, ध्, न्

पु = पवर्ग—प्, फ्, ब्, भ्, म्

(ख) अन्तःस्थ व्यञ्जन—“अन्तः स्वरव्यञ्जनयोर्मध्ये तिष्ठन्ति इति अन्तःस्थाः” अर्थात् जो स्वर और व्यञ्जन के बीच में स्थित हैं, उन्हें अन्तःस्थ व्यञ्जन कहते हैं। य्, व्, र्, ल् सम्प्रसारण में क्रमशः इ, उ, ऋ, लृ हो जाते हैं और इ, उ, ऋ, लृ स्वरों के समीप आने पर य्, व्, र्, ल् हो जाते हैं। अतः इन्हें अन्तःस्थ कहते हैं। ये चार हैं (यणोऽन्तस्थाः)—

य्, व्, र्, ल्

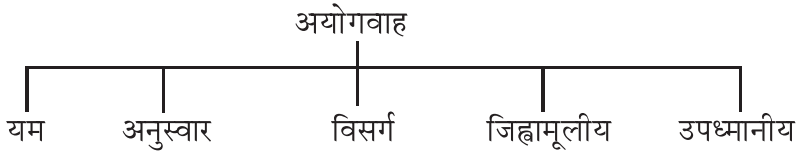
(ग) ऊष्म व्यञ्जन—“ओषतीति ऊष्मा” अथवा “ऊष्मा वायुस्तत्प्रधानवर्णा ऊष्माणः” अर्थात् जिन वर्णों के उच्चारण में मुख से गर्म वायु निकलती है, उन्हें ऊष्म व्यञ्जन कहते हैं। ये भी चार हैं (शल ऊष्माणः)

श्, ष्, स्, ह्

(‘स्वरव्यवधानरहितानाम् अनेकव्यञ्जनानां संयोजनेन संयुक्तव्यञ्जनानि भवन्ति।’ अर्थात् स्वर के व्यवधान से रहित अनेक व्यञ्जनों को जोड़ देने से संयुक्त व्यञ्जन बनते हैं।)

यथा— क् + ष् + अ = क्ष
 त् + र् + अ = त्र
 ज् + ज् + अ = ज्ञ
 श् + र् + अ = श्र
 प् + र् + अ = प्र
 ह् + ल् + अ = ह्र
 ह् + र् + अ = ह
 स् + र् + अ = स्त्र इत्यादि।

अयोगवाह—“माहेश्वरसूत्रेषु अयुक्ता अपि प्रयोगं वहन्ति इति अयोगवाहाः।” अर्थात् माहेश्वर सूत्र में योग न होने (अयोग) के बाद भी जो भाषा में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें अयोगवाह कहते हैं। ये पाँच हैं—



(क) यम—कवर्गादि से पञ्चम वर्ण (ङ् ज् ण् न् म्) के परे रहते पूर्व सदृश वर्ण यम कहा जाता है जिनकी संख्या चार होती है तथापि प्रत्येक वर्ग के प्रथम को कुँ, द्वितीय को खुँ, तृतीय को गुँ तथा चतुर्थ को धुँ होता है।

(ख) अनुस्वारः—“स्वरेभ्यः अनु पश्चाद् एव नासिकया उच्चार्यते इति अनुस्वारः” अर्थात् जिसका स्वरों के पश्चात् नासिका से उच्चारण होता है, उसे अनुस्वार कहते हैं। अनुस्वार हमेशा किसी-न-किसी स्वर के बाद आता है। इसे बिन्दु (कं) के रूप में शिरोरेखा के ऊपर लिखा जाता है। यथा—अं, कं, चं, टं, तं, पं इत्यादि।

(ग) विसर्गः—“स्वरेभ्यः पश्चात् यस्योच्चारणे मुखात् वायुः तीव्रतया विसृज्यते असौ विसर्गः” अर्थात् स्वर के पश्चात् जिसके उच्चारण में मुख से तेजी से वायु को विसर्जित किया जाता है, उसे विसर्ग कहते हैं। इसे स्वर के पश्चात् दो बिन्दुओं (:) के रूप में लिखा जाता है। अयोगवाह होने के कारण अकार के बाद विसर्ग के आने पर उसका उच्चारण स्थान कण्ठ तथा इकार के बाद विसर्ग के आने पर उस विसर्ग का उच्चारण स्थान तालु होगा। जैसे—

मुनिः — यहाँ विसर्ग का उच्चारण स्थान तालु

गुरुः — यहाँ विसर्ग का उच्चारण स्थान ओष्ठ

रामः — यहाँ विसर्ग का उच्चारण स्थान कण्ठ

(घ) जिह्वामूलीयः—‘ॠकॠख इति कखाभ्यां प्रागर्द्धविसर्गसदृशः जिह्वामूलीयः’ अर्थात् ‘क’ और ‘ख’ से पहले आने वाले विसर्ग का उच्चारण आधे विसर्ग के समान जिह्वा के मूल भाग से होता है। अतः इसे जिह्वामूलीय कहते हैं। यथा—बालक ॠ करोति। राम ॠ खादति।

(ङ) उपध्मानीयः—‘ॠपॠफ इति पफाभ्यां प्रागर्द्धविसर्गसदृशः उपध्मानीयः’ अर्थात् ‘प’ और ‘फ’ से पहले आने वाले विसर्ग का उच्चारण आधे विसर्ग के समान फूँकने जैसी (उपध्मा) ध्वनि के साथ होता है। अतः इसे उपध्मानीय कहते हैं। यथा—

बालक ॠ पिबति। वृक्ष ॠ फलति।

वर्णों की संख्या

‘त्रिषष्टिश्चतुष्पष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः’ अर्थात् आचार्य महेश्वर के मत में संस्कृत-वर्णमाला में 63 या 64 वर्ण कहे गये हैं। ह्रस्व स्वर 5 + दीर्घ 8 + प्लुत 8 (प्लुत लृ३ को छोड़कर) = 21 स्वर और स्पर्श 25 + अन्तःस्थ 4 + ऊष्म 4 = 33 व्यञ्जन मिलाकर 54 वर्ण हो जाते हैं। यम वर्ण 4 (कुँ, खुँ, गुँ, घुँ), अनुस्वार व विसर्ग तथा जिह्वामूलीय और उपध्मानीय जोड़ देने से वर्णों की संख्या 62 हो जाती है। इनमें एक दुःस्पृष्ट (ळ) तथा प्लुत लृ३ जोड़ देने पर संस्कृत में 64 वर्ण हो जाते हैं।

स्वरा विंशतिरेकश्च स्पर्शानां पञ्चविंशतिः।

यादयश्च स्मृता ह्यष्टौ चत्वारश्च यमाः स्मृताः॥

अनुस्वारो विसर्गश्च ॠ क ॠ पौ चापि पराश्रितौ।

दुःस्पृष्टश्चेति विज्ञेयो लृकारः प्लुत एव च॥

(पाणिनीयशिक्षा 4-5)

वर्णों के उच्चारण स्थान

वर्णों के उच्चारण स्थान 8 हैं¹—कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ, नासिका और जिह्वामूल।

सूत्र	वर्ण	उच्चारण स्थान
1. अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः	अ, आ, क्, ख, ग्, घ, ङ्, ह्, विसर्ग	कण्ठ
2. इचुयशानां तालु	इ, ई, च्, छ, ज्, झ, ञ्, य्, श्	तालु
3. ऋटुरषाणां मूर्धा	ऋ, ॠ, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, र्, ष्	मूर्धा
4. लृतुलसानां दन्ताः	लृ, त्, थ्, द्, ध्, न्, ल्, स्	दन्त
5. उपपध्मानीयानामोष्ठौ	उ, ऊ, प्, फ्, ब्, भ्, म्, उपध्मानीय (ॠ प, ॠ फ)	दोनों ओष्ठ

1. अष्टौ स्थानानि वर्णानामुरः कण्ठः शिरस्तथा।

जिह्वामूलश्च दन्ताश्च नासिकोष्ठौ च तालु च॥

6. **जमङणनानां नासिका च**—ञ, म्, ङ्, ण्, न् — अपने-अपने उच्चारण स्थान और नासिका (इन वर्णों को अनुनासिक कहते हैं।) (मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः)
7. **एदैतोः कण्ठतालु**—ए, ऐ — कण्ठ और तालु
8. **ओदौतोः कण्ठोष्ठम्**—ओ, औ—कण्ठ और ओष्ठ
9. **वकारस्य दन्तोष्ठम्**—व् — दन्त और ओष्ठ
10. **नासिका अनुस्वारस्य**—अनुस्वार (◌ं) — नासिका
11. **जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्**— जिह्वामूलीय — जिह्वामूल

उच्चारण-यत्न

वर्णों के उच्चारण में जो यत्न (चेष्टाएँ) होता हैं, उन्हें उच्चारण यत्न कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं—1. आभ्यन्तर और 2. बाह्य।

आभ्यन्तर यत्न

वर्णों के स्पष्ट उच्चारण से पूर्व अथवा मुख के भीतर किये जाने वाले यत्न को आभ्यन्तर यत्न कहते हैं। प्रकृष्ट यत्न होने से यह 'प्रयत्न' कहा जाता है। ये पाँच हैं—

1. **स्पृष्ट**—स्पृष्टं प्रयत्नं स्पर्शानाम्—स्पर्श (क् से म् तक) व्यञ्जनों का आभ्यन्तर प्रयत्न स्पृष्ट है। इसमें जिह्वा उच्चारण स्थानों का पूर्ण स्पर्श करती है।
2. **ईषत् स्पृष्ट**—ईषत्स्पृष्टमन्तःस्थानाम्—अन्तःस्थ (य्, व्, र्, ल्) व्यञ्जनों का आभ्यन्तर प्रयत्न ईषत् स्पृष्ट है। इसमें जिह्वा उच्चारण स्थानों का ईषत् (थोड़ा) स्पर्श करती है।
3. **ईषद् विवृत**—ईषद्विवृतमूष्मणाम्—ऊष्म (श्, ष्, स्, ह्) व्यञ्जनों का आभ्यन्तर प्रयत्न ईषद् विवृत है। इसमें जिह्वा के अवयवों एवं उच्चारण स्थानों के बीच का थोड़ा खुला (ईषद् विवृत) रखना पड़ता है।
4. **विवृत**—विवृतं स्वराणाम्—स्वरों का आभ्यन्तर प्रयत्न विवृत है। इसमें जिह्वा के अवयवों एवं उच्चारण स्थानों के बीच का वायुमार्ग विवृत (खुला) रहता है।
5. **संवृत**—ह्रस्वस्य अवर्णस्य प्रयोगे संवृतम्। प्रक्रियादशायां तु विवृतमेव—ह्रस्व 'अ' का आभ्यन्तर प्रयत्न प्रयोग (उच्चारण) की अवस्था में संवृत होता है। इसमें जिह्वा के अवयवों को उच्चारण स्थान (कण्ठ) से सटाना पड़ता है जिससे वायुमार्ग बन्द-सा (संवृत) हो जाता है; किन्तु सन्धि आदि की प्रक्रिया दशा में इसका आभ्यन्तर प्रयत्न विवृत ही है।

स्वरों के बाह्य प्रयत्न उदात्त, अनुदात्त और स्वरित होते हैं।

बाह्य यत्न

वर्णों के उच्चारण के पूर्व मुख के बाहर (कण्ठ से भीतर) स्वरयन्त्र में होने वाले यत्न को बाह्य यत्न कहते हैं। बाह्य यत्न 11 हैं—(1) विवार, (2) संवार, (3) श्वास, (4) नाद, (5) घोष, (6) अघोष, (7) अल्पप्राण, (8) महाप्राण, (9) उदात्त, (10) अनुदात्त और (11) स्वरित।

1. खरो विवाराः श्वासा अघोषाश्च—खर् अर्थात् वर्णों के पहले, दूसरे वर्ण और श ष स (क्, ख, च, छ, ट, ठ, त्, थ, प, फ, श, ष, स्) वर्णों का बाह्य प्रयत्न विवार (स्वर यन्त्र का खुला रहना), श्वास (वायु का अत्यधिक प्रयोग) और अघोष (गूँज का अभाव) है।

2. हशः संवारा नादा घोषाश्च—हश् अर्थात् वर्णों के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण, अन्तःस्थ और ह (ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म, य, व, र, ल, ह) वर्णों का बाह्य यत्न संवार (स्वर यन्त्र का कम खुला रहना), नाद और घोष (गूँज, स्वरयन्त्र का झट्टत होना) है।

3. वर्गाणां प्रथमतृतीयपञ्चमा यणश्चाल्पप्राणाः—वर्णों के पहले, तीसरे, पाँचवें वर्ण और यण् (य, व, र, ल) वर्णों का बाह्य प्रयत्न अल्पप्राण (प्राणवायु का अल्प प्रयोग) है।

4. वर्गाणां द्वितीयचतुर्थी शलश्च महाप्राणाः—वर्णों के दूसरे, चौथे और शल् (श, ष, स्, ह) वर्णों का बाह्य प्रयत्न महाप्राण (प्राणवायु का अधिक प्रयोग) है।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत—

- (क) माहेश्वरसूत्राणां सङ्ख्या कियती?
- (ख) ह्रस्वः स्वरः कियन्मात्रः?
- (ग) सर्वे स्वराः कस्मिन् प्रत्याहारे आयान्ति?
- (घ) सर्वाणि व्यञ्जनानि कस्मिन् प्रत्याहारे सन्ति?
- (ङ) अवर्णस्य उच्चारणस्थानं किम्?
- (च) नासिका कस्य उच्चारणस्थानम् अस्ति?
- (छ) विसर्गस्य उच्चारणस्थानं किम्?
- (ज) ज, ब, ग, ड, द — इत्येतेषां वर्णानां कृते कः प्रत्याहारः?

2. एकवाक्येन उत्तरत—

- (क) वर्णः कः?
- (ख) स्वरस्य परिभाषा का?
- (ग) किं नाम व्यञ्जनम्?
- (घ) प्रत्याहारस्य कः अर्थः?

- (ङ) कः प्लुतः ज्ञेयः?
 (च) अनुस्वारः कः?
 (छ) शम्भुमते कति वर्णाः मताः?
 (ज) अनुनासिकः कः?

3. रिक्तस्थानानि पूरयत—

- (क) भवेद्ध्रस्वः।
 (ख) व्यञ्जनं।
 (ग) अक्प्रत्याहारे वर्णाः सन्ति।
 (घ) कखाभ्यां जिह्वामूलीयः।
 (ङ) स्वरेभ्यः पश्चात् नासिकया उच्चार्यते।

4. उचितं विकल्पं चिनुत—

- (i) इक्-प्रत्याहारे के के वर्णा आगच्छन्ति?
 (क) इ, उ, ऋ (ख) इ, उ, ऋ, लृ
 (ग) इ, उ, ऋ, लृ, क् (घ) उ, ऋ, लृ, क्
- (ii) यण्प्रत्याहारे इमे वर्णाः आगच्छन्ति—
 (क) य्, व्, र्, ण् (ख) य्, व्, र्, ल्, ण्
 (ग) य्, व्, र्, ल् (घ) व्, र्, ल्, ण्
- (iii) ऊष्मव्यञ्जनवर्णानां कृते कः प्रत्याहारः?
 (क) शल् (ख) हल् (ग) यण् (घ) जश्
- (iv) टवर्गस्य उच्चारणस्थानं किम्?
 (क) कण्ठः (ख) तालु (ग) दन्ताः (घ) मूर्धा
- (v) 'ए' वर्णस्य उच्चारणस्थानम् अस्ति—
 (क) कण्ठोष्ठम् (ख) दन्तोष्ठम् (ग) कण्ठतालु (घ) मूर्धा
- (vi) स्पर्शव्यञ्जनानि सन्ति—
 (क) 20 (ख) 25 (ग) 33 (घ) 48
- (vii) ऋकारस्य उच्चारणस्थानं किम्?
 (क) मूर्धा (ख) दन्ताः (ग) तालु (घ) ओष्ठौ

‘सन्धि’ शब्द ‘सम्’ उपसर्ग पूर्वक ‘धा’ धातु में कि प्रत्यय लगाकर बनता है, जिसका अर्थ होता है—मेल या जोड़। सम् + धा + कि (इ)। सन्धि शब्द संस्कृत भाषा में पुंलिङ्ग है।

दो वर्णों के विकारयुक्त मेल को सन्धि कहते हैं। अर्थात् निकटवर्ती दो वर्णों के मेल से जो विकार या परिवर्तन उत्पन्न होता है, उसे सन्धि कहते हैं।

सन्धि और समास में भेद—दो वर्णों के मेल को सन्धि कहते हैं, अर्थात् सन्धि वर्णविधि है। दो या दो से अधिक पदों (शब्दों) के मेल को समास कहते हैं, अर्थात् समास पदविधि है।

सन्धि के भेद—सन्धियाँ मुख्यतः तीन हैं—

1. अच् सन्धि (स्वर सन्धि)
2. हल् सन्धि (व्यञ्जन सन्धि)
3. विसर्ग सन्धि (ः)

अच् सन्धि—अच् और स्वर पर्यायवाची हैं, क्योंकि ‘अच्’ एक प्रत्याहार है, जिसके अन्तर्गत सभी स्वर आ जाते हैं।

दो स्वर वर्णों के मेल से जो विकार या परिवर्तन उत्पन्न होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं। स्वर सन्धि के आठ भेद हैं—दीर्घ, गुण, यण्, वृद्धि, अयादि, पूर्वरूप, पररूप तथा प्रकृतिभाव।

हल् सन्धि—हल् और व्यञ्जन पर्यायवाची हैं; क्योंकि ‘हल्’ एक प्रत्याहार है, जिसके अन्तर्गत सभी व्यञ्जन आ जाते हैं।

दो व्यञ्जन वर्णों के मेल से जो विकार या परिवर्तन उत्पन्न होता है, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं। व्यञ्जन सन्धि के छः मुख्य भेद हैं—श्चुत्व, ष्टुत्व, जश्त्व, चर्त्व, अनुस्वार तथा अनुनासिक।

विसर्ग (ः) सन्धि—विसर्ग के साथ किसी स्वर या व्यञ्जन के मिलने से जो परिवर्तन होता है, वह विसर्ग सन्धि कहलाता है। विसर्ग सदैव किसी-न-किसी स्वर के बाद होता है।

दीर्घ सन्धि

सूत्र-अकः सवर्णे दीर्घः।

अर्थ—अक् प्रत्याहार से परे सवर्ण अच् हो तो पूर्व एवं पर के स्थान पर दीर्घ एकादेश होता है।
अर्थात् यदि अ या आ, इ या ई, उ या ऊ, ऋ या ॠ के बाद क्रमशः अ या आ, इ या ई, उ या ऊ, ऋ या ॠ आए तो पूर्व-पर (पहले और बाद) दोनों के स्थान में उनका दीर्घ (क्रमशः आ, ई, ऊ, ॠ) हो जाता है।

(i) यदि अ या आ के बाद उसका सवर्ण (सजातीय) अ या आ आए तो पूर्व-पर (पहले-बाद) दोनों के स्थान में उनका दीर्घ (आ) हो जाता है। उदाहरण—

शब्द + अर्थ = शब्दार्थः

श	ब्	द्	अ	+	अर्थः
श	ब्	द्	आ	र्थः	
शब्दार्थः					

वात + आवरणम् = वातावरणम्

वात्	अ	+	आवरणम्
वात्	आ	वरणम्	
वातावरणम्			

‘शब्द’ पद का अन्तिम वर्ण ‘अ’ है, उसके बाद ‘अर्थः’ का ‘अ’ है। (अ + अ) दोनों के स्थान में ‘आ’ एकादेश हो जाएगा।

अन्य उदाहरण—

विद्या + आलयः = विद्यालयः (आ + आ = आ)

धन + अर्थी = धनार्थी (अ + अ = आ)

पुस्तक + आलयः = पुस्तकालयः (अ + आ = आ)

तथा + अपि = तथापि (आ + अ = आ)

महा + आशयः = महाशयः (आ + आ = आ)

(ii) यदि इ या ई के बाद उसका सवर्ण इ या ई आए तो पूर्व-पर (पहले और बाद) दोनों के स्थान में दोनों का दीर्घ (ई) एकादेश हो जाता है। जब दो के स्थान में एक का आदेश होता है तो उसे ‘एकादेश’ कहा जाता है। उदाहरण—

रवि + इन्द्रः = रवीन्द्रः

रू	अ	व्	इ	+	इन्द्र
र	व्	ई	न्द्रः		
रवीन्द्रः					

यहाँ ‘रवि’ शब्द का अन्तिम वर्ण ‘इ’ है। उसके बाद ‘इन्द्रः’ का ‘इ’ आ रहा है, नियमानुसार दोनों (इ + ई) के स्थान पर ‘ई’ एकादेश हो जाएगा।

अन्य उदाहरण—

गिरि + ईशः = गिरीशः (इ + ई = ई)

गिरि + इन्द्रः = गिरीन्द्रः (इ + इ = ई)

गिरि + इन्द्रः = गिरीन्द्रः (इ + इ = ई)

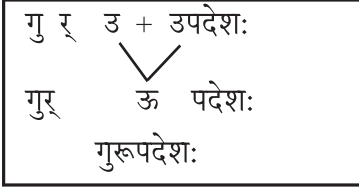
मही + इन्द्रः = महीन्द्रः (ई + इ = ई)

गिरि + ईशः = गिरीशः (इ + ई = ई)

मही + ईशः = महीशः (ई + ई = ई)

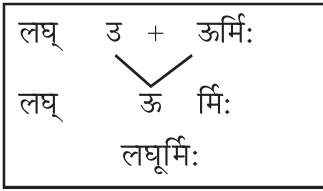
(iii) यदि उ या ऊ के बाद उ या ऊ आए तो पूर्व-पर दोनों के स्थान में 'ऊ' दीर्घ हो जाता है।
उदाहरण—

गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः



यहाँ 'गुरु' शब्द का अन्तिम वर्ण 'उ' है। उसके बाद 'उपदेशः' का 'उ' आ रहा है। नियमानुसार दोनों (उ + उ) के स्थान में 'ऊ' हो जाएगा।

लघु + ऊर्मिः = लघूर्मिः



अन्य उदाहरण—

विधु + उदयः = विधूदयः (उ + उ = ऊ)

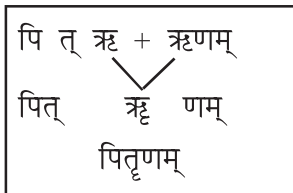
वधू + उत्सवः = वधूत्सवः (ऊ + उ = ऊ)

भानु + ऊर्जा = भानूर्जा (उ + ऊ = ऊ)

वधू + ऊहः (वितर्क) = वधूहः (ऊ + ऊ = ऊ)

(iv) यदि ऋ या ॠ के बाद ऋ या ॠ आए तो पूर्व-पर दोनों के स्थान में दीर्घ 'ॠ' एकादेश हो जाता है। उदाहरण—

पितृ + ऋणम् = पितृणम्



यहाँ 'पितृ' शब्द का अन्तिम वर्ण 'ऋ' है। उसके बाद 'ऋणम्' का 'ऋ' है। नियमानुसार दोनों (ऋ + ऋ) हट जाएँगे। दोनों के स्थान पर दीर्घ 'ॠ' हो जाएगा।

अन्य उदाहरण—

होतृ + ऋकारः = होतृकारः (ऋ + ऋ = ऋ)

मातृ + ऋणम् = मातृणम् (ऋ + ऋ = ऋ),

पितृ + ऋषभः = पितृषभः (ऋ + ऋ = ऋ)

अभ्यासकार्यम्

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

शुभागमनम्, विद्याभ्यासः, सुरालयः, शशाङ्कः, प्रतीक्षालयः, अनाथालयः, रामानुजः, वरुणालयः।

2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए—

सुख + अर्थी, पञ्च + आननम्, सिद्ध + अर्थः, राम + आश्रमः, मदिरा + आलयः, देव + अर्चनम्, सुर + अरिः, हिम + अद्रिः, राम + अवतारः, वाचन + आलयः, संग्रह + आलयः, शस्त्र + आगारम्, हिम + आलयः।

3. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

श्रीशः, कपीशः, मुनीन्द्रः, हरीशः, सतीशः।

4. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए—

सती + इन्द्रः, सुधी + ईशः, कवि + ईश्वरः, इति + इदम्, कपि + इन्द्र, नदी + ईशः।

5. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

वधूत्सवः, गुरूपदेशः, विष्णूदयः, भूर्जा, चमूर्जितम्।

6. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए—

साधु + उपदेशः, भानु + उदयः, मधु + उत्सवः, साधु + उक्तम्, सु + उक्तिः।



गुण सन्धि

सूत्र-आदगुणः

अर्थ—अवर्ण से असवर्ण अच् परे हो, तो पूर्व एवं पर के स्थान पर गुण एकादेश होता है।

गुण— अ, ए, ओ—(इनकी गुण संज्ञा होती है, अर्थात् इनका नाम गुण है। इन तीनों को गुण कहा जाता है।

अ + इ = ए, अ + उ = ओ, अ + ऋ = अर्, अ + लृ = अल्

यदि अ या आ के बाद इ या ई, उ या ऊ, ऋ या ॠ अथवा लृ आए, तो पूर्व-पर दोनों के स्थान में क्रमशः ए, ओ, अर् और अल् हो जाता है।

(i) यदि अ या आ के बाद इ या ई आए तो पूर्व-पर दोनों के स्थान पर 'ए' (गुण एकादेश) हो जाता है।

उप् + इन्द्रः = उपेन्द्रः

उप् अ + इन्द्रः
उप् ए न्द्रः
उपेन्द्रः

यहाँ 'उप्' का अन्तिम वर्ण 'अ' है, उसके बाद 'इन्द्रः' का 'इ' है। अतः यहाँ दोनों (अ + इ) के स्थान पर 'ए' एकादेश हो गया।

अन्य उदाहरण—

देव + इन्द्रः = देवेन्द्रः (अ + इ = ए)

गण + ईशः = गणेशः (अ + ई = ए)

महा + इन्द्रः = महेन्द्रः (आ + इ = ए)

उमा + ईशः = उमेशः (आ + ई = ए)

(ii) यदि अ या आ के बाद उ या ऊ आए, तो पूर्व-पर दोनों के स्थान में 'ओ' (गुण एकादेश) हो जाता है। उदाहरण—

सूर्य + उदयः = सूर्योदयः

सूर्य अ + उदयः
सूर्य ओ दयः
सूर्योदयः

यहाँ 'सूर्य' शब्द का अन्तिम वर्ण 'अ' है। उसके बाद 'उदयः' का 'उ' है। अतः यहाँ नियमानुसार दोनों (अ + उ) के स्थान में 'ओ' हो गया।

अन्य उदाहरण—

भाग्य + उदयः = भाग्योदयः (अ + उ = ओ)

जल + ऊर्मिः = जलोर्मिः (अ + ऊ = ओ)

गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम् (आ + उ = ओ)

वसन्त + उत्सवः = वसन्तोत्सवः (अ + उ = ओ)

विवाह + उत्सवः = विवाहोत्सवः (अ + उ = ओ)

हित + उपदेशः = हितोपदेशः (अ + उ = ओ)

(iii) यदि अ या आ के बाद ऋ या ॠ आए तो पूर्व-पर दोनों के स्थान में 'अर्' (गुण एकादेश) हो जाता है। उदाहरण—

वसन्त + ऋतुः = वसन्तर्तुः

वसन्त् अ + ऋतुः
 वसन्त् अर् तुः
 वसन्तर्तुः

‘वसन्त’ शब्द का अन्तिम वर्ण ‘अ’ है। उसके बाद ‘ऋतुः’ का ‘ऋ’ है। नियमानुसार दोनों (अ + ऋ) के स्थान पर ‘अर्’ एकादेश हो गया।

अन्य उदाहरण—

देव + ऋषिः = देवर्षिः (अ + ऋ = अर्)

ग्रीष्म + ऋतुः = ग्रीष्मर्तुः (अ + ऋ = अर्)

महा + ऋषिः = महर्षिः (आ + ऋ = अर्)

वर्षा + ऋतुः = वर्षर्तुः (आ + ऋ = अर्)

(iv) यदि अ या आ के बाद ‘लृ’ आए तो पूर्व-पर (पहले और बाद) दोनों के स्थान में अल् (गुण एकादेश) हो जाता है। उदाहरण—

तव + लृकारः = तवलृकारः

तव् अ + लृकारः
 तव् अल् कारः
 तवलृकारः

‘तव’ शब्द का अन्तिम वर्ण ‘अ’ है। इसके बाद लृकारः का ‘लृ’ है। नियमानुसार दोनों (अ + लृ) के स्थान में ‘अल्’ एकादेश हो गया।

अन्य उदाहरण—

मम + लृकार = ममलृकारः (अ + लृ = अल्)

अभ्यासकार्यम्

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

तवेदम्, राजेशः, विमलेन्द्रः, सुरेश्वरः, नागेन्द्रः, तथेति, यथेष्ट, अत्रेदम्।

2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए—

महा + ईश्वरः, सुर + इन्द्रः, मम + इच्छा, त्वया + इदम्, लता + इव।

3. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

वसन्तोत्सवः, पुरुषोत्तमः, विवाहोत्सवः, गुणोत्तमः, तवोन्नतिः, वनोत्सवः, महोदधिः।

4. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए—

पुत्र + उत्पत्तिः, मया + उक्तम्, सर्व + उदयः, राजा + उवाच, भारत + उदयः।

वृद्धि सन्धि

सूत्र—‘वृद्धिरेचि’

अर्थ—अवर्ण से परे एच् (ए ओ ऐ औ) प्रत्याहार हो, तो पूर्व और पर के स्थान पर वृद्धि एकादेश होता है।

अर्थात् यदि अ या आ के बाद ए, ऐ, ओ, औ (एच्) में से कोई वर्ण आए तो पूर्व-पर (पहले-बाद) दोनों के स्थान में एक वृद्धि वर्ण (वृद्धि एकादेश) हो जाता है।

(i) यदि अ या आ के बाद ए या ऐ आए तो पूर्व-पर दोनों के स्थान में ‘ऐ’ (वृद्धि एकादेश) हो जाता है। जैसे—

अत्र + एव = अत्रैव

अ त् र् अ + एव
अत् र् ऐ व
अत्रैव

यहाँ ‘अत्र’ शब्द का अन्तिम वर्ण ‘अ’ है। उसके बाद ‘एव’ का ‘ए’ है। नियमानुसार दोनों (अ + ए) के स्थान में ‘ऐ’ एकादेश हो गया।

अन्य उदाहरण—

तथा + एव = तथैव (आ + ए = ऐ)

एक + एकम् = एकैकम् (अ + ए = ऐ)

जन + ऐक्यम् = जनैक्यम् (अ + ऐ = ऐ)

सदा + एव = सदैव (आ + ए = ऐ)

महा + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम् (आ + ऐ = ऐ)

(ii) यदि अ या आ के बाद ओ या औ आए, तो पूर्व-पर दोनों के स्थान में ‘औ’ (वृद्धि एकादेश) हो जाता है। उदाहरण—

जल + ओघः = जलोघः (जल की धारा)

जल् अ + ओघः
जल् औ घः
जलोघः

यहाँ ‘जल’ शब्द का अन्तिम वर्ण ‘अ’ है। उसके बाद ‘ओघः’ का ‘ओ’ आ रहा है। नियमानुसार दोनों (अ + ओ) के स्थान में ‘औ’ एकादेश हो गया।

अन्य उदाहरण-

महा	+	ओषधिः	=	महौषधिः	(आ + ओ = औ)
परम	+	ओषधिः	=	परमौषधिः	(अ + ओ = औ)
कृष्ण	+	औत्कण्ड्यम्	=	कृष्णौत्कण्ड्यम्	(अ + औ = औ)
गङ्गा	+	ओघः	=	गङ्गौघः	(आ + ओ = औ)
महा	+	औत्सुक्यम्	=	महौत्सुक्यम्	(आ + औ = औ)

अभ्यासकार्यम्**1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए-**

अत्रैव, वसुधैव, ममैकः, वनौषधिः, देवौदार्यम्, लतैव, लतैषा, गङ्गैषा।

2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए-

तस्य + एव, सदा + ऐक्यम्, अधुना + एव, सुर + ऐश्वर्यम्, कदा + एव, तव + औदार्यम्, राम + औदार्यम्, वन + ओषधिः, महा + ओषधिः।

यण् सन्धि**सूत्र - 'इको यणचि'**

अर्थ— इक् प्रत्याहार के स्थान पर यण् होता है अच् प्रत्याहार के परे (बाद) में रहने पर।

अर्थात् यदि इक् (इ उ ऋ लृ) के बाद कोई भिन्न (असमान) स्वर आए तो इक् (इ उ ऋ लृ) के स्थान में क्रमशः यण् (य् व् र् ल्) वर्ण हो जाते हैं।

(i) इ या ई के बाद कोई भिन्न (असमान) स्वर आए तो इ या ई के स्थान में 'य्' हो जाता है।

उदाहरण—

प्रति + एकम् = प्रत्येकम्

प्र त् इ + एकम्
प्रत् य् + एकम्
प्रत्येकम्

यहाँ 'प्रति' शब्द के अन्त में 'इ' है। उसके बाद एकम् का 'ए' है। नियमानुसार 'इ' के स्थान में 'य्' आदेश हो जाएगा। तब एकसाथ मिलकर 'प्रत्येकम्' रूप बनेगा।

अन्य उदाहरण-

यदि	+	अपि	=	यद्यपि	इ (य्) + अ = य
इति	+	आदि	=	इत्यादि	इ (य्) + आ = या
इति	+	उक्तम्	=	इत्युक्तम्	इ (य्) + उ = यु
इति	+	एवम्	=	इत्येवम्	इ (य्) + ए = ये

नदी + आवेगः = नद्यावेगः ई (य्) + आ = या

सुधी + उपास्यः = सुध्युपास्यः ई (य्) + उ = यु

(ii) यदि उ या ऊ के बाद कोई भिन्न (असमान) स्वर आए तो उ या ऊ के स्थान पर 'व्' हो जाता है। उदाहरण—

सु + आगतम् = स्वागतम्

स् उ + आगतम्

स् व् + आगतम्

स्वागतम्

यहाँ 'सु' में अन्तिम वर्ण 'उ' है। उसके बाद 'आगतम्' का 'आ' असमान स्वर है। नियमानुसार 'उ' के स्थान में 'व्' आदेश हो जाएगा। तब एक साथ मिलने पर 'स्वागतम्' शब्द बनेगा।

अन्य उदाहरण—

अनु + अयः = अन्वयः उ (व्) + अ = व

गुरु + आदेशः = गुर्वादेशः उ (व्) + आ = वा

अनु + इति = अन्विति उ (व्) + इ = वि

अनु + ईक्षण = अन्वीक्षणः उ (व्) + ई = वी

अनु + एषणम् = अन्वेषणम् उ (व्) + ए = वे

वधू + आगमनम् = वध्वागमनम् ऊ (व्) + आ = वा

भू + आदि = भ्वादि ऊ (व्) + आ = वा

(iii) यदि ऋ या ॠ के बाद कोई भिन्न (असमान) स्वर आए, तो 'ऋ' या 'ॠ' के स्थान में 'र्' हो जाता है। उदाहरण—

पितृ + आदेशः = पित्रादेशः

पितृ ऋ + आदेशः

पितृ र् + आदेशः

पित्रादेशः

यहाँ 'पितृ' शब्द का अन्तिम वर्ण 'ऋ' है। उसके बाद 'आदेश' का 'आ' असमान स्वर है। नियमानुसार 'ऋ' के स्थान पर 'र्' आदेश हो जाएगा तथा एक साथ मिलने पर 'पित्रादेशः' शब्द बनेगा।

अन्य उदाहरण—

पितृ + अनुमतिः = पित्रनुमतिः ऋ (र्) + अ = र

धातृ + अंशः = धात्रंशः ऋ (र्) + अं = रं

पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा ऋ (र्) + आ = रा

मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा ऋ (र्) + आ = रा

(iv) यदि लृ के बाद कोई असमान (भिन्न) स्वर आए, तो 'लृ' के स्थान में 'ल्' हो जाता है।
उदाहरण—

लृ + आकृतिः = लाकृतिः

लृ + आकृतिः लाकृतिः

यहाँ लृ के बाद असमान स्वर आ होने के कारण लृ के स्थान पर 'ल्' आदेश होकर 'लाकृतिः' शब्द बना।

अभ्यासकार्यम्

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

पश्याम्यहम्, इत्याह, इत्यतः, अन्वेषणम्, इत्यलम्, नद्यपि, अस्त्यत्र, करोत्वेष्वम्, भ्रात्राज्ञा, मात्रंशः, गुर्वासनम्, साध्वाचारः, न्यूनम्।

2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए—

अति + उदारः, हरि + आज्ञा, अभि + उदयः, यदि + एवम्, प्रति + अर्पणम्, गुरु + आज्ञा, वधू + एका, इति + एकम्, पितृ + उपदेशः, मधु + आनय, पितृ + आगमनम्।

अयादि सन्धि

सूत्र—“एचोऽयवायावः”

अर्थ—एच् (ए, ओ, ऐ, औ) प्रत्याहार के स्थान क्रम से अय् अव् आय् आव् आदेश होते हैं अच् (स्वर) के परे रहने पर।

अर्थात् यदि एच् (ए, ओ, ऐ, औ) के बाद कोई स्वर आए, तो एच्—ए, ओ, ऐ, औ के स्थान पर क्रमशः अय्, अव्, आय् तथा आव् हो जाता है।

(i) यदि ए के बाद कोई स्वर आए तो 'ए' के स्थान में 'अय्' हो जाता है। उदाहरण—

ने + अनम् = नयनम्

न् ए + अनम् न् अय् + अनम् नयनम्

यहाँ नकारोत्तरवर्ती 'ए' के बाद 'अनम्' का 'अ' स्वर है। नियमानुसार 'ए' के स्थान पर 'अय्' आदेश हो जाएगा। एक साथ मिलने पर रूप बना—'नयनम्'।

अन्य उदाहरण—

चे + अनम् = चयनम्	ए (अय्) + अ = अय
ने + अनम् = नयनम्	ए (अय्) + अ = अय
कवे + ए = कवये	ए (अय्) + ए = अये
हरे + ए = हरये	ए (अय्) + ए = अये
मुने + ए = मुनये	ए (अय्) + ए = अये

(ii) यदि ओ के बाद कोई स्वर आए, तो ओ के स्थान पर अव् हो जाता है। उदाहरण—

पो + अनः = पवनः

प् ओ + अनः प् अव् + अनः पवनः

यहाँ 'पो' शब्द का अन्तिम वर्ण 'ओ' है। उसके बाद 'अनः' का 'अ' स्वर है। नियमानुसार 'ओ' के स्थान पर 'अव्' आदेश हो गया। एक साथ मिलने पर 'पवनः' शब्द बना।

अन्य उदाहरण—

पो + इत्रम् = पवित्रम्	ओ (अव्) + इ = अवि
विष्णो + ए = विष्णवे	ओ (अव्) + ए = अवे
भो + अति = भवति	ओ (अव्) + अ = अव
गुरो + ए = गुरवे	ओ (अव्) + ए = अवे
भानो + ए = भानवे	ओ (अव्) + ए = अवे

(iii) यदि 'ऐ' के बाद कोई स्वर आए, तो 'ऐ' के स्थान में 'आय्' हो जाता है। उदाहरण—

नै + अकः = नायकः

न् ऐ + अकः न् आय् + अकः नायकः
--

इस उदाहरण में 'नै' के अन्तिम वर्ण ऐ के बाद 'अकः' का 'अ' स्वर है। नियमानुसार 'ऐ' के स्थान पर 'आय्' आदेश हो जाएगा। मिलने पर 'नायकः' रूप बनेगा।

अन्य उदाहरण—

चै + अकः = चायकः ऐ (आय्) + अ = आय

(iv) यदि औ के बाद कोई स्वर आए, तो 'औ' के स्थान में 'आव्' हो जाता है। उदाहरण—

पौ + अकः = पावकः

प् औ + अकः

प् आव् + अकः

पावकः

यहाँ 'पौ' शब्द का अन्तिम वर्ण औ है। उसके बाद 'अकः' का 'अ' स्वर है। नियमानुसार 'औ' के स्थान पर 'आव्' आदेश हो जाएगा तथा एक साथ मिलाने पर 'पावकः' रूप बनेगा।

अन्य उदाहरण—

भौ + उकः = भावुकः

औ आव् + उ = आवु

रात्रौ + इव = रात्राविव

औ आव् + इ = आवि

द्वौ + अपि = द्वावपि

औ आव् + अ = आव

पौ + अनः = पावनः

औ आव् + अ = आव

बालकौ + अपि = बालकावपि

औ आव् + अ = आव

अभ्यासकार्यम्

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

भावुकः, नयनम्, रात्रावेव, पवित्रम्, जयति, साधवे, एतावपि।

2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए—

ने + अनम्, नै + अकः, तौ + एव, भानो + ए, रात्रौ + इव, श्रो + अणः, धौ + अनम्, द्वौ + इमा, पो + इत्रः, चे + अः।

व्यञ्जन सन्धि (हल् सन्धि)

दो व्यञ्जन वर्णों के मेल से जो विकार या परिवर्तन उत्पन्न होता है, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं। व्यञ्जन सन्धि के छः मुख्य भेद हैं—श्चुत्व, ष्टुत्व, जश्त्व, चर्त्व, अनुस्वार तथा अनुनासिक। यहाँ पाठ्यक्रम में निर्धारित व्यञ्जन सन्धियाँ ही बताई जायेंगी।

श्चुत्व सन्धि

सूत्र—'स्तोः श्चुना श्चुः'—सकारतवर्गयोः शकारचवर्गाभ्यां योगे शकारचवर्गौ स्तः।

अर्थ—सकार और तवर्ग का शकार चवर्ग के साथ योग होने पर दन्त्य सकार को तालव्य शकार और तवर्ग को चवर्ग होता है।

अर्थात् यदि स् तथा तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के वर्ण का श् तथा चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) के साथ मेल हो, तो स्, तथा तवर्ग के स्थान में क्रमशः 'श्' तथा 'चवर्ग' (च् छ् ज् झ् ञ्) के वर्ण आदेश हो जाते हैं।

(i) स् का श् अथवा चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) के किसी वर्ण से मेल हो, तो 'स्' के स्थान में 'श्' हो जाता है।

उदाहरण—

रामस्	+	शेते	=	रामश्शेते	(स् + श् = 'स्' को 'श्')
रामस्	+	चिनोति	=	रामश्चिनोति	(स् + च = 'स्' को 'श्')
निस्	+	छलः	=	निश्छलः	(स् + छ = 'स्' को 'श्')
हरिस्	+	शेते	=	हरिश्शेते	(स् + श् = 'स्' को 'श्')
कस्	+	चित्	=	कश्चित्	(स् + च = 'स्' को 'श्')
दुस्	+	चरित्रः	=	दुश्चरित्रः	(स् + च = 'स्' को 'श्')
निस्	+	चयः	=	निश्चयः	(स् + च = 'स्' को 'श्')

(ii) यदि त् का श् अथवा चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) के किसी भी वर्ण से मेल हो, तो 'त्' के स्थान पर 'च्' हो जाता है। उदाहरण—

सत् + चित् = सच्चित्

स् अ त् + चित्
स च् + चित्
सच्चित्

अन्य उदाहरण—

उत्	+	चारणम्	=	उच्चारणम्	(त् + च् = 'त्' को 'च्')
सत्	+	चरित्रम्	=	सच्चरित्रम्	(त् + च् = 'त्' को 'च्')
तत्	+	छविः	=	तच्छविः	(त् + छ् = 'त्' को 'च्')
शरत्	+	चन्द्रः	=	शरच्चन्द्रः	(त् + च् = 'त्' को 'च्')
महत्	+	चित्रम्	=	महच्चित्रम्	(त् + च् = 'त्' को 'च्')
महत्	+	छाया	=	महच्छाया	(त् + छ् = 'त्' को 'च्')
विपद्	+	जालम्	=	विपज्जालम्	(द् + ज् = 'द्' को 'ज्')
रिपून्	+	जय	=	रिपूञ्जय	(न् + ज् = 'न्' को 'ज्')

अभ्यासकार्यम्

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

मनश्शीतलम्, इतश्चर्चा, निश्चितम्, निश्छलम्, तच्छक्यम्, उच्छेदः, एतज्जलम्।

2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए—

कस् + चित्, सत् + चित्, विपद् + जालम्, तपस् + चर्या, कवेस् + चमत्कारः, उद् + ज्वलम्, तपस् + चरणम्।

ष्टुत्व सन्धि

सूत्र—‘ष्टुना ष्टुः’ स्तोः ष्टुना योगे ष्टुः स्यात्।

स्तोः = स् तथा तवर्ग — त् थ् द् ध् न्

ष्टुः = ष् तथा टवर्ग —ट् ठ् ड् ढ् ण्

परिभाषा—जिस सन्धि में ष्टुत्व (ष् ट् ठ् ड् ढ् ण्) वर्ण आदेश के रूप में प्रयुक्त होते हैं, वह ष्टुत्व सन्धि कहलाती है।

नियम—यदि स् तथा तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के वर्ण का ष् तथा टवर्ग (ट् ठ् ड् ढ् ण्) के वर्ण के साथ मेल हो, तो स् तथा तवर्ग के स्थान में क्रमशः ष् तथा टवर्ग (ट् ठ् ड् ढ् ण्) के वर्ण आदेश हो जाते हैं। इस नियम को निम्नलिखित उपनियमों के द्वारा सरलता से समझा जा सकता है—

(i) स् का ष् अथवा टवर्ग (ट् ठ् ड् ढ् ण्) के किसी भी वर्ण से मेल हो, तो ‘स्’ के स्थान में ‘ष्’ हो जाता है। उदाहरण—

रामस् + षष्ठः = रामषष्ठः

रामस् + टीकते = रामष्टीकते

रामष् + षष्ठः
रामषष्ठः

रामष् + टीकते
रामष्टीकते

अन्य उदाहरण—धनुस् + टङ्कारः = धनुष्टङ्कारः (स् + ट् = स् को ष्)

(ii) यदि त् का ष् अथवा टवर्ग के किसी भी वर्ण से मेल हो, तो ‘त्’ के स्थान पर ‘ट्’ हो जाता है। उदाहरण—

मत् + टीका = मट्टीका
मट् + टीका
मट्टीका

अन्य उदाहरण—पेष् + ता = पेष्टा (ष् + त् = त् को ट्)

तत् + टीका = तट्टीका (त् + ट् = ‘त्’ को ट्)

(iii) यदि थ् का ष् अथवा टवर्ग के किसी भी वर्ण से मेल हो, तो ‘थ्’ के स्थान में ‘ठ्’ हो जाता है। उदाहरण—

षष् + थः = षष्ठः

षष् + थ् अः
षष् + ठः
षष्ठः

(iv) यदि द् का ष् अथवा टवर्ग के किसी भी वर्ण से मेल हो, तो ‘द्’ के स्थान पर ‘ड्’ हो जाता है। उदाहरण—

उद् + डयनम् = उड्डयनम्

उड् + डयनम्
उड्डयनम्

(v) यदि न् का ष् अथवा टवर्ग के किसी भी वर्ण के साथ मेल हो, तो न् के स्थान में 'ण्' हो जाता है। उदाहरण—

चक्रिन् + ढौकसे = चक्रिण्ढौकसे

चक्रिण् + ढौकसे चक्रिण्ढौकसे

अभ्यासकार्यम्

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

तट्टीका, भवट्टीका, पुष्टः।

2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए—

इष् + तम्, शिवस् + टीकते, मुनिस् + षष्ठः, दृष् + तः, पेष् + ता, इष् + तः, द्रष् + ता, देवस् + टीकते।

जश्त्व सन्धि

सूत्र—‘झलां जशोऽन्ते’—पदान्ते झलां जशः स्युः

अर्थ—पदान्त ‘झल्’ प्रत्याहार के स्थान पर ‘जश्’ प्रत्याहार होता है।

झल्—यह एक प्रत्याहार है, जिसके अन्तर्गत

झ भू घू ढू जू बू गू डू दू खू फू छू ठू थू चू टू तू कू पू शू षू सू हू

अर्थात् सभी वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ वर्ण तथा ऊष्म वर्ण (शू षू सू हू) इसके अन्तर्गत आते हैं—

कवर्ग — कू खू गू घू

चवर्ग — चू छू जू झू

टवर्ग — टू ठू डू ढू

तवर्ग — तू थू दू धू

पवर्ग — पू फू बू भू

ऊष्म वर्ण — शू षू सू हू

अन्ते = पदान्ते—पद के अन्त में स्थित

जश्—जश् एक प्रत्याहार है, जिसके अन्तर्गत सभी वर्गों के तृतीय वर्ण (गू जू डू दू बू) आते हैं।

नियम—पदान्त (शब्दान्त) झल् के स्थान में जश् वर्ण हो जाता है। अर्थात् यदि किसी पद (शब्द) के अन्त में झल् प्रत्याहार का कोई वर्ण आता है, तो उसके स्थान पर उसी वर्ण का तीसरा वर्ण हो जाता है। इस नियम को निम्नलिखित उपनियमों के द्वारा सरलता से समझा जा सकता है।

(i) यदि किसी पद (शब्द) के अन्त में कवर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ वर्ण में से कोई आए, तो उसके स्थान पर कवर्ग का तृतीय वर्ण 'ग्' हो जाता है। उदाहरण—

वाक् + ईशः = वागीशः

वाग् + ईशः वागीशः

यहाँ 'वाक्' शब्द के अन्त में 'क्' है। जो 'झल्' प्रत्याहार का वर्ण है। अतः इसके स्थान पर जश् (ग्) आदेश हुआ।

अन्य उदाहरण—

वाक् + दानम् = वाग्दानम् (क् को ग्)

वाक् + जालम् = वाग्जालम् (क् को ग्)

दिक् + गजः = दिग्गजः (क् को ग्)

दिक् + अम्बरः = दिग्म्बरः (क् को ग्)

(ii) यदि किसी पद (शब्द) के अन्त में 'ज्' को छोड़कर चवर्ग (च् छ् ज् झ्) का कोई भी वर्ण आए, तो उसके स्थान पर चवर्ग का तीसरा वर्ण 'ज्' हो जाता है। उदाहरण—

अच् + अन्तः = अजन्तः

अच् + अन्तः अजन्तः

प्रकृत स्थल में 'अच्' शब्द के अन्त में 'च्' है, जो 'झल्' प्रत्याहार का वर्ण है। अतः इसके स्थान पर जश् (ज्) आदेश हुआ।

(iii) यदि किसी पद (शब्द) के अन्त में टवर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ (ट् ट् ड् ढ्) वर्ण में से कोई भी वर्ण आए, तो उसके स्थान में टवर्ग का तृतीय वर्ण 'ड्' हो जाता है।

उदाहरण—

षट् + एव = षडेव

षट् + एते = षडेते

षट् + एव षडेव

षट् + एते षडेते

अन्य उदाहरण— षट् + दर्शनम् = षड्दर्शनम् (ट् को ड्)

(iv) यदि किसी पद के अन्त में तवर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ (त् थ् द् ध्) वर्ण में से कोई भी आए, तो उसके स्थान पर तवर्ग का तृतीय वर्ण 'द्' हो जाता है। उदाहरण—

चित् + आनन्दः = चिदानन्दः

सत् + आचारः = सदाचारः

चित् + आनन्दः चिदानन्दः

सत् + आचारः सदाचारः

अन्य उदाहरण—

उत्	+	देश्यम्	=	उद्देश्यम्	(त् को द्)
तत्	+	इदम्	=	तदिदम्	(त् को द्)
जगत्	+	ईशः	=	जगदीशः	(त् को द्)
जयत्	+	रथः	=	जयद्रथः	(त् को द्)
सत्	+	धर्मः	=	सद्धर्मः	(त् को द्)
जगत्	+	आनन्दः	=	जगदानन्दः	(त् को द्)
जगत्	+	आधारः	=	जगदाधारः	(त् को द्)
सत्	+	गतिः	=	सद्गतिः	(त् को द्)
उत्	+	गमः	=	उद्गमः	(त् को द्)
कृत्	+	अन्त	=	कृदन्त	(त् को द्)
सत्	+	भक्तिः	=	सद्भक्तिः	(त् को द्)
तत्	+	धनम्	=	तद्धनम्	(त् को द्)
चित्	+	आनन्द	=	चिदानन्दः	(त् को द्)
उत्	+	अन्तः	=	उदन्तः	(त् को द्)
तत्	+	एव	=	तदेव	(त् को द्)
जगत्	+	अम्बा	=	जगदम्बा	(त् को द्)

(v) यदि किसी पद के अन्त में पवर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ वर्ण (प् फ् ब् भ्) में से कोई भी वर्ण आए, तो उसके स्थान पर पवर्ग का तृतीय वर्ण 'ब्' हो जाता है। उदाहरण—

सुप् + अन्तः = सुबन्तः

सुब् + अन्तः

सुबन्तः

अभ्यासकार्यम्

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धिविच्छेद कीजिए—

दिगीशः, चिद्रूपम्, मनाहसति, कालादेव, यदिदम्, भगवद्दानम्, मद्भोगः, अस्मद्देशः, त्वद्देयः, सद्गुणाः, त्वद्व्यवहारः, उद्गमः।

2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए—

षट् + दर्शनम्, एतत् + जलम्, जगत् + बन्धुः, तत् + धनम्, अस्मत् + भारतम्, महत् + अन्तरम्, उत् + गमः।

शब्दरूप

भाषा को जानने के लिए 'शब्द' को जानना अत्यन्त आवश्यक है। संस्कृत व्याकरण की दृष्टि से शब्द तीन प्रकार के होते हैं—(1) सुबन्त (शब्द रूप) (2) तिङन्त (क्रिया रूप) (3) अव्यय। शब्दरूप सुप् प्रत्ययों को लगाकर बनते हैं इसीलिए इनको सुबन्त (सुप् + अन्त) कहा जाता है। यह दो प्रकार के होते हैं—(1) अजन्त, (2) हलन्त।

जिन शब्दों के अन्त में 'अच्' अर्थात् स्वर हों, उन्हें अजन्त या स्वरान्त कहते हैं। यथा—राम (र् + आ + म् + अ) में अन्तिम वर्ण 'अ' है, जो स्वर है अतः 'राम' शब्द स्वरान्त या अजन्त है। अन्य शब्द यथा—कृष्ण, हरि, भानु, लता, नदी आदि।

जिन शब्दों के अन्त में हल् अर्थात् व्यञ्जन हों, उन्हें हलन्त या व्यञ्जनान्त कहते हैं। यथा—राजन् (र् + आ + ज् + अ + न्) शब्द में अन्तिम वर्ण 'न्' है, जो व्यञ्जन है। अतः राजन् शब्द व्यञ्जनान्त या हलन्त है। अन्य शब्द यथा—दिक्, वाच्, सरित्, भवत् आदि।

इस प्रकार अजन्त (स्वरान्त) तथा हलन्त (व्यञ्जनान्त) भेद से शब्द दो प्रकार के होते हैं। ये दोनों प्रकार के शब्द पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग भेद से निम्नलिखित 6 प्रकार के हो जाते हैं—

(1) अजन्त पुलिङ्ग (2) अजन्त स्त्रीलिङ्ग (3) अजन्त नपुंसकलिङ्ग, (4) हलन्त पुलिङ्ग (5) हलन्त स्त्रीलिङ्ग (6) हलन्त नपुंसकलिङ्ग।

(अ) पुलिङ्ग

राम (अकारान्त)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पञ्चमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्

सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामाः!

नोट—बालक, छात्र, नृप, नर, पुत्र, मूषक, मातुल, गज, सर्प, कूप, तडाग, वृक्ष, चन्द्र, अश्व, सुर, देव, इन्द्र, गणेश, मयूर, सिंह, नाग, जन, जनक, खग, सुत, कर, पाद आदि शब्दों के रूप राम के समान ही होते हैं।

हरि (इकारान्त)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	हरिम्	हरी	हरीन्
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
चतुर्थी	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पञ्चमी	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
षष्ठी	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
सप्तमी	हरौ	हर्योः	हरिषु
सम्बोधन	हे हरे!	हे हरी!	हे हरयः!

नोट—कपि, मुनि, कवि, यति, ऋषि, निधि, रवि, अग्नि, मणि, जलधि, पयोधि, अरि, व्याधि, उदधि, गिरि आदि शब्दों के रूप हरि के समान ही होते हैं।

गुरु (उकारान्त)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गुरुः	गुरू	गुरवः
द्वितीया	गुरुम्	गुरू	गुरून्
तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
चतुर्थी	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
पञ्चमी	गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
षष्ठी	गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
सप्तमी	गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
सम्बोधन	हे गुरो!	हे गुरू!	हे गुरवः!

नोट—रिपु, वायु, शिशु, भानु, राहु, विष्णु, विधु, साधु, ऋतु, शम्भु, जन्तु, तरु, बाहु, इन्दु, परशु आदि शब्दों के रूप गुरु की तरह होते हैं।

(ब) स्त्रीलिङ्ग

रमा (लक्ष्मी) आकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीया	रमाम्	रमे	रमाः
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
चतुर्थी	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पञ्चमी	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
षष्ठी	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सम्बोधन	हे रमे!	हे रमे!	हे रमाः!

नोट—लता, माया, सीता, विद्या, शोभा, बालिका, माला, दया, कान्ता, कन्या, गङ्गा, बाला, राधा, चिन्ता, आज्ञा, कमला, छात्रा, शिवा, कोकिला, धरा, सुषमा, संध्या आदि शब्दों के रूप रमा की तरह ही होते हैं।

मति (बुद्धि) इकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मतये, मत्यै	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	हे मते!	हे मती!	हे मतयः!

नोट—बुद्धि, श्रुति, रात्रि, सम्पत्ति, विपत्ति, कान्ति, मुक्ति, उक्ति, भक्ति, आदि शब्दों के रूप मति की तरह ही होते हैं।

वाच् (वाणी) चकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वाक्, वाग्	वाचौ	वाचः
द्वितीया	वाचम्	वाचौ	वाचः

तृतीया	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
चतुर्थी	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
पञ्चमी	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
षष्ठी	वाचः	वाचोः	वाचाम्
सप्तमी	वाचि	वाचोः	वाक्षु
सम्बोधन	हे वाग्/वाक्!	हे वाचौ!	हे वाचः।

नोट—ऋच्, त्वच्, रुच् (कान्ति), शुच् (शोक) आदि के रूप इसी तरह होते हैं।

(स) सर्वनाम

सर्व (सब) – नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

तद् (वह) – नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

अस्मद् (मैं)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	अवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद् (तुम)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

संस्कृत के एक से सौ (१००) तक संख्यावाचक शब्द

एक से चार तक संस्कृत संख्याओं में लिङ्गभेद होता है। जैसे—

पुं.	स्त्री.	नपुं.
एकः	एका	एकम्
द्वौ	द्वे	द्वे
त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि

पाँच से सौ तक के संख्या शब्द तीनों लिङ्गों में समान होते हैं।

पञ्च	सप्तत्रिंशत्	नवषष्टिः
षट्	अष्टात्रिंशत्	सप्ततिः
सप्त	नवत्रिंशत्	एकसप्ततिः
अष्ट (अष्टौ)	चत्वारिंशत्	द्विसप्ततिः
नव	एकचत्वारिंशत्	त्रिसप्ततिः
दश	द्विचत्वारिंशत्	चतुस्सप्ततिः
एकादश	त्रिचत्वारिंशत्	पञ्चसप्ततिः
द्वादश	चतुश्चत्वारिंशत्	षट्सप्ततिः
त्रयोदश	पञ्चचत्वारिंशत्	सप्तसप्ततिः
चतुर्दश	षट्चत्वारिंशत्	अष्टसप्ततिः
पञ्चदश	सप्तचत्वारिंशत्	नवसप्ततिः
षोडश	अष्टचत्वारिंशत्	अशीतिः
सप्तदश	नवचत्वारिंशत्	एकाशीतिः
अष्टादश	पञ्चाशत्	द्वयशीतिः
नवदश	एकपञ्चाशत्	त्र्यशीतिः
विंशतिः	द्विपञ्चाशत्	चतुरशीतिः
एकविंशतिः	त्रिपञ्चाशत्	पञ्चाशीतिः
द्वाविंशतिः	चतुःपञ्चाशत्	षडशीतिः
त्रयोविंशतिः	पञ्चपञ्चाशत्	सप्ताशीतिः
चतुर्विंशतिः	षट्पञ्चाशत्	अष्टाशीतिः
पञ्चविंशतिः	सप्तपञ्चाशत्	नवाशीतिः
षड्विंशतिः	अष्टपञ्चाशत्	नवतिः
सप्तविंशतिः	नवपञ्चाशत्	एकनवतिः
अष्टाविंशतिः	षष्टिः	द्विनवतिः
नवविंशतिः	एकषष्टिः	त्रिनवतिः
त्रिंशत्	द्विषष्टिः	चतुर्नवतिः
एकत्रिंशत्	त्रिषष्टिः	पञ्चनवतिः
द्वात्रिंशत्	चतुष्षष्टिः	षण्णवतिः
त्रयस्त्रिंशत्	पञ्चषष्टिः	सप्तनवतिः
चतुस्त्रिंशत्	षट्षष्टिः	अष्टनवतिः
पञ्चत्रिंशत्	सप्तषष्टिः	नवनवतिः
षट्त्रिंशत्	अष्टषष्टिः	शतम्

अभ्यासकार्यम्

(क) निम्नलिखित में से किसी एक का रूप लिखिए-

1. (अ) 'राम' शब्द का तृतीया विभक्ति का एकवचन, बहुवचन तथा सप्तमी विभक्ति का एकवचन, द्विवचन।
(आ) 'मति' शब्द का चतुर्थी विभक्ति का द्विवचन, बहुवचन तथा षष्ठी विभक्ति का एकवचन, बहुवचन।
(इ) 'वाच्' शब्द का द्वितीया विभक्ति का द्विवचन, बहुवचन तथा पञ्चमी विभक्ति का एकवचन, द्विवचन।
2. निम्नलिखित में से किसी एक का शब्दरूप लिखिए-
(अ) 'सर्व' (नपुं.) शब्द के तृतीया विभक्ति के सभी वचनों में।
(आ) 'मति' शब्द के पञ्चमी एकवचन तथा द्वितीया बहुवचन में।
(इ) 'गुरु' शब्द के चतुर्थी एकवचन में।
3. निम्नलिखित में से किसी एक का रूप लिखिए-
(अ) 'गुरु' शब्द के चतुर्थी विभक्ति के सभी वचनों का रूप।
(आ) 'रमा' शब्द के द्वितीया विभक्ति एकवचन व सप्तमी द्विवचन के रूप।
(इ) 'युष्मत्' शब्द के तृतीया विभक्ति के तीनों वचनों व षष्ठी एकवचन का रूप।
4. निम्नलिखित शब्दों के पञ्चमी विभक्ति के तीनों वचन में रूप लिखिए-
रमा, वाच्, इदम्, युष्मद्, हरि, गुरु।
5. निम्नलिखित में से किसी एक शब्द का रूप लिखिए-
(अ) 'रमा' शब्द के पञ्चमी और षष्ठी विभक्तियों के तीनों वचनों में।
(आ) 'युष्मद्' शब्द के द्वितीया द्विवचन तथा चतुर्थी बहुवचन में।
6. निम्नलिखित में से किसी एक का रूप लिखिए-
(अ) 'तद्' (नपुं.) का तृतीया एवं चतुर्थी विभक्ति के एकवचन तथा बहुवचन में।
(आ) 'मति' का द्वितीया विभक्ति के सभी वचनों तथा तृतीया विभक्ति के एकवचन में।
(इ) गुरु (पुं.) का चतुर्थी के एकवचन तथा पञ्चमी विभक्ति के सभी वचनों में।
7. निम्नलिखित में से किसी एक शब्द का रूप लिखिए-
(अ) 'राम' के तृतीया विभक्ति तथा पञ्चमी विभक्ति के द्विवचन व बहुवचन।
(आ) 'रमा' के चतुर्थी विभक्ति तथा षष्ठी विभक्ति के एकवचन व द्विवचन।
(इ) 'वाच्' शब्द का द्वितीया तथा सप्तमी के द्विवचन व बहुवचन।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए-

(i) 'मत्या' रूप किस विभक्ति व वचन का है?

(क) तृतीया विभक्ति, एकवचन

(ख) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन

(ग) सप्तमी विभक्ति, बहुवचन

(घ) द्वितीया विभक्ति, द्विवचन

(ii) 'रमायै' रूप है रमा शब्द का—

- (क) तृतीया एकवचन (ख) द्वितीया एकवचन
(ग) चतुर्थी एकवचन (घ) षष्ठी एकवचन

(iii) 'सर्वस्य' रूप किस विभक्ति व वचन का है?

- (क) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन (ख) षष्ठी विभक्ति, एकवचन
(ग) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन (घ) प्रथमा विभक्ति, द्विवचन

(iv) 'गुरवे' किस विभक्ति एवं वचन का रूप है?

- (क) द्वितीया विभक्ति, एकवचन (ख) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन
(ग) षष्ठी विभक्ति, एकवचन (घ) सप्तमी विभक्ति, एकवचन

(v) 'तत्' सर्वनाम् का तस्मिन् रूप किस विभक्ति में बनता है?

- (क) पञ्चमी (ख) चतुर्थी (ग) षष्ठी (घ) सप्तमी

(vi) 'मया' रूप किस विभक्ति का है?

- (क) तृतीया में (ख) चतुर्थी में (ग) पञ्चमी में (घ) षष्ठी में

(vii) 'सर्व' शब्द का 'सर्वस्मै' रूप किस विभक्ति में बनता है?

- (क) तृतीया में (ख) चतुर्थी में (ग) पञ्चमी में (घ) षष्ठी में

(viii) 'अस्मत्' किस विभक्ति व वचन का रूप है?

- (क) चतुर्थी विभक्ति, बहुवचन (ख) पञ्चमी विभक्ति, बहुवचन
(ग) षष्ठी विभक्ति, एकवचन (घ) सप्तमी विभक्ति, द्विवचन

(ix) 'गुरु' शब्द का गुरोः रूप किस विभक्ति में बनता है?

- (क) द्वितीया में (ख) चतुर्थी में (ग) षष्ठी में (घ) तृतीया में

(x) 'तस्मात्' किस विभक्ति व वचन का रूप है?

- (क) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन (ख) सप्तमी विभक्ति, एकवचन
(ग) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन (घ) द्वितीया विभक्ति, एकवचन



धातुरूप

(परस्मैपदी, आत्मनेपदी तथा उभयपदी धातुओं के रूप)

जिस शब्द के द्वारा किसी कार्य का करना या होना पाया जाता है, उसे क्रिया कहते हैं। संस्कृत की क्रियाएँ जिन मूल रूपों से बनती हैं, उन्हें धातु कहते हैं। जैसे—‘पठति’ में पठन क्रिया का होना पाया जाता है। अतः ‘पठति’ क्रिया है। यहाँ पर ‘पठ्’ मूल धातु है। धातुओं से ही कालादि का बोध कराने के लिए ‘लकार’ का प्रयोग होता है। लकारों की संख्या दस है—लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लेट्, लोट्, लङ्, लिङ्, लुङ्, लृङ्। इन लकारों में लट्लकार वर्तमान काल के लिए; लिट्, लङ् और लुङ् भूतकाल के लिए लुट् और लृट् लकार भविष्यत् काल के लिए होता है। लोट् और लिङ् लकार आज्ञादि अर्थ के लिए हैं। लेट् लकार वेदों में प्रयुक्त होता है। लृङ् लकार क्रियातिपत्ति अर्थात् क्रिया की असिद्धि अर्थ में प्रयुक्त होता है। इनका विशेष अध्ययन अनुवाद प्रकरण में किया जायेगा। यहाँ पाठ्यक्रमानुसार केवल पाँच लकारों—लट्लकार, लङ्लकार, लृट्लकार, लोट्लकार तथा विधिलिङ् लकार के ही रूप दिये गये हैं।

धातु-रूप (परस्मैपद)

1. पठ् (पढ़ना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	पठति	पठतः	पठन्ति
म.पु.	पठसि	पठथः	पठथ
उ.पु.	पठामि	पठावः	पठामः

लङ् लकार (अनद्यतन भूतकाल)

प्र.पु.	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
म.पु.	अपठः	अपठतम्	अपठत
उ.पु.	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

प्र.पु.	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
म.पु.	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उ.पु.	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

प्र.पु.	पठतु	पठताम्	पठन्तु
म.पु.	पठ	पठतम्	पठत
उ.पु.	पठानि	पठाव	पठाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में)

प्र.पु.	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
म.पु.	पठेः	पठेतम्	पठेत
उ.पु.	पठेयम्	पठेव	पठेम

2. गम्, (गच्छ) (जाना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
म.पु.	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उ.पु.	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लङ् लकार (अनद्यतन भूतकाल)

प्र.पु.	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
म.पु.	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उ.पु.	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

प्र.पु.	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
म.पु.	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उ.पु.	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

प्र.पु.	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
म.पु.	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उ.पु.	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में)

प्र.पु.	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
म.पु.	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उ.पु.	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

3. अस् (होना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	अस्ति	स्तः	सन्ति
म.पु.	असि	स्थः	स्थ
उ.पु.	अस्मि	स्वः	स्मः

लङ् लकार (अनद्यतन भूतकाल)

प्र.पु.	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
म.पु.	आसीः	आस्तम्	आस्त
उ.पु.	आसम्	आस्व	आस्म

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

प्र.पु.	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म.पु.	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ.पु.	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

प्र.पु.	अस्तु, स्यात्	स्ताम्	सन्तु
म.पु.	एधि, स्यात्	स्तम्	स्त
उ.पु.	असानि	असाव	असाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में)

प्र.पु.	स्यात्	स्याताम्	स्युः
म.पु.	स्याः	स्यातम्	स्यात
उ.पु.	स्याम्	स्याव	स्याम

4. शक् (सकना)**लट् लकार (वर्तमान काल)**

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
म.पु.	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ
उ.पु.	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः

लङ् लकार (अनद्यतन भूतकाल)

प्र.पु.	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
म.पु.	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
उ.पु.	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

प्र.पु.	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति
म.पु.	शक्ष्यसि	शक्ष्यथः	शक्ष्यथ
उ.पु.	शक्ष्यामि	शक्ष्यावः	शक्ष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

प्र.पु.	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
म.पु.	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
उ.पु.	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में)

प्र.पु.	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
म.पु.	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
उ.पु.	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम

5. प्रच्छ् (पूछना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
म.पु.	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
उ.पु.	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः

लङ् लकार (अनद्यतन भूतकाल)

प्र.पु.	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
म.पु.	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उ.पु.	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

प्र.पु.	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति
म.पु.	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ
उ.पु.	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

प्र.पु.	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
म.पु.	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
उ.पु.	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में)

प्र.पु.	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
म.पु.	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत्
उ.पु.	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

धातु-रूप (आत्मनेपद)

लभ् (पाना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	लभते	लभेते	लभन्ते
म.पु.	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उ.पु.	लभे	लभावहे	लभामहे

लङ् लकार (अनद्यतन भूतकाल)

प्र.पु.	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
म.पु.	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उ.पु.	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

प्र.पु.	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
म.पु.	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उ.पु.	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

प्र.पु.	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
म.पु.	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उ.पु.	लभै	लभावहै	लभामहै

विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में)

प्र.पु.	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
म.पु.	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उ.पु.	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

धातु-रूप (उभयपद)**1. याच् (माँगना)****परस्मैपद****लट् लकार (वर्तमान काल)**

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	याचति	याचतः	याचन्ति
म.पु.	याचसि	याचथः	याचथ
उ.पु.	याचामि	याचावः	याचामः

लङ् लकार (अनद्यतन भूतकाल)

प्र.पु.	अयाचत्	अयाचताम्	अयाचन्
म.पु.	अयाचः	अयाचतम्	अयाचत
उ.पु.	अयाचम्	अयाचाव	अयाचाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

प्र.पु.	याचिष्यति	याचिष्यतः	याचिष्यन्ति
म.पु.	याचिष्यसि	याचिष्यथः	याचिष्यथ
उ.पु.	याचिष्यामि	याचिष्यावः	याचिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

प्र.पु.	याचतु	याचताम्	याचन्तु
म.पु.	याच	याचतम्	याचत
उ.पु.	याचानि	याचाव	याचाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में)

प्र.पु.	याचेत्	याचेताम्	याचेयुः
म.पु.	याचेः	याचेतम्	याचेत
उ.पु.	याचेयम्	याचेव	याचेम

(आत्मनेपद)

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	याचते	याचेते	याचन्ते
म.पु.	याचसे	याचेथे	याचध्वे
उ.पु.	याचे	याचावहे	याचामहे

लङ् लकार (अनद्यतन भूतकाल)

प्र.पु.	अयाचत	अयाचेताम्	अयाचन्त
म.पु.	अयाचथाः	अयाचेथाम्	अयाचध्वम्
उ.पु.	अयाचे	अयाचावहि	अयाचामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

प्र.पु.	याचिष्यते	याचिष्येते	याचिष्यन्ते
म.पु.	याचिष्यसे	याचिष्येथे	याचिष्यध्वे
उ.पु.	याचिष्ये	याचिष्यावहे	याचिष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

प्र.पु.	याचताम्	याचेताम्	याचन्ताम्
म.पु.	याचस्व	याचेथाम्	याचध्वम्
उ.पु.	याचै	याचावहै	याचामहै

विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में)

प्र.पु.	याचेत	याचेयाताम्	याचेरन्
म.पु.	याचेथाः	याचेयाथम्	याचेध्वम्
उ.पु.	याचेय	याचेवहि	याचेमहि

2. ग्रह (लेना, ग्रहण करना)

(परस्मैपद)

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
म.पु.	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
उ.पु.	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः

लङ् लकार (अनद्यतन भूतकाल)

प्र.पु.	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
म.पु.	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
उ.पु.	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

प्र.पु.	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति
म.पु.	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यथ
उ.पु.	ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्यावः	ग्रहीष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

प्र.पु.	गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
म.पु.	गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत
उ.पु.	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में)

प्र.पु.	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः
म.पु.	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
उ.पु.	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम

(आत्मनेपद)**लट् लकार (वर्तमान काल)**

प्र.पु.	गृह्णीते	गृह्णाते	गृह्णते
म.पु.	गृह्णीषे	गृह्णाथे	गृह्णीध्वे
उ.पु.	गृह्णे	गृह्णीवहे	गृह्णीमहे

लङ् लकार (अनद्यतन भूतकाल)

प्र.पु.	अगृह्णीत	अगृह्णाताम्	अगृह्णत
म.पु.	अगृह्णीथाः	अगृह्णाथाम्	अगृह्णीध्वम्
उ.पु.	अगृहिण	अगृह्णीवहि	अगृह्णीमहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

प्र.पु.	ग्रहीष्यते	ग्रहीष्येते	ग्रहीष्यन्ते
म.पु.	ग्रहीष्यसे	ग्रहीष्येथे	ग्रहीष्यध्वे
उ.पु.	ग्रहीष्ये	ग्रहीष्यावहे	ग्रहीष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

प्र.पु.	गृह्णीताम्	गृह्णाताम्	गृह्णताम्
म.पु.	गृह्णीष्व	गृह्णाथाम्	गृह्णीध्वम्
उ.पु.	गृह्णै	गृह्णावहै	गृह्णामहै

विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में)

प्र.पु.	गृह्णीत	गृह्णीयाताम्	गृह्णीरन्
म.पु.	गृह्णीथाः	गृह्णीयाथाम्	गृह्णीध्वम्
उ.पु.	गृह्णीय	गृह्णीवहि	गृह्णीमहि

3. कथ् (कहना)

(परस्मैपद)

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	कथयति	कथयतः	कथयन्ति
म.पु.	कथयसि	कथयथः	कथयथ
उ.पु.	कथयामि	कथयावः	कथयामः

लङ् लकार (अनद्यतन भूतकाल)

प्र.पु.	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
म.पु.	अकथयः	अकथयतम्	अकथयत
उ.पु.	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

प्र.पु.	कथयिष्यति	कथयिष्यतः	कथयिष्यन्ति
म.पु.	कथयिष्यसि	कथयिष्यथः	कथयिष्यथ
उ.पु.	कथयिष्यामि	कथयिष्यावः	कथयिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

प्र.पु.	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु
म.पु.	कथय	कथयतम्	कथयत
उ.पु.	कथयानि	कथयाव	कथयाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में)

प्र.पु.	कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयुः
म.पु.	कथयेः	कथयेतम्	कथयेत
उ.पु.	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम

(आत्मनेपद)

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	कथयते	कथयेते	कथयन्ते
म.पु.	कथयसे	कथयेथे	कथयध्वे
उ.पु.	कथये	कथयावहे	कथयामहे

लङ् लकार (अनद्यतन भूतकाल)

प्र.पु.	अकथयत	अकथयेताम्	अकथयन्त
म.पु.	अकथयथाः	अकथयेथाम्	अकथयध्वम्
उ.पु.	अकथये	अकथयावहि	अकथयामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

प्र.पु.	कथयिष्यते	कथयिष्येते	कथयिष्यन्ते
म.पु.	कथयिष्यसे	कथयिष्येथे	कथयिष्यध्वे
उ.पु.	कथयिष्ये	कथयिष्यावहे	कथयिष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

प्र.पु.	कथयताम्	कथयेताम्	कथयन्ताम्
म.पु.	कथयस्व	कथयेथाम्	कथयध्वम्
उ.पु.	कथयै	कथयावहै	कथयामहै

विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में)

प्र.पु.	कथयेत	कथयेयाताम्	कथयेरन्
म.पु.	कथयेथाः	कथयेयाथाम्	कथयेध्वम्
उ.पु.	कथयेय	कथयेवहि	कथयेमहि

अभ्यासकार्यम्

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. किसी एक धातु का रूप लिखिए-

- (अ) 'गम्' धातु का लट् लकार उत्तम पुरुष एकवचन तथा द्विवचन में।
 (आ) 'पठ्' धातु का लोट् लकार मध्यम पुरुष द्विवचन तथा बहुवचन में।
 (इ) 'शक्' धातु (परस्मैपद) विधिलिङ् लकार प्रथम पुरुष एकवचन तथा बहुवचन में।

2. निम्नलिखित में से किसी एक धातु का रूप लिखिए-

- (अ) 'गम्' धातु विधिलिङ् लकार उत्तम पुरुष के तीनों वचना।
 (आ) 'अस्' धातु लट् लकार उत्तम पुरुष एकवचन।
 (इ) 'प्रच्छ्' धातु लृट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन व बहुवचन।

3. 'पठ्' धातु लट् लकार उत्तम पुरुष के एकवचन तथा द्विवचन में क्या रूप होगा?

4. निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखिए—

(अ) 'याच्' धातु लट् लकार, मध्यम पुरुष एकवचन।

(आ) 'कथ्' धातु लृट् लकार, प्रथम पुरुष एकवचन।

5. निम्नलिखित में से किसी एक धातु का रूप लिखिए—

(अ) 'पठ्' धातु का लोट् लकार उत्तम पुरुष द्विवचन तथा बहुवचन में।

(आ) 'शक्' धातु का लङ् लकार मध्यम पुरुष एकवचन तथा द्विवचन में।

(इ) 'लभ्' धातु का लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन तथा द्विवचन में।

6. किसी एक धातु का रूप लिखिए—

(अ) 'अस्' धातु का लङ् लकार उत्तम पुरुष द्विवचन तथा बहुवचन में।

(आ) 'पठ्' धातु का लट् लकार मध्यम पुरुष द्विवचन तथा बहुवचन में।

(इ) 'शक्' धातु (परस्मैपद) विधिलिङ् लकार प्रथम पुरुष एकवचन तथा बहुवचन में।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए—

(i) 'अस्ति' किस लकार का रूप है?

(क) लृट्

(ख) लट्

(ग) लङ्

(घ) लोट्

(ii) 'पठामः' धातु रूप का पुरुष व वचन है—

(क) प्रथम पुरुष बहुवचन

(ख) मध्यम पुरुष एकवचन

(ग) उत्तम पुरुष बहुवचन

(घ) प्रथम पुरुष एकवचन

(iii) 'गच्छ' रूप किस लकार का है?

(क) लृट् का

(ख) लङ् का

(ग) विधिलिङ् का

(घ) लोट् का

(iv) 'पठिष्यति' किस लकार का रूप है?

(क) लट्

(ख) लङ्

(ग) लृट्

(घ) लोट्

(v) लृट् लकार सम्बन्धित है—

(क) वर्तमान काल से

(ख) भविष्यत् काल से

(ग) आज्ञार्थक से

(घ) भूतकाल से

(vi) 'शक्ष्यति' किस लकार का रूप है?

(क) लोट् लकार

(ख) लृट् लकार

(ग) लट् लकार

(घ) लङ् लकार

(vii) 'पठिष्यामि' धातुरूप का पुरुष और वचन है—

(क) प्रथम पुरुष, बहुवचन

(ख) मध्यम पुरुष, एकवचन

(ग) उत्तम पुरुष, एकवचन

(घ) प्रथम पुरुष, बहुवचन

(viii) 'अपठत्' रूप किस लकार का है?

(क) लट् लकार का

(ख) लोट् लकार का

(ग) लङ् लकार का

(घ) विधिलिङ् लकार का

- (ix) 'पठत' किस लकार का रूप है?
 (क) लट् (ख) लोट् (ग) विधिलिङ् (घ) लङ्
- (x) 'गच्छानि' रूप किस लकार का है?
 (क) लट् लकार (ख) लोट् लकार (ग) लृट् लकार (घ) लङ् लकार
- (xi) 'गृह्णाति' धातु रूप का पुरुष व वचन है—
 (क) प्रथम पुरुष एकवचन (ख) मध्यम पुरुष एकवचन
 (ग) उत्तम पुरुष द्विवचन (घ) इनमें से कोई नहीं
- (xii) 'गच्छेव' किस पुरुष और वचन का रूप है?
 (क) प्रथम पुरुष बहुवचन (ख) मध्यम पुरुष बहुवचन
 (ग) उत्तम पुरुष एकवचन (घ) उत्तम पुरुष द्विवचन
- (xiii) 'गच्छतु' रूप किस लकार का है?
 (क) लोट् (ख) विधिलिङ् (ग) लङ् (घ) लृट्
- (xiv) 'पृच्छामः' रूप में पुरुष एवं वचन लिखिए।
 (क) उत्तम पुरुष बहुवचन (ख) प्रथम पुरुष बहुवचन
 (ग) मध्यम पुरुष बहुवचन (घ) उत्तम पुरुष एकवचन
- (xv) पठेयुः किस लकार का रूप है?
 (क) लट्लकार (ख) लोट्लकार (ग) लृट्लकार (घ) विधिलिङ् लकार



समास

समास शब्द का अर्थ है—‘समसनं समासः’ अर्थात् संक्षेपीकरण को समास कहते हैं। जब दो या दो से अधिक पद मिलकर एक पद हो जायें, तो उसे समास कहते हैं। यथा—रामश्च लक्ष्मणश्च इति रामलक्ष्मणौ। यहाँ ‘रामः’ तथा ‘लक्ष्मणः’ दोनों पद अपनी-अपनी विभक्तियों को छोड़कर एकपद बन गये, अतः यहाँ समास है। दूसरे शब्दों में यदि कहें, तो अनेक पदों का मिलकर एक पद हो जाना समास है। **अनेकपदानां एकपदीभवनं समासः।**

समास के भेद

समास के पाँच प्रकार हैं—

1. केवल समास
2. अव्ययीभाव समास
3. तत्पुरुष समास
4. द्वन्द्व समास
5. बहुब्रीहि समास

तत्पुरुष समास का भेद कर्मधारय है और कर्मधारय का भेद द्विगु है।

1. तत्पुरुष समास

“प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः”।

इस समास में प्रायः उत्तर पद के अर्थ की प्रधानता होती है। इसके दोनों पदों में अलग-अलग विभक्तियाँ होती हैं। कहीं-कहीं दोनों पदों में समान विभक्ति भी होती है। ऐसी स्थिति में पूर्वपद की विभक्ति का लोप करके समस्त पद बनाया जाता है। इसमें द्वितीया से सप्तमी तक की विभक्ति का लोप करके समस्त पद बनाया जाता है।

(1) द्वितीया तत्पुरुष

विग्रह वाक्य	समस्त पद
---------------------	-----------------

शरणम् आगतः	= शरणागतः
------------	-----------

शरणं प्राप्तः	= शरणप्राप्तः
---------------	---------------

सुखं प्राप्तः	= सुखप्राप्तः
---------------	---------------

दुःखम् अतीतः	= दुःखातीतः
गजम् आरूढः	= गजारूढः
भयम् आपन्नः	= भयापन्नः

(2) तृतीया तत्पुरुष

विग्रह वाक्य	समस्त पद
धनेन हीनः	= धनहीनः
विद्यया हीनः	= विद्याहीनः
नखैः भिन्नः	= नखभिन्नः
मासेन पूर्वः	= मासपूर्वः
पित्रा युक्तः	= पितृयुक्तः
सर्पेण दष्टः	= सर्पदष्टः
शरेण विद्धः	= शरविद्धः
अग्निना दग्धः	= अग्निदग्धः
नेत्राभ्यां हीनः	= नेत्रहीनः
पादेन खञ्जः	= पादखञ्जः
हरिणा त्रातः	= हरित्रातः

चतुर्थी तत्पुरुष

विग्रह वाक्य	समस्त पद
भूताय बलिः	= भूतबलिः
दानाय पात्रम्	= दानपात्रम्
यूपाय दारु	= यूपदारु
स्नानाय इदम्	= स्नानार्थम्
तस्मै इदम्	= तदर्थम्

पञ्चमी तत्पुरुष

विग्रह वाक्य	समस्त पद
चौरात् भयम्	= चौरभयम्
रोगात् मुक्तः	= रोगमुक्तः
अश्वात् पतितः	= अश्वपतितः
स्वर्गात् पतितः	= स्वर्गपतितः
सिंहात् भीतः	= सिंहभीतः
बन्धनात् मुक्तः	= बन्धनमुक्तः
मार्गात् भ्रष्टः	= मार्गभ्रष्टः

षष्ठी तत्पुरुष

विग्रह वाक्य	समस्त पद
राज्ञः पुरुष	= राजपुरुषः
देवानां पतिः	= देवपतिः
नराणां पतिः	= नरपतिः
देवस्य पूजा	= देवपूजा
गङ्गायाः जलम्	= गङ्गाजलम्
प्रजायाः पतिः	= प्रजापतिः
हिमस्य आलयः	= हिमालयः

सप्तमी तत्पुरुष

विग्रह वाक्य	समस्त पद
युद्धे निपुणः	= युद्धनिपुणः
कार्ये कुशलः	= कार्यकुशलः
शास्त्रे प्रवीणः	= शास्त्रप्रवीणः
जले मग्नः	= जलमग्नः
सभायां पण्डितः	= सभापण्डितः
नरेषु उत्तम	= नरोत्तमः
कलासु निपुणः	= कलानिपुणः
कार्ये दक्षः	= कार्यदक्षः

नञ् तत्पुरुष

जब 'न' का किसी संज्ञा शब्द के साथ समास होता है, तब वह नञ् तत्पुरुष समास कहलाता है। नञ् समास का 'न' जब किसी व्यञ्जन वर्ण से मिलता है तब 'न्' का लोप हो जाता है और 'अ' शेष रहता है तथा जब किसी स्वर के साथ मिलता है तब 'अन्' में परिवर्तित हो जाता है। जैसे—

विग्रह वाक्य	समस्त पद
न धार्मिकः	= अधार्मिकः
न सुखम्	= असुखम्
न योग्यः	= अयोग्यः
न सत्यम्	= असत्यम्
न अन्तः	= अनन्तः
न उपस्थितः	= अनुपस्थितः

न उचितम्	= अनुचितम्
न उपयोगी	= अनुपयोगी
न अश्वः	= अनश्वः

अभ्यासकार्यम्

1. अधोलिखित पदों का विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए—

अश्वपतितः, शरणागतः, धनहीनः, अग्निदग्धः, दानपात्रम्, भूतबलिः, चौरभयम्, राजपुरुषः, अनश्वः, कार्यकुशलः

2. समस्त पद बताइये—

ग्रामं गतः	=
मासेन पूर्वः	=
भूताय बलिः	=
बन्धनात् मुक्तः	=
विद्यायाः आलयः	=
न योग्यः	=
न एकता	=

कर्मधारय समास

“विशेषणं विशेष्येण बहुलम्”

यह तत्पुरुष समास का भेद है। तत्पुरुष समास में जब विग्रह वाक्य में पूर्वपद एवं उत्तर पद की विभक्ति समान रहती है तब वह समानाधिकरण तत्पुरुष कर्मधारय कहलाता है। इसके दोनों पद प्रथमा विभक्ति में होते हैं। लिङ्ग, विभक्ति और वचन भी समान होते हैं।

1. विशेषण पूर्वपद कर्मधारय—इस समास में पूर्वपद विशेषण तथा उत्तरपद विशेष्य होता है। जैसे—

कृष्णः सर्पः	= कृष्णसर्पः
नीलम् उत्पलम्	= नीलोत्पलम्
मधुरं फलम्	= मधुरफलम्
श्रेष्ठः पुरुषः	= श्रेष्ठपुरुषः
महान् देवः	= महादेवः
विशालः वृक्षः	= विशालवृक्षः
महान् पुरुषः	= महापुरुषः
शुभं कार्यम्	= शुभकार्यम्

2. **उपमान पूर्वपद कर्मधारय**—जिस समास में उपमान का पहले प्रयोग हो, उसे उपमान पूर्वपद कर्मधारय समास कहते हैं। इसका इव के साथ प्रयोग होता है। जैसे—

घन इव श्यामः	= घनश्यामः
दुग्धम् इव धवलम्	= दुग्धधवलम्
चन्द्र इव मुखम्	= चन्द्रमुखम्
कमलम् इव कोमलम्	= कमलकोमलम्
नीरद इव श्यामः	= नीरदश्यामः

3. **उपमानोत्तरपद कर्मधारय**—जिस समास में पहले उपमेय और बाद में उपमान हो, उसे उपमानोत्तरपद कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे—

मुखं चन्द्रः इव	= मुखचन्द्रः
नरः सिंहः इव	= नरसिंहः
पुरुषः व्याघ्रः इव	= पुरुषव्याघ्रः

अभ्यासकार्यम्

1. निम्नलिखित पदों में समास विग्रह कीजिए तथा समास का नाम लिखिए—

मधुरफलम्, महाजनः, कमलकोमलम्, कृष्णसर्पः

द्वन्द्व समास

‘उभयपदार्थप्रधानः द्वन्द्वः’ जिस समास में दोनों पदों के अर्थ की प्रधानता होती है वहाँ द्वन्द्व समास होता है। इसके विग्रह में ‘च’ का प्रयोग होता है जैसे—रामश्च कृष्णश्च रामकृष्णौ। यहाँ राम और कृष्ण दोनों पदों की प्रधानता है। द्वन्द्व समास के तीन भेद माने गये हैं।

- (1) इतरेतर द्वन्द्व
- (2) समाहार द्वन्द्व
- (3) एकशेष द्वन्द्व

1. **इतरेतर द्वन्द्व समास**—जिस समस्त पद में दो या दो से अधिक पदों का योग होता है, उनमें से दो पदों में द्विवचन तथा अधिक पदों के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है। लिङ्ग उत्तरवर्ती पद के अनुसार होता है। जैसे—

भीमश्च अर्जुनश्च	= भीमार्जुनौ
पिता च पुत्रश्च	= पितापुत्रौ
रामश्च कृष्णश्च	= रामकृष्णौ

पार्वती च परमेश्वरश्च	= पार्वतीपरमेश्वरौ
धर्मश्च अर्थश्च कामश्च मोक्षश्च	= धर्मार्थकाममोक्षाः
सीता च रामश्च	= सीतारामौ
पुत्रश्च कन्या च	= पुत्रकन्ये
राधा च कृष्णश्च	= राधाकृष्णौ
धनम् च जनम् च यौवनम् च	= धनजनयौवनानि

2. समाहार द्वन्द्व—समूह को समाहार कहते हैं, समाहार अर्थ में विद्यमान जो चकार उसके साथ समास होने पर समाहार द्वन्द्व होता है। जैसे—

हस्तौ च पादौ च इत्येतेषां समाहारः	= हस्तपादम्
अहिश्च नकुलश्च तयोः समाहारः	= अहिनकुलम्
आहारश्च निद्रा च भयम् इत्येतेषां समाहारः	= आहारनिद्राभयम्
पाणी च पादौ च इत्येतेषां समाहारः	= पाणिपादम्

एकशेष द्वन्द्व समास

जिस द्वन्द्व समास में एक ही पद शेष रह जाता है और अन्य पदों का लोप हो जाता है, वह एक शेष द्वन्द्व समास कहलाता है। विग्रह में आये पदों की संख्या के आधार पर वचन एवं लिङ्ग पर पद के अनुसार निर्धारित होते हैं। जैसे—

बालकश्च बालकश्च बालकश्चः	= बालकाः
फलम् च फलम् च फलम् च	= फलानि

पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्दों का समास होने पर पुंलिङ्ग ही शेष रहता है। जैसे—

हंसी च हंसश्च	= हंसौ
माता च पिता च	= पितरौ
स्वसा च भ्राता च	= भ्रातरौ

अभ्यासकार्यम्

1. समस्त पद निर्माण कर समास का नाम लिखिए—

रामश्च लक्ष्मणश्च, भीमश्च अर्जुनश्च, पाणी च पादौ च, पिता च माता च।

2. समास विग्रह कीजिए तथा समास का नाम लिखिए—

धर्मार्थकाममोक्षाः, अहिनकुलम्, हंसौ।

कारक एवं विभक्ति

संस्कृत भाषा में 'कारक प्रकरण' को ठीक से समझे बिना शुद्ध वाक्यार्थ तथा वाक्यनिर्माण विधि को हम नहीं समझ सकते। अतः 'कारक प्रकरण' का विशेष महत्त्व है। 'कृ' धातु से कर्ता अर्थ में 'ण्वुल्' प्रत्यय जोड़कर कारक शब्द की व्युत्पत्ति होती है जिसका अर्थ है क्रिया को करने वाला—'क्रियां करोति इति कारकम्'।

कारक की परिभाषा—जो क्रिया को उत्पन्न करे तथा क्रिया में अन्वित होता है, वह कारक है। 'क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्' अथवा 'क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्'। अर्थात् क्रिया का जो जनक हो अथवा क्रिया के साथ जिसका सीधा सम्बन्ध (साक्षात् अन्वय) हो वह कारक है। जैसे—'रामः रणे रावणं बाणेन हतवान्' (राम ने युद्ध में रावण को बाण से मारा)। इस वाक्य में मारने की क्रिया (हनन व्यापार) के साथ राम, रण, रावण और बाण का सम्बन्ध है। अतः राम, रण, रावण और बाण ये कारक कहे जायेंगे। क्रिया की सिद्धि के लिए छः प्रकार के कारक होते हैं, इन कारकों को ही कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण कहते हैं। अतः संस्कृत में ये ही छः कारक होते हैं। कहा भी गया है—

कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।

अपादानाधिकरणे इत्याहुः कारकाणि षट्।।

अर्थात् कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण ये ही छः कारक हैं।

विभक्ति—जो संख्या तथा कारक का बोध कराये वह विभक्ति है—'संख्याकारकबोधयित्री विभक्तिः' जैसे रामः इस प्रथमा विभक्ति के द्वारा राम एक संख्यावाची तथा कर्ता कारक का बोध हो रहा है। अतः संख्या और कारक की बोधिका विभक्ति होती है।

विभक्ति के मुख्यतः दो भेद होते हैं—(1) कारक विभक्ति (2) उपपदविभक्ति

क्रिया का आश्रय लेकर कारकों को प्रकट करने वाली विभक्ति 'कारक विभक्ति' है। जैसे—रामः पुस्तकं पठति। (राम पुस्तक पढ़ता है)। यहाँ पढ़ना क्रिया का आश्रय लेकर पुस्तक शब्द की कर्मसंज्ञा एवं 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति हुई है।

जब किसी विशिष्ट पद के आश्रय या योग से विभक्ति होती है, तो उसे उपपद विभक्ति कहते हैं। जैसे—‘हरये नमः’ यहाँ ‘नमः’ पद के योग में चतुर्थी विभक्ति हुई है।

विभक्तियों की संख्या सात है—प्रथमा विभक्ति, द्वितीया विभक्ति, तृतीया विभक्ति, चतुर्थी विभक्ति, पञ्चमी विभक्ति, षष्ठी विभक्ति, सप्तमी विभक्ति। सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है। अतः सम्बोधन कोई अलग विभक्ति नहीं होती।

कारक और विभक्ति के सम्बन्ध को निम्न तालिका द्वारा समझा जा सकता है।

विभक्ति	कारक	कारक चिह्न
प्रथमा	कर्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से, के द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए, को
पञ्चमी	अपादान	से, (अलग होने में)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, की, के, रा, री, रे, ना, नी, ने
सप्तमी	अधिकरण	में, पर
प्रथमा	सम्बोधन	हे, भो, अरे, ओ

कारकों का परिचय

1. कर्ता कारक (प्रथमा विभक्ति)

सूत्र—‘स्वतन्त्रः कर्ता’

किसी कार्य को स्वतन्त्रता पूर्वक करने वाले को कर्ता कहते हैं। कर्ता में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है।

उदाहरण—“रामः गृहं गच्छति” इस वाक्य में ‘गच्छति’ क्रिया को ‘राम’ स्वतन्त्र रूप से सम्पन्न कर रहा है, अतः ‘राम’ कर्ता है।

2. कर्म-कारक (द्वितीया विभक्ति)

सूत्र—‘कर्तुरीप्सिततमं कर्म’ अर्थात् कर्ता अपनी क्रिया द्वारा जिस पदार्थ को सबसे अधिक चाहता है, वह कर्म है।

‘कर्मणि द्वितीया’—इस सूत्र के अनुसार कर्म कारक में द्वितीया विभक्ति होती है। कर्म में द्वितीया विभक्ति केवल कर्तृवाच्य में होती है—

उदाहरण—‘रामः ग्रन्थं पठति’। (राम ग्रन्थ पढ़ता है)

‘अभितः परितः समया निकषा हा प्रतियोगेऽपि’

अभितः (दोनों ओर, चारों ओर), परितः (चारों ओर), उभयतः (दोनों ओर), समया (पास), निकषा (निकट), हा (हाय), और प्रति (की ओर) के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

- उदाहरण**—(1) ग्रामम् अभितः आम्रवृक्षाः सन्ति। (गाँव के दोनों ओर या सभी ओर आम के वृक्ष हैं।)
 (2) नगरं परितः नदी अस्ति। (नगर के चारों ओर नदी है।)
 (3) विद्यालयं निकषा वृक्षाः सन्ति। (विद्यालय के निकट वृक्ष हैं।)
 (4) मन्दिरम् उभयतः वृक्षाः सन्ति। (मन्दिर के दोनों ओर वृक्ष हैं।)

3. करण-कारक (तृतीया विभक्ति)

सूत्र—‘साधकतमं करणम्’ अर्थात् क्रिया की सिद्धि में अत्यन्त सहायक साधन को करण-कारक कहते हैं।

उदाहरण—सः हस्ताभ्यां कार्यं करोति (वह हाथों से कार्य करता है।)

इस उदाहरण में हाथों के द्वारा कार्य सम्पन्न हो रहा है, अर्थात् कार्य के सम्पादन में हाथ सर्वाधिक सहायक है। अतः ‘हस्ताभ्यां’ करण कारक है।

‘कर्तृकरणयोस्तृतीया’ भाववाच्य एवं कर्मवाच्य के कर्ता एवं करण में तृतीया विभक्ति होती है।

उदाहरण—(1) करण कारक—रामः दण्डेन कुक्कुरं ताडयति।

उक्त उदाहरण में दण्ड करण है, अतः करण अर्थ में प्रकृत सूत्र से तृतीया विभक्ति हुयी है।

(2) रामेण बाणेन हतो बालिः।

प्रस्तुत उदाहरण में ‘राम’ अनुक्त कर्ता है, तथा ‘बाण’ करण है, अतः अनुक्त कर्ता राम में तृतीया विभक्ति और करण अर्थ बाण में तृतीया विभक्ति हुई।

‘येनाङ्गविकारः’ शरीरधारी के जिस अङ्ग में कोई विकार लक्षित होता है, उसमें तृतीया विभक्ति होती है।

उदाहरण—गोविन्दः पादेन खञ्जः। (गोविन्द पैर से लंगड़ा है।)

‘सहयुक्तेऽप्रधाने’ सह अर्थात् ‘साथ’ अर्थ के वाचक सह, साकम्, सार्धम् और समम् शब्दों के योग में अप्रधान में तृतीया विभक्ति होती है—

उदाहरण—रामः कृष्णेन सह गच्छति।

4. सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति)

सूत्र—‘कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्’ दानकर्म के द्वारा कर्ता जिसे चाहता है, उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है।

‘चतुर्थी सम्प्रदाने’ इस सूत्र से सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। **उदाहरण**—नृपः विप्राय गां ददाति।

‘रुच्यर्थानां प्रीयमाणः’ ‘रुचि’ के अर्थ वाली धातुओं के योग में, जिसको वस्तु अच्छी लगती है उसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है।

उदाहरण—बालकाय मोदकं रोचते। बालक को लड्डू अच्छा लगता है।

इस उदाहरण में 'रुच्' धातु का योग होने से 'बालक' में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

“नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च”

नमः (नमस्कार), स्वस्ति (कल्याण), स्वाहा (आहुति), स्वधा (बलि), अलं (समर्थ, पर्याप्त), वषट् (अर्पण) इनके योग में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है—

उदाहरण—गुरवे नमः, शिष्याय स्वस्ति, अग्नये स्वाहा इत्यादि।

5. अपादान कारक (पञ्चमी विभक्ति)

सूत्र—‘ध्रुवमपायेऽपादानम्’

जो वस्तु जिस स्थान से अलग होती है, उस स्थान विशेष (अवधिभूत) को अपादान कहते हैं।

‘अपादाने पञ्चमी’—इस सूत्र से अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है। उदाहरण—वृक्षात् पत्राणि पतन्ति (वृक्ष से पत्ते गिरते हैं)। इस उदाहरण में वृक्ष से पत्ते पृथक् हो रहे हैं अतः वृक्षात् में पञ्चमी विभक्ति प्रयुक्त हुई है।

‘भीत्रार्थानां भयहेतुः’ डर (भय) अर्थवाली तथा (त्राण) रक्षार्थक धातुओं के योग में भय के कारण की अपादान संज्ञा होती है तथा उसमें पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है—

उदाहरण—साधुः पापात् बिभेति। (साधु पाप से डरता है।)

वीरपुरुषः नारीं दुष्टात् रक्षति। (वीर पुरुष दुष्ट से नारी की रक्षा करता है।)

‘पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम्’

पृथक् विना और नाना शब्दों के योग में द्वितीया, तृतीया अथवा पञ्चमी विभक्ति होती है—

उदाहरण—दशरथः रामम्, रामेण, रामात् (वा) पृथक् जीवितुं नाशक्नोत्। (दशरथ राम के विना जीवित न रह सके।)

6. सम्बन्ध (षष्ठी विभक्ति)

सूत्र—‘षष्ठी शेषे’ जिनकी चर्चा या वर्णन अन्य विभक्तियों में नहीं किया गया (जो शेष रह गया) है, वहाँ षष्ठी विभक्ति होती है। यहाँ संज्ञा शब्दों में एक-दूसरे के साथ सम्बन्ध प्रकट किया जाता है—

उदाहरण—रामः दशरथस्य पुत्रः आसीत्। (राम दशरथ के पुत्र थे।)

‘षष्ठी हेतुप्रयोगे’ हेतु शब्द के प्रयोग में षष्ठी विभक्ति होती है। उदाहरण—

(1) सः अध्ययनस्य हेतोः विद्यालयं गच्छति। (वह अध्ययन के लिए विद्यालय जाता है।)

(2) रामः धनस्य हेतोः कार्यं करोति। (राम धन के लिए कार्य करता है।)

7. अधिकरण कारक (सप्तमी विभक्ति)

सूत्र—‘आधारोऽधिकरणम्’—कर्तृनिष्ठ और कर्मनिष्ठ क्रिया के आधार की कर्म संज्ञा होती है।

उदाहरण—बालकः विद्यालये पठति। (बालक विद्यालय में पढ़ता है।) सः स्थाल्यां तण्डुलान् पचति। (वह पतीली में चावल पकाता है।)

‘यतश्च निर्धारणम्’ जाति, गुण, क्रिया, संज्ञा के द्वारा जब किसी वस्तु या व्यक्ति को अपने समुदाय से पृथक् करना हो, वहाँ सप्तमी व षष्ठी विभक्ति होती है। उदाहरण—

कविषु कवीनां वा कालिदासः श्रेष्ठः।

गोषु गवां वा कृष्णा बहुक्षीरा।

8. सम्बोधन—‘सम्बोधनम् अभिमुखीकृत्य ज्ञापनम्’ अर्थात् किसी को अभिमुख कर (लक्ष्य कर) अच्छी तरह समझाना ‘सम्बोधन’ पद का अर्थ है। इसका चिह्न हे, अरे!, ए! आदि है। ये चिह्न शब्द से पहले लगते हैं। जैसे—

हे राम! भो बालक!

संस्कृत में सम्बोधन के एकवचन का रूप बदलता है, शेष में कर्ता कारक के समान होता है।

उदाहरण—भो पुत्र! त्वं कुत्र गच्छसि।

अभ्यासकार्यम्

1. कारक किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

2. सूत्रोल्लेख पूर्वक निम्न कारकों के उदाहरण दीजिए—

कर्म, करण, अपादान, अधिकरण

3. सही विकल्प का चयन कर लिखिए—

(i) ‘वृक्षात् पत्राणि पतन्ति’ में ‘वृक्षात्’ में कौन सी विभक्ति है—

(क) तृतीया (ख) चतुर्थी (ग) पञ्चमी (घ) सप्तमी

(ii) करण-कारक में कौन-सी विभक्ति होती है?

(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) पञ्चमी (घ) षष्ठी

(iii) चतुर्थी विभक्ति है—

(क) करण कारक में (ख) सम्प्रदान कारक में (ग) कर्म कारक में (घ) अपादान कारक में

(iv) ‘गवां कृष्णा बहुक्षीरा’ में ‘गवाम्’ में कौन-सी विभक्ति है—

(क) पञ्चमी (ख) षष्ठी (ग) द्वितीया (घ) तृतीया

(v) ‘येनाङ्गविकारः’ सूत्र किस विभक्ति से सम्बन्धित है—

(क) षष्ठी (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) पञ्चमी

जो अव्यय, धातु या धातु से बने हुए विशेषण, संज्ञा आदि शब्दों के पूर्व जोड़े जाते हैं, उनको उपसर्ग कहते हैं। दूसरे शब्दों में जब प्र आदि शब्द क्रिया में जोड़े गये हों, तो उनकी उपसर्ग संज्ञा होती है। जैसे—
प्र + करोति = 'प्रकरोति'। 'प्रकरोति' में 'प्र' उपसर्ग है, क्योंकि 'करोति' क्रिया से इसका योग है।

उपसर्गः क्रियायोगे।

उपसर्गों के द्वारा धातु का अर्थ परिवर्तित हो जाता है। इनके द्वारा ही धातु के विविध अर्थों का प्रकाशन होता है। जैसे—'कृ' धातु का अर्थ है 'करना', किन्तु इसके पूर्व उपसर्ग लगाकर 'अपकार', 'उपकार', 'अधिकार' आदि शब्द बनते हैं।

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।

प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत्।

अर्थात् उपसर्ग धातु के अर्थ को परिवर्तित करते हैं—

जैसे—हृ धातु से—

हरति = हरण करता है।

प्र + हरति = प्रहरति (प्रहार करता है)

आ + हरति = आहरति (ग्रहण करता है)

वि + हरति = विहरति (विहार करता है)

सम् + हरति = संहरति (संहार करता है)

परि + हरति = परिहरति (त्याग करता है)

उपर्युक्त सभी उदाहरणों में धातु 'हृ' है, परन्तु भिन्न-भिन्न उपसर्ग लगाने पर धातु के अर्थ में परिवर्तन हो गया है।

'भू' धातु— भवति = होता है।

अनु + भवति = अनुभवति (अनुभव करता है)

प्र + भवति = प्रभवति (उत्पन्न होता है)

सम् + भवति = सम्भवति (सम्भव होता है, उत्पन्न होता है)

गम् धातु- गच्छति = जाता है।

आ + गच्छति = आगच्छति (आता है)

अनु + गच्छति = अनुगच्छति (अनुसरण करता है)

अधि + गच्छति = अधिगच्छति (प्राप्त करता है)

अव + गच्छति = अवगच्छति (जानता है)

उपसर्गों की संख्या

उपसर्ग बाईस (22) हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं—

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग के योग से निर्मित शब्द
1. प्र	अधिक	प्रणामः (अधिक झुकना), प्रकृष्टः (उत्तम)
2. परा	उल्टा पीछे	पराजयः (हार) पराभवः (हार), परागतः (लौट गया)
3. अप	दूर, उल्टा	अपहारः (दूर ले जाना), अपकारः (हित का उल्टा अर्थात् अहित करना)
4. सम्	अच्छी तरह	संस्कारः (अच्छी तरह किया हुआ)
5. अनु	पीछे, साथ	अनुगमनम्, अनुसरणम् (पीछे चलना)
6. अव	नीचे	अवतारः (नीचे आना), अवमानः (नीचा मानना, छोटा समझना)
7. निस्	बिना, बाहर	निःसारः (सार-रहित) निःशङ्क (शङ्का रहित)
8. निर्	अभाव, बाहर	निर्मुञ्चति, निर्गच्छति (बाहर निकलना)
9. दुस्	कठिन, हीन	दुष्करः (कठिन कार्य) दुःसाहसम्
10. दुर्	बुरा	दुराचारः (दुष्ट आचरण) दुर्गतिः
11. वि	विरोध, विपरीत, अनासक्त	विप्रियः (अप्रिय या अरुचिकर) विमुखः (पराङ्मुख, उदासीन) विरत (निवृत्त)
12. आङ्	तक, कम	आच्छादित (चारों ओर तक ढकना) आकम्प (कुछ काँपना)
13. नि	निषेध	निषेधः (मना करना)
14. अधि	ऊपर	अधिकारः (ऊपरी काम, जिसमें दूसरे व्यक्ति वश में हों)
15. अपि	निकट	अपीतिः (समीप या पास जाना, समा जाना, प्रवेश, प्रलय)
16. अति	बाहुल्य, उल्लंघन	अतिक्रमः (सीमा का उल्लंघन) अतिनिद्रम् (अधिक नींद)
17. सु	अच्छा	सुपुरुषः (अच्छा व्यक्ति)
18. उद्	ऊपर	उद्गम (ऊपर जाना, निकलना), उत्पत् (ऊपर जाना, गिरना, उड़ना)
19. अभि	सामने, ओर	अभिमुखम् (मुख के सामने, ओर)
20. प्रति	उल्टा, ओर	प्रतिकारः (बदला लेना, विपरीत या अनुचित करना) प्रतिगमः (किसी की ओर जाना)
21. परि	चारों ओर	परिखा (चारों ओर की खाई), परितः (चारों ओर)
22. उप	समीप, शक्ति	उपदेशः, उपकारः, उपाधिः।

2. क्रियाविशेषण—क्रिया की विशेषता बताने वाले को क्रियाविशेषण कहते हैं।

महत्त्वपूर्ण क्रियाविशेषण निम्नलिखित हैं—

क्रिया विशेषण

अजस्रम्

शीघ्रम्

मन्दम्

झटिति

स्वैरम्

आशु

कुटिलम्

यथा— (1) रामः शीघ्रं गच्छति।

प्रकृत उदाहरण में 'शीघ्र' गमन क्रिया को विशेषित करने के कारण क्रियाविशेषण है।

(2) सः झटिति वदति

वह जल्दी-जल्दी बोलता है।

उक्त उदाहरण में 'वदन्' शब्द को विशेषित करने के कारण 'झटिति' क्रियाविशेषण है।

3. समुच्चय-बोधक—पदों या वाक्यों को जोड़ने या पृथक् करने के लिए जिन पदों का प्रयोग होता है, उन्हें समुच्चय बोधक कहते हैं। इन्हें दो भागों में बाँटा गया है। जैसे—च, अपि, अथ च, परन्तु, परञ्च, चेत्, नो, चेत्, तर्हि, हि, इत्यादि

4. मनोविकार-सूचक—मानसिक अनुभूतियों के प्रगाढ़ आवेश को प्रकट करने के लिए जिन अव्ययों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें मनोविकार-सूचक या विस्मय-बोधक कहते हैं। जैसे—

(क) आश्चर्य, हर्ष, खेद, इत्यादि— हन्त।

(ख) घृणा सूचक — धिक्।

(ग) दुःख सूचक — हा, हन्त

(घ) आश्चर्य या शोक सूचक—अहा, अहो, हा, अहह।

(ङ) विस्मय बोधक—अये, अहो, रे, अरे।

अभ्यासकार्यम्

1. अधोलिखित-प्रश्नानाम् उत्तरं लिखत-

(क) अव्ययं किम् अस्ति?

(ख) उपसर्ग-शब्दस्य कः अर्थः?

2. समीचीनं विकल्पं चिनुत-

(i) उपसर्गः कुत्र प्रयुज्यते?

(क) आदौ

(ख) अन्ते

(ग) मध्ये

(घ) अन्यत्र

(ii) 'अनुभवति' पदे कः उपसर्गः?

(क) अनु

(ख) आङ्

(ग) परा

(घ) उप

(iii) 'उच्चरति' शब्दे कः उपसर्गः अस्ति?

(क) उद्

(ख) उप

(ग) अनु

(घ) आङ्

(iv) 'स्वागतम्' पदे कः उपसर्गः अस्ति?

(क) सु

(ख) निर्

(ग) अभि

(घ) परा

(v) 'उच्चैः' शब्द क्या है?

(क) अव्यय

(ख) उपसर्ग

(ग) प्रत्यय

(घ) अनुवाद

(vi) 'अपनयति' में कौन उपसर्ग है?

(क) अप

(ख) अभि

(ग) निर्

(घ) दुस्

(vii) 'उन्नति' शब्द में कौन-सा उपसर्ग है?

(क) अव

(ख) उद्

(ग) अधि

(घ) प्र

अनुवाद

एक भाषा को दूसरी भाषा में परिवर्तित करने का नाम अनुवाद है। संस्कृत के वाक्यों में कर्ता, क्रिया, कर्म आदि का स्थान और क्रम स्थिर नहीं है। लेखक या बोलने वाला अपनी इच्छानुसार उन्हें किसी भी स्थान पर रख सकता है। यही संस्कृत भाषा की अन्य भाषाओं से विशेषता है। जैसे—‘सः पत्रं लिखति’। इस संस्कृत वाक्य को आप इच्छानुसार निम्न रूपों में रख सकते हैं—

- (i) पत्रं सः लिखति।
- (ii) लिखति सः पत्रम्
- (iii) सः लिखति पत्रम्

इन रूपों में अर्थात् कर्ता, क्रिया और कर्म कहीं भी रख सकते हैं और ऐसा करने पर सभी स्थानों पर अर्थ वही निकलेगा—वह पत्र लिखता है। इसी तरह विद्यार्थियों को समझना चाहिए।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह संस्कृत-भाषा कारकप्रधान भाषा है। अतः वचन, विभक्ति एवं पुरुष का ज्ञान परमावश्यक है, इसके अलावा अनुवाद निरन्तर अभ्यास की प्रक्रिया है। छात्रों को चाहिए कि वे प्रतिदिन कुछ हिन्दी के वाक्यों का नियम के अनुसार संस्कृत में अनुवाद करें तथा अपने शिक्षकों को दिखाकर अपनी कमियों को दूर करते हुए अनुवाद करने की दक्षता हासिल करें।

अनुवाद के लिए कुछ आवश्यक नियम

1. किसी भी वाक्य का संस्कृत में अनुवाद करने से पूर्व उस वाक्य के कर्ता, क्रिया और कर्म के साथ-साथ काल एवं अन्य कारकों के बोधक चिह्नों को भी भली-भाँति समझ लेना चाहिए।
2. अनुवाद में केवल अव्ययों को छोड़कर कोई अन्य शब्द बिना किसी विभक्ति अथवा प्रत्यय के प्रयुक्त नहीं होता है।
3. संस्कृत में तीन वचन होते हैं—(क) एकवचन (ख) द्विवचन (ग) बहुवचन
4. संस्कृत में तीन पुरुष होते हैं—(1) प्रथम पुरुष (2) मध्यम पुरुष (3) उत्तम पुरुष।
5. इस प्रकार किसी क्रिया के एक काल में नौ (9) प्रकार के कर्ता हो सकते हैं। जहाँ युष्मद् शब्द के त्वम्, युवाम्, यूयम् रूपों का प्रयोग किया जाता है, वहाँ मध्यम पुरुष की क्रिया का प्रयोग किया जाता है। जैसे—गच्छसि, गच्छथः, गच्छथ।

6. जहाँ 'अस्मद्' शब्द के अहम्, आवाम्, वयम् रूपों का प्रयोग किया जाता है, वहाँ उत्तम पुरुष की क्रिया का प्रयोग होगा, जैसे—गच्छामि, गच्छावः, गच्छामः। शेष सभी संज्ञा, सर्वनाम आदि शब्द प्रथम पुरुष में आते हैं और उनके साथ प्रथम पुरुष की क्रिया का ही प्रयोग होगा। प्रथम पुरुष को अन्य पुरुष भी कहते हैं।
7. कर्ता जिस पुरुष या वचन का होगा, उसी पुरुष और वचन की क्रिया भी आयेगी।
8. अनुवाद के लिए शब्द रूपों—का ज्ञान और धातु रूपों का ज्ञान आवश्यक होता है।
9. निम्नलिखित कारक चिह्न एवं विभक्ति ज्ञान को भी समझकर कण्ठस्थ करें—

कारक	कारक चिह्न	विभक्ति-ज्ञान
कर्ता	ने	प्रथमा
कर्म	को	द्वितीया
करण	से (द्वारा), के साथ	तृतीया
सम्प्रदान	के लिए, को	चतुर्थी
अपादान	से (अलग होना)	पंचमी
(सम्बन्ध)	का, की, के	षष्ठी
अधिकरण	में, पै, पर	सप्तमी
(सम्बोधन)	हे, रे, अरे, ओ	सम्बोधन (प्रथमा)

10. संस्कृत में धातु के दस लकार होते हैं किन्तु माध्यमिक स्तर तक पाँच लकारों का अध्ययन-अध्यापन कराया जाता है—

- (1) लट् लकार (वर्तमान काल)
- (2) लोट् लकार (आज्ञा अर्थ)
- (3) लृट् लकार (भविष्यत् काल)
- (4) लङ् लकार (अनद्यतन भूत अर्थात् जो आज का न हो)
- (5) विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

11. संस्कृत में धातु के दश गण होते हैं।

1. लट् लकार (वर्तमान काल)

जिस वाक्य के अन्त में ता है, ती है, ते हैं तथा रहा है, रही है, रहे हैं, आदि आयें तो वहाँ लट् लकार होता है। लट् लकार का प्रयोग वर्तमान काल में होता है। वर्तमान काल में निम्न रूपों का प्रयोग होता है।—

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुषः	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यमपुरुषः	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तमपुरुषः	पठामि	पठावः	पठामः

उदाहरण—(i) वह जाता है—सः गच्छति। (ii) वह जाती है — सा गच्छति। (iii) मैं पढ़ता हूँ — अहं पठामि। (iv) तुम जाते हो — त्वं गच्छसि। (v) मैं हँस रहा हूँ — अहं हसामि।

अभ्यासकार्यम्

1. अधोलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(1) वह पढ़ता है। (2) वे दोनों जा रहे हैं। (3) वे सब लिखते हैं। (4) तुम हँसती हो। (5) तुम दोनों पढ़ रही हो। (6) तुम सब आती हो। (7) मैं पकाता हूँ। (8) हम दोनों जा रहे हैं। (9) हम सब पढ़ते हैं।

2. अधोलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(1) वह लिखता है। (2) वह गाँव को जाता है। (3) वह आता है। (4) बालक पढ़ता है। (5) राम लिखता है। (6) मनुष्य हँसता है। (7) राजा यहाँ आता है। (8) राम विद्यालय जाता है। (9) आप कहाँ जाते हैं। (10) वह यहाँ रहती है।

3. निम्नलिखित संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।—

(i) अहं पठामि (ii) आवां गच्छावः (iii) वयं हसामः (iv) वयं विद्यां पठामः (v) अहं कन्यां पश्यामि (vi) आवां क्रीडां पश्यावः (vi) अहं पुष्पं जिघ्रामि, (vii) वयं जलं पिबामः (ix) अहं काव्यं स्मरामि।

2. लोट् लकार (आज्ञा)

लोट्लकार का प्रयोग अनुमति, आशीर्वाद, प्रेरणा, निमन्त्रण इत्यादि अर्थों में होता है। जैसे—

अनुमति—अहं कुत्र गच्छानि। (मैं कहाँ जाऊँ?)

आशीर्वाद—त्वं चिरं जीव (तुम बहुत समय तक जियो)

लोट् लकार धातुरूप का उदाहरण

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुषः	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यमपुरुषः	भव	भवतम्	भवत
उत्तमपुरुषः	भवानि	भवाव	भवाम

नोट—भ्वादिगणीय सभी धातुओं के क्रियारूप लोट् लकार में इसी के समान चलेंगे।

लोट् लकार के वाक्य—

- (1) तुम बैठो — त्वम् उपविश।
- (2) आप लोग पढ़िए — भवन्तः पठन्तु।
- (3) श्याम मेरे साथ चले — श्यामः मया सह चलतु।
- (4) लड़के उद्यान में खेलें — बालकाः उद्याने क्रीडन्तु।
- (5) आप जल पीजिए — भवान् जलं पिबतु।

- (6) वह मेरा मित्र हो जाए — असौ मम सुहृद् भवतु।
 (7) मैं कहाँ होऊँ — अहं कुत्र भवानि।
 (8) हम सब यहाँ विराजमान हों—वयम् अत्र विराजमानाः भवाम।
 (9) तुम लोभी मत बनो—त्वं लोभी मा भव।
 (10) धन से मतवाला मत होओ—धनेन मत्तः मा भव।

अभ्यासकार्यम्

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(i) राम विद्यालय जाये। (ii) लड़के बैठें। (iii) तुम दोनों लिखो। (iv) आप सब आयें। (v) वे सब जायें। (vi) तुम सब जाओ। (vii) तुम ठहरो। (viii) शिष्य देखें।

2. निम्नलिखित संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(1) तौ पठताम् (2) ते गृहाणि गच्छन्तु (3) अहं विद्यालयं गच्छामि (4) त्वं पुस्तकं पठ (5) यूयम् आगच्छत (6) वयं नित्यं पठाम (7) शीला कथं न आगच्छतु (8) आवां पुस्तकानि पठाव (9) युवां हसतम् (10) छात्राः लिखन्तु।

3. लृट् लकार (भविष्यत् काल)

सामान्य भविष्यत् काल की घटनाओं को व्यक्त करने के लिए लृट् लकार का प्रयोग किया जाता है।

पहचान—जिस वाक्य में ‘गा, गे, गी’ दिखे तो आप जान जाइए कि धातु में लृट् लकार के अर्थ में प्रत्ययों को प्रयोग होकर क्रिया आयेगी। जैसे—

प्रथमपुरुषः	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तमपुरुषः	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

जैसे—रमा घर जायेगी। इस वाक्य में क्रिया ‘जायेगी’ है तथा ‘गी’ दिख रहा है अतः भविष्यत् काल का बोध कराने के लिए ‘गमिष्यति’ क्रिया आयेगी। शेष नियम पूर्ववत् ही रहेगा। कर्ता के अनुसार ही क्रिया प्राप्त होगी।

इस वाक्य में कर्ता ‘राम’, कर्म ‘घर’ तथा क्रिया ‘जायेगी’ है। अतः कर्ता राम के प्रथमा, कर्म में द्वितीया तथा क्रिया में प्रथम पुरुष एकवचन लृट् लकार का प्रयोग होगा—

रमा गृहं गमिष्यति।

अभ्यासकार्यम्

1. निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी अनुवाद कीजिए-

- (1) सः पठिष्यति। (2) त्वं गमिष्यसि। (3) अहम् आगमिष्यामि। (4) सः द्रक्ष्यति। (5) त्वं गृहं गमिष्यसि।
(6) वयं पठिष्यामः।

2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत अनुवाद कीजिए-

- (1) लड़कियाँ हसेंगी। (2) मैं घर नहीं जाऊँगी। (3) हम सब पढ़ेंगे। (4) तुम विद्यालय कब जाओगे? (5) मैं राम के साथ जाऊँगा। (6) तुम दोनों हँसोगे। (7) वे सब खाना बनायेंगे। (8) मेरी माँ खाना पकायेगी। (9) वहाँ जाओगे। (10) यहाँ आओगे। (11) कहाँ जाओगे?

विशेष—(i) वहाँ (तत्र), यहाँ (अत्र), कहाँ (कुत्र), साथ (सह, साकं, सार्धम्)

(ii) सह, साकं, सार्धं, के योग में तृतीया विभक्ति, होती है, सह, साकम् ये अव्यय हैं। इनका रूप नहीं चलता।

4. लङ् लकार

अनद्यतन (जो आज का न हो) भूतकाल की क्रिया को बताने के लिए लङ् लकार का प्रयोग किया जाता है। जैसे—रामः पाठम् अपठत्—राम ने पाठ पढ़ा। इस वाक्य में कर्ता राम ने जो पाठ पढ़ा, वह पाठ आज नहीं पढ़ा बल्कि भूतकाल में पढ़ा अर्थात् बीते दिनों में पढ़ा। अतः पठ् धातु से लङ् लकार का प्रयोग होगा—

लङ् लकार की क्रिया

प्रथमपुरुषः	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यमपुरुषः	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तमपुरुषः	अपठम्	अपठाव	अपठाम

जैसे—(i) सः अपठत् — उसने पढ़ा।

(ii) तौ अपठताम् — उन दोनों ने पढ़ा।

(iii) ते अपठन् — वे सब पढ़े।

(iv) तुम पढ़ी — त्वम् अपठः।

(v) तुम दोनों ने पढ़ा — युवाम् अपठतम्।

(vi) तुम सब पढ़े — यूयम् अपठत।

(vii) मैं पढ़ा — अहम् अपठम्।

(viii) हम दोनों पढ़े — आवाम् अपठाव।

(ix) हम सब पढ़े — वयम् अपठाम।

अभ्यासकार्यम्

लङ् लकार पर आधारित निम्न वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

- (1) शीला घर गयी (2) दो लड़के पढ़े। (3) लड़के पढ़े। (4) तुम विद्यालय गयी। (5) तुम दोनों ने क्या किया।
(6) तुम सब हँसे। (7) मैंने पुस्तकों को पढ़ा। (8) हम दोनों खाना खाये। (9) हम सब घर गये।

नोट—लङ् लकार में पठ् के समान भू, हस्, गम्, पच् आदि धातुओं के रूप चलेंगे।

5. विधिलिङ् लकार

सामान्यतया 'चाहिए' के अर्थ में इस विधिलिङ् लकार का प्रयोग होता है। जैसे—सः पुस्तकं पठेत्—उसे पुस्तक पढ़नी चाहिए।

विधिलिङ् लकार की क्रिया

प्रथमपुरुषः	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यमपुरुषः	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तमपुरुषः	पठेयम्	पठेव	पठेम

- (1) शीला को पढ़ना चाहिए — शीला पठेत्।
(2) मोहन और सोहन को पढ़ना चाहिए — मोहनः सोहनः च पठेताम् (या) मोहनसोहनौ पठेताम्।
(3) उन सब को पढ़ना चाहिए — ते पठेयुः।

नोट—इन तीनों वाक्यों में जो 'को' लगा हुआ है वे कर्म के बोधक नहीं हैं अपितु ये कर्त्ता के रूप में ही हैं। इनमें प्रथमा विभक्ति ही आयेगी।

- (4) तुम्हें पढ़ना चाहिए — त्वम् पठेः।
(5) तुम दोनों को पढ़ना चाहिए — युवां पठेतम्।
(6) तुम सबको पढ़ना चाहिए — यूयं पठेत।
(7) मुझे पढ़ना चाहिए — अहं पठेयम्।
(8) हम दोनों को पढ़ना चाहिए — आवां पठेव।
(9) हम सबको पढ़ना चाहिए — वयं पठेम।

अभ्यासकार्यम्

- वह गाय से दूध दुहता है — सः गां पयः दोग्धि।
- गुरु छात्रों से प्रश्न पूछते हैं — गुरुवः छात्रान् प्रश्नं पृच्छन्ति।
- मैं पुस्तक घर ले जाता हूँ — अहं पुस्तकं गृहं नयामि।
- लड़के पेड़ पर चढ़ते हैं — बालकाः वृक्षम् आरोहन्ति।
- राजा सिंहासन पर बैठता है — राजा सिंहासनम् अधितिष्ठति।

6. नगर के चारों ओर जल है — नगरं परितः जलम् अस्ति।
7. शीला गेंद से खेलती है — शीला कन्दुकेन क्रीडति।
8. हम लोग मुँह से बोलते हैं — वयं मुखेन वदामः।
9. दिनेश आँख से काना है — दिनेशः अक्षणा काणः अस्ति।
10. पैर से लंगड़ा है — पादेन खज्जः अस्ति।
11. शीला का मुख चन्द्रमा के समान है— शीलायाः मुखं चन्द्रेण तुल्यम् अस्ति।
12. मूर्खों को पुस्तकों से क्या प्रयोजन? — मूर्खाणां पुस्तकैः किं प्रयोजनम्।
13. कलह मत करो — कलहेन अलम्।
14. मैं माता के साथ बाजार जाती हूँ — अहं मात्रा सह आपणं गच्छामि।
15. वह पिता के साथ घर गया — सः पित्रा सह गृहम् अगच्छत्।
16. तुम्हें नगर के चारों ओर जाना चाहिए — त्वं नगरं परितः गच्छेः।
17. वह घर जायेगा या नहीं जायेगा — सः गृहं गमिष्यति न वा।
18. मैं अपने गुरुओं को नमस्कार करता हूँ — अहं स्वगुरुन् नमस्करोमि।

कारक सम्बन्धी विशेष नियम

1. अधितिष्ठति, अध्यास्ते क्रिया के योग में द्वितीया विभक्ति ही होती है।
2. सह, साकम्, सार्धम्, समम्, इन सभी अव्ययों का अर्थ 'साथ' होता है, इनके योग में तृतीया विभक्ति होती है।
3. अभितः, परितः इन दोनों अव्ययों का अर्थ 'चारों ओर' होता है, इनके योग में द्वितीया विभक्ति होती है। इनके रूप नहीं चलते बल्कि उपपद विभक्तियों के द्योतक हैं।
4. समया एवं निकषा दोनों का अर्थ 'समीप' है। इनके योग में भी द्वितीया विभक्ति होगी। जैसे— गाँव के पास नदी बहती है — ग्रामं समया नदी वहति।
5. काणः, खज्जः, बधिरः के योग में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—अक्षणा नेत्रेण वा काणः, पादेन खज्जः, कर्णेन बधिरः।
6. 'प्रति' अव्यय का अर्थ 'ओर' होता है, इसके योग में भी द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—राम गाँव की ओर जा रहा है — रामः ग्रामं प्रति गच्छति।
7. नमः, स्वस्ति, स्वाहा आदि शब्द अव्यय हैं, इनका रूप नहीं चलता है। ये पद विशेष हैं और उपपद विभक्तियों के द्योतक हैं।
जैसे—गुरवे नमः, मात्रे नमः, पित्रे नमः
8. धिक्, हा, इन दोनों अव्यय पदों के योग में भी द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—धिक् माम्, हा कृष्णाभक्तम्।



9

पत्रलेखन

1. रुग्णताकारणेन अवकाशनिमित्तं प्रधानाचार्यं प्रति पत्रम्

सेवायाम्,

प्रधानाचार्यमहोदया:

राजकीय-इण्टर-कालेज-प्रयागराजः

विषयः— अवकाशनिमित्तं प्रार्थनापत्रम्।

महोदयाः,

सविनयं निवेदनमस्ति यत् अहं ज्वरेण पीडितः अस्मि। एतस्मात् कारणात् अहं विद्यालयम् आगन्तुम् असमर्थः अस्मि। अतः दिनद्वयस्य अवकाशं प्रयच्छन्तु इति सविनयं प्रार्थयामि।

भवतां विनीतः शिष्यः

माधवः

कक्षा-नवमी

वर्ग-ब

अनुक्रमाङ्कः—

दिनाङ्क—31.07.2022

2. विवाहोत्सवे सम्मिलितुम् अवकाशनिमित्तं प्रधानाचार्यं प्रति प्रार्थनापत्रम्

सेवायाम्,

प्रधानाचार्यमहोदया:

राजकीय-उच्चतर-माध्यमिक-विद्यालयः बरेली

महोदयाः,

सविनयं निवेदनमस्ति यत् मम भगिन्याः विवाहोत्सवः आगामिसप्ताहे भविष्यति। अतः अहं विद्यालयम् आगन्तुम् असमर्थः अस्मि। अतः 25-4-22 दिनांकात् 30-04-22 दिनाङ्कपर्यन्तम् अवकाशं प्रयच्छन्तु इति सविनयं प्रार्थयामि।

भवदीयः शिष्यः

देवेशः

कक्षा-दशमी

वर्ग-ब

दिनाङ्क—25.4.22

3. शुल्कमुक्तये प्रधानाचार्य प्रति पत्रम्

सेवायाम्,

प्रधानाचार्यमहोदया:

राजकीय-इण्टर-कालेज-चित्रकूटम्

विषयः—शुल्कमुक्तये प्रार्थनापत्रम्।

महोदयाः,

सविनयं निवेदनमस्ति यत् अहं भवतां विद्यालये दशमकक्षायाः 'ब' वर्गस्य छात्रः अस्मि। मम पिता एकः निर्धनः कृषकः अस्ति। पिता मम शुल्कं दातुम् असमर्थः अस्ति। मम परीक्षापरिणामः सदैव उत्तमः भवति। अतः शिक्षणशुल्कमुक्तिं कृत्वा माम् अनुगृह्णन्तु भवन्तः इति सविनयं प्रार्थयामि।

भवदीयः आज्ञाकारी शिष्यः

दिनाङ्कः—22.07.2022

शिवांशः

कक्षा—दशमी

वर्ग—ब

4. पुस्तकानि प्रेषयितुं प्रकाशकं प्रति पत्रम्

सेवायाम्,

व्यवस्थापकमहोदय!

देव-बुक-डिपो

वाराणसी

महोदय,

निवेदनमस्ति यत् अहम् अधोलिखितानि पुस्तकानि क्रेतुम् इच्छामि। अतः एतानि पुस्तकानि वी. पी. माध्यमेन प्रेषयतु भवान् इति प्रार्थयामि।

पुस्तकनामानि

लेखकनामानि

प्रतिलिपिः

1. पञ्चतन्त्रम्

विष्णुशर्मा

01

2. निबन्धसौरभम्

डॉ. अरुणेशकुमारः

01

3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्

महाकविकालिदासः

01

भवदीयः

दिनाङ्कः—2.11.2022

अग्निवेशः

157 विवेकानन्दमार्गः

प्रयागराजः

5. धनं प्रेषयितुं पितरं प्रति पत्रम्

प्रयागराजतः

दि. 10.2.2000

पूज्यपितृचरणेषु

प्रणामाः।

अत्र अहं कुशली अस्मि। बहुकालात् समाचारः न प्राप्तः। मम समीपे इदानीं धनाभावः अस्ति। मया पुस्तकानि क्रेतव्यानि सन्ति। अतः एकसहस्रं रुप्यकाणि धनादेशद्वारा सत्वरं प्रेषणीयानि। मातृचरणेषु प्रणामाः।

भवतां पुत्रः

प्रणवः

दिनाङ्कः—2.06.2022

छात्रावासः रा.इ.का.

प्रयागराजः

6. परीक्षोत्तीर्णतायाः सूचनां प्रदातुं भ्रातरं प्रति पत्रम्

प्रयागराजतः

5.3.2022

आदरणीय अग्रज!

सादरं प्रणमामि

अत्र कुशलं तत्रास्तु। ईश्वरानुकम्पया अहम् अष्टमीं कक्षां प्रथमश्रेण्यामुत्तीर्णवान्। परिवारस्य सर्वे जनाः कुशलिनः सन्ति। भवतः शीघ्रमेव गृहमागमनं भविष्यति इति चिन्तयामि।

भवदनुजः

दिनाङ्कः—11.02.2022

गणेशः

अधोलिखितानि पत्राणि मञ्जूषापदसहायतया पूरयत—

7. अग्रजस्य विवाहसमारोहे सम्मिलितुं पत्रम्

सेवायाम्

प्रधानाचार्यमहोदयाः

कर्नलगंज-इण्टरकालेज, प्रयागराजः

महोदयाः

सविनयं अस्ति यत् मम अग्रजस्य 15.3.2022 तमे दिनाङ्के भविष्यति। एतस्मात् कारणात् अहं आगन्तुं न।

अतः अवकाशं प्रयच्छन्तु इति सविनयं प्रार्थयामि।

दिनाङ्कः 3.5.2022

भवताम् शिष्यः

देवेशः

कक्षा-9

दिनत्रयस्य, शक्नोमि, विद्यालयम्, विवाहसमारोहः, निवेदनम्

8. गृहमागन्तुम् अनुजं प्रति लिखितं पत्रम्

मथुरातः

दिनाङ्कः 2.2.2022

प्रियानुज सनत्!

शुभाशिषः।

अत्र अहं अस्मि। गृहस्य सर्वे कुशलिनः सन्ति। पितामहः अस्ति।
 अनुजायाः उत्तमः आसीत्। भवान् अपि अवकाशं गृहम् आगच्छतु। भवतः
 आगमनप्रतीक्षायाम्—

शुभेच्छुः

मनोजः

जनाः, परीक्षापरिणामः, स्वस्थः, कुशली, प्राप्य

9. वार्षिकोत्सवे सहभागितायै मित्रं प्रति पत्रम्

मेरठतः

दिनाङ्कः 02.04.2022

प्रियमित्र सीतेश!

सादरं नमस्कारः

अत्राहं कुशली भवतः कुशलतां। समाचारोऽयमस्ति यत् मम वार्षिकोत्सवः
 एकादशे दिनाङ्के सायङ्काले । अभिज्ञानशाकुन्तलनाटकस्य अपि भविष्यति। अतः त्वं
 संस्कृतनाटकं द्रष्टुम् अवश्यमेव इति आशया सूचयामि।

तव मित्रम्

श्रीधरः

दयानन्द आर्यविद्यालयः

विद्यालयस्य, मञ्चनम्, आगच्छतु, कामये, भविष्यति

10. परीक्षायां सफलतायै मित्रं प्रति वर्धापनपत्रम्

गोमतीनगरतः

दिनाङ्कः 20.3.2022

प्रियमित्र.....

सादरं नमो नमः

अत्र तत्रास्तु। भवतः अधुनैव प्राप्तम् । भवतः परीक्षापरिणामं ज्ञात्वा अहमतीव प्रसन्नः अस्मि। भवान् परीक्षायां 95 प्रतिशताङ्कान् प्राप्य विद्यालये प्रथमं स्थानं प्राप्तवान् एतदर्थं बहूनि.....। सादरं नमः।

भवतः मित्रम्

सन्दीपः

देवेश!, वर्धापनानि, पत्रम्, पितृभ्यां, कुशलं
--

संस्कृत पदों का वाक्यों में प्रयोग

किसी पद को अन्य पद के साथ जोड़कर वाक्य बनाना ही पद का वाक्य प्रयोग कहलाता है।

धातु पदों का वाक्य-प्रयोग

पद	वाक्य-प्रयोग	अर्थ
1. पठति	सः पठति।	वह पढ़ता है।
2. गच्छतः	तौ गच्छतः	वे दोनों जाते हैं।
3. लिखसि	त्वं लिखसि।	तुम लिखते हो।
4. खादामि	अहं खादामि।	मैं खाता हूँ।
5. लिखथ	यूयं लिखथ।	तुम सब लिखते हो।
6. पठिष्यति	रामः पठिष्यति।	राम पढ़ेगा।
7. गमिष्यन्ति	बालकाः गमिष्यन्ति।	लड़के जाएँगे।
8. लिखिष्यसि	त्वं लिखिष्यसि।	तुम लिखोगे।
9. अपठत्	मोहनः अपठत्।	मोहन ने पढ़ा।
10. अपठाम्	वयम् अपठाम्।	हम सबने पढ़ा।
11. गच्छतु	बालकः गच्छतु।	बालक जाए।
12. पठ	त्वं पठ।	तुम पढ़ो।
13. पठेम	वयं पठेम।	हम सबको पढ़ना चाहिए।
14. तिष्ठन्ति	बालिकाः तिष्ठन्ति।	बालिकाएँ स्थित हैं।
15. हसति	बालकः हसति।	बालक हँसता है।
16. गत्वा	सः गृहं गत्वा भोजनं करोति।	वह घर जाकर भोजन करता है।
17. रोचते	बालकाय मिष्ठानं रोचते।	बालक को मिठाई अच्छी लगती है।
18. ब्रूयात्	सत्यं ब्रूयात्।	सत्य बोलना चाहिए।
19. बिभेति	सः कुक्कुरात् बिभेति।	वह कुत्ते से डरता है।
20. प्रविशति	रामः कक्षायां प्रविशति।	राम कक्षा में प्रवेश करता है।

संज्ञा पदों का प्रयोग

1. खगाः	पक्षी	वृक्षे खगाः सन्ति।
2. कविषु	कवियों में	कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।
3. गुरुवे	गुरु के लिए	गुरुवे नमः।
4. वृक्षात्	वृक्ष से	वृक्षात् पत्रं पतति।
5. पुस्तकम्	पुस्तक	रामः पुस्तकं पठति।
6. बालकः	बालक	बालकः गृहं गच्छति।
7. हिमालयात्	हिमालय से	गङ्गा हिमालयात् प्रभवति।
8. नेत्राभ्याम्	आँखों से	मोहनः नेत्राभ्यां पश्यति।
9. उद्याने	उद्यान में	उद्याने वृक्षाः सन्ति।
10. ग्रामम्	गाँव में	ग्रामं परितः वृक्षाः सन्ति।

सर्वनाम पदों का प्रयोग

1. अहम्	मैं	अहं पठामि।
2. के	कौन सब	के पठन्ति।
3. सः	वह	सः गच्छति।
4. अस्माकम्	हमारा	अस्माकं विद्यालयः अस्ति।
5. वयम्	हम सब	वयं विद्यालयं गच्छामः।
6. यूयम्	तुम सब	यूयं पठथ।
7. सा	वह	सा फलं खादति।
8. अयम्	यह	अयं बालकः अस्ति।
9. तस्य	उसका	तस्य पुस्तकम् अस्ति।
10. इयम्	यह	इयं बालिका अस्ति।

अव्यय पदों का प्रयोग

1. प्रातः	सुबह	सूर्यः प्रातः उदेति।
2. यत्र	जहाँ	यत्र विद्यालयः तत्र छात्राः सन्ति।
3. तत्र	वहाँ	तत्र बालकाः सन्ति।
4. अत्र	यहाँ	अत्र पुस्तकम् अस्ति।
5. अद्य	आज	अद्य गृहं न गमिष्यामि।

प्रत्यययुक्त धातुपदों का प्रयोग

1. गत्वा	जाकर	बालकः विद्यालयं गत्वा पठति।
2. गतः	गया	छात्रः गृहं गतः।
3. आदाय	लेकर	सः पुस्तकम् आदाय पठति।
4. हतः	मारा गया	रामेण रावणः हतः।
5. विहाय	छोड़कर	रामः गृहं विहाय वनम् अगच्छत्।

अभ्यासकार्यम्

1. निम्नलिखित क्रियापदों का संस्कृत में वाक्य-प्रयोग कीजिए—
भवति, पठेत्, सन्ति, रोचते, लभते, पठ, ब्रूयात्, पठतः
2. निम्नलिखित संज्ञापदों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए—
ग्रामम्, मुखे, गृहम्, उद्याने, खगाः, वनेषु, आश्रमे
3. निम्नलिखित सर्वनामपदों का संस्कृत में वाक्य-प्रयोग कीजिए—
मया, त्वया, ताः, के, कः, सः, त्वम्, तस्य, सा
4. निम्नलिखित अव्ययपदों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए—
सायम्, पुरा, यदा, कदा, अद्य, अधुना, सम्प्रति, तत्र, कुत्र, सम्प्रति, नित्यम्, प्रतिदिनम्
5. निम्नलिखित प्रत्ययान्त धातुपदों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए—
कृत्वा, हतः, गतः, आदाय, पठितम्, आगत्य, विहाय, लिखितम्, श्रुत्वा, द्रष्टुम्।

